डिंगल - कोष

डिंगल भाषा के ६ पर्यायवाची, १ अनेकार्थी व
२ एकाक्षरी छन्दोबद्ध प्राचीन कोषों का संकलन

प्रकाशक
राजस्थानी शोध-संस्थान, चौपासनी
जोधपुर

भाग तीन-चार, १९५६-५७

मूल्य रुपये १०)

मुद्रक
हरिप्रसाद पारीक
राजस्थान ला वीकली प्रेस
जोधपुर

विषय - सूची

सम्पादकीय

भाषा समाज की पहली आवश्यकता है और मानव के विकास का सब से महत्वपूर्ण साधन है। मानव के भौतिक एवं सांस्कृतिक विकास के साथ-साथ भाषा का भी विकास होता है। समाज की उन्नति और उसकी नानाम्लेश प्रवृत्तियों में सतत प्रयत्नशील मानव-समूह अपनी आवश्यकताओं के अनुसार जाने-अनजाने ही भाषा को नये-नये रूप प्रदान करता है। इसी से भाषा के कई रूप बनते और बिगड़ते रहते हैं। पर मिटने वाली भाषाओं का प्रभाव नवोदित भाषाओं पर किसी न किसी रूप में अवश्य विद्यमान रहता है, क्योंकि नवीन भाषाएँ प्राचीन भाषाओं की कोख से ही उत्पन्न होती हैं। यद्यपि अन्य भाषाओं के प्रभाव से भी वे पूर्णतया अछूती नहीं रह पातीं। भाषाओं का यह विकास-क्रम स्वयं मानव जाति के सामाजिक इतिहास से अविच्छिन्न जुड़ा हुआ सतत प्रवहमान होता रहता है। कौनसी भाषा कितनी समृद्ध और महान है, यह उस भाषा का साहित्य ही प्रमाणित कर सकता है। साहित्य की रचना शब्दों के माध्यम से सम्पन्न होती है। अतः किसी भाषा का शब्द-भंडार ही उसकी अभिव्यक्ति की क्षमता का द्योतक है।

राजस्थानी भाषा और साहित्य की समृद्धि पर विभिन्न दृष्टियों से विचार करते समय उसके शब्द-भंडार की ओर ध्यान जाना स्वाभाविक है। शब्द-भंडार पर शब्द-कोषों के माध्यम से विचार करने में सुविधा होती है, और उसमें हर प्रकार के कोषों का अपना महत्व होता है। आधुनिक प्रामाणिक कोषों के उपलब्ध होते हुए भी संस्कृत भाषा का कोई विद्यार्थी 'अमर-कोष' की उपेक्षा नहीं कर सकता। इसीलिए इन प्राचीन डिंगल कोषों का भी अपना महत्व है।

विभिन्न भाषाओं के प्राचीन कोषों की तरह ये कोष भी छन्दोबद्ध हैं। प्राचीन काल में जब छापाखाने की सुविधा उपलब्ध नहीं थी—ज्ञान अर्जित करना, उसे समय पर प्रयोग में लाना और आने वाली पीढ़ी को उससे लाभान्वित करना एक बहुत बड़ी समस्या थी। हस्तलिखित पोथियों का प्रयोग अवश्य होता था पर व्यवहार में स्मरण-शक्ति का भी बहुत सहारा लेना पड़ता था। लयात्मक और तुकान्त भाषा में कही गई बात स्मृति में सहज ही अपना स्थान बना लेती है, इसीलिए अति प्राचीन काल में समाज की धार्मिक, राजनैतिक और सांस्कृतिक मान्यताएँ तक छन्दों का सहारा ढूंढती प्रतीत होती हैं। साहित्याचार्यों ने भी अपने मतों का प्रतिपादन छन्दों के सहारे ही करना उचित समझा, जिसके फलस्वरूप

शब्दों के रूप में कब और कैसे परिवर्तन हुए, इसका अध्ययन करने के लिए समय-समय में होने वाले शब्दों के रूप-भेद की पूरी जांच करनी होती है, तभी शब्दों के रूप-परिवर्तन में बरते जाने वाले नियमों का भी स्पष्टीकरण हो पाता है। अतः वैज्ञानिक ढंग से राजस्थानी भाषा के विकास को समझने में ये कोष एक प्रामाणिक सामग्री का काम दे सकते हैं। इसके अतिरिक्त राजस्थानी में प्रयुक्त अन्य भाषाओं के शब्दों की स्थिति भी इनसे सहज ही स्पष्ट हो जाती है।

वर्णक-क्रम के हिसाब से राजस्थानी का आधुनिक शब्द-कोष तैयार करने में इन कोषों से मिलने वाली सहायता का महत्व असंदिग्ध है। डिंगल-भाषा के मुख्य-मुख्य शब्द अपने मौलिक तथा परिवर्तित रूप में एक ही स्थान पर उपलब्ध हो जाते हैं। कई शब्दों के समय-समय पर होने वाले अर्थ-भेद तक का अनुमान इनके माध्यम से मिल जाता है। इतना ही नहीं, सूक्ष्म अर्थ-भेद को इंगित करने वाले समान शब्दों पर भी इन कोषों के आधार पर विचार किया जा सकता है। संग्रहीत डिंगल-कोषों के सभी रचयिता अपने समय के माने हुए विद्वान और कवि थे। ऐसी स्थिति में उनके शब्द-ज्ञान में भी संदेह की विशेष गुंजाइश नहीं बचती। प्राचीन पोथियों की प्रामाणिकता को कायम रखने में लिपिकारों की बहुत बड़ी जिम्मेदारी होती है। अतः कई स्थलों पर उनकी असावधानी के कारण अस्पष्टता तथा त्रुटियों की सम्भावना अवश्य बनी हुई है। इसके अतिरिक्त मौखिक परम्परा पर जीवित रहने के पश्चात लिपिबद्ध होने वाले कोषों के उपलब्ध रूप और मौलिक रूप में अवश्य कुछ अन्तर है, जिसका आभास समय-समय पर लिपिबद्ध होने वाली एक ही कोष की कई प्रतियों से हो सकता है। 'नागराज डिंगल-कोष' तथा 'डिंगल नांम-माळा' इसी प्रकार के कोष हैं जो अपूर्ण भी हैं और निर्माण-काल के काफी समय बाद की प्रतियाँ हमें उपलब्ध हो सकी हैं। अतः इन कोषों का समुचित प्रयोग उपरोक्त तथ्यों को ध्यान में रख कर होना चाहिए।

अब यहाँ सम्पादित प्रत्येक डिंगल-कोष और उसके रचयिता के सम्बन्ध में आवश्यक विचार कर लेना उचित होगा।

डिंगल नांम-माळा :

यह कोष सम्पादित कोषों में सब से प्राचीन है। मूल प्रति में इसके रचयिता का नाम हरराज मिलता है। हरराज सं० १६१८ में जैसलमेर की गद्दी पर बैठा था। इससे यह सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है कि इस कोष की रचना उसी समय के आसपास हुई है। श्री अगरचन्द नाहटा के मतानुसार हरराज स्वयं कवि नहीं था। कुशललाभ नामक जैन कवि ने उसके लिए इस ग्रन्थ की रचना की थी*। वैसे प्राप्य 'डिंगल नांम-माळा' की पुष्पिका में हरराज के साथ कुशललाभ का भी नाम जुड़ा हुआ है। इससे यह अनुमान होता है कि कुशललाभ ने स्वयं यदि इस ग्रन्थ का निर्माण नहीं किया तो ग्रन्थ-निर्माण में सहायता तो अवश्य की होगी, अन्यथा उसका नाम यहाँ मिलने का कारण नहीं। वास्तव में हरराज कवि था या नहीं यह विषय विचारणीय अवश्य है और अंतिम निष्कर्ष पर पहुँचने के लिए समर्थ प्रमाणों की आवश्यकता है।

---

* राजस्थान भारती, भाग १, अंक ४, जनवरी १९४७.

इस कोश के शीर्षक में एक अत्यन्त महत्वपूर्ण प्रश्न सामने आता है। मूल प्रति में कोश का शीर्षक है—अथ डिंगल नाम माळा। पुष्पिका में पूरा नाम 'पिंगल सिरोमणि उडिंगल नाम माळा' भी मिलता है। अतः यहाँ दिये गये डिंगल और उडिंगल शब्दों में कौनसा शुद्ध शब्द है कहना कठिन है। वस्तुतः शीर्षक में प्रयुक्त 'उ' अक्षर यदि ग्रंथ के साथ में हटा कर 'पिंगल' के साथ रख देते हैं तो यहाँ भी उडिंगल हो सकता है। डिंगल शब्द का प्रयोग १९वीं शताब्दी में मिलता है* पर उसमें भी पहले बहुत संभव है पिंगल के लिये उडिंगल ही प्रयुक्त होता था। प्राचीन डिंगल शब्द को आधुनिक अग्रज विद्वान डा० ग्रियर्सन आदि ने उच्चारण की सुविधा के लिये पिंगल के आधार पर डिंगल बना दिया है।† उससे पहिले इस प्रकार की ध्वनि वाला शब्द नहीं था। उडिंगल शब्द के मिलने से इस तथ्य पर पुनर्विचार करने की गुंजाइश बन जाती है। यह कोश प्राचीन होने के कारण कई तत्कालीन शब्दों की अच्छी जानकारी देता है इसलिए राजस्थानी भाषा के विकास की दृष्टि से इसका विशेष महत्व है। कोश का आकार बहुत छोटा है तथा इसकी पुष्पिका से भी यही प्रमाणित होता है कि यह पूरे ग्रंथ 'पिंगल सिरोमणि' का एक अध्याय मात्र है। इस कोश की केवल एक ही प्रति श्री अगरचन्द नाहटा के संग्रह में हमें उपलब्ध हो सकी इसलिए उसी को आधार मान कर चलना पड़ा है।

नागराज डिंगल-कोश

इस कोश के रचयिता के सम्बन्ध में निश्चित जानकारी उपलब्ध नहीं होती। केवल कुछ किंवदन्तियाँ सुनने को मिलती हैं जिनमें एक किंवदन्ती तो बहुत प्रसिद्ध है $ जिसके अनुसार शेषनाग ही छन्दःशास्त्र का प्रणेता माना गया है। संस्कृत का पिंगल सूत्र बहुत प्रसिद्ध है जिसके रचयिता पिंगल मुनि बतलाये जाते हैं। उन्हें शेषनाग का अवतार भी माना गया है। वैसे शेषनाग का पर्याय भी पिंगल होता है। पिंगल शब्द छन्द-शास्त्र के अर्थ में भी प्रयुक्त हुआ है पर डिंगल भाषा का कोई नागराज या पिंगल नाम का विद्वान हुआ हो ऐसा उल्लेख प्राचीन ग्रंथों में नहीं मिलता। यह भी संभव हो सकता है कि किसी विद्वान ने पिंगल की प्रसिद्धि देख कर पिंगल के नाम से ही डिंगल में भी ऐसे ग्रंथ की रचना कर दी हो जो कालान्तर में पिंगल की ही मानी जाने लग गई हो और प्राप्य कोश उसी का अंश हो। सर्वाधिक कोश की मूल हस्तलिखित प्रति जुडिया (मारवाड़) के पन्नारामजी मोतीसर के पास सुरक्षित थी उसका शीर्षक 'नागराज पिंगल कृत डिंगल कोश' है। लिपिकाल सं० १८२१ दिया हुआ है। अतः उसी को आधार मान कर इस कोश का प्रकाशन किया गया है। केवल २० छन्दों का ग्रंथ होते हुए भी पर्यायवाची शब्दों की अच्छी संख्या इसमें मिलती है। सिंह के सात नाम तो विशेष तौर से दृष्टव्य हैं।

---

* डॉ० मोतीलाल मेनारिया—राजस्थानी भाषा और साहित्य पृ० १५

† राजस्थानी भाषा और साहित्य पृ० २०

$ एक बार गरुड़ ने क्रोधित हो कर शेषनाग का पीछा किया शेषनाग ने अपने प्राणों को बचाने की बहुत कोशिश की पर अन्त में कोई उपाय न देख कर गरुड़ का समर्पण कर दिया

हमीर नांम-माळा :

इसके रचयिता 'हमीरदान रतनू' मारवाड़ के घड़ोई गाँव के निवासी थे। पर उनके जीवन का अधिकांश भाग कच्छभुज में ही व्यतीत हुआ। ये अपने समय के अच्छे विद्वानों में गिने जाते थे। इन्होंने छन्द-शास्त्र सम्बन्धी कई ग्रन्थ लिखे हैं, जिनमें 'लखपत पिंगल' बहुत महत्वपूर्ण है। 'भागवत दरपण' के नाम से इन्होंने राजस्थानी में भागवत का अनुवाद किया है, जिससे इनके पांडित्य का प्रमाण मिलता है। 'हमीर नांम-माळा' डिंगल कोषों में सबसे अधिक प्रसिद्ध और प्रचलित है, इसलिए समय-समय पर लिपिबद्ध की हुई प्रतियाँ भी अच्छी स्थिति में उपलब्ध होती हैं। यहाँ इस ग्रन्थ का सम्पादन तीन प्रतियों के आधार पर किया गया है। इन तीनों प्रतियों के अंतिमछाळे में ग्रन्थ का रचना-काल १७७४ मिलता है—

> संमत छहोतरै सतर मैं
> मती ऊपनी हमीर मन,
> कीधी पूरी नांम-माळिका
> दीपमाळिका तेग दिन।
>
> —(मूल प्रति)

हमारे संग्रह की मूल प्रति (लिपिकाल सं. १८५६) के अतिरिक्त जिन दो प्रतियों के पाठान्तर दिये गये हैं उनमें (अ) प्रति की प्रतिलिपि श्री अगरचन्द नाहटा से उपलब्ध हुई है। इसके पाठान्तर बड़े महत्वपूर्ण हैं। मूल प्रति का लिपिकाल संवत १८५० के लगभग है। (ब) प्रति श्री उदयराज उज्ज्वल के सौजन्य से प्राप्त हुई है। यह प्रति भी शुद्ध और पूर्ण है। इसका लिपिकाल संवत १८७४ है। 'हमीर नांम-माळा' डिंगल के प्रसिद्ध गीत 'वेलियो' में लिखी गई है। हर एक शब्द के पर्याय गिनाने के पश्चात अंतिम पंक्तियों में बड़ी खूबी के साथ हरि-महिमा सम्बन्धी सुन्दर उक्तियाँ कह कर ग्रन्थ में सर्वत्र अपने व्यक्तित्व की छाप छोड़ने का प्रयत्न भी किया गया है। इसलिए यह ग्रन्थ 'हरिजस नांम-माळा' के नाम से भी प्रसिद्ध है।

'हमीर नांम-माळा' की रचना में धनंजय नाम-माळा, मांनमंजरी, हेमी कोष तथा अमर कोष से भी यथोचित सहायता ली गई है, जिसका जिक्र कवि ने स्वयं अपने ग्रन्थ के अन्त में

पर एक बात उसने ऐसी कही जिससे गरुड़ को सोचने के लिए बाध्य होना पड़ा। नागराज ने कहा, मुझे मरने का दुख नहीं होगा पर मैं छन्द-शास्त्र की विद्या का जानकार हूँ और वह विद्या मेरे साथ ही समाप्त हो जाएगी। ऐसी स्थिति में एक ही उपाय है कि तुम मुझ से छन्द-शास्त्र सुन कर याद कर लो, फिर जो चाहो करना। गरुड़ ने बात मान ली, पर एक आशंका व्यक्त की कि कहीं तुम धोखा देकर भाग न जाओ। इस पर शेषनाग ने वचन दिया कि मैं जब जाऊँगा, तुम्हें कह कर चेतावनी दूंगा कि मैं जा रहा हूँ। शेषनाग ने पूरा छन्द-शास्त्र सुनाया और अंत में भुजंगम् प्रयातम् (भुजंग प्रयाता—संस्कृत में एक छन्द का नाम) कह कर समुद्र में प्रविष्ट हो गया। शेषनाग की चतुराई पर प्रसन्न होकर कहते हैं कि गरुड़ ने उसे क्षमा कर दिया और आदेश दिया कि छन्द-शास्त्र की पूर्णता के लिए कोष भी बनाओ। तब शेषनाग ने शब्द-कोष का भी निर्माण किया। तब से वे ही इसके प्रणेता माने गये।

लिया है।० हमीर नाम माला ३११ छन्दों का ग्रन्थ है। इन छन्दों में प्राचीन तथा तत्कालीन साहित्य में प्रचलित विभिन्न नामों के अर्थ में शब्द अपने विशुद्ध रूप में सुरक्षित हैं।

अवधान-माला

इस ग्रन्थ के रचयिता कविराज उदयराम मारवाड़ के थब्कड़ा ग्राम के निवासी थे। इनकी जन्म-सम्बन्धी निश्चित तिथि उपलब्ध नहीं होती, पर अन्य साधनों के आधार पर यह सिद्ध होता है कि ये जोधपुर के महाराजा मानसिंहजी के समकालीन थे।* इन्होंने कच्छ के राजा भारमल तथा उनके पुत्र देशल (द्वितीय) की प्रशंसा अपने ग्रन्थों में स्थान-स्थान पर की है। इससे पता चलता है कि ये उनके कृपापात्र थे और जीवन का अधिकांश भाग वहीं व्यतीत किया था। ये अपने समय के विद्वानों में समादरणीय थे तो इसके अतिरिक्त विभिन्न विद्याओं में निपुण होने के कारण राज्य-दरबारों में भी सम्मान पाते थे।

इनके ग्रन्थों में कविकुलबोध सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण है। इस ग्रन्थ की हस्तलिखित प्रति श्री सीताराम लालस के माध्यम से उपलब्ध हुई थी। इसमें गीतों के लक्षण उदाहरण सहित दिये गये हैं तथा गीतों में प्रयुक्त अन्य आवश्यक अनीतदोष उदाहरणों का भी सुन्दर विवेचन किया गया है। यहाँ सम्पादित अवधान माला अनेकार्थी कोष तथा एकाक्षरी नाम माला भी इसी ग्रन्थ में उपलब्ध हुआ है। इसके अतिरिक्त कई छन्दों के लक्षण तथा लखमी-कीर्ति सवाई के नाम महत्त्वपूर्ण अध्याय भी इसमें हैं।

अवधान-माला ग्रन्थ की छन्द संख्या ५६१ है। डिंगल के प्रचलित नामों के अतिरिक्त भी कवि ने कुछ नाम विद्वत्तापूर्ण ढंग से बना कर रखे हैं। इस कोष की एक बहुत बड़ी विशेषता यह है कि छन्दपूर्ति आदि के लिए पर्यायवाची शब्दों के अतिरिक्त बहुत कम निरर्थक शब्दों का प्रयोग मिलता है

इस ग्रन्थ में इनका कवि-नाम उदयराम के अतिरिक्त उमेदराम नाम भी मिलता है। संभव है इनके ये दोनों नाम उस समय में प्रचलित हों।

नाम-माला

इस ग्रन्थ की मूल प्रति हमारे शोध-संस्थान के संग्रहालय में है। इसमें न ग्रन्थकार का नाम मिलता है न लिपिकार का। प्रति करीब १०० वर्ष पुरानी होनी चाहिए ऐसा अनुमान इसके पत्रों की लिखावट से लगता है। मूल प्रति में इस कोष के साथ कुछ गीतों के उदाहरण भी दिये हुए हैं। कई शब्दों के प्राचीन शुद्ध डिंगल रूप इस कोष में देखने को मिलते हैं जिससे यह अनुमान होता है कि इसका रचयिता कोई अच्छा विद्वान होना चाहिए। ईश्वर, ब्रह्म, भ्रमर, बादळा आदि के कई महत्त्वपूर्ण पर्याय इस कोष में द्रष्टव्य हैं। छन्दपूर्ति आदि के लिए भी बहुत ही कम निरर्थक शब्दों का प्रयोग देखने को मिलता है जो कवि का भाषा तथा छन्द शास्त्र पर अधिकार साबित करता है

* हमीर नाम माला पृ० ८८
हमारे शोध-संस्थान में सुरक्षित महाराजा मानसिंहजी के समकालीन कवियों के चित्र में इनका चित्र भी नाम सहित मिलता है

डिंगल-कोष :

पर्यायवाची कोषों में यह कोष सबसे बड़ा है। इस कोष के रचयिता बूंदी के कविराजा मुरारिदानजी, महाकवि सूर्यमल के दत्तक पुत्र तथा उनके शिष्यों में से थे। वंशभास्कर को सम्पूर्ण करने का श्रेय भी इन्हीं को है। इस कोष में करीब ७००० शब्द ग्रन्थकार ने समाहित किये हैं। यह कोष पुराने ढंग से बहुत पहले प्रकाशित हो चुका है जिसकी प्रतियां अब उपलब्ध नहीं होतीं। इसमें छपाई की अशुद्धियां भी बहुत हैं। मूल ग्रन्थ में छन्दों तथा अलंकारों पर भी प्रकाश डाला गया है, पर कोष ही उसका मुख्य अंग है, इसीलिए पूरे ग्रन्थ का नाम भी 'डिंगल-कोष' ही रखा गया है। डिंगल ग्रन्थों में प्रयुक्त शब्दों को ही इस ग्रन्थ में स्थान मिला है। अपनी ओर से गढ़े हुए अथवा अप्रचलित शब्दों का मोह कवि को विचलित नहीं कर पाया है। संस्कृत शब्दों को कवि ने कई स्थानों पर निःसंकोच अपनाया है। अमर-कोष की तरह यह कोष भी विभिन्न अध्यायों में विभक्त किया गया है, जिससे ऐसा आभास होता है कि कवि उक्त कोष की शैली अपनाने का प्रयत्न करना चाहता है। कोष के प्रारम्भिक अध्यायों में गीतों का लक्षण बताने के पश्चात् गीत के उदाहरण में भी पर्यायवाची कोष का निर्वाह किया है। इस प्रकार की शैली अन्य किसी कोष में नहीं अपनाई गई है, यह इसकी अपनी विशेषता है। कोष का निर्माण आधुनिक काल के प्रारम्भ में हुआ है, इसलिए डिंगल से अनभिज्ञ पाठकों की सुविधा को ध्यान में रख कर नामों के शीर्षक प्रायः हिन्दी में ही दिये हैं और उनको उसी रूप में अनुक्रमणिका में भी रखा गया है।

डिंगल-कोषों में यह कोष अंतिम, महत्वपूर्ण एवं प्रामाणिक है।

अनेकारथी कोष :

जैसा कि पहले कहा जा चुका है, यह कोष भी बारहठ उदयराम द्वारा रचित 'कविकुल-बोध' का ही भाग है। डिंगल भाषा को इस प्रकार का यह एक ही ग्रन्थ उपलब्ध है। इसमें ठेट डिंगल के शब्दों के अतिरिक्त संस्कृत भाषा के भी शब्द हैं। कहीं-कहीं पर कवि ने अपनी ओर से भी शब्द गढ़ कर रखने का प्रयत्न किया है। जैसे—'मधु' के अनेक अर्थ सूचित करने वाले शब्दों में 'विष्णु' नाम न लेकर उसके स्थान पर माकंत शब्द रखा है।* मा = लक्ष्मी, कंत = पति अर्थात् विष्णु। पर विष्णु के लिये माकंत शब्द का प्रयोग डिंगल ग्रन्थों में नहीं देखा गया।

पूरा ग्रन्थ दोहों में लिखा गया है जिससे कंठस्थ करने में बड़ी सुविधा रहती है। ग्रन्थारंभ में, प्रत्येक दोहे में एक शब्द के अनेक अर्थ दिये गये हैं। आगे जाकर प्रत्येक दोहे में दो शब्दों के अनेकार्थी क्रमशः पहली और दूसरी पंक्ति में रखे गये हैं।

'कविकुलबोध' की प्रति पर रचनाकाल और लिपिकाल न होने से इस ग्रन्थ के रचनाकाल के सम्बन्ध में भी निश्चित रूप से कुछ कहा नहीं जा सकता।

---

* अनेकारथी कोष—पृ० २६५, छंद ५.

किया है।* हमीर नाम माळा ३११ छन्दों का ग्रन्थ है। इन छन्दों में प्राचीन तथा तत्कालीन साहित्य में प्रचलित डिंगल भाषा के बहुत से शब्द अपने विशुद्ध रूप में सुरक्षित हैं।

अवधान माळा

इस ग्रंथ के रचयिता बारहठ उम्मेदराम मारवाड़ के थबूकड़ा ग्राम के निवासी थे। इनकी जन्म-सम्बन्धी निश्चित तिथि उपलब्ध नहीं होती पर अन्य साधनों के आधार पर यह सिद्ध होता है कि ये जोधपुर के महाराजा मानसिंहजी के समकालीन थे।† इन्होंने कच्छभुज के राजा भारमल तथा उसके पुत्र देसल (द्वितीय) की प्रशंसा अपने ग्रन्थों में स्थान-स्थान पर की है। इससे पता चलता है कि ये उनके कृपापात्र थे और जीवन का अधिकांश भाग वहीं व्यतीत किया था। वे अपने समय के विद्वानों में समादरित तो थे ही इसके अतिरिक्त विभिन्न विद्याओं में निपुण होने के कारण राज्य दरबारों में भी सम्मान पा चुके थे।

इनके ग्रन्थों में कविकुळबोध सबसे अधिक महत्वपूर्ण है। इस ग्रन्थ की हस्तलिखित प्रति श्री सीताराम लाळस के माध्यम से उपलब्ध हुई थी। इसमें गीतों के लक्षण उदाहरण सहित दिये गये हैं तथा गीतों में प्रयुक्त अन्य आवश्यक रीतिगत उपकरणों का भी सुन्दर विवेचन किया गया है। यहाँ सम्पादित अवधान माळा अनेकार्थी कोष तथा एकाक्षरी नाम-माळा भी इसी ग्रंथ में उपलब्ध हुए हैं। इसके अतिरिक्त कई छन्दों के लक्षण तथा नमो-कीर्ति सवाई के ना महत्वपूर्ण अध्याय भी इसमें है।

अवधान-माळा ग्रंथ की छन्द संख्या ५६१ है। डिंगल के प्रचलित शब्दों के अतिरिक्त भी कवि ने कुछ शब्द विदग्धतापूर्ण ढंग से बना कर रखे हैं। इस कोष की एक बहुत बड़ी विशेषता यह है कि छन्दपूर्ति आदि के लिए पर्यायवाची शब्दों के अतिरिक्त बहुत कम निरर्थक शब्दों का प्रयोग मिलता है।

इस ग्रन्थ में इनका कहीं-कहीं उदयराम के अतिरिक्त उमेदराम नाम भी मिलता है। संभव है इनके ये दोनों नाम उस समय में प्रचलित रहे हों।

नाम-माळा

इस ग्रन्थ की मूल प्रति हमारे शोध-संस्थान के संग्रहालय में है। इसमें न ग्रन्थकार का नाम मिलता है न लिपिकार का। प्रति करीब १०० वर्ष पुरानी होनी चाहिए ऐसा अनुमान इसके पत्रों की लिखावट से लगता है। मूल प्रति में इस कोष के साथ कुछ गीतों के उदाहरण भी दिये हुए हैं। कई शब्दों के प्राचीन शुद्ध डिंगल रूप इस कोष में देखने को मिलते हैं जिससे यह अनुमान होता है कि इसका रचयिता कोई अच्छा विद्वान होना चाहिए। ईश्वर भ्रमर चपळा आदि के कई महत्वपूर्ण पर्याय इस कोष में द्रष्टव्य हैं। छन्द-पूर्ति आदि के लिए भी बहुत ही कम निरर्थक शब्दों का प्रयोग इसमें देखने को मिलता है जो कवि का शब्द तथा छन्द शास्त्र पर अधिकार साबित करता है।

---

* हमीर नाम-माळा—पृ० ८८

† हमारे शोध-संस्थान में सुरक्षित महाराजा मानसिंहजी के समकालीन कवियों के चित्र में इनका चित्र भी नाम सहित मिलता है।

एकाक्षरी नाम माळा

इसके रचयिता कवि वीरभाण रतनू भी हमीरदान के ही गाँव घड़ोई (मारवाड़) के रहने वाले थे। इनकी जन्म तिथि के सम्बन्ध में विशेष जानकारी नहीं मिलती। पर इतना तो निश्चित है कि ये जोधपुर के महाराजा अभयसिंहजी के समकालीन थे। यह उनके प्रसिद्ध काव्य-ग्रन्थ 'राजरूपक' से प्रमाणित होता है, जो अभयसिंहजी द्वारा किये गये अहमदाबाद के युद्ध की घटना को लेकर लिखा गया है। यह भी कहा जाता है कि कवि स्वयं युद्ध में मौजूद था।

उनका यह एकाक्षरी कोष आकार में बहुत छोटा है। महाक्षपणक कवि रचित संस्कृत के एकाक्षरी कोष की छाया इसमें स्थान-स्थान पर मौजूद है। कोष बहुत ही अव्यवस्थित ढंग से लिखा गया है। इसमें न तो कोई क्रम अपनाया गया है और न अलग-अलग शीर्षक देकर ही कोई विभाजन किया गया है। ऐसी स्थिति में कई स्थानों पर अस्पष्टता रह गई है। ऐसा प्रतीत होता है कि कवि स्वयं कोष रचना में दिलचस्पी नहीं ले रहा है।

इस कोष की प्रतिलिपि नाहटाजी ने भिजवाई थी। उनके मतानुसार इसका लिपिकाल १६वीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध है।

एकाक्षरी नाम-माळा

यह कोष भी बारहठ उदयरामजी के 'कविकुलबोध' से ही लिया गया है। ग्रन्थ की दसवीं लहर या तरंग के अन्त में यह सम्पूर्ण हुआ है। ऐसा क्रमानुसार लिखा हुआ पूरा कोष डिंगल में दूसरा नहीं मिलता। संस्कृत, प्राकृत, और अपभ्रंश के कई कोषों में भी इस प्रकार की क्रम व्यवस्था कम देखने को मिलती है। अन्य कोषों की तरह इस कोष में भी कवि ने अपने विस्तृत ज्ञान का परिचय दिया है। ठेठ डिंगल के अतिरिक्त संस्कृत के शब्दों का भी प्रयोग किया गया है, पर कहीं-कहीं तो जन-जीवन में प्रचलित अत्यन्त साधारण शब्दों तक को कवि ने अनोखे ढंग से अपनाया है। जैसे 'झं' का अर्थ उन्होंने करभ झकलाकाज* अर्थात ऊँट को बढ़ाने समय किया जाने वाला शब्दोच्चारण किया है जो जन-जीवन में अत्यन्त प्रचलित है। ऐसे शब्दों का प्रयोग कवि के सूक्ष्म अध्ययन का परिचायक है।

सम्पूर्ण कोषों में ३ कोष बारहठ उदयरामजी के हैं। तीनों कोष अपने ढंग से अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं। अतः डिंगल-कोष रचना में उदयरामजी का विशेष स्थान है।

कोषों-सम्बन्धी इस आवश्यक जानकारी के पश्चात अब उनकी कुछ सामान्य प्रवृत्तियों का विवेचन किया जाता है जो इनके प्रयोग तथा मूल्यांकन में सहायक होगा।

(१) इन कोषों में कई स्थल ऐसे भी हैं जहाँ जातिवाचक शब्दों के अन्तर्गत व्यक्ति वाचक शब्दों को भी ले लिया है। जैसे 'अप्सरा' के पर्याय गिनाते समय विशिष्ट अप्सराओं के नाम भी उसी में समाहित कर लिए गये हैं।$ पर यहाँ एक ध्यान देने योग्य बात यह है कि डिंगल के प्राचीन काव्य-ग्रन्थों में व्यक्तिवाचक शब्दों का प्रयोग जातिवाचक शब्दों की तरह भी किया गया है। ऐरावत इन्द्र के हाथी का ही नाम है पर साधारण हाथी के लिए भी प्रयुक्त होता रहा है। अतः सम्भवतया ग्रन्थकारों ने इस प्रकार की प्रवृत्ति को ध्यान में रख कर ही यह प्रणाली अपनाई होगी।

---

* एकाक्षरी नाम माळा—पृ० २६५ छंद ११६

$ डिंगल नाम-माळा—पृ० २२ छंद १७ अवधान-माला—पृ० ६७, छंद ७५

(२) कई स्थानों में पर्यायवाची शब्दों का रूप एकवचनात्मक से बहुवचनात्मक कर दिया गया है। जैसे, तलवार के लिये—करवांगां, करवाळां आदि[1] घोड़े के लिये—हयां, रेवंतां, साकुरां, अस्सां, जंगमां, पमंगां, हैवरां आदि।[2] यह केवल मात्राओं की पूर्ति के लिये तथा तुक के आग्रह से किया गया प्रतीत होता है।

(३) कहीं-कहीं पर्यायवाची देने के साथ, बीच-बीच में, वस्तु की विशेषताओं और प्रयोग आदि का वर्णन करके भी अपनी विशेष जानकारी को प्रदर्शित करने का प्रयत्न किया है। 'नूपुर' के पर्याय गिनाते समय उससे शरीर में हर्ष संचरित होने वाली विशेषता की सूचना भी दी है[3] और 'नागरवेल' के पर्यायवाची शब्दों के साथ उसके प्रयोग का जिक्र भी किया है।[4] इसी प्रकार के कितने ही उदाहरण कोष्ठकों में लिये हुए मिलेंगे।

(४) विद्वान कवियों ने कई शब्दों की परिभाषा तक देने का प्रयत्न किया है। जैसे, प्राकृत को नर-भाषा, मागधी को नाग-भाषा, संस्कृत को सुर-भाषा और पिशाची को राक्षसों की भाषा कह कर समझाने का प्रयत्न किया है।[5]

(५) ऐसे शब्दों को भी किसी शब्द के पर्याय के रूप में स्थान दे दिया गया है जो कि सही अर्थ में ठीक पर्याय न होकर कुछ भिन्न अर्थ व्यंजित करने की भी क्षमता रखते हैं। जैसे 'स्नेह' के लिए 'संतोष' तथा 'मुख' आदि का प्रयोग।[6] इस प्रकार की उदारता थोड़ी-बहुत सभी कोषों में बरती गई है।

(६) जैसा कि पहले संकेत कर दिया गया है, कई कवियों ने अपनी चतुराई से भी शब्द गढ़े हैं जो बड़े ही उपयुक्त जँचते हैं। जैसे—ऊँट के लिए 'फीणनांखतो'[7] तथा अर्जुन के लिए 'मरदां-मरद'[8] शब्द का प्रयोग किया गया है, पर ये शब्द प्राचीन डिंगल कविता में उपरोक्त अर्थ में प्रयुक्त नहीं हुए। इस प्रकार शब्द-रचना की स्वतन्त्रता बहुत कम स्थानों पर ही देखने में आती है।

(७) कई स्थानों पर तो शब्दों के पर्यायवाची न रख कर केवल तत्सम्बन्धी वस्तुओं की नामावली मात्र दी गई है। उदाहरणार्थ—सताईस नक्षत्र नांम[9] शीर्षक के अंतर्गत २७ नक्षत्रों के नाम गिना दिये गये हैं, जोकि सत्ताईस नक्षत्र के पर्यायवाची नहीं कहे जा सकते। इसी प्रकार चौईस अवतार नांम[10], सातधातरा नांम[11], बारै रासांरा नांम[12] आदि के सम्बन्ध में भी यही युक्ति काम में ली गई है।

---

१ डिंगल नांम-माळा—पृ० २०, छंद ८.
२ डिंगल-कोष —पृ० १७५. छंद ८१.
३ अवधान-माळा—पृ० १३४, छंद ४८५.
४ अवधान-माळा—पृ० १४२, छंद ५५६.
५ अवधान-माळा—पृ० १३१, छंद ४६०.
६ हमीर नांम-माळा—पृ० ६६, छंद २०१.
७ नागराज डिंगल-कोष—पृ० २८, छंद ५.
८ हमीर नांम-माळा—पृ० ५५, छंद १२४.
९ अवधान-माळा—पृ० १३०, छंद ४४८, ४४९, ४५०, ४५१.
१० अवधान-माळा—पृ० १३०, छंद ४४२, ४४३, ४४४.
११ ,, ,, —पृ० १३१, छंद ४५६.
१२ ,, ,, —पृ० १३१, छंद ४५२.

(८) छन्द-पूर्ति के लिए कई निरर्थक शब्दों का प्रयोग करना भी आवश्यक हो गया है। प्रत्येक कवि ने अपनी इच्छानुसार छन्द-पूर्ति करने की कोशिश की है। छन्द रचना में कुछ कवियों ने कम-से-कम भरती के शब्दों को स्थान दिया है पर कई कवियों ने पूरी पंक्ति तक, अपने नाम की छाप लगाने को समाविष्ट कर ली है। आखो आख कहो सुणो सुणाव चवो चवीज गिणो गिणाव आदि शब्द छन्द में गति उत्पन्न करने तथा मात्राओं की पूर्ति के लिए बहुत प्रयुक्त हुए हैं। इस तरह के शब्दों व पंक्तियों को कोष्ठकों—( )—के भीतर ले लिया गया है।

आज के प्रजातान्त्रिक युग में भाषा और समाज के सम्बन्धों को अत्यन्त गहराई से हृदयगम करने के पश्चात जब हमारी राष्ट्रभाषा और प्रान्तीय भाषाओं की उन्नति के लिए विशेष सजगता के साथ प्रयत्न होने लगे हैं तो करीब डेढ़ करोड़ मानवों की भाषा राजस्थानी का प्रश्न भी अत्यन्त महत्त्वपूर्ण और विचारणीय हो गया है। ऐसी स्थिति में आधुनिक साहित्य के निर्माण के साथ-साथ उसके व्याकरण, शब्दकोष तथा भाषा के क्रमबद्ध इतिहास को प्रकाश में लाना बहुत आवश्यक है। राजस्थानी भाषा का व्याकरण तो प्रकाशित हो चुका है और राजस्थानी शब्द-कोष तथा भाषा के इतिहास पर भी राजस्थान के विद्वान बहुत लगन के साथ कार्य कर रहे हैं। ऐसी स्थिति में इन छन्दोबद्ध कोषों का प्रकाशन एक महत्त्वपूर्ण प्रामाणिक सामग्री का काम दे सकेगा। वर्तमान परिस्थितियों में इनकी विशेष उपादेयता को ध्यान में रख कर ही यह प्रकाशन किया जा रहा है यद्यपि विभिन्न भारतीय भाषाओं में अन्तर्प्रान्तीय स्तर पर होने वाले शोध-कार्य में भी इनकी अपनी उपयोगिता है।

प्राचीन ग्रन्थों की बहुत छानबीन करने तथा राजस्थानी भाषा के जाने-माने विद्वानों की सहायता लेने के बावजूद भी हमें केवल ६ कोष उपलब्ध हो सके हैं। राजस्थानी भाषा इतनी प्राचीन और समृद्ध है कि इसके अगणित हस्तलिखित ग्रन्थ विभिन्न सग्रहालयों के अतिरिक्त कितने ही लोगों के पास आज भी मौजूद हैं। ऐसी स्थिति में कुछ नये कोष तथा इन कोषों की कुछ प्रतियाँ और उपलब्ध हो जायें तो कोई आश्चर्य की बात नहीं।

श्री उदयराजजी उज्ज्वल, श्री सीतारामजी लाळस तथा श्री अगरचन्दजी नाहटा से हमें कई कोषों की प्रतियाँ उपलब्ध हुई हैं (जिनका उल्लेख यथास्थान कर दिया गया)। श्री सीतारामजी लाळस ने तो इस काम में विशेष दिलचस्पी लेकर 'हमीर नाम माळा' के पाठान्तर निकालने में कई शब्दों पर विचार करने में तथा कई महत्त्वपूर्ण बातों की जानकारी प्राप्त करने में अन्त तक हमारी पूरी सहायता की है जिसके लिये मैं इन विद्वानों का हृदय से आभारी हूँ।

राजस्थान ला वीकली प्रेस के मैनेजर श्री हरिप्रसादजी पारीक ने पूरी दिलचस्पी और परिश्रम के साथ ग्रन्थ के प्रूफ देखे हैं, अनुक्रमणिका बनाने में सहायता की है तथा छपाई सफाई में भी इस प्रकाशन के महत्त्व को समझ कर विशेष ध्यान दिया है जिसके लिए वे हार्दिक धन्यवाद के पात्र हैं।

अन्त में जिन महानुभावों ने जिस किसी रूप में हमें सहायता प्रदान की है उन सब का आभार प्रदर्शन करना मैं अपना कर्त्तव्य समझता हूँ।

—सम्पादक

पर्यायवाची कोष—१

डिंगल नांम-माला

कवि हरराज विरचित

(८) छन्दपूर्ति के लिए कई निरर्थक शब्दों का प्रयोग करना भी आवश्यक था प्रत्येक कवि ने अपनी इच्छानुसार छन्दपूर्ति करने की कोशिश की है। कई कवियों ने कम-से-कम अपनी के शब्दों को स्थान दिया है पर कई ने अपने नाम की छाप लगाने को समाविष्ट कर ली है। शब्दों के पर्याय लिखते लिखाते आदि शब्द रूप में गति उत्पन्न करने वाले प्रयोग हुए हैं। इस तरह के शब्दों के पर्यायों का लिया गया है।

आज के प्रजातान्त्रिक युग में भाषा और समाज के सम्बन्धों में बदलने के पश्चात जब हमारी राष्ट्रभाषा और प्रान्तीय भाषाओं की उन्नति के लिए प्रयत्न होने लगे हैं तो करीब बड़ करोड़ मानवों की भाषा अत्यन्त महत्वपूर्ण और विचारणीय हो गया है। ऐसी स्थिति में आधुनिक के साथ-साथ उसके व्याकरण, शब्दकोश तथा भाषा के क्रमबद्ध इतिहास बहुत आवश्यक है। राजस्थानी भाषा का व्याकरण तो प्रकाशित हो चुका शब्दकोश तथा भाषा के इतिहास पर भी राजस्थान के विद्वान बहुत लगन से लगे हैं। ऐसी स्थिति में इन छन्दबद्ध कोशों का प्रकाशन एक महत्वपूर्ण प्रामाणिक काम करेगा। वर्तमान परिस्थितियों में इनकी विशेष उपादेयता को ध्यान में रख प्रकाशन किया जा रहा है यद्यपि विभिन्न भारतीय भाषाओं में अन्तर्प्रान्तीय स्तर पर शोध-कार्य में भी इनकी अपनी उपयोगिता है।

प्राचीन ग्रन्थों की बहुत छानबीन करने तथा राजस्थानी भाषा के जाने-माने विद्वानों से सहायता लेने के बावजूद भी हम केवल ६ कोश उपलब्ध हो सके हैं। राजस्थानी भाषा इतनी प्राचीन और समृद्ध है कि इसके अगणित हस्तलिखित ग्रन्थ विभिन्न संग्रहालयों के अतिरिक्त कितने ही लोगों के पास आज भी मौजूद है। ऐसी स्थिति में कुछ नये कोश तथा इन कोशों की कुछ प्रतियाँ और उपलब्ध हो जाएं तो कोई आश्चर्य की बात नहीं।

श्री उदयराजजी उज्ज्वल श्री सीतारामजी लालस तथा श्री अगरचन्दजी नाहटा से हम कई कोशों की प्रतियाँ उपलब्ध हुई हैं (जिनका उल्लेख यथास्थान कर दिया गया)। श्री सीतारामजी लालस ने तो इस काम में विशेष दिलचस्पी लेकर 'हमीर नाम-माळा' के पाठान्तर निर्धारण में कई शब्दों पर विचार करने में तथा कई महत्वपूर्ण बातों की जानकारी प्राप्त करने में अन्त तक हमारी पूरी सहायता की है जिसके लिये मैं इन विद्वानों का हृदय से आभारी हूं।

राजस्थान लॉ वीकली प्रेस के मैनेजर श्री हरिप्रसादजी पारीक ने पूरी दिलचस्पी और परिश्रम के साथ ग्रन्थ के प्रूफ देखे हैं अनुक्रमणिका बनाने में सहायता की है तथा छपाई सफाई में भी इस प्रकाशन के महत्व को समझ कर विशेष ध्यान दिया है जिसके लिए वे हार्दिक धन्यवाद के पात्र हैं।

अन्त में जिन महानुभावों ने जिस किसी रूप में हमें सहायता प्रदान की है उन सब का आभार प्रदर्शन करना मैं अपना कर्तव्य समझता हूं।

—सम्पादक

अथउ डिंगल नांम-माला

राजा नांम

पार्थिव न्योणीपति राज भूपाण रायहर,
नरवर ईम नरेंद भांणकुळजा महिराणवर।
प्रजापाळगर (नांम)[1] जगतमावीत्र अजादे,
धणीमाळ—चोधार[2] भारभुज सिंह (मुनादे)।
अणवीह (काज) गांजागिरै सूरपति नरसिंह (कहि),
(कर जोड़राव हरियंद लहि) राण राव (चे नांम सहि) ॥—१

मंत्री नांम

मंत्री गूढ़ा-वाच बुधिवळ लायक (दखे),
सचिवां (फिर) सचिवाळ राजअंग धारसु (नग्ये)।
प्राभोपुरन प्रधांन दांणपुरधांण पुरोहित,
विरतीचख वरियांम फोजआभरण (जांण) मित।
अंकहूंतलेखाळ (कहि) मरद वजीरां जोवगुर,
(कर जोड़ एम पिंगल कह्यो तिम रूपक हरियंद कर) ॥—२

जोधा नांम

सिंह सूर सामंत जोध भुजपाळ घड़ीभिड़,
(भिड़ै) फौजगाहणां वेढ भींचां जोधार गिड़।
अणीभमर वधिसमर अछरवर हंसा[3] (अखां),
सबळ-दळां-गाहणां सूरमंडळ-भिद (सखां)।
रूपफौज (भूप आगळ रहै कवि पिंगल अे नांम कहि),
जोधार (जिसा भीमेण ज्यों) महा अडिग कमधांण (महि) ॥—३

हाथी नांम

दंती (कहि) दंताळ अेकडसण लंबोवर,
द्विरद गैंवरो द्विप्प गंधमद (जांण) गल्लवर।

---

१ इन कोष्ठकों वाले शब्द छन्द-पूर्ति आदि के लिए प्रयुक्त हुए हैं।

२ धणीमाल चोधार=धणी-माल, धणी-चोधार।

३ 'हंसा' शब्द अधिकतर अप्सरा के लिए प्रयुक्त होता है। पर शास्त्रों में योद्धा को विदेह कहा गया है। अतः 'हंसा' का अर्थ योद्धा भी हो सकता है।

मुडाउड　मुडाळ　मत्त　मातंग　गजोवर,
नाग　कुंजर　भग　करी　वारणा　करीवर।
दंतुर दंतुल (फेर दंत चवि) धाडोळो चरणचवुं,
(पिंगल प्रमाण कवि पेखिय) गात्रमेल नागाण (गनि)॥—४

घोड़ा नाम

वाजि वाह वाजाल पंग पखाळ विपखी,
जवा (कहि) अर्वंत हय गधर्व बलस्वी।
त्रिपद सैंधव तेज ताज तेजी वानायुज,
कावीजो हंसाळ जवण पुछाळ जटायून।
हैवर मनउपयग (मुणि) रेवंत सैंग खुरताळरा,
मावकर्ण चल्कर्ण (सहि) पवणवेग पथाळरो॥—५

रथ नाम

वाहण सकट वडाळ अगे गाडो गाडाली,
सतअंगो (कहि) मम्म (फेर) स्यदन सादाली।
चक्रणधुर चक्राळ भारवह गात्र (भणिज्जै),
वाहळ (कहि फिर) वहळ माभवत रथ सु (मुणिज्जै)।
अश्वरूढ व्रखरूढ (कहि) अकुसमुख गजरूढ (गिण),
(कहि हरियद) वाणावळो दसचरण दुधार (भण)॥—६

वृखभ नाम

सौरभेय सीगाळ (कहि) व्रखभ अनड्डहो (गाइ),
धरिधारण कधाळधुर वाहण-सभु (कहाइ)॥—७

तरवार नाम

असि करवाणा खग (भटा) करवाळा तरवार,
वीजळ सार दुधार (वदि) लोहसार भटसार॥—८

कटारी नाम

सर्पजीह दुवजीह (दव) कोरट सार कटार
महिखजीह कुनळमुखी हृय्यहेक (अणहार)॥—९

फरी नाम

फरी चर्मफालिक (कहो) रख्यावण (अरुभाण),
सहण सुमण गज सहम (कहिभणे) गोळ जिम माण॥—१०

पुहकर अवर परठ अनग्गि नभ (फिर अख्य),
गगन (नाम) गग-भ्रम ग्रनन सुरमारग (गख्य)।
ग्रनराळ अबराळ (कहि) अन्द्रर-ऊपर-गावरा,
(कर जोड अेम हरियंद कहि नमो तेय) धर-नावरा ॥—१५

पाताल नाम

अभो-भुवन पाताळ (ग्रहा कहीजैं जिण वळि रो),
नागलाक निरवाण कुहर (कहि निण) रसतळ (रो)।
मुसरा-मारग-सरस विवर (जिण थी वासाग),
गरता अवटा गरट (जेय फिर) जळनीवाण।
अधकार धाकार (कहि ता मिश्रा चँ तोलिय),
(कर जोड अेम हरियंद कहि अे पाताळा बोलिय) ॥—१६

अपसरा नाम

सुरवेस्या (कहि) अच्छरा उरव्वसी (अभिराम),
मेनक रभ घ्रनायची मुकेसी तिलनाम ॥—१७

किन्नर नाम

अस्वमुखा किन्नर (कहो जे घोहड हदे नाम),
(ते मुख हूती जोडिजैं मयु किन्नर अभिराम)[1] ॥—१८

समुद्र नाम

समुद्रा कूपार अवधि सरितापति (अख्य),
पारावारा परठि उदधि (फिर) जळनिधि (दख्य)।
सिधू सागर (नाम) जादपति जळपति (जप्प),
रतनाकर (फिर रटहु) खीरदधि[2] लवण (सुथप्प)।
(जिण धाम नाम जजाळ जे मटमिट जाय ससार रा,
निण पर पाजा बधिया अे तिण नामा तार रा) ॥—१९

परबत नाम

महीधरा कूभर (मुणो) सिखिर द्रुखन (चय सोय),
(घर) पर्वत धारीधरा अग्रग्राव गिर (जोय) ॥—२०

---

१ घोडे के सभी पर्यायवाची शब्दों के आगे मुख शब्द जोड देने से किन्नर के पर्यायवाची शब्द बनते है, जैसे—रेंवतमुखा, तुरगमुखा आदि-आदि।
२ खीरदधि लवण=खीर दधि, दधि-लवण।

ब्रह्मा नांम

धाता ब्रह्मा (धार) जेष्ठसुर अतम-भवनं,
परमाइस्ट परठ पितामह हिरण-उपवनं।
लोकईस ब्रह्मज (कज्ज) देवांण (सुकरियं),
(धराहेत किह धुनि) चतर चतारण (चवियं)।
विरंच (नांम वाखाणियं) वछचोर साहोगमन,
(कर जोड़ अेम हरियंद कहि जे सतां वासिट चवन)॥—२१

विस्णु नांम

नारायण निरलेप निगुण नांमी नरयंद,
किसनं रुकमणिहार देवगण अहिगण वंदं[१]।
वैकुंठां-ग्रह-विमळ दैत-अरि (कहो) दमोदर,
केसव माधव चक्रपांणि गोविंद लाछवर।
पीतांवर प्रहलाद-गुर कछ-मछ-अवतार[२] (किय),
(कर जोड़ अेम हरियंद कहि नमो नमो जिण वेद गिय)॥—२२

सिव नांम

पसुपति संभू परब्रह्म जोगांण गांणवर,
माहेसुर ईसांण सिवं संकरं त्रिसूलधर।
नागाणंद नरयंद जोग वासिद्द सारविद,
त्रिह्लोचन (रत तास अंग भभूत सुघसत)।
पारवतीपति जख्यंपति भूतांपति प्रमथांपति,
(कर जोड़ अेम हरियंद कहि नमो नमो) नागांपति॥—२३

देव नांम

जरारहित (जिण अंग सोभा आकासं),
आदितपुत्र (अहिनांण अखिल सुरलोक अवासं)।
अमृत-पान-आधार विवुध (कहि) दानव गज्जं,
(अंगां आभा अमळ रोम तारागण सभर्भं)।
(तेतीस कोड़ संख्या तवी सेससिरोमण मांहि सहि,
कर जोड़ अेम हरियंद कहि कुसललाभ देवांण मयि)॥—२४

---

१ देवगण अहिगण वंदं=देवगण-वंदं, अहिगण-वंदं।

२ कछ-मछ अवतार=कछ-अवतार, मछ-अवतार।

दूहा

मोई ग्रथा थी सुण्या, जोई वरिणय जाण।
मोई जोई धर सुकवि, ग्रादि अन अहिनाण ॥—२६

धू अवर जा लग धरा, रिवू राम ज्या राज।
ता पिगल अखी तवा, सकल सिरोमणि साज ॥—२७

इति श्री महाराजाधिराज महारावल श्रीमाल
पात्पति तस्यात्मज कुँवर सिरोमणि हरिराज
विरचिताया पिगल सिरोमणौ उडिगल नाम-
माला चित्रक क्यत नाम सप्तमोध्याय।

●

स० १८०० वर्षे श्रावण सुदि ६ चन्द्रवारे लि प्रो दुर्गादास
गुमानीराम। सेवग वसुदेवजी तत्पुत्र सदाराम पठनार्थं।

पर्यायवाची कोष—२

नागराज डिंगल-कोष

नागराज पिंगल विरचित

नागराज डिंगल - कोष

अगनी नांम

धिधक धोम वनि दहन जळण जाळण जाळानळ,
हुतासण पावक भोम सुरांमुख उळत अळियळ।
मंगळ अगनी जुनी कपीठ दावानळ (देखहु),
साथण[1] क्रोध समीर हाडजळ अनळ अदोखहु।
वेदजा कुण्ड हुतभुक वहन अधर असम (इण विध वही),
(कव कवत अेह पिंगल कहै तीस नांम) जाळानळ (सही) ॥—१

इन्द्र नांम

मघवा इन्द्र महीप दीप (सुरलोक) आखंडळ,
सचीराट सामन्त वैर वैत्रासुर-तंडल।
कौशक धारणवज्र पाकसासन जववेदी,
परुहुत कळग्रच्छकेळी काराग्रह-राक्षसकैदी।
(तस पुत्र जयंत सुतपाभगत) कळधारण विरखाकरण,
(कव कवत अेह पिंगल कहै बीस नांम) इन्दरह (तण) ॥—२

सुनासीर सुरईस सहसचख (जिमा) सचीपति,
पराखाड़ दुरातसत्य पाकसासन पूरबपति।
रिपवळी रिखव स्वराट हरी वासव जळधारी,
त्रिखा हलमि विवह मेघवाहण वरनारी।
सत्यमृत्यु सूत्राम निरध्यक्रव अछरवर आखंडळी,
उग्रवन्त इन्द्र विडोजा हरि (इन्द्र नांम इण मंडळी) ॥—३

हाथी नांम

एरापत गज सहड सिंधुर मातंग गणेसर,
सारंग कुंकम करी अथग फौजां-अग्रेसर।
तंवेरव सूंडाळ ढीलढ़ाळो ढळकंतो,
देवळ-थंभो (दुरस मेर) हसत महमंतो।

---

[1] साथण क्रोध समीर=साथण-समीर, साथण-क्रोध।

गज-मावज (कहिये) गहीर कौमक-वाहण अनुर-श्रम,
(कव कवत ग्रेह पिंगल कहै वीस नाम) गजराज (इम) ॥—४

ऊट नांम

गिडग ऊट गघराव जमीकरवन जाखोडो,
फीरानाखतो (फवत) प्रचड पागळ लोहतोडो।
ग्रणियाळा उमदा ग्राखरानवर -(ग्राछी),
पीडाढाळ प्रचड करह जोडरा काछी।
(उमदा) ऊट (ग्रति) दरक (द्रव) हाथीमोला मोलघण,
(कव कवत ग्रेह पिंगल कहै वीस नाम) ऊटा (तण) ॥—५

समुद्र नांम

उदध ग्रव ग्रणयाग ग्राच उधारण ग्रळियळ,
महण (मीन) महराण कमळ हिलोहळ व्याकुळ।
वेळावळ ग्रहिलोल वार ब्रहमड निधूवर,
ग्रकूपार ग्रणथाग समद दध सागर सायर।
ग्रनरह ग्रमोघ चइलव ग्रलील बोहत ग्रतेरुडूववण,
(कव कवत ग्रेह पिंगल कहै बीस नाम) सामद (तण) ॥—६

घोडा नांम

वाज तुरग विहग ग्रसव ऊडड उनगह,
जगम केकाण जडाग राग भिडग पमगह।
तुरी घोडो तोखार बाज वरहास (वखाणो),
चीगो रहीचाळ वरवेरण (वखाणो)।
(बावीस नाम वाणी बोहत कवि पिंगल कीरत कही),
(ग्रथ ग्राद देखे मता) सवळ (नाम सारा सही) ॥—७

धरती नाम

तुगी वसुधा इळा भोम भरथरी भण्डारी,
खाक जमी दरदरी धरती धूतारी।
मही मूळा रिणमडप मुगन वेहरी खिणबाळी,
ग्रचळा उदै गिरधरण सुयर सुन्दर सोहलाळी।
ग्रटळज भूला चिगरज गिरद (घासाजण भूपत घणा),
(कव कवत ग्रेह पिंगल कहै तीस नाम) प्रथ्वी (तणा) ॥—८

तरवार नांम

खांडो किरमर खाग खड़ग चांद्रन धाराळी,
सुधदट्टी समसेर माळबन्धण मूठाळी।
कड़ेधारी केवाण बिजड़ धांणास चमक्की,
तोल भूप तरवार भगत धासूधर नवकी।
किरमाळ सूर-झटका-करण (घणू मरद बांधे घणा),
(कव कवत अेह पिंगल कहै तीस नांम ज्यांरे तणा) ॥—९

महादेव नांम

ईसर सिव हर अंब अगत्र-भुज असा कपाळी,
संभु रुद्र भूतेस त्रयण तोड़ण ससताळी।
अेकलिंग लोदंग गंगसिर भंग-अहारी,
नीलकंठ सुरनैण वाणपत्नी जटधारी।
गिनमतथ विहारी मूळहृथ गिरजापत वामव (गिणा),
(कव कवत अेह पिंगल कहै तीस नांम) संकर (तणा) ॥—१०

भाला नांम

भालो सेल अभाग झळळ ऊझेळ सावजळ,
कूंत अणी असि (काज) अलळ झाळांमुख मावळ।
खिवण डहण आतसंभ ग्रहण-वैरी उग्राहण,
साविण....छड़ाळ नांग गांजा चौधारण।
वळकती-फेळ लसकर (वळे) करणपोत हसती-कणा,
(सांम रै सुकर सोहै सदा तीस नांम बरछी तणा) ॥—११

सूरज नांम

तरण दिवायर तिमहर भांण ग्रहपती भासंकर,
हीर जुगण मिण महर रसण आराण रातंवर।
रानापति दिव विव मित्र हर हंस महाग्रह,
पिंगळ विरळ पतंग धीर सांमळ जगचख्खह।
आदीत उदोत सपत हरमोद समंडळ चक्रधर,
(छतीस नांम) सूरज किरमाळ ज्योत विरोचन तिमरहर ॥—१२

आंख नांम

चरस आंख चामणी नैत्र दिग नजर निरम्मळ,
लोचण कायालज जोय रतन कायाजळ।

गज-मावज (कहिये) गहीर कौमक वाहण प्रतुर-श्रम,
(क्व कवत श्रेह पिंगल कहै बीस नाम) गजराज (इम) ॥—४

ऊट नाम

गिडग ऊट गघराव जमीकरवत जाखोडो,
फीगनाखना (फवत) प्रचड पागळ लोहताडो।
घणियाळा उमदा ग्राखरातवर (ग्राछौ),
पीडाढाळ प्रचड करह जोडरा काछौ।
(उमदा) ऊट (प्रति) दरक (द्रव) हाथीमोला मोलधण,
(क्व कवत श्रेह पिंगल कहै बीस नाम) ऊटा (तण) ॥—५

समुद्र नाम

उदध श्रव श्रगथाग ग्राच उधारण ग्रळियळ,
मह्रण (मीन) मह्राण कमळ हिलोहळ व्याकुळ।
वळावळ ग्रहिलोल वार ब्रहमड निघूवर,
अकूपार श्रगथाग समद दध सागर सायर।
ग्रनरह ग्रमोघ चडसव ग्रलील वोहत ग्रतेरड्डववण,
(कव कवत ग्रह पिगल कहै बीस नाम) सामद (तण) ॥—६

घोडा नाम

वाज तुरग विहग ग्रगव ऊडड उनगह,
जगम केकाण जडाग राग भिडग पमगह।
तुरी घाडो तोखार वाज वरहास (वखाणो),
चीगा रहीचाळ वरवेरण (वखाणो)।
(बावीस नाम वाणी वोहत कवि पिंगल कीरत कही),
(ग्रथ ग्राद देखे मता) सवळ (नाम सारा मही) ॥—७

धरती नाम

तुगी वसुधा इळा भोम भरधरी भण्डारी,
गार जमी दरदरी धरती धूनारी।
मही मूळा रिणमइप मुगत वेहरी निराधारी,
मवळा उर्वी गिरधरण सुथर सुन्दर सोहणाळी।
धरळज भूला निगरज गिरद (धामारण भूपन घणा),
(क्व कवन श्रेह पिंगल कहै तीम नाम) प्रथ्वी (तणा) ॥—८

सूंडाळ सकज (ओपी) सथिर (घणू विसद आगळ घणा),
(कवि नागराज पिंगल कहै वीस नांम) हसती (तणा) ॥—१७

मेघ नांम

पावस प्रथवीपाळ वसु हब्र वैकुंठवासी,
महीरंजण अंब मेघ इलम गाजिते-आकासी।
नैणे-सघण नभराट श्रवण पिंगळ धाराधर,
जगजीवण जीभूत जलढ़ जळमंडळ जळहर।
जळवहण अभ्र वरसण सुजळ महत-कळायण (सुहामणा),
परजन्य मुदिर पाळग भरण (तीस नांम) नीरद (तणा) ॥—१८

चन्द्र नांम

निसमंडण निसनैण सोम सकलंकी ससिहर,
राजा रतन निरोग इंदु दुज जटा-अमीझर।
मयंक अगाअंक अम्ब नरजपूरी तारापत,
रोहणीवर राकेस किरण-ऊजळ सकळीव्रत।
वादल[1] कमोदी निसचरण प्रमगुरु उडूपती सीमंग (सुय),
चकवी-वियोग चकोट विधु चन्द (नांम) सुभ्र (सन्नदुय) ॥—१६

पुनः सिंह नांम

गजरिपु साहल ग्रीठ वांण वनराज कंठीरव,
पंचायण गहपूर वाघ (जच) सिख भुभारव।
महाताव अगराव सीह कंठीर संहारण,
काळ कंकाळ नहाळ दुगम दाढ़ालह डारण।
अमल मयंद अणभंग हरी मंगहदी जख अगमारण,
पंचाण (सित पिंगल कहै तीस नांम) केहर (तणा) ॥—२०

• ● •

१ 'वादल' शब्द का अर्थ चन्द्रमा होने में संशय है।

कामगीठ कटाक्ष रार मोहन मनरजन,
(काम मित्र काज भजन) मिमल जगमाळग।
(बावीस नाम बांगी बोहत जागग गुहियग रहै),
(वय ववन श्रेह पिगल कहै श्रयनवीस) चक्षु (चहै) ॥—१३

सेर नाम

अगपत आननपच सिंघ सादूळ मनग-रिप,
विदर-ग्रह कठीर (लाइ) दीरघ-छल करछिप।
लोहलाठ लकाळ भूप-वन रिण-नह-भागह,
सनमुख-भाला गहण जोग एकवळा (जगह)।
केसरी सिगकर चोळचख हुढगाव आवद्धनख,
सारग (नाम सिगल) मगज अयनवीस (मझा दिगत) ॥—१४

गरुड़ नाम

गुलपावाहन (मरम) दुरस खगराज (दरसिये),
नागान्तक निखळ मरनभानह (गुण प्रसिये)।
वेन-तनय लघुअरुण चरणाढ़ं भुजा-वेद-चत्र,
वायु-विरोधी जनीवाह कसप-तनु हेवव।
तारक्ष भक्ततारणतरण (सीतहरण सीताममर),
(वसुअयन नाम पिगल बचन) गरुड (नाम गाढ़ा गुयर) ॥—१५

पाणी नाम

भू अल हर अब भव तरग अजण जोनवळ,
रग पाणी टाल्व भोमीनळ है सेतवळ।
नीर वार नीलठा छापि सी थट्ट बधाणी,
नर अतर नीचय पणग पयोहवा आणी।
भरनाळ अमुत उदग गगजळ उजळ सीतळ (अखही),
(तीस नाम पाणी तणा कवन श्रेट पिंगल कही) ॥—१६

पुन हाथी नाम

एरापत गज सिहर सिघुर गण खभ गणेसुर,
मदकरण उदमह (वर्ण) अगखभ वणेसुर।
ढाह ढोह ढीचाळ ढाळो ढळकतो,
अतीसील आवरत मैर हसती मयमतो।

हमीर नांम-माला

हमीरदान रतनू विरचित

श्री गणेसाय नमः श्री सारदाय नमः

अथ हमीर नांम-माला

गीत वेलियो

गणेस नांम

गणपति हेरंव लंवोदर गजमुख,
सिद्धि-रिद्धि-नायक[1] वुद्धि-सदन।
एकदंत[2] सूंडाळ विनायक,
परमनंद[3] (हुयजै प्रसन्न) ॥—१

पारवती नांम

(तूझ) मात[4] गोरी पारवती, हरा संकरी[5] वीस-हत्थी[6]।
उमा अपरणा अजा ईसरी, काळी गिरजा सिवा (कथी) ॥—२
देवी सिंघ-वाहणी दुरगा, जगजणणी[7] अंविका (जिका)।
भगवंती चंडका भवानी, त्रपुरासुर-स्यांमणी[8] (तिका) ॥—३
माहेस्वरी तोतळा[9] मंगळा, सरवांणी त्रसकत[10] सकत।
तुलज्या[11] त्रिलोचना कात्यायनी, महमाया (हुयजे मदति) ॥—४

मूसा नांम

मूसक[12] ऊंदर[13] खणक सुचीमुख, वजरदंत आखू असवार।
देवां-आगीवांण[14] (हुकम दे भणू सुजस राधा-भरतार) ॥—५

सरस्वती नांम

भाख गी सरस्वती भारती, वाक्य गिरा गो वच वचन।
व्रह्मांणी सारदा सुव्रांणी, धवळा-गिर-वासणी (धन) ॥—६

(अ) : ५ संकरा ६ वीस-हथि ७ जगजननी।
(व) : १ सिध-वुधिनायक २ एकरदन ३ परमनंदन ४ तुहिज मात ८ सुरसांमिणी ९ तोतंला॰ १० त्रिसकति ११ तुलजा १२ मुस्यक १३ ऊंदिर १४ देवां-आगेवांण।

असुर-दहण[1] धर-भार-उतारण,
भू-तारण नरसिंघ[2] सधीर।
वासुदेव केवल जदूवंसी,
[विसन किसन अविगत बळि-वीर]* ॥—१३

मुरळीधर सुंदर वनमाळी,
गोकळनाथ चरावण-गाय।
[निराकार निरगुण नारायण]†,
[रुकमणकंथ सिरोमण-राय]§ ॥—१४

रीखीकेस[3] राघव सारंगी,
सुरनायक असरणसरण।
पुरखोतम[4] धारण-पितांवर,
वारिजलोचण घणवरण ॥—१५

घणनांमी अवगति[5] आणंदघन,
आदपुरख[6] ईसर अखळीस।
चिदानंद पावन अघमोचन,
जनम-मरण-मेटण जगदीस ॥—१६

सारंगधर गिरधर जगसांई[7],
अलख अगोचर अजर अज।
भवतारण भैहरण त्रभंगी[8]।
धणी महणमह गरुड़धज ॥—१७

व्रंदावनवासी व्रजवासी,
अवणासी[9] अवतार-अनेक।
जोतस्वरूप[10] अरूप निरंजण,
अणहद-सबद[11] परमपद एक ॥—१८

पतराखण श्रीपत सीतापत,
निकळंक निगम निरोत्तम (नांम)।

(घ) : २ नसंघ ३ रुखीकेस ४ पुरसोतम। * [विस्वक सेन विसन वलवीर]।
§ [रुखिमिणिकंत सिरोमणि-राय]।

(व) : १ असुर-वहण ५ अविगत ६ आदिपुरसि ७ अकलीस ८ जलसांई ९ त्रिभंगी
१० जोतिसरूप ११ अनहद। [† निकलंक निराकार नाराइण]।

हस नाम

चक्राग्रग धीरट मुक्ताचर मानमूक[1] अदिदान[2] मराळ,
हस सुचक्रि लीळग वाहणी (नपा रावि जिम कथा नपाळ[3]) ॥—७

बुधी नाम

धी प्रज्ञा[4] मनीखा धिखणा,
मधा आसय[5] समझ मति।
अक्लि[6] चातुरी सुबुधी (आपजै,
प्रभणा गुण त्रिभवण-पति) ॥—८

परमेस्वर नाम

त्रभुवणनाय[7] रणछाड त्रिविक्रम[8],
कमव माधव कृष्ण[9] किल्याण[10]।
परमेस्वर करतार अपपर,
प्रभु परम गुरू पुरिखि-पुराण[11] ॥—९

हर[12] रघवस[13] विसभर नरहर,
गोविद जगतारण[14] गोपाळ।
मोहण वाळमुकद मनोहर,
देव दमोदर दीनदयाळ ॥—१०

कानड रासरमण करुणाकर,
अन्तरजामी अमर अनत।
वीठळ व्रजभूखण लिखमीवर[15],
भूधर भगतवछळ भगवन ॥—११

सामळ कमळनयण मधुसूदन,
धरणीधर सेवग-साधार।
वामण[16] वळिव्रधण जगवदण,
कमनिकदण नदकुमार ॥—१२

(अ) ४ प्रागिरा ५ आसई ६ अक्ल ८ अविक्रम ११ पुरख-पुराण १२ ;
१३ रघुवस १४ गजतारण १५ लिखमीस्वर १६ वावन।

(ब) १ मानमोक २ अदत्तान ३ कृपाल ७ त्रिपुरणनाय ९ किसन १० कल्याण

पीत्रण-जहर[1] गिरीस कपरदी ,
धमळ-ग्रारोहण[2] गंगधर ॥—२५

सूरज नांम

(सत-रज-तम-गुण विष्ण ब्रह्म सिव ,
ग्रण देवत वसुदेव तण) ।
जोत-प्रकासण कोटि सूरज (जिम) ,
कमळ-विकासण दिनकरण ॥—२६

मारतंड हरिहंस गयणमिणि ,
वीरोचन रांनळ[3] सुंवर ।
[भांण ग्ररजमा पतंग भासंकर]* ,
[कासिप-सुतन रवि सहसकर]† ॥—२७

प्रभा विभाकर वरळ ग्रहांपत ,
ग्ररक करम-साखी ग्रादीत ।
मित्र चित्र भाणू ग्रंसुमाळी ,
प्रद्योतन उद्योत प्रवीत ॥—२८

विवसवांन दुतिवांन विभावसु ,
तरण तपन सविता तिगम[4] ।
रातंवर भगवांन निसारिप ,
जनक‡ - जमण - सिन - करण - जम ॥—२९

[उस्म-रस्म ग्रहिमकर विधिनयण]§ ,
दुणियर तपघण[5] मिहर[6] दिनंद ।
(धन वडिम गोव्रधन धारण ,
चख यक सूर वियोचख चंद) ॥—३०

चंद्र नांम

सोम सुधांसु सिसि सिस्सिहर ,
कळानिधि उडपति[7] सकळंक ।

(ग्र) : १ पीवण-जहर २ धवल्-ग्रारोहण ३ रांचल ४ तिग्म
* [भांण ग्ररकमा पतंग भास्कर] † [कासिप सुत रवि सहसकर] ।
(व) : ५ दिणियर ६ महर ७ उडपत § [नसन रसमि ग्रहमकर ग्रधन ग्रेनि] ।
‡ जनक-जमण , जनक-सिन , जनक-करण , जनक-जम ।

लकल्यिग सहादर ल्खिमण,
रुघराजा रावण रिपु राम ॥—१६

पदमनाभ चत्रभुज चत्रपाणी,
मछ कछ आदि-वाराह मुरारि।
पार अपार सकळ जगपाळक,
वहोनामी[1] (सूरत वळिहार)[2] ॥—२०

ब्रह्मा नाम

[ऊ ओ ब्रह्मा आतमभू]*,
विधि कोलाळी चत्रवदन।
धाता वेधा दुहिण विधाना,
वेद-भद-समभण-वचन ॥—२१

परमेसटी विरच पितामह,
कमळासण कमळज लोकेस।
(कं) सुरजेठ हस जगकरता,
हिरण गरभ[3] अज जनक-महेस ॥—२२

सिव नांम

सरव महेस ईस सिव सकर,
भव हर वोमकेस भूतेस।
सभू अचलेसर[4] कोटेसर[5],
जागमर[6] जटधर जोगेस ॥—२३

महादेव रद्र भीम पचमुख[7],
सामी[8] चद्रसेखर[9] समराथ।
धूरजटी श्रीकठ प्रमथाधिप[10],
नीलकठ पारवतीनाथ ॥—२४

[त्रिबक भारग पिनाखी त्रिनयण][†],
वामदेव उग्र ईसवर।

(अ) ४ अचलस्वर ५ कोटेस्वर ६ जोगेम्वर ८ स्वामी ९ चद्रसिखर १० प्रमुथाधिप।
† [भव-मरव पिनाकी त्रिनयन]।

(ब) १ वहनामी २ मूरति बलिहार ३ हरणि-गरम ७ पचमद्र।
* [ओं ब्रह्मा ओहिज आतिमभू]।

कुलय खगा वाहणी कुल्या,
सिंधु दीपवती संभलाय ॥—३७

[(सरित तणो पती गिणि सायर]*,
मेघ निध तणो मेंहरांण।
सदा वास करि पौढ़ै स्त्रिया,
विसन समंद जामान वखांण) ॥—३८

तरंग नांम

उरमी वेळ किल्लोळ (आखिजै),
(नविजै) भ्रमर हल्लोळ तरंग।
[वेलू छौळ उरमावळि वीची]†,
(भणि) नुनकळी कायळी भंग ॥—३९

(तास नांम) वेळावळ (नवीजै),
वेळा उळधी उजळ वहाय ॥—४०

लिखमी नांम

वेळा-वळधी श्रीया (वचाई),
प्रभा रमा रामा भा पदमा।
कमळा चपळा (ताई कहाई) ॥—४१

लेखवि (नांम) इंदरा लिखमी,
(लिखमी-वर नाइक सुरलोक।
सहिवातां राखै हरि सारै,
थारै भला हुअै सह थोक) ॥—४२

गंगा नांम

जगपावन त्रिपथा जाह्नवी[1],
सुरगनदी सुरनदी (सुचंग)।
सरितिवरा[2] रिखधुनी[3] हरसिरा ॥—४३

गोम-गमरा हेमवती गंग,
सहसमुखी आपगा सुग्सरी।

(अ) : १ जन्हवी २ सरतवरा ३ रिखब-धुनी * [सरता तणो पती गिणा साग(य)र]
† [वेल छोल उमवि वल वीची]।

कुमदब्रघु श्रीब्रघु[1] हेमकर[2] ,
म्रग-अंक दुजराज मयक ॥—३१

सुभ्रकर किरणमनेत समदसुन ,
रोहणी-धव नखत्रेस निरोग ।
इंदू औखदी-ईस अम्रतिमय ,
विधू रतन चक्रवाक-वियोग ॥—३२

प्रमगुण मोल्ह-वळा सपूरण ,
(पौहचि वडी तै बडौ प्रमाण) ।

समुद्र नांम

मथण महण दध[3] उदध[4] महोदर[5] ,
रेणायर सागर महराण[6] ॥—३३

रतनागर अरणव ल्हरीरव ,
गौडीरव दरीआव गभीर ।
पारावार उघधिपत मच्छपति ,
[अथग अवहर अचळ अतीर]* ॥—३४

नीरेवर जळराट[7] वारनिधि ,
पतिजळ पदमालयापित[8] ।
सरसवान सामद ,
महासर[9] अकूपार उदभव-अम्रति[10] ॥—३५

नदी नांम

नदी आपगा धुनी निमनगा[11] ,
परबतजा जळमाळा (पणी) ।
[श्रोताश्रोत श्रवेनी श्रवती][†] ,
तटणी तरगणी (नाम निणि) ॥—३६

वाहा जभाळणी[12] प्रवाहा ,
सेल्वणी निरझरणी[13] मात्र ।

(ख) ७ ब्रल-राम ८ पारमानय-पावन ९ महासूर १० उदध-मथन ११ निहंगा
१२ जबाहणी * [अथ म बहर अनर अनीर] ।

(ब) १ सीमन २ हिमकर, हमरर ३ दधि ४ उदिधि ५ महोदधि ६ महिराण
१३ नीझरणी † [स्रोत श्रोतस्वती श्रवती] ।

पताल नांम

(तवां) वाडवा-मुख प्रिथमीतळ,
पनंग-लोक अध-भुयण पताळ ॥—५०

भूमि नांम

भूमि जमी प्रिथी[1] प्रिथमी[2] भू,
पहवी[3] गहवरी[4] रसा महि।
इळा समंद-मेखळा अचळा,
महि मेदनी धरा महि ॥—५१

धरती वसुह वसुमती धात्री,
क्षोणी[5] धरणी क्षिमा[6] क्षिती[7]।
अवनी विसंभरा अनंता,
थिरा रतनगरभा संथिति ॥—५२

विपळा वसव कु भती वसुधा,
सागर-नीमी सरवसहा[8]।
गोत्रा गऊ रसवती जगती,
मिनखां-मन-मोहणी (महा) ॥—५३

(उरवी मुरपग ले भरिउभौ,
वांमण रूपी ब्राह्मण।
वलि राजा छळि जैण वांधियो,
नमो पराक्रम नारिअण) ॥—५४

धूल नांम

धूळि खेह रज रजी धूसरी[9],
सिकता[10] रेण[11] सरकरा संद।
वेळू रेत पांसु (वाळो),
(मुख जिण हरि न भजै मतमंद) ॥—५५

(अ) : १ पथी २ पथमी ३ पोहमी ४ गहरी ५ खोणी ६ खिमा ७ खित
९ धूंसली १० सिकत ११ रेत।
(व) : ८ सरवसहा।

भागीरथी त्रिपथगा (भाळि),
मदाकनी हरिपदी (महिमा)।
(पवित्र हुई हरि-चरण पखाळि) ॥—४४

जमना नाम

जम-भगनी काळिंद्री जमना,
जमा (वळं) सूरिजिजा (जाणि)।
अप्णा ताम पासि की कीळा,
किसन बाळ-लीला बखाणि) ॥—४५

सरप नाम

सरप दुजीह फणी पवनासण[1],
आसी-विख विखधर उरग।
गरलम भुजग[2] भुजीस भुजगम[3],
पनग[4] सिरीश्रप गूढ-पग ॥—४६

दद-सूक[5] भोगी काकोदर,
कुभीनस दरवीकर काळ।
चील प्रदाकु कचुकी चक्री,
वक्रगती जिह्मग[6] अहि व्याळ ॥—४७

लेल्हिान चखश्रवा विलेसय,
दीरघ-पीठ कुडळी (दाखि)।
(काळिनाग नाथियो कान्हड,
भूपो-भूप तणो जम भाखि) ॥—४८

सेस नाम

अनत यक[7]-कुडळ (वळि) आळूक,
भुजगपती[8] (कहि) महाभुजग।
जीह-बीसहस विसहस-नेत्रजिणि,
पनग-सेस (हरि तणो पलग) ॥—४९

(अ) : १ पवनासन २ भुजग ३ भुजगमु ५ दुदुसूक ६ जिमगी ७ अएक ८ भुअंग-ईस।
(ब) : ४ परग।

पताल नांम

(तवां) वाडवा-मुख प्रिथमीतळ,
पनंग-लोक अध-भुयण पताळ ॥—५०

भूमि नांम

भूमि जमी प्रिथी[1] प्रिथमी[2] भू,
पह्वी[3] गह्वरी[4] रसा महि।
इळा समंद-मेखळा अचळा,
महि मेदनी धरा महि ॥—५१

धरती वसुह वसुमती धात्री,
क्षोणी[5] धरणी क्षिमा[6] क्षिती[7]।
अवनी विसंभरा अनंता,
थिरा रतनगरभा सथिति ॥—५२

विपळा वसव कु भती वसुधा,
सागर-नीमी सरवसहा[8]।
गोत्रा गऊ रसवती जगती,
भिनखां-मन-मोहणी (महा) ॥—५३

(उरवी मुरपग ले भरिउभौ,
वांमण रूपी ब्राह्मण।
वलि राजा छळि जैण वांधियो,
नमो पराक्रम नारिअण) ॥—५४

धूल नांम

धूळि खेह रज रजी धूसरी[9],
सिकता[10] रेण[11] सरकरा संद।
वेळू रेत पांसु (वाळो),
(मुख जिण हरि न भजै मतमंद) ॥—५५

(अ) : १ पथी २ पथमी ३ पोहमी ४ गहरी ५ खोणी ६ खिमा ७ खित
९ घूंसली १० सिकत ११ रेत।
(ब) : ८ सरबसुहा।

वाट नाम

वाट वरतमा गैल वरत्री[१],
पथ निगम पदवी पधिनि[२]।
श्रैन[३] सचरण[४] मारग ग्रथवा,
सरणी सचरण प्रचर सन ॥—५६

(उत्तम राह चालि ग्रहि उत्तम,
वरण दान पुनि ग्रहि सुक्रति।
भाखि साच जग माहि भलाई,
चत्रभुज चरणं राखि चित) ॥—५७

वन नाम

विपन गहन कानन कछ[५] वारिख,
कातार ऊख[६] दुरग (कहाई)।
ग्रारण[७] खड व्रदावन[८] ग्रटवी[९],
(गोविद तेथ चराई गाई) ॥—५८

व्रक्ष नाम

सिखरी फळग्राही ग्रग साखी,
[विस्टर-मही रुह तरोवर]*।
[कुट विटपी महीसुत कीरसकर]†,
घणपत्र पत्री खगाधर ॥—५९

[कुसमद ग्रङ्कुज फळद कराळद]§,
[निद्रा-वरत फळी निनग]‡।
विनरुह रूख ग्रनोकुह दरखत,
ग्रद्री ग्रद्रप झाड-ग्रग ॥—६०

(चीर चोरि तर ऊपर चढियो,
गोपगना तरणा गोपाळ।
ग्ररज करै ऊभी जळ ग्रनर,
दे व्रजभूखण दीनदयाळ) ॥—६१

(अ) : १ वरतणी २ पधीरन ३ स्रोन ४ सचेरण ५ करख ६ भख ७ ग्ररनि ८ वनराअन ९ ग्रटावी * [विसटर द्रुम द्रु तरोवर कूट] † [विट महंवो-सुत महका करमकर] § [कुसमज ग्रदमून फज्ज करानिक] ‡ [निघावरत फमी नवनग]।

फूल नांम

लेखवि[1] फूल मणी-वक हलक,
सुम सुमनस फळ-पिता[2] कुसम।
सून प्रसून कल्हार[3] सुगंधक[4],
नांम रगत संधक नरम ॥—६२

उदगम-सुमना पुसप लता-अंत,
(पुसपति के कहिजै प्रिवित।
श्री रिणछोड़ तणै सिर छौगो,
ईख निजरी भरीजै अम्रिति) ॥—६३

भमर नांम

रोळ-बंव[5] चंचरीक झंकारी,
भ्रमर द्विरेफ[6] सिलीमुख भ्रंग।
कीळालप[7] कसमल-प्रिय मधुकर,
सोरंभचर खटपद सारंग ॥—६४

(दाखि) मधुप हरि (नांम) इंदु-दर,
चाळ मधु-ग्राहक मधु-व्रत।
(पुसप-गंध रस अलिअळ पाळग,
भगतवछळ पाळग भगवंत) ॥—६५

बांनर नांम

मरकट गो लांगूळ[8] वलीमुख,
पलंवंग[9] पलवंगम[10] पलवंग।
कीस हरि वनओक[11] वनर कपि,
साखा-म्रग[12] फळचर सारंग ॥—६६

(तास कटक मेले दसरथ तणा,
लोपि समंद लीवो गढ़ लंक।
मम करि ढील म धरि मन माया,
समरि समरि श्रीरांम निकंक) ॥—६७

(अ) : १ लेखव २ मफल-पित ३ कलवंत ४ मुगंदक ५ रोलंव ६ दुरेफ ७ कलानीप
८ लांगूर ९ अजल १० पलववंगम ११ वनमुक १२ साखा-चर।

हिरण नाम

वातप[1] हिरण एण वातायू[2],
सकु हरि प्रखत कुरग ।
म्रग (रूपी मारीच मारियो,
भुजा भामणो राम अभग) ॥—६८

सूअर नाम

क्रोड आस[3] लागळ (अर) सूकर,
दुगम वाडचर गिडि[4] दाढाळ ।
घ्रोणी (अनै) आखणक घ्रिष्टी,
एकल वहु-प्रज दात्रीडीयाळ ॥—६६

कोल[5] डारपति थूळनास किर
(दाखत) वध-रोमा भू-दार[6] ।
(कहि) दस्टरी सीरोमरमा (कहि),
आदी-वाराह (प्रभू अवतार) ॥—७०

सिंघ नाम

वाघ सिंघ[7] कठीर कठीरव,
सेत पिंग अस्टापद सूर ।
अगइन्द्र[8] (कहि) पारद[9] पचमुख,
पचसिख पचाइण[10] गहपूर[11] ॥—७१

अभग सरभ सादूळ नखायुध,
हरि जख केहरी मगहर ।
महानाद[12] अगपति[13] म्रग मारण,
अस्टपाद गजराज-अरि ॥—७२

(कोपमान नरसिंघ रूप करि,
विकट विराट वदन विकराळ ।
सोखे रगत असुर हरिणाक्रम,
प्रभु प्रहळाद भगत प्रतिपाळ) ॥—७३

(पा) १ वात-रियण २ वातायी ३ आसि ४ गिड ५ कवल ६ भू-धार ७ सीह ८ अगॅद ९ पारइद १० पचायण ११ गहपूर १२ माहानाद १३ वनपति ।

हाथी नांम

गज सामज मातंग मतंगज,
हाथी इभ हसती हसत।
कुंजर सिंधुर करी पौहकरी[1],
मैंगळ दोईरद[2] मद-मसत ॥—७४

गैमर नाग गइंद[3] धैधींगर,
वारण भद्रजाती वयंड।
सारंग कंबु सुंडाळ सिंघळी,
पट-हथ[4] तंबेरव प्रचंड[5] ॥—७५

द्विप हरि व्याळ पटाभ्भर दंती,
कुंभी वेरक यभ अनेकप।
(अनंत संत गजराज उधारण,
जपि गिर-धारण तणो जप) ॥—७६

पीपल नांम

(वदि) चळ-दळ कुंजर-भख अस्वथ,
श्रीव्रख बोधीव्रख सुव्रख।
(प्रथी विखै उत्तम फळ-पीपळ,
परमेस्वर उत्तम पुरखि) ॥—७७

वड़ नांम

वैश्रवणालय ध्रूअ[6] साखा-व्रख,
(गिण) रतफळ वटी[7] जटी निग्रोध।
(पांन प्रयाग वड़ तणै पौढ़ियौ,
सुजि हरि समरि ऊवर करि सोध) ॥—७८

वांस नांम

तुची-सार त्रिधज[8] मसकर तस,
प्रभणां जळफळ[9] सत-परव।

(अ) : १ पुमकरी २ दोयरहन ३ गयंद ४ पट-हर ५ परचंड ६ ध्रुव ७ वट ८ त्रण-धूज।
(ब) : ९ जव-फल।

(वेग वास वामठी वजागग,
धिनि मोहन गधिका धग) ॥—७६

हरड़ी नाम

पथ्या चेतकी जवा[1] अव्यथा[2],
अभआ[3] सिवा प्राणदा (आखि)।
वायस्था इमरिता[4] काळिका,
(भणि) हिमजा[5] हेमवती (भाखि) ॥—८०

मरवारा[6] जीवती सुरभी,
हरडं रोम तुरजिका (होई)।
(गोई) पूतना (अनें) श्रेयसी,
(कहे) प्रेयसी (नाम सी कोई) ॥—८१

हरीतकी (जिमी रोग हरग हद,
हरि समरग पातिक हरग।
द्वारामती-पती सुख दरगण,
मेटा दुख जामग-मरग) ॥—८२

केसर नाम

पीतन रगत वनी-सिख दीपना,
वाह्लीकजा गुड-वरग।
(कही) सकोच पिसुग (वळि) कुकम,
कसमीरज मगळ-करग ॥—८३

लोहित चदरग देववलभा,
(धर) काळेक (कहे कवि धीर।
केसर तगो तिलक नित कीजै,
विमल भजन कीजै बलिवीर) ॥—८४

चदरग नाम

पनग-पाळ रोहिणी-द्रुम (पगीजें),
सोरभ-मूळ (अनें) गध-सार।

(पा) : १ जया २ प्राप्या ३ अभया ४ इमरता ५ हेमज ६ सुरवारी।

सुनंग[1] सुभाड़ सुगंधक सुरभी,
सीत-रुंख रुंखां-सिणगार ॥—८५

उत्तम-तर[2] मळियातर[3] मलयज,
चील-प्यार श्रीखंड चंदन।
(चंदन कुवज्या आणि चाढ़ियो,
पुरखोतम करिवा प्रसन) ॥—८६

पहाड़ नांम

सानुमांन सिखरीस[4] सिलोचय[5],
धरि-नग अद्री[6] धराधर।
भाखर डूंगर अनड़ दरिभ्रति,
आहारज[7] परवत (अवर) ॥—८७

त्रिकूट मरत पहाड़ गिरिंद (तवि),
अग भंगी भूधर अचळ।
गोत्रग्राव गिरवर गोवरधन,
(करि सिर धारै चख कमळ) ॥—८८

पाखांण नांम

ग्राव धात घण सिला उपल (गिणि),
पाथर असम[8] द्रखद पाखांण।
(नांम प्रताप तारिया जळनिधि,
विधि-विधि भणि जिण रा वाखांण) ॥—८९

सोना नांम

वसू भूतम लोहीतम[9] सोव्रन,
कर-वुर[10] चामीकर कंचन[11]।
सांति-कुंभ[12] गांगेय[13] सेल-सुत,
हेम कनंक हाटक हरन ॥—९०

(अ) : १ सुमंग २ उत्तिम-तरु ३ मलियागर ४ सिखरीक ५ स्यलोचय ६ ईंद्री ७ आहारिज ८ अमर ९ लोहत्तम १० करव ११ कंचन्न १२ सात-कुंभ १३ गंगेय।

गैंरक[1] महारजत[2] (वळि) गाग्ड,
भूर अस्टपद (अरु) भरम।
(नाम) अगिनबीरज जाबूनद[3],
रजन-धात ओपम रुकम[4] ॥—६१

(कह) तपनीय पीतरग कुरमदन[5],
जात-रूप कळधौत (जथा)।
(लाख जुगा लग काटन लागै,
कलक न लागै राम कथा) ॥—६२

रूपा नाम

हस रूपो खिरजूर हिमाशु[6],
सेत रजत[7] दुर-धरणक[8] (सोई)।
जात-रूप कळधोत सार-जग[9],
(हरि सेवियो तिका घरि होई) ॥—६३

तांबो नांम

सुलब धिस्टि[10] कनीअस[11] (अर) सावर[12],
मरकट आसि मलेछमुख।
बरसट मेछ (वळै) ब्रिम वरधन,
रगत उतवर[13] (नाम रुख) ॥—६४
(मद ओखदो परसि तांबो सुज,
सोव्रन धात हुवै ततसार।
राघव तणी परसता पद-रज,
इमि गोतिमि त्रिय हुई उधार) ॥—६५

लोह नांम

किसना-मिख[14] अयं घण काळायस,
सिला-मार[15] तीखण घण सार।

(प्र) १ गारक २ माहारजत ३ जाम्बूनद ४ रुक्म ५ कुनए ६ हिमांशु ७ स्वेत-वरए ८ दुर-जनक ९ सार्दि कल १० धिस्ट ११ कनिस्ट १२ सावक १३ उदमहर १४ कृष्णा-मुख १५ गिर-मार।

[पिंड पारथ करूक पारसव]*,
ससत्रक ससत्र सत्रां-संधार ॥—९६

(खोटण लोह पाप री वेड़ी,
सेवा करी हरि जांणै सही।
कहि खिति निति सपवित्र हरि कीरति,
कीरति वेद पुरांण कही) ॥—९७

मुलक नांम

विखय[1] मुलक रासट उपवरतन,
जनपद नीव्रति देस जनात।
मंडळ (न को अेहड़ो व्रज-मंडळ,
अवतरिया हरि करण अख्यात) ॥—९८

नगर नांम

नगंम पुरी[2] पुर[3] पटण[4] निवेसन,
नगरी पुट[5] पत्तन नगर।
अधिस्थांन[6] अपस्थांन (ईखतां,
सहरां सिर मथुरा) सहर ॥—९९

तलाव नांम

सर वरख्यात पुसकरण[7] सरसी,
पदमाकर कासार (प्रमांण।
सिरहर अचसरां नारियण सिर,
वडो) तळाव तडाग जीवांण ॥—१००

नीर नांम

नीर खीर दक उदक कुलीनस,
कं पौहकर[8] घणरस कमळ।
अरुण पाथ पय मेघपुसप अप,
जीवन (जा दिन पास) जळ ॥—१०१

(अ) : १ विखै २ नभ-पुरी ३ पुट ४ पाटण ५ पुट-भेदण ८ पूकर।
* [पिंड पथर-सुत रूपक पारसव]।
(ब) : ६ अधिस्ठान ७ पौहकर।

मलिल[1] अरीट[2] भुवन सर सवर,
प्रार[3] कवध कुस[4] विस ग्रम्रति[5] ।
मळमजण कीलाळ मरवमुख,
पाणी पाणद वन (प्रविति) ॥—१०२

अव[1] वार गग तोइ[2] धोई-अग,
(वरि श्रीअमन तगा कै वार।
उत्तम होई जनम-अम आतम,
सगम तरै दधि विमम मसार) ॥—१०३

कमल नांम

महसपत्र सतपत्र कुसेसय,
पंकेरुह पकज पदम।
नलणी जळज नालीन कोकनद,
जळरुह जळरुट जळजनम ॥—१०४

सर-जनमा सरदड सुधारस,
कुवलय सरसीरुह कमळ।
पुडरीक उतपळ हर पोहकर,
पिता-विरच महोतपळ ॥—१०५

राजीव कज सरोज तामरस,
विस-प्रसून[8] नीरज अरविंद[9] ।
वारज अबुज नयण इदीवर[10],
(नमा पराक्रम मथुर-नरद) ॥—१०६

मछी नांम

सलकीजा[11] दुख कुळखय कुमळी,
मबर भख सफरी सफर।
अनमिख इदुजयकर अलूकी,
चचळ वारज वारचर ॥—१०७

(अ) : १ मलल २ अरी ३ अबू ४ कुसमई ५ इम्रत ६ मग ७ तोय
८ विम-परसूनि ६ परविंद १० इदवर ११ सलकजा ।

(चवां) आतमारी सिधचारी,
वैसारण खडपीरग[1] विमार[2]।
प्रथुरोमा पाठीन मीन (पढ़ि),
(केवळ मछ रूपी करतार) ॥—१०८

काछिबा नांम

कूरम कमठ काछिबौ कछप,
गुपतिपंचअंग चतुरगति।
पांणीजीवा[3] तुद (वळै) कोडपग,
(प्रगट रूप मुजि जगतपति) ॥—१०९

देवल नांम

देवळ मंडप चैत देवाळय,
हृद धजर प्रासाद विहार।
(मांहि तास सोभै हरि मूरति,
झालिर तणा हुवै झणकार) ॥—११०

धजा नांम

कंदळी वईजयंती कैतेन,
(भणां) जयंता केत (भणाय)।
(ताई) पराका चैहन पताका,
(सिरै धजा हरि देवळ साय) ॥—१११

गढ़ नांम

वप्रवरण भुरजाळ दुरंग (वळि),
परिध शूळ गढ़ चय प्राकार।
(लंका कोट रामचंद्र ले करि,
दांन दिये ग्रैहड़ो दातार) ॥—११२

छड़ीदार नांम

छड़ीदार दरवान उछारक,
हुसियारक हाजिरि[4] प्रतिहार[5]।

(अ) : १ खंडाखीग २ वीसार ३ पांणीजीव ४ हाजर ५ प्रतहार।

द्वारपाळ डडी[1] दरवारी,
(मुजि हरि वळै) पोळियो (मुधार) ॥—११३

घर नाम

ग्रेह[2] ग्रोक ग्रामाम (वळे)[3] ग्रह,
धवळ सवेत निकेतन[4] धाम।
पद ग्रामय[5] रहणाक ग्रामपद,
ग्रालय निलय मिंदर ग्राराम ॥—११४

वास निवास सथानिक[6] वसती,
सदन भवन वेसम सदम।
धिसन अगार[7] (जादवा घर धन,
जिण घर हरि लीन्हौ जनम) ॥—११५

राजा नाम

भूपति भूप पारथव ग्रधिभू,
विभू प्रभू (मनि) ईसवर।
परव्रढ मधि लोकेस देसपति,
सामी भरता नरेसर ॥—११६

नाथ प्रजाप[8] महीपति नाइक[9],
ग्ररज ईस ईसर ईसान।
नरपती नरिंद[10] ग्रधपति[11] नेता,
राव[12] राट राजा राजान ॥—११७

(राम समान न कोई राजा,
सरति न काइ सुरसरी समान।
सती न काइ समोवड सीता,
गीता समोवड नको गिनान) ॥—११८

जुधिष्ठर नाम

भरता नवयराज लखमा[13] (भणि),
कौतयभ ग्रजमीढ कक।

(म) १ दडी २ गेह ३ मरण ४ केतन ५ आश्रम ६ सुथानिक ८ नाथ-प्रजाद
९ खितनायक १० नरद ११ ग्रदप-पति १२ राऊ।

(व) ७ आगार १३ लखमण।

(सुजि) सिलियार अजात-तणोसत्र,
(सोम-वंस राजा अण संक) ॥—११६

पांडव-तिलक पति-हथणापुर,
धरम-आतमज[1] (तास धन)।
(जीहां सांच बोल तौ) जुजिठळ,
(सांच तणो बेली किसन) ॥—१२०

जिग नांम

मन्यु संसर ईसपति (तत) मख,
(तवि) सविक्रत[2] घ्रिति[3] होम वितान।
ज्याग[4] सांतोमि[5] वहुरी अविवर[6] जिगि[7],
जिगन (पुरख त्रिभुवण राजांन) ॥—१२१

भीम नांम

(दाखि) पवनसुत वळण वक्रोदर,
कीचक-रिपि मूंदन[8] किरमीर।
कौरव-दळण[9] भ्रमावण-कुंजर,
(भीम सवळ जैं री हरि भीर) ॥—१२२

अरजुण नांम

धनंजय अरिजन जिसंन कपीधज,
निर - कार - रूपी ब्रहनट।
पारथ सव्यसाची मधिपंडव,
सक्रनंदन विभच्छ सुभट ॥—१२३

गुडाकेस व्रखसेन फाळगुण,
सुनर मोक वेधी-सवद।
राधावेधा सुगत किरीटी,
महोमूर मरदां - मरद ॥—१२४

सेतअस्व सुभद्रेस करण-सत्र,
(सखा तास वसदेव सुत।

(अ) : १ आतमज २ सवक्रत ३ घ्रत ४ जग्य ५ सतोमत्रर ६ अवधर ७ जग।
(व) : ८ मुदन ९ कैरव-दळण।

कवि 'हमीर' जसवास ग्राम वर,
ताप पाप मेटै तुरत) ॥—१२५

धनुष नांम

धनुख वारमुख धनव चाप (धन),
करग पिनाक ग्रमत्र कोदंड[1]।
सकर इषु इखुवास[2] सरासण[3],
(पकडि भाजियो राम प्रचंड) ॥—१२६

बांण नांम

प्रखनक[4] बाण कलब[5] कंकपत्र,
पत्रवाह पत्री प्रदर।
(ईख) तोमर चित्रपूख ग्रजिव्रहमग,
सायक ग्रासुग तीर सर ॥—१२७

ग्रीधपख नाराज मारगन,
रोपरा वसख सिलीमुख रोप।
(पण खग खुर पर राम सज कर,
काटण दस मस्तक करि कोप) ॥—१२८

करण नांम

सूततनय चपाधिप[6] रविसुत,
राधातनय करन ग्रगराज।
(तिण रो पोहर सवार तवीजे,
कियो प्रभू दातार मकाज) ॥—१२९

दांन नांम

प्रतिपायण निरवपण उच्छरजण,
जपि विसरारण[7] विसरजण।
विलसण वगसण मौज विहाइति,
वितरण दत समपण स्रवण ॥—१३०

(म्र) १ कोमड २ इखूवास ३ सरासन ४ प्रकयक ५ कलवक ६ चपादिप
७ विसराणण।

आपण दांन (लंक उचिता-पति,
भगत निवाजण वभीखण।
रावण मरण खयण कुळ राकस,
तिको रांम तारण-तरण) ॥—१३१

जाचिग नांम

ईहण भिखक जाचिन अरथी,
मनरख मांगण मारगण।
जग-आसगर (व) नीयक जाचण,
(तवि दातार दसरथ सुतण) ॥—१३२

दातार नांम

मनमोद मनऊंच महामन,
उदभट त्यागी (प्रगट) उदार।
अपल महेछू उदात उदीरण,
(देवां देव वडो दातार) ॥—१३३

पिंडत नांम

[प्रायंतरु विविस्चति पांडिति,
विधिग धिखिणि कोविद विदवांन।
(गिन) प्रयागिनि वुधि-सुधि दोखगिन,
महाचतुर वेधी धीमांन]* ॥—१३४

सूर क्रस्ट क्रतीलव धवरण-सिन,
विचखण सुलखण विसारद।
विदुख धीर अभिरूप वागमी,
पात्र मनीखी पारखद ॥—१३५

(जांण) प्रवीण कुसळ आचारिज[1],
नैवाडक[2] मतिधग्ग निपुण।
(मोडज महाकवि मुकवि कवेसर,
गिरधारण कहे गुण) ॥—१३६

(अ) : १ आचारज २ नइयाहिक। *[आतम-रूप विवसचित पंडित, विदग रखुणिक कविद बुधिमांन। गिन प्रागिन वुधि-सुधि दोख-गिन, महाचतुर मेधावी मांन।]

जस नाम

जदाहरण सभगिना सुजस,
वरणत सुसबद सबद वखाण।
सधवाद ग्रसतूती सुपारिस,
प्रिसिधि विरद सोभाग (प्रमाण) ॥—१३७

वाच प्रताप त्रिलोक गुणावळि,
कीरति ख्यात (विसेख वही।
राम तणो भूले मत रूपक,
सुर नर समरै नाम सही) ॥—१३८

सूरिमा नांम

कळि जूझार सुभट ग्रहकारी,
चिक्रा-ग्रत तैजसी वीर।
(सूर न कोई राम सरीखौ,
साभण रावण राण सधीर) ॥—१३९

तरवार नांम

ग्रसिवर मडळाग्र खाडौ ग्रसि,
कोखियक निसत्रस क्रपाण।
चद्रहास बाणस[1] धात (चव),
करनाळीक धाव केवाण ॥—१४०

जडळग विजड ग्रजड धारुजळ,
तेग खडग भुजलग तरवार।
किरमर सार रुक खग (हर कहि,
समहर हार जीत हर हार) ॥—१४१

घोडा नांम

धुरज भिडज गधरव (ग्रर) सिंधव,
वाजी वाज पमग विडग।
वाह ग्रग्र[2] चचळ वेगागळ,
तारिख[3] ताजी तुरी तुरग ॥—१४२

(ब) १ बांणास २ अम्ब ३ तारक्ष।

नाथ समूह चम घड साधन,
घासाहर घमसाण घग।
(दळ सिसपाळ तणो देखता,
हर कीधो रुक्मणी हरण) ॥—१४६

जुध नाम

जुध समुदाय ग्रमागम सजुग,
ग्राहव (ग्रन) ग्रभ्याम ग्रवदीक।
द्वद ग्रास कदन प्रव दारुण,
सजुत समित सग्राम समीक ॥—१५०

समर सापरायक ग्रघ समरक,
प्रहरण ग्रायाधन प्रधन।
ग्रमि सपाती महाहवि ग्राजि,
कळह राडि विग्रह कदन ॥—१५१

सप्रहार[1] मस्फोट समित (सुजि),
ताई प्रयात वेढि रणताळ।
(जुन भारथ दसरथ सुत जीपण,
खर दुजर ग्रसुरा खंगाळ) ॥—१५२

जम नाम, धरमराज नाम

शिनाग्रन[2] ग्रतक सीरणश्रम,
कालिंद्री-सोदर[3] ग्रतु[4] काळ।
समवरती कीनास सूरसुत,
(जपि हरि-हरि काटै जमजाळ) ॥—१५३

मिनख नाम

धी[5] पुमान[6] ग्रतिलोकी मानव,
पचजन नर पुरखा पुरख।
धव ग्रादमी गाध वायाधर,
मनुज मरत[7] मानुख[8] मिनख ॥—१५४

(ग्र)　२ क्तात्मन ३ कालिंद्री सोदर ४ जम ५ मा ६ पमान ७ मुरत ८ मानिस।
(ब)　१ सग्रहार।

(जे आदमी भलाई अवतरिया ,
नाम निकारी मरै संसार ।
मन भावै गावै हरि गावै ,
उत्तिम लखण करै उपगार) ॥—१५५

जनम नाम

जनम उपजण जणण जणस[१] जिणि ,
उतपति[२] भव उदभव अवतार ।
(दस अवतार लिया दामोदर ,
भगवंत भोमि उतारण भार) ॥—१५६

पिता नाम

प्रथम जनयता[३] सविताव पिता ,
विरजा[४] तात जनक (जपि) वाप ।
(हरि वसुदेव पिता तिणि हुंता ,
अवतरिया जग तारण आप) ॥—१५७

माता नाम

अंबा मा जननी[५] जनयंती ,
सवनी (नाम कहै संसार ,
देव कळा धन मात देवकी ,
कृष्ण नीपना नंदकुमार) ॥—१५८

बालक नाम

अरभ कुमार खीरकंठ (उचरि) ,
(धारि नांम) सिसु स्तन-धय(कहाय) ।
पाक प्रथुक लघु-वेस डिंभ पुत्र ,
साव पोत ऊतान सहाय ॥—१५९

(बाळमुकंद नंद घरि बाळक ,
मात लडायौ जसोमती ।

(अ) : १ मनुष्य-जण २ उतपत ३ जनय ४ वीची ।
(ब) : ५ जणणी ।

भगतवछळ गोकळ मनभावन,
पावन मूरति जगतपति ॥—१६०

भाई नांम

भ्राता बंधु[१] सहोदर भाई,
सगरभ हिति सोदर सहज।
समानोदरज वीर सोदरज,
(सुजि वळिभद्र कान्हड सकज) ॥—१६१

बड़ा भाई नांम

जेसट पित्र-पूरवी[२] अग्रज,
मोटो अग्रम (राम रहि) ॥—१६२

छोटा भाई नांम

बळि कनिग्रान अनुज लघु अवरज,
कनिस्ट[३] जवस्ट[४] (अस्रण कहि) ॥—१६३

बैंहन नांम

भगनी सिस बैंहन बाई (भणि),
भट्ट सोदरी वीरि (भणि)।
... ...
(जनम मरण रामण राम सधीर) ॥—१६४

पग नांम

चळण पाइ गतिवत सचरण,
(कहि जै) सघी स्रोण अम।
पग पय गमन (सदा लग पालण,
करि समरण श्रीरग) कदम ॥—१६५

कटि नांम

कल्त्रि[५] कटीर मक तनवीचि[६] कडि,
मध्यभाग[७] काछनी (मुणि)।

(अ) ५ कटीय ६ त्रिष ७ विग्रन।
(ब) १ बंधव २ पूरवज ३ कनिष्टि ४ जविस्टि।

(मोर-मुगट राजै कर मुरली,
तरह भांमणीं तास तणि) ॥—१६६

पेट नांम

पिचंड कूख (गिण) उदर पेट (पिण),
जठर त्वंत त्वंदी ग्रभ (जांण)।
(अनंत देवकी ग्रभ उपना,
हिति देवां देतां अति हांण) ॥—१६७

पयोधर नांम

उरज उरोज पयोधर अंचळ[1],
(तवि) उर-मंडन कुच सतन[2]।
(मुख ग्रही सोखी पूतना मारि,
वडिमि वखांणीं धिन विसन) ॥—१६८

हाथ नांम

करग आच हथ[3] हसत दोर कर,
पंच-साख[4] बाहू भुज-पांण।
(पांण जोड़ रिणछोड़ पूज जै,
प्रथी चौगणीं वधै प्रमांण) ॥—१६९

आंगली नांम

(आखि) पलव करसाख आंगळी,
(उधरियो तिणि सिर अनड़।
ब्रज राखियो विगोयो वासव,
बडी अवर कुण विसन वड) ॥—१७०

नख नांम

भुजा-कंट कर-सूक[5] पुनर-भव[6],
नखर पलव-सुव कज्ज नख।
(नख हरणांख उवेड़ि नांखियो,
असुरां रिपि जुग-जुग अलख) ॥—१७१

(अ) : १ आंचल २ सथन ३ हाथ ४ पंच-साह ५ कर-मूर ६ पुर-भव।

रोमावली नांम

रोम लोम गो पमम तनोरुह,
(रोम-रोम हरि नाम रहाई।
मेटि भरम्म मन तणो मानवी,
स्मिन तणो तू भगत वडाई) ॥—१७२

ग्रीवा (गळो) नांम

ग्रीव गळो सिरो-धरि[1] गावडि,
(कंध कियौ सरीखौ वैकाश।
मधुकैटभ वरि कोप मारियौ,
देता दळण देव दीवाण) ॥—१७३

मुख नांम

मास्य लपन[2] रसनाग्रह आणण[3],
वक्र तुंड बोलण वदन।
मुख (मुजि लीजै जिणि चरणाश्रति,
कीजै जस राधास्मिन) ॥—१७४

जीभ नांम

वाया वाचा रसना[4] वक्ता,
जीहा जीभ रसगना[5] जीह[6]।
(इण सौं करतो रहै आतमा,
दसरथ-सुतन भजन निस-दीह) ॥—१७५

दांत नांम

दुज[7] रद[8] रदन दसन[9] मुख-दीपन,
(दळियौ कंस पकडि गज-दत।
वार-वार करतार बखाणौ,
सुर सिणगार सुधारण सत) ॥—१७६

(अ) १ सरो-धर २ लसना ४ रसण ५ रसगिना ६ जीहा ७ दुजि ८ र
९ डसण।
(ब) ३ आनन।

अधर (होठ) नांम

ओपवरणात रदछदन मुखअग्र[1],
ओस्ट होठ रदधर[2] अधर।
(गोपि अधर खंडन मुख गोविंद,
पीयै महारस परसपर) ॥—१७७

नासिका नांम

ग्रहण-सुगंध तिलक-मारग (गिण),
घ्रोण नास नासिका घ्रांणा।
नाक (रांम छेदन सुपनखा,
रढ़ मेटण रांमण रढ़रांण) ॥—१७८

नेत्र नांम

लोचन चख द्रग आंखि विलोचन,
नैण नैत्र अंबुक निजरि।
देखण दीठि[3] गो जोत मींट (दे,
हेक मनां मुख देख हरि) ॥—१७९

मस्तक नांम

मस्तक मूढ़[4] मूरधन[5] मौली[6],
सीरख[7] वरंग कमळ धू मीस।
कं उतवंग अगुट (दस-कापण,
दांन लंक आयण जगदीश) ॥—१८०

केस नांम

सरळ वाळ सिरिमंड सिरोरुह,
कुंतळ चिकुर चहर कच केस।
(स्यांमि केस राधा सिर सोहै,
नाइक राधा किसन नरेस) ॥—१८१

(अ) : १ मुखाअग्र २ मुस्टधर ३ द्रढ़ ४ मुड ५ मूरधा ६ मोली ७ सीरक।
(ब) : ३ दठि।

जोखा जुवति जाग्रिता जोग्नि,
वामलोचना मुगधा[1] वाम।
सीमन्तनी तनूदरी सुंदरी,
भीरू तल्प कामनी भाम[2] ॥—१६३

प्रमदा दारा पत्तनी परध्री,
कामणि[3] (वळि) रगना कन्ति।
ललना रमणी (सिरोमणी लिखमी,
जास रमण जामी जगत) ॥—१६४

भरतार नाम

वर भरता भरतार वप्रौढा,
प्रिय प्राणेय प्रसिटि प्राणेस।
पीतम इस्टि भोगता (ग्रह) पति,
रमण वरयता नाह रिदेस ॥—१६५

कामी वलभ धणी धव कामुक,
(कानड प्रिया राधिका कंत।
स्याम कोटि कद्रप सुदरता,
अक्ळी ज्योति भगवत अनती) ॥—१६६

सुदर नाम

सुलखण[4] कमन मनोगिन[5] सोभित,
रुचिर मनोहर मनोरम।
प्रीय कमनीय ललित[6] रुचि पेसळ[7],
सिधु[8] मजु मजुळ सुखम ॥—१६७
सुभग सरूप ससोभिति सुदर,
वाम[9] मधुर अभिराम वर।
(दरस)[10]रमण रमणीय (दीपतळ),
क्रान[11] (अधिक कान्हड कवर) ॥—१६८

(अ) १ मुग्धा २ भांमरण ३ कांमणी ४ सलखण ५ मनोगिण ६ श्रेस्ट ७ सु
८ साधु ९ वामम १० दसणीय ११ क्राति।

नांम नांम

अभिखा[1] अंक आह्वय[2] अविधा ।
नांम धेय संग्या[3] (हरि नांम ।
आठई पहर राखि उर अंतर,
वेग टळे दुख दळिद्र विराम) ॥—१६६

मित्र नांम

मिंत्र स्यांम वाइक[4] मन-मळग[5],
सहकृतवास सहचर सुहृद ।
प्रांणइस्ट वलभतन प्रीतम,
सनिगध्र सहकारी सुखद ॥—२००

सनेह नांम

हेत राग अनुराग नेह हिति,
प्रीत संतोख मेळ सुख प्रेम ।
हारद प्रणय हेकमन दोहिद,
(गोंविद निगम सूं कर नेम) ॥—२०१

आणंद नांम

मुद आणंद महारस सामुद,
मोद परमसुख प्रमुद प्रमोद ।
रळी हुलास उमंग उछरंग रंग,
(विसन समरि करि) हरखि विनोद ॥—२०२

सुभाव नांम

अनिज विसव सानिज गुण-आतम,
चळगति प्रगति रीति गति चावि ।
सहज सरग निसरग (सुजि) संसिधि,
सतत रूप तक भाव सभाव ॥—२०३
स्वाद रूप (तव) लखण सील सच,
तरह (राख भव समंद तर ।

(अ) : १ अभिन्न २ आहवीय ३ मगना ४ वाय... ५ मन-मेळक ।

कान नांम

(नवि) श्रव श्रवण करण वाइक्चर,
सुरति धुनीग्रह सामळण।
कान सुणण (भागवत तणी कथ,
वरणव करि ग्रवरण वरण) ॥—१८२

सरीर नांम

काया गात सरीर कलेवर,
वरखम देही डील वप।
पिंड बध मूरति पुर पुदगळ,
(ग्रवय विभू-धर तन ग्रलप) ॥—१८३

वसत्र नांम

वसन दकूळ लूगडा[1] वसतर,
सोभन तन-ढाकरण[2] सिरणगार।
ग्रथुग वास चीर पट ग्रंबर,
(हरि द्रौपदी सपूरण हार) ॥—१८४

सेवा नांम

ग्ररण ग्राटं सेवा (ग्रह ग्रातम),
भजन जाप ग्रौळग भजत।
(महाघनि ग्रान) चाकरी खिजमत,
(सिमरण कर हरि जाण सत) ॥—१८५

मन नांम

ऊचळ चचळ चेत ग्रनिद्री,
चित मनमथ मन गूढ पथ।
मानस ग्रंतहकरण हृदै (मभि,
सदा समरि कानड समथ) ॥—१८६

(ग्र) १ लूघडा।
(व) २ तन ढाकण।

चंचल नांम

पारि पलव चळ लोळ पर पलव,
चहुळ चळाचळ अति-चपळ।
कंप अथिरि अरा-धीरजि कंपन,
(तवि हरि चित मन करि तरळ) ॥—१८७

कांमदेव नांम

कळा केल मधुदीप कंदरप,
मार रमानंदन मदन।
अतन मनोज मनोद्रव[1] अणगंज,
कांम मीनकेतन कमन ॥—१८८

मनमथ हरि प्रद्युमन आतमज,
संवरारि[2] मनसिज[3] समर।
दरपक पुसपचाप दिनदूलह,
सुंदर मनहर पंचसर ॥—१८९

मधु-स्वारथी (अनें) विखमाजुध[4],
अनिनज[5] अवप अकाय अनंग।
सूरपकार[6] प्रसपधन्वा (सुजि),
रितपती जरा-भीर[7] नवरंग ॥—१९०

(कोटि) मकरधज (रूप किसन कहि,
पिता मकरधज किसन पिणि।
असुर सिंघार किसन अतलीवळ,
भगत सुधारण किसन भणि) ॥—१९१

स्त्री नांम

वनता[8] नारि[9] भारिज्या[10] वलभा,
त्रिया प्रिया अंगिना तरणि।
मांणणि[11] चळा ग्रेहणी महिळा,
वाळा अवळा नितंवणि[12] ॥—१९२

(अ) : १ मनोभव २ समरारि ३ मनसेज ४ विखमयुद्ध ५ अवनिज ६ सूरपकारिपु ७ भीमम ८ वनिता ९ नार ११ भारज्या १२ नितंवण।
(ब) : १० मांणचळ।

जोसा जुवति जोखिता जोखिन,
वामलोचना मुगधा[1] वाम।
मीमननी तनूदरी सुदरी,
मीरू तल्प कामकी भाम[2] ॥—१६३

प्रमदा दारा पतनी परध्री,
कामणि[3] (वळि) रगना कलित।
लल्ना रमणी (सिरोमणी लिखमी,
जास रमण जामी जगत) ॥—१६४

भरतार नाम

वर भरता भरतार वप्रौडा,
प्रिय प्राणेय प्रसिटि प्राणेस।
पीतम इस्टि भोगता (भह) पति,
रमण वरयता नाह रिदेस ॥—१६५

कामी वलभ घणी धव कामुक,
(कानड प्रिया राधिका कत।
स्याम कोटि कद्रप सुदरता,
अकिळी ज्योति भगवत अनती) ॥—१६६

सुदर नाम

सुलखण[4] कमन मनोगिन[5] सोभित,
रुचिर मनोहर मनोरम।
प्रीय कमनीय ललित[6] रुचि पेमळ[7],
सिघु[8] मजु मजुळ सुवम ॥—१६७

सुभग सरूप ससोभिति सुदर,
वाम[9] मधुर अभिराम वर।
(दरस)[10]रमण रमणीय (दीपतळ),
त्रान[11] (अधिक कान्हड कवर) ॥—१६८

(घ) १ मुग्धा २ भामण ३ कामणी ४ सलखण ५ मनोगिण ६ श्रस्ट ७ सुकलण [illegible] ९ वामम १० दसणीय ११ क्राति।

नांम नांम

अभिखा[1] अंक आह्वय[2] अविधा ।
नांम धेय संग्या[3] (हरि नांम ।
आठई पहर रात्रि उर अंतर,
वेग टळे दुख दळिद्र विराम) ॥—१९९

मित्र नांम

मित्र स्यांम वाइक[4] मन-मळग[5],
सहकृतवास सहचर सुहृद ।
प्रांणइस्ट वलभतन प्रीतम,
सनिगध सहकारी सुखद ॥—२००

सनेह नांम

हेत राग अनुराग नेह हिति,
प्रीत संतोख मेळ सुख प्रेम ।
हारद प्रणय हेकमन दोहिद,
(गोविंद निगम सूं कर नेम) ॥—२०१

आणंद नांम

मुद आणंद महारस सामुद,
मोद परमसुख प्रमुद प्रमोद ।
रळी हुलास उमंग उछरंग रंग,
(विसन समरि करि) हरखि विनोद ॥—२०२

सुभाव नांम

अनिज विसव सानिज गुण-आतम,
चळगति प्रगति रीति गति चावि ।
सहज सरग निसरग (सुजि) संसिधि,
सतत रूप तक भाव सभाव ॥—२०३
स्वाद रूप (तव) लखण सील सच,
तरह (राख भव समंद तर ।

(अ) : १ असिख २ आहवीय ३ सगना ४ वायग ५ मन-मेळक ।

माधव सिमर देह कर निरमळ,
पाप न लागै पण पर) ॥—२०४

मांण (नांम अहंकार)

मछर ममय अहंकार दरप मद,
माण पाण पोरिस अभिमान।
तव अभिमना गरब रढ[1] (तजि,
धरि मन गरब धरि हरि ध्यान) ॥—२०५

क्रिपा नांम

(कहि) अनुक्रोम[2] घ्रिणा[3] अनुकंपा,
हृतागति क्रिपा महिरि[4]।
मया दया (राखै जग-मडण),
करणा[5] (निधि हरि भजन करि) ॥—२०६

कपट नांम

परमक्रोम[6] परवाद[7] व्याज मिस,
छदम छेतरण दभ छळ।
(नाम) लख्य विपदेम उपनिम,
कैतव चितकरि कळह विकळ ॥—२०७

कूट कपट मनद्रोह तोत (कह,
रावण कय बांधो बळि राउ।
बाचि हमीर बखाण विमन रा,
पूजै पनग अमर नर पाउ) ॥—२०८

समूह नांम

समुदय व्यूह समूह प्रकर (मुणि)
निकर पटल सचय निकरब।
पूर पूग ब्रज बहुत (पणीजै),
कदळ जाळ कळाप कदंब ॥—२०९

(अ) १ रढ २ अनुक्राम ३ घ्रणा ४ महर ५ करुणा।
(ब) ६ परमक्रोम ७ परिवाद।

वंछया नांम

ईहा चाहि वंछना इच्छा,
(कहि) वासना चिकीरसव कांम।
(विमळ हुवै मन मिटै वासना,
रहि एकंत समरिये रांम) ॥—२१०

पाप नांम

अधम[1] असुभ तम-व्रजन[2] अघ,
पाप दुरिति[3] दुक्रिति[4] दुख पंक।
प्राचिति कलुल[5] कलुख दुखपालण,
कलमुख कसमल किलिविख कलंक ॥—२११

धरम नांम

सत क्रित भागधेय त्रिख सुक्रति[6],
धरि-श्रेय (अर पुनि) धरम।
(पूरण ब्रह्म समरि परमातम,
कर आतम उत्तम करम) ॥—२१२

कुसल नांम

[ससत सुश्रेय ससउ अधेय सिव,
भव्यकं भव्य भावक अभय।
कुसळ खेम सुभ मद्र (मद्र कहि),
(माहव) मंगळ (रूपमय)]* ॥—२१३

सभा नांम

[आसथांन सदघटा आसता,
संसत परखद समिति समाजि।
समिजा गोठि छभा][†] (सुजि सोहै,
रोजि हुवै चरचा व्रज-राज) ॥—२१४

(अ) : १ अधम २ तम-वीज ३ दुरित ४ दुक्त ५ कलिल ६ सुखरथ।
* [मुसेय कुसळ आणंद सुख, खेम खैर साखत सुखधांम।
आनंद उछव उछाह आखजै, इसवर भज उपजै आराम ॥]
† [आसतन सता-घटा, परिखर समत समाज, समया गोठ सभा।]

सबद नाम

सुर निर्घाख (अनैं) निह्रुण मनि,
निनद कुणन अनि नाद निनाद।
रुण आराव (न और) राव रव
सबद अवान टर कुण साद ॥—२१५
(गढि) निर्म्यान (हगद नाम वदि,
की गजराज) आराज पुकार।
(छुटै ग्राह तुरत छाडियो,
अनत जुगा जुग भगत उधार) ॥—२१६

सोभा नाम

भा आभा विभ्रमा[1] विभूखा,
कोमळता गहा दुति कांति।
सुखमा छिवि परमा श्री साभा,
(भगवत) कळा अनोपम (भांति) ॥—२१७

दिन नांम

दिविदु दिवान[2] दिवस वासुर दिन,
अह (इगियारसि) दिविमि[3] (अनूप।
कीजै वरत भजन पिपि कीजै,
भगत वछळ रीझै व्रज भूप) ॥—२१८

किरण नाम

रसमि[4] जानि[5] दुति गा छिवि सुचि रुचि,
वसू दीधनी अमुग[6] विभा।
किरण मयूख मरीच धाम कर,
भानुभा प्रदीप दीपति प्रभा ॥—२१९
(गोविंद) नत अपार (जगत गुरु
घट घट व्यापक वरिम धारा।
नरा पाप मरण आनम तन,
दिसन नणा करि जम वयन) ।—२२०

(ख) १ विभमा २ दस्विान ३ दीह ४ रसम ५ वानि ६ असु।

तेज नांम (उजास नांम)

तेज उदोत वरच तम-रिपि (तवि),
उजवाळो[1] आलोक उजास।
ग्यांन प्रकास (उर संग्रही,
समरि-समरि हरि सास उसास) ॥—२२१

सेत (स्वेत) नांम; उजल नांम

सेत विसद अविदात हिरिण सिति,
सुभ्रू भळ-भद्र अरजुन सुकळ।
पांडूर पांड धवळ सुचि पांडू,
(उचरि हरि चित मन कर उजळ) ॥—२२२

रात्रि नांम

निसीथणी जांमणी निसा निसि,
तमसी तमी तांमसी ताय।
जनया खिणदा[2] खिपा त्रिजांमा[3],
विभावरी[4] सरवरी (वचाय) ॥—२२३
रात्रि रात्री[5] सिस-प्रिया[6] रजनी,
(हुओ अस्टमी जनम हरि।
मुथरा मांहि वरतिया मंगळ,
घण कितूहळ घरोघरि) ॥—२२४

अंधारो नांम

अंध तमस संतमस अव तमस,
तमस तिमिर भू-छाय तम।
अंधकार ध्वांतस[7] (मेटण) अंध,
(वरळ कोटि पूरण ब्रह्म) ॥—२२५

स्यांम नांम

स्यांम रांम मेछक (वळि) सांमळ[8],
किरिठ[9] धूमरक[10] अभ्रुभ्रू (वळि)काळ।

(अ) : २ खणदा ३ अजामा ४ विभरी ५ रात ६ रस-प्रिया ७ धा अंत ८ स्यांमळि।
(ब) : १ अज-आळो ९ करठ १० धूम।

अलिप्रभ असित नील (आखीजै),
किसन-वरण (धिन क्रिसन-ऋपाळ) ॥—२२६

दीपक नांम

कजळ-अक[1] तेज धज-कजळ,
नेहप्रीय अहिमिणि तमनाम।
(उतम दसा करव दसय धण,
आणद जोति सिखा ओजास) ॥—२२७

सारग दीप प्रदीप दसामुन,
ओपण धार (दसा अवतार।
दस अवतार लिया दामोदर,
भगवत भोमि उतारण भार) ॥—२२८

चोर नांम

प्रतिरोधक मरमोख[2] पाटचर,
निमचर दुस्टि[3] गूढचर (नाम)।
तेय पार पथक दसु तसकर,
एकागारक[4] नाळ[5]-अलाम ॥—२२९

कुपथमूळ मूळचप रामकदी,
रामण चोर लकपती राण।
(लियौ मीत ओकली लाधी,
कीधौ हृति रुघवर किल्यांण) ॥—२३०

मूरिख नांम

मूरिख मुगध अजाण मीमीतमुख,
मूढ मदमती हीण अमेध[6]।
बाळम[7] जथाजात सठ कद (वदि),
नंड मूक वैधअण निर्वेद ॥—२३१

जाल्म बाळ अग्यान विवर जड,
अमन अबूज रहिनि-इतिवार।

(अ) १ कजुळ-अक ६ अमद ७ वालिम।
(ब) २ परमोख ३ दुसट ४ यकागारिका ५ नाळय।

महाविकळ अंगळंज स्थानि-निमठ,
(गोविंद भजै तिकै) गिमार[1] ॥—२३२

कूकर नांम

कूकर सारमेक कोयलेक,
भुसण पुरोगति असतभुक।
रितसाई रतिकील रितपरस,
(दाखि) विरित वैणता मडुक ॥—२३३
लेखिराति जागर रसनालिटि,
अगदंस साला अकमंडळ।
वळितिपूंछ ग्रहम्रग चक वांळंध,
खेतलरथ मंजारखळ ॥—२३४
ग्रांमसीह जीभय[2] स्वानि (गिणि,
स्वान सुनर धर तास समांन।
कपटि कूर करम करे काळ-वसि,
भगतवछळ न भजै भगवांन) ॥—२३५

खर नांम

चक्रिवा[3] रासिवि[4] चिरमेही,
पणि गरदभ[5] सीतल-पुहण।
भारवहण[6] संखसवदी भूंकण,
करणलंव संकुकरण ॥—२३६
खुरदम खर वालेय सरीखत,
(ओ) नर-मूढ़-सरीख अजांण।
(अजभूखण न जपै निसि वासुर,
पुणै कूड़ न सुणै पुरांण) ॥—२३७

विस नांम

(तवां) मार मारण रस तीखण,
(गिणीजै) हाळाहळ[7] गरळ।

(अ) : १ गीवार ३ चकिवान ४ रासभ ५ गरधभ ६ भारलदण ७ हळाहळ।
(ब) : २ जिभाय।

समार जहर (दुग वारुण,
मेवट हरि व्यापक गरळ) ॥—२३८

मदिरा नांम

मगदराज देवभग मधारि,
मधु (कहि) रतन समदसुत सार।
सोम मयूख सुधा जग-सामो,
(सुजि श्री राम नाम तज सार) ॥—२३९

चाकर नांम

चाकर परविश्नि पराश्रिति[1],
डिगर[2] भ्रत्य[3] परग्रधन[4] दास।
किंकर परसाद परदरमण,
विधकर भट परजीन खवास ॥—२४०

चेट प्रदेग भुजक परचाकर,
नफर निजोज[5] सेवगर (नाम)।
अनुचर अनुग (हमीर अनचरी),
गोल्हो खानाजाद[6] गुल्हाम ॥—२४१

डर नांम

भीय वीय भय त्रास भीत भी,
(तवि) साधस डर दर अनव।
उद्रव चमर (वळे) आसक्या,
(समरि प्रभू मेटण जम-सर) ॥—२४२

आग्या नांम

आइस हुकम आगिना अग्या,
सासन जोग नियोग जुओई।
(प्रेत देस) आदेस (जगतपति),
(हरि) फुरमाण (हुअे निम होई) ॥—२४३

(अ) १ परकीय २ डगर ३ भ्रतीय ४ परद्धत ५ निजोजि ६ खानैजाद।

वेला नांम

वरतमांन अनिमिख खिणि वेळा,
वार वेर प्रसताव[1] वय।
काळ अनीह प्रक्रमी अंतर (कहि),
सीम[2] ताळ पौहरो समय ॥—२४४

अवसर (वुहौ जात आतमा,
करि कारिमां फिटा सही कांम।
राघव तण जोड़ि गुण रूपक,
मारण दळिद्र वधारण मांम) ॥—२४५

पीड़ा नांम

रुज उपताप[3] व्यथा[4] पीड़ा रुग[5],
आंभय आंम मांद आतंक।
व्याध[6] रोग असमाधि अपाटव,
संगट[7] (गद मेटण हरि संक) ॥—२४६

कूड़ नांम

कूड़ व्रथा मिथा खोटीकथ,
असिति अठीक अलीक[8] अणाळ।
वितथ[9] विकळ अनिरित अनरथ (वळि,
प्रभू समरि तजि) आळ-पंपाळ ॥—२४७

सांच नांम

तथि सचि समगि सचौक जथातथि,
(वदि) सद भूति विसोवावीस।
समीचीन[10] निसचौकरि[11] सव्रत,
(जगत पुडि सांच रूप जगदीस) ॥—२४८

बलध नांम

वाडिभेय भद्र सौरभेय व्रख,
हररथ द्रत हरनाथहर।

(अ): १ पिसताव २ स्यांम ३ उताप ४ विथा ५ रुघ ६ व्याधि ७ संकट
८ अनीत ९ वेतत १० समचन ११ चौकस।

[धमळ वळध धारी मधुरधर]*,
चौपग हळवाहण (उच्चरि) ॥—२४९

अनुडवान पसु बळि बळद उख,
कुकुदवान शृंगी वळसार।
तवप्रवभ (सुजि) रिखभ[१] वैल(तिणि,
भूधर हुकम ग्यिो धर भार) ॥—२५०

गाय नाम

माहा गाइ[२] गऊ[३] माहेई[४],
सुरभी[५] सौरभेई सुरिहि।
अगिना[६] ऊधा शृंगणी उखा,
कवळी[७] कपळा (नाम कहि) ॥—२५१
तपा (अनि) देवाधण नवा,
(वळे) अरजनी[८] दहावन[९]।
(धरणीधर सुंदर गिरि धारण,
धनी रोहणी ग्वाळ धिन) ॥—२५२

वाछड़ा नाम

तरण वाछडा वाछ टोवडी,
वाच सक्रनकर वाछा लवार।
(वन मा आवि चोरिया व्रह्मा,
त्रिकम नवा उपाया तार) ॥—२५३

दूध नाम

मधू गोरस उतमरस सोमिज[१०],
[दुगध पुंसवन उधसि (पुनि) दूध]†।
मनन खीर पय अम्रनि[११] सवादक[१२],
(सोभि किमन पीधो मन सुध) ॥—२५४

(अ) १ रखभ २ गाय ३ गाउ ४ माहेवी ५ सुरह ६ अगना ७ कवनि ८ अरजुनी ९ सहावन १० सोमज ११ इम्रत १२ सवादिक।
* [धवळ बळद धोरी धैंधीगर]। † [दगध उदसि (पुनि) ओदसि दूध]।

दही नांम

दही[1] (नांम) गोरस खीरज दध,
(दधि पीतो हरि लेतो डांण)।

छाछ नांम

मथिति उदिश्वित काळसेम मही,
(पीधी) छासि तक्र (पुरिख पुरांण)॥—२५५

माखण नांम

तक्र-सार दधसार सारज (तवि),
नेगवी (ने) माखण नवनीत।
(धिन कांनड़ चोरतौ नवोध्रति,
पीतम गोकिळ पुरिख प्रवीत)॥—२५६

घ्रत नांम

हय[2] अंगवीन[3] नूप चौपड़ हवि,
घिरत आजि आहिजि आहार[4]।
सरपि खि हविखि तेजवंत सवळौ,
अभंत जोतवंत तेज अंवार॥—२५७

भोजन नांम

अमि[5] विहार[6] अहार अरोगण[7],
निधस लेह्ल जीमण ध्रिसनाद।
भखण अनंद[8] खादण (वळि) वळभन[9],
सुखदवि खांण[10] प्रसाद सवाद॥—२५८

(पति-वसांण अवसांण जगध पिणि,
तत करै भोजन खट त्रीस।
जसुमंत मात जुगति जीमाड़ै,
जीमै आप किसन जगदीस)॥—२५९

(अ) : १ महि २ हई ३ यंगुवन ४ आधार ५ हरभ ६ वहार ७ आरोगण
८ अनंदण ९ वलभण १० खावण।

सुमेर-गिर नाम

रतन-सान[1]   गिरपति   पचरूपी ,
सुरगिर   कचनगिर[2]   सवळ ।
मेर   सुमेर   सुथानिक   माहव ,
(नवा) करिणा काचळ   अचळ ॥—२६०

सरग नांम

ऊरधलोक   नाक   अमरालय ,
भुव[3]   दिवत   सुर-रिखभ-वन ।
त्रिदिव[4] अवय (तवि तवि) खित्र-दस-तप ,
(सुरगपति   पति   श्रीक्रिसन) ॥—२६१

इद्र नांम

इद्र   पाक-सासन   आखडळ ,
देवराज   सक्र   पुरदर[5] ।
विघश्रवा   मघवास[6]   अछरवर[7] ,
वरक्रित[8]   सतक्रति[9]   धरवजर[10]॥—२६२

दळभ   श्रवा   व्रतहा[11] सक्रंदन[12],
वासव   मरुतवान   मघवान ।
पूरवपति   पुरहूति   सचीपति ,
जिमनु[13]   सुरेस   सरगराजान ॥—२६३

हरिहय   सहसनेत्र   घणवाहण ,
उग्रधन   अैरावण   अधिप ।
सुनासीर   क्रितमन   सुत्रामा ,
(नाम)   रिभूखी   महाव्रप ॥—२६४

लिलेखा   रिखभ   जभभेदी ,
विडऔजा   प्राचिन   विरह ।
तुरावाट दुचवन हर   तवतखी[14],
कौसिक   मरुत   सुराट   (कह) ॥—२६५

(अ)   १ रतनसोन   २ कटनगिर   3 भुवि   ४ अदव   ५ पुलदर   ६ मघव   ७ अपछरवर   ८ वरक्रितु   ९ सतक्रतु   १० वजरधर   ११ व्रतहास   १२ सुक्रदन   १३ जिष्णु   १४ तारनखी ।

(डमडा अमर जाम आरावै,
सास-साम प्रति ताम संभारि।
वळि-वंधण काटै अम-वंधण,
पूरणब्रह्म उतारै पारि) ॥—२६६

देव नांम

निज्जर अमर वरहमुख नाकी,
आदितसुत अभ्रतेस (उचार)।
विवुध[1]-लेख अदसा अववेमा[2],
रिभु क्रतभुज सुमनस असुरारि ॥—२६७

अनिमिख व्रंदारका अनिद्रा[3],
दिविओकस दिवखद सुर-देव।
(देवां-देव देवकी नंदन,
सुध मनां हरि री कर सेव) ॥—२६८

अगनी नांम

क्रस्ण वरतमा अगनी अखा कपि,
सिखावांन[4] सिख[5] हुतासण[6]।
पावक रोहितास स्वाहापति,
दमुना दावानळ दहन ॥—२६९

वरहि सुक्र सुखम[7] उखर-वुध,
आसुसुखण जगणी अनळ (जाणि)।
मंगळ सपतारची सुरांमुख,
जळण धनंजय जाळिअळ[8] (जांणि) ॥—२७०

वीत्रहोत्र[9] वहनी वैसंनर,
सोचीकेस (सुची) पवनसख।
तनुनपात जातवेदा तप,
चित्रभांनु (अर) माहेसचख ॥—२७१

(अ) : ३ अनिदा ४ सिखवान ५ सुख ६ दहण ७ सुखमा ८ जाळवणि ९ वीतीहोत।
(ब) : १ विविध २ अदवेसा।

जगाळाजीह आयित[1] जागवी[2],
आश्रयास उदर-चउ-सन।
विभावसु[3] छागरथ विरोचन,
छिति आहूतण तमोघण ॥—२७२

धाम समीप्रभव फुळ धूमधज,
वसु वस्ण हुतभुक हविवाह।
अरच समत (हुव हरि आनम),
दुसह (व्रहद भवन भदाह) ॥—२७३

(जिम जागती विपन परजाळै,
परमेसर जाळै इम पाप।
देवा देणा देव दईता दव,
जादव-तिलक तणो जपि जाप) ॥—२७४

बलभद्र नाम

वळिभद्र[4] ताळ लखण निलावर,
अच्युताग्रज वळि हळायुध[5]।
सीरपाण वळिदेव मनानक,
(जुरासिंध गो करण जुध) ॥—२७५

कांमपाळ भेदन - काळद्री,
रोहणेय[6] सख - रमण - राम।
पीय-मधु मूसळी-हळी-पिणि,
(नाम अनंत सीता मित नाम) ॥—२७६

(वधव ताम तणो वळि-वधण,
आदि पुरख ठाकुर अविणास।
सुरा सुधार मघारण असुरा,
उर अनर हरि री करि आस) ॥—२७७

बदल नाम

पाथोजट वानर प्रवेगा,
जळानि मन्दानि गुरजन[7]।

(ब) १ आरता २ जागवी ३ विभवसू ४ बळभद्र ५ हळायुध ६ रोहणी ७ गुरजन।

मेघनाद नीरोवर[1] मंदर,
वरुण वरणवै (जस किसन) ॥—२७८

कुबेर नांम

वसु (दरम) धनंद[2] नरवाहण,
किंपुर खैसर रतनकर।
(कहि) कुह पिसाची कमलासी[3],
वैश्रवण[4] निधि - ईसवर ॥—२७९

जखाधीस हर-सखा त्रसर-जख,
(पुनी) जनेसर उतरपती।
एकपिंग पौलस्त एळविळी,
श्री दसतोदर (नांम) सती ॥—२८०

राजराज किंनरेस (नर-धरम),
(जपि) जखराट धनाधिप (जांणि।
भव थापियौ कमेर भंडारि,
मोटा धणी तणौ फुरमांण) ॥—२८१

असट सिधी नांम

अणमा महमा[5] (अनै) ईसता[6],
प्रापति[7] वसीकरण प्राकांम।
(सुजि) गरिमा[8] लघिमा[9] (आठ अै सिधी,
मुजि हरि आगळी करै सलाम) ॥—२८२

नव निधी नांम

कछप खरव संख[10] नील मुकंदकं रिद[11],
कुंद महापदम पदमा मकर।
(नर घर तास निवास नवै निध) ॥—२८३

द्रिव्य नांम

द्रिवण[12] विभव वसु श्रवरै द्रिवि[13],
आड्तेयक सवर अरथ।

(अ) : १ नीपेयण २ धनंदन ३ कविन्नामी ४ वहीवरण ६ इसमां ७ प्रापता ८ गिरमां ९ लगमां १० संखु, संधुख ११ रिध १२ द्रवण १३ द्रव।

(ब) : ५ महिमा।

मनरजण माया धन द्रुमग,
ग्रहमडण सैंधव गरथ ॥—२८४

वुसत हिरण[1] कुभरि (कथवय)विति,
निध रिध सपति माल निधान।
ग्राथि खजानौ मार (ग्रमारै,
भगतवछळ गोविंद भगवान) ॥—२८५

मोती नांम

मोताहळ मुक्ताफळ[2] मुकता,
(ग्रह) मुक्तज सुक्तज (उचरि)।
गुलकारस-उदभव[3] मिसिगोती[4],
हसभख मोती (कीध हरि) ॥—२८६

स्याम कारतिकेय नाम

स्यामी महासेन सनानी[5],
(कहि) [परभ्रति सिखडी मुकमार]*।
सुतन-उमा गगा-ग्रतिकासुत,
चखबारह खटमुख ब्रहमचार ॥—२८७

तारकारि त्रौचार मगतभ्रति[6],
सरभू ग्रगिभू[7] छमा सकद।
रुद्रातमाज[8] विसाख मोररथ,
(गिरधर मोरमुगटगोविंद) ॥—२८८

मोर नाम

केकी वरही[9] विरह[10] कळापी,
कुसळापाग[11] पनग-सघार।
(मजर मोर चद्र सिर माधव,
मोभा महत प्रपित सिणगार) ॥—२८९

(अ) १ हरिन २ मुगतीक ३ गुलिकारस उदभव ४ ममिगोती ६ सगतभ्रम
९ विरहण १० विरह ११ सुकळी-माग।
* [माहातेज कारतिक कुमार ब्रमचारि]।

(ब) ५ सेनी ७ यग भू ८ रुद्र-ग्रातमज।

(नांम) मयूर मेघनादांनुळ[१],
(तवां) नीलकंठ प्रांणग्रस्टीक[२]।
[सिहंड सिखा सिखी सिखंडी]*,
कुंभ सारंग रथ-कारतीक ॥—२९०

गुरुड़ नांम

सुपरणेय[3] सुपरण[४] सालमली[५],
गरुतमांन ग्रीधल गरुड़[६]।
सोव्रनतन धखपंख[७] कासिपी[८],
पंखीपती पंखी प्रगड ॥—२९१
तारख अरुणावरज[९] वजरतुंड,
वनितासुत खग-ईसवर[१०]।
इंद्रजीत मंत्रपूत आतमा,
चक्रभुज-वाहण भुजंगमचर ॥—२९२

उतावलि (शीघ्र) नांम

(जव) उतामळ[११] झटत[१२] अंजसा,
तुरह[१३] वाज[१४] अहनाय[१५] तर।
सीघ्र रभ सतुरण रस सहसा[१६],
सपत द्राक मंखू प्रसर ॥—२९३
अश्रुं तुरीस अविलंवत आतुर,
(भणि) द्रुति (अरु) खिप्र चपल (भणौ)।
गरुड़वेग (मन हूंति सतगुणो,
तिको गरुड़-रथ किसन तणौ) ॥—२९४

पवन नांम

वायु वात गंधवाह गंधवह,
स्वसन सदागति सपरसन।

(अ) : १ मेघनादानळ 3 सुपरण ४ आसुपर ५ सलमली ७ धकपंक ९ अरणावरज ११ उतावळ १२ झटति १3 तुरत १४ वाय १५ अनाघतर १६ सहेसा।
* [सिहंड सिख्या वल सेख सिखंडी]।

(ब) : २ प्रविसक ६ गुरड़ ८ कास्यपी १० पंख-ईसवर।

मारुत मारूत समीर समीरण,
जगत-प्राण आसुग जवन ॥—२६५

मेघवाहण पवमान महाबळ,
प्राणक अघभखण पवन।
नील अनीळ अहिवल्लभ[1] सासनभ,
जळरिपु चंचळ प्रभंजन ॥—२६६

(सुत तिण तणौ हणूत तिर सायर,
करि निज स्याम तणौ सिध काम।
लंका जाळि सीत सुधि लायौ,
रळीयाईनी कीधी श्री स्याम) ॥—२६७

मेघ नाम

पावस मुदर वलाहक पाळग,
धाराधर (वळि) जळधरण।
मेघ जळद जळवह जळमंडळ[2],
घण जगजीवन घणाघण ॥—२६८

तडितवान तोईद[3] ततयनू,
नीरद वरसण भरण-निवाण।
अभ्र परजन नभराट आरामी,
कामुक जळमुक महत किराण ॥—२६९

(कोटि मघण सोभा तन कान्हड,
स्याम अभ्रभ्रम स्याम सरीर।
लोक माहि जम जोर न लागै,
हाथि जोडि हरि समर हमीर) ॥—३००

बीजळी नाम

चपळा ऐरावती[4] चंचळा,
खिणरा सौदामणी खिनणी[5]।

(अ) : २ जळमंडण ३ तोयप्रद, तोयद ४ ऐरावती ५ खिमण।
(ब) . १ अहिलभ।

सिमरिव[1] तड़ित[2] संतरिदा[3] संपा,
मिणजळ वाळा-जळ-रमणि[4]* ॥—३०१

अकाळकी[5] रादनी[6] असनी,
[विदुति छटा मुवीजळो वीज][†]।
(वीज जोती पीतांवर वीठळ,
रूप संपेख करै सुर रीझ) ॥—३०२

अकास नांम

खं असमांन अनंत अंतरिखि[7],
वीम गिगन नभ अभ विअद[8]।
पवन-मेघ-पंथ[‡] उडप सूरपंथ,
पुह्कर[9] अंबर[10] विसनपद ॥—३०३

तारा नांम

जोति धिस्म[11] ग्रह रिखभ ज्योतखी,
तारा नखत तारका[12] तास।
उडगन उड दीपक-हरी-आगळी,
(इधक जगमगै ज्योति आकास) ॥—३०४

नाव नांम

बोहिति नाव वहतिक बेड़ो,
जांनपात्र जळतरंड जेहाज।
वहण पोत (भव महण लंघावण,
तरण उदय हरि नांम तराज) ॥—३०५

संख नांम

संख कंबू वारिज सिसि-सहोवर[13],
रतनखोड[14] सावरत त्रिरेख।

(अ) : २ तडिति ३ सतरदा ४ जळरमण * वाळा-जळ-रमणि=वाळा-जळ, जळ-रमणि। ५ आकासकी ६ राआदनी ७ अंतरिखण ८ वियद, वयद ९ पोहकर १० अमर ११ घिसन १२ तारकस १३ ससहुवर १४ रतनखोडि † [विघुत छटी वीजळी वीज] ‡ पवन-मेघ-पंथ=पवन-पंथ, मेघ-पंथ।

(ब) : १ समरवि।

(अनत तणै आवध वर अंतर,
विधि-विधि सोभा वणै विसेख) ॥—३०६

(अनन अछेह छेहन आवै,
नाम समण पावै विसतार।
सामळि अरथ पगाअन मागिनि,
अवळि प्रमाणै कियो उचार) ॥—३०७

(जाडेजा मूरजि रम्म जळवट,
भुज भूपति लखपति कुळ-भाण।
त्रय ग्रय कीध अजाची तिण रै,
जोतिखि पिंगळ नाम अव जाण) ॥—३०८

(जोइ अनेकारथ धनजय,
'माण-मजरी' 'हेमी' 'अमर'।
नाम तिका माहै निमरिया,
उवै भेळा भेळाया आखर) ॥—३०९

(अन जगदीस तणौ जस आणै,
विवरण करि कहिया वयण।
चिति नित हेत सही चितवियौ,
रीकवियौ रुखमण-रमण) ॥—३१०

(समत छहोतरै मतर में,
मती ऊपनी 'हमीर' मन।
कीधी पूरी नाम-माळिका,
दीपमाळिका तेण दिन) ॥—३११

• ● •

पर्यायवाची कोष—४

अवधान-माला

बारहठ उदयराम विरचित

अथ अवधान-माला लिख्यते

दूहा

सिव सकती वंदौं सदा, रमापति दिन-रात।
पूजै दिन कर गणपति, उगती बुध उदात॥—१

जोड़ गीत छंदां जुगत, जोड़ै नांम सुजांण।
नांम-माळ सिखवा निपुण, पद करि कंठ प्रमांण॥—२

नांम-माळ सुर नांम, जुगतौ अवधा धुर जांणी।
अेक सबद घण अरथ, वरण दधि खंड वखाणी॥
वरण एक विसतार, कळा रुग चार उकती।
पद-पद अरथ अपार, सुकव तन सार सकती॥
अनेक ग्रंथ सूझै अरथ, कव कविता कायब कहण।
अव जांण गुण भागसुतन, महाराव देमळ सहण॥—३

दूहो

पात प्रथम अवधा पढ़ौ, नाम-माळ जग नांम।
देमळ गुण दरियाव ज्यूं, समझै स्यांमा-सांम॥—४

गणेस नांम

गणपत रगण गजानन गुणवरदान गणेस,
सिवसुधदायक बुधसदन हेरंब पुत्र-महेस।—५
द्वैमातर लंबोदरं निधगुण गवरीनंद,
एकरदन अग्रेसुरं सुंडाळौ सुभकंद।—६
विघनराज विनायक परसीपांण प्रचंड,
(रूपौ मांगै राजरी अंघ्री सेव अखंड)॥—७

सारदा नांम

वांणी बुधदा ब्राह्मी निधवांणी (नवनीत),
सुरमाया हंसासणी सारदा सरसत।—८
भाखा गो वच भारथी ब्रह्मसुता वरदात,
गिरा रगी धमळागिरी देवी वरदउदात।—९

कसमीरी कसमीरमौ उजळ रूपउदार,
(मागै देसळ महीपति देवी वर दातार) ॥—१०

सदासिव नांम

सक्र हर श्रीकंठ सिव उग्र गगधर ईस,
प्रमथाधप कैलासपत गिरजापती गिरीस ।—११

भव भूतेस कपाळभ्रत उमयाधष्ट ईसान,
धूरजटी म्रड व्रखभधज मरवरित सुद्यान ।—१२

सिंभू त्रंबक ससिसिखर सध्यापत ससमर,
परम पिनाकी पसुपती त्रिलोचन ग्रपरार ।—१३

बोमकेस वाहणव्रखभ नीलकठ गणनाथ,
असानरेता डमरुकर सूलपाण ससमाथ ।—१४

क्रतधती विसयतक्रत म्रत्यु जय महादेव,
गिरीस कपरदी परमगुर सिधेसुर जगसेव ।—१५

अष्टमूरती अज अकळ उरधलिंग अहिग्रीव,
कपरदीस खळबधकर जगतेसुर जगजीव ।—१६

दहनमनोज असानद्रग भसम जटेस भवेस,
विस्वनाथ रुद्रवासमर परभ्रत तपस महेस ।—१७

विरूपाक्ष दईनेंद्रवर क्रतधुसी अधकार,
भीम सदासिव तम भवी दिगवासा दातार ।—१८

लोहितमाळ विसाळद्रग अजसुत खड अनत,
(सुख मुक्तीदाता सदा भव सुर लोक भुजत) ॥—१९

गिरजा नांम

श्री गिरजा सक्ती सती पारवती भवप्राण,
हेमवती दुरगा हरा रुद्राणी सुरराण ।—२०

भवा भवानी भैरवी चचरच चामड,
मातगी श्रव मगळा अबाजोत ग्रम्मड ।—२१

सिवा सकगे ईस्वरी माहेसुरी सुमात,
क्तियाणी काळी उमा देवी (वरद उदात) ॥—२२

अडा नितमजा मैनका दख्यांणी वरदान,
सखांणी सिंघवाहणी अपरण (र) ईसान।—२३
(जगदंवा आरूढ़ जस, उदाकरौ उचार,
काळी गुण भुजियां करग, चढ़ै पदारथ च्यार) ॥—२४

श्रीकृष्ण नांम

स्यांम मनोहर श्रीपती माधव वाळमुकंद,
कुंजविहारी हरि क्रसन् गिरधारी गोविंद।—२५
मधुसूदन मधुवनमधुप चक्रपांण व्रजचंद,
व्रजभूखण वंसीधरण नारायण नंदनंद।—२६
दामोदर दईतेंद्रवर मरदनमेछ मुरार,
अघवकादिहंता अनंत कैटभ अजित कंसार।—२७
पदमनाभ त्रैलोकपत धनसंखादिकधार,
देवांदेव जनारदन व्रज-वैकुंठ-विहार।—२८
विखकसेन यंद्रावरज संखधार सारंग,
गिरधारी धारीगदा भूधर पदत्रभंग।—२९
विसंभर करता विसनु वासदेव (विसेस),
जादवपत अरजुनसखा रिखीकेस राकेस।—३०
पुंडरीकाक्ष पुरांणपख पुरुसोतम उपयंद्र,
जगवंदण जगमूरती चंद्रवंस-को-चंद।—३१
कांन अच्युत नरकांतक्रत जळक्रीड़ा जगनाथ,
राधावलभ सवरित संकरखण गोसाथ।—३२
द्वारकेस सुतदेवकी गोपीपत गोपाळ,
प्रभा स्यांम पीतंवर जादववंस-उजाळ।—३३
श्रीधर श्रीवक्षस्थळ गुरड़ासण गजतार,
धजाखगेस अधोखजं विस्वरूप-विस्तार।—३४
भूधरभारउतारभ् भगतवछळ भगवंत,
भवतारण भवभयहरण कारण कमलाकंत।—३५
गोपपती प्रभु परमगुर सेखसाय अघसाय,
त्रम्टरसवाग्रखाकप (श्रवत मुनंद्र सहाय)।—३६

अवणामी निन अजर अज दीनानाथ दयाळ,
वनमाळी विठलेसवर गोकळेस पतवाळ।—३७

मधुवनमिधु महमहण स्याम मय्यमामद,
वलभज्यन रुक्मणवरण कवेल आनदकद।—३८

मुरलीमनोहर मघुवनी नाथ जमोदानद,
कृपासिधु (कीजै कृपा) अकलेसुर व्रजयद॥—३९

दधजा नाम

दधजा पदमा यदरा विमनप्रिया हरिवाम,
रिधी-सिधी-दाना मा रमा (नरहर)लिछमी(नाम)।—४०

कमला भूजापत करम लोकमाता श्रीलच्छ,
हरदासी लई हरप्रिया स्यामा सुखदा (सुछ)॥—४१

सूरज नाम

सूरज सविता महमकर उसनरसम आदीत,
दमदिनेम दिनकर दिनद पिंगळ वयळ धुनीत।—४२

मारतड दणीयर महर भासकर चित्रभाण,
हस प्रभाकर तरणहर वीरोचन दिवमाण।—४३

पूखाञ ईसन ग्रहपती पदमणपती पतग,
अरण दिवाकर अजनमा अरिकर तेज उतग।—४४

प्रद्योतन रातळपती तपन तिगम तमगर,
मित्र सुमन द्युतमूरती सप्रस प्रथग द्वार।—४५

रव नभमिण पगविण रतन भग भगनी भास्वान,
श्रममाखी नीखसप्रम जगचख धरमजिहान।—४६

सूर सुमाळी सीतहर अहिपत अरक सुवेन,
दोमिण द्वादसआतमा* तमचर तिमरस्वतेन।—४७

जमातरन मनिजमपिता धाम दिवाकर धीर,
सोमधाम सुरकरियव्द विसवकरमा चक्रवीर।—४८

---

* बारह आदित्य माने गये हैं; इसीलिए सूर्य को द्वादस आतमा कहा गया है।

अंगारक हिरळवत अहि पंकजबंधु प्रकास,
तेज कस्यपस्यातमज नरसुरधरमनिवास ।—४६

चंद्रमा नांम

सोम सुधासूती ससी ससि सीतंसु ससंक,
ससहर सारंग सीतहर कळानिधी सकळंक ।—५०

चंद्र निसाकर चंद्रमां दुज यंदू दुजराज,
कुमदबंधु श्रीबंधु (कहि) औखधीस उडराज ।—५१

विध हिमकर मधुकर विधी रुळी अगवाह अगंक,
सुभ्रकरण निसनेसगुण अम्रतमई मयंक ।—५२

सुधाकरस सिवसुवण गेहणघव राकेस,
सिवभाळी सुखमादसद निगदरतन नखत्रेस ।—५३

(दखण) जुगपदमणपती (ज्यूं) चक्रवाह-विजोग,
कंजारी अपध्यांन (कहि) सुभरासी ग्रहिजोग ।—५४

(जमनातट गोपीकिसन सरद निसा) राकेस,
(रचै रासमंडळ रमै विलसै हंसै विसेस) ॥—५५

कामदेव नांम

मार समर विखमायुध पप-धनवा सरपंच,
पुखैंक मनमथ रतपती श्रीनंदन तनसांच ।—५६

धातवीज हर मकरधज मदन समर समरार,
कुसमायुध कंद्रपकाळ अनंग कांम ईसार ।—५७

मधूर करिछय प्रदुमन मीनकेत (कहि) मैन*,
तपनासी सकळ-आतमा कमन सिंगारक सैन ।—५८

लीलज द्रपक मनोज (लख) ब्रखकेतु सुतब्रम,
अतन मनोभव अंगगथ पिडुपिढ (अरु) प्रभं ।—५९

आतम-भू उखापती मयण चपळ रितमांन,
जुरावीस जरजीत (कही सुर-नर देत समान) ॥—६०

---

* मीनकेत कहि मैन=मीनकेत, केतमेन ।

इन्द्र नाम

वासव वज्री व्रतहा मघवा हर मघवान,
मनदन सत्र सुरपती मम्नसखा व्रतवान ।—६१
दिवमत गोमक सहमद्दग परजापनी पुरद,
अग्नी विडूजा विधश्रवा आखडळ सुरयद ।—६२
दनीधावक वारदद्र अभागत जळेस,
प्रथमीपोख जिगवामपत सुरपुरनाथ सुरेस ।—६३
सतक्रत नाकीसुर रिखव सचीस्याम सुत्राम,
सुनासीर भाजीसुधा उरधपिड अभ्रस्याम ।—६४
(नाम) पाकसासन निधू पूरवपत प्राचीन,
गोत्रभदी पुरहूतगण यद्र जळधराधीन ।—६५
अभ्रवाहण रंभापती व्यूवर ऋतभुखार
बभयद्री उग्रघन जिसुन दळमत्रखा दिवराट ।—६६
तुराखाट व्रदसाविभ्रू पाराजानपत (पाट) ।—६७
(नाम) रिभूकी महाभ्रप दमवन वन-दरसाव,
सघणवाह ऊचीश्रवा थरही (नाम वनाव) ॥—६८

कलपद्रुम नाम

सुरतर हरचनण (श्रवन) अब्रदायक सतान
तयद्रुम द्रुमपत कल्पतर ददगअर्वनिघदान ।—६९
अगसुखदा सुरसपती पारजात पश्रीम,
(श्रवन) कामधनू सदा जिसनु (सर्व जगदीस) ॥—७०

वज्र नाम

वज्र कुलिस यद्रावध दधीचास्थी दनुगाढ,
गोत्रभदी सयपत्रगिर सत्रकोटी स्वळसाल ।—७१
सारह गिभूनादनी भिदरसन दभोळ,
जानसुभ्र पुरहूतजय अदभुत ससत्र-अतोर ॥—७२

सरग नाम

अमरापुर अमरावती उरधलोक त्रिविस्रोव,
सुरप्रालय त्रिदसालम्न सरग नाक सुरलोक ।—७३

गऊ ग्यांनमत उरधगत धरमफूल सुखधाम,
अदन त्रिनिष्टपथांन (तव) विविधस्यांम-विश्राम ॥—७४

अपछरा नांम

अछर सुकेसी उरवसी परी घ्रताची (पंथ),
मंजुघोपा रंभ मैनका त्रिलोचना निरतंत ॥—७५

गंध्रव नांम

गंध्रव किनर सुरगण हाहा हूहू (हास),
अमर (परमपर) आदितिया विद्याधरा* (विलास) ॥—७६

इंद्रांणी, पुरी, गुर, नदी नांम

सची पुलमजा सक्रप्रिया यंद्रांणी अरधंग,
यंद्रपुरी अमरावती गुरु ब्रहस्पत जळ-गंग ॥—७७

सभा, सेना, घोड़ा, स्वारथी, हाथी, दंदभी नांम

सुमत सुधरमा सेनसुर (बळ) उच्चैश्रववाज,
सुधरमा तुळ स्वारथी गज-अभ्र दंदभ (गाज) ॥—७८

वन, रिखदरवान, वैद, विभुता, वाहण नांम

नंदनवन नारदरिखी (देवनदी) दरवांण,
वैदक अस्नीकुमार विध विभुता वाह विवांण ॥—७९

इंद्र के पुत्र ग्रहमुख, सिलावटा, माया नांम

पुत्र-जयंत प्रसाद गृहआनन अगन (अनूप),
सिलपी विसवक्रमा (मदा) रसघण माया (रूप) ॥—८०

रिख नांमं

तपसी तापस उग्रतप मुनी मुनेस मुनंद,
मुव्रती समदम संजमी उरध्यानी आनंद ।—८१
रिखीराज रिखवंदरिख रिख रिखेस रिखराज,
काननचारी सतव्रती जपीतपी जगराज ॥—८२

* अमर-कोष में देवताओं की १० जातियें मानी गई हैं जिनमें विद्याधर और गंधर्व दो भिन्न जातियें हैं ।

बुधी नाम

मेधा बुध धी अक्कळ मत प्राग्यन सुध प्रबाध,
मिनखा धिखणा धुन समझ (ग्राथय जाण मवेध) ॥—१०५

दरियाव नाम

दध सागर सायर उदध गौडीरव गभीर,
रतनागर उदभवरतन ग्रतर ग्रथग ग्रतीर ॥—१०६
जळरासी जळधन जळध सरसवान सामद,
वारध ग्रवध वारनिध वेला-मवना-चद ।—१०७
ग्रकूपार अरणव (ग्रवं) महण मथण महराण,
पारावार मछपळ रैंणयर जळराण ।—१०८
पदमापित पदमालय उदनमत दरियाव,
हृदनीरोग्रर ग्रवहर लहरीरव जळधाव ॥—१०९

नदी नाम

तटणी मरत तरगणी धुनी श्रोत जळधार,
नदी ग्रापगा निमनगा वाह भूमविहार ।—११०
जळमाळा जव्राळणी (श्रोता जग सतोख),
सुनी शृवनी भवमुखा परवतजा तरपोख ।—१११
परवाहपय नद प्रसद नीभरणी वरनीर,
कुल्यकका सिंधुकुल्या दीपवती दकसीर ।—११२
सरज्यु गगा सरसुती जमना सफरा (जोय),
गया नरवदा गोमती तापी सिलका (नोय) ।—११३
भीम चद्रभागा (भुजौ) सिंधु ग्ररक (सुनीर),
कावेरी कालीनदी माब्रनी पयसीर ।—११४
(ज्या नदिया मजन करै धरै सदा हर ध्यान,
उर निरोध हर ग्रामरै विसरै नह ब्रह्म ग्यान) ॥—११५

सपतपुरी नाम

माया मुथरा द्वारका ग्रजुध्या (र) उजीण,
कासी काची (मूकनदा पद) दधपुरी (प्रवीण) ॥—११६

नव ग्रह नांम

रव सस मंगळ (रटौ) सुरगुर सुक्र (सुणाय),
सनी राह केतू (सदा नव ग्रह पूजो न्याय) ॥—११७

वन नांम

अटवी कांनन वन अरण विपन गहन भिखवात,
रन कंतारक झक दुरग खड कखवा रिख ख्यात ॥—११८

विरख नांम

अग सिखरी साखी विटप द्रुम खितरुह फळदात,
दरखत तर अदभुज सदळ पत्री द्रुम घणपात ।—११९
फळग्राही कुममद फळी निंद्यावरत निनंग,
कार सकर महिसुत कळी अंघ्री कूट असंग ।—१२०
अद्री अंध्रप ओकखग रुपक राळक (रीत),
झाड़ (अनोखह झुंडमैं प्रीति राखै प्रीत) ॥—१२१

फूल नांम

पुसप सुगंधक फळपिता कुमम प्रसून कलार,
रगत फूल सिधक धरम सुमन सून द्रुममार ।—१२२
लताअंत उदगम हलक सुभम सुना सुररंग,
(चांमंडा) पंकज (चरुण सुकवी मन सारंग) ।—१२३
कुसवावळ चंपाकळी गोटाजाय गुलाव,
कणी केवड़ा केतकी जुही हवास जवाव ।—१२४
मैंदी कणियर मोगरा निवनलियर गुळमंड,
रायवेल रतनावली परी गुढ़ेर (प्रचंड) ।—१२५
करणफूल गोरखकळी जंत्रक जाफरा (जांण),
समंद सोख गुळ सेवती अरक हजारी (आंण) ।—१२६
मुखमल खैरी मालती लजाळू र लटियाळ,
कंज फिरंग कमोदनी रतनमालती साल ।—१२७
दाड़म नेजादावदी (विवध फूल वरसाळ,
डंवरिया खटरित डंमर सीत उसन वरसाळ) ॥—१२८

वृक्षस नांम

सुरतर गोरख मिमगा देवदार मदर,
सिवाहळद वेसर सुभग वट पीपळ (विमनाग) ।—१२६
धावा चापा ग्रावली निगड नीव नाळेर,
फणस विजौरा जामफळ ग्रण्णा साग करीर ।—१३०
नीबू दाडम नारगी सीनाफळ सहतून,
वाठ ठीवरु कदळी (यळ) ग्रनास (ग्रदभूत) ।—१३१
वेलीदाखा पमदी ग्यारक ताड खिजूर,
(वेता मेवा हरकिया हर हाजरी हजूर) ॥—१३२

भमर नांम

मधुकर भकारी मधुप सोरभ भमर सारग,
कमसलप्रिय भोगीकुमम भवर सिलीमुख भ्रग ।—१३३
मधुप्राहक मधुनरतमद चचरीक रोलव,
कलालीक खटपद श्रमन ग्रळिपळ घूम-ग्रालम ।—१३४
दळ दुरेफ हरयदुदर कुसमावळी मकरद,
ग्रहणगध ग्राघाणगुण ग्रघवाचर (ग्रानद) ॥—१३५

बदर नांम

कीसहरि वनउक कप पलवगम पलवग,
मरकट बदर वलीमुख सोमाखा सारग ।—१३६
साखीवर वनचर (सदा) गो लगूळ (गणाय,
लका बाळी लागडै सीताराम सहाय) ॥—१३७

म्रग नांम

हर वातायू म्रग हिरण सिघ्रधाव सारग,
(ग्रण) ग्रख तरक सुगधउर काननभखी कुरग ॥—१३८

सूर नांम

सूर कोड लागड ग्रमत्र ग्रेकल दातडियाळ,
घोणा घमटी परजधण दुगमी गिड दाढाळ ।—१३९
भूविदार सूकर भयद वघरामा वाराह,
कोळ डारपन क्दवर मिरोरमा दलमाह ।—१४०

(चवां) आखणक वाडचर. दंसटरीर भूदाग,
थूळीनास दुदीथटा (वन गिरवरां विहार) ॥--१४१

सिंघ नांम

सिंघ वाघ केहर सरब कंठीरव कंठीर,
अष्टापद गजराजअर सेर अभंग मघीर।--१४२

पंचायण हर वनपती पंचानन पारंद,
सूरसेत पिंगपंच सिख अगमारण अगयंद।--१४३

मंग नखीयुध अगमरद जीव जज्र हरजक्ष,
सारदूळ नाहर सगह भिक्षरोस पळपक्ष।--१४४

महानांद जंगी मयंद नखी भूय नहराळ,
छटाधाव मंजारछळ वाघ मयंद विकराळ॥--१४५

हंस नांम

सुगत हंस धीरठ सुचळ मुगताभखी मराळ,
मानसूक चक्रांम (मुण) अंगळीलंग उजाळ।--१४६

रूपो ग्यानी कव्ररस प्रांणनांम परकास,
महतगुणां रिखमंडळी जूओ हंस उजास॥--१४७

सिंघजात नांम

वावरैल वाजूपुरी सौनेरी सादूळ,
(और) केसरी ऊंठिया मिश्र पटैत ममूळ॥--१४८

हस्ती नांम

सिंधुर मदभर सिंघळी मैंगळ हर मदमस्त,
द्विप दंती मदभर दुरद हाथी हस्ती हस्त।--१४९

कुंजर गैमर पौहकरी व्यारण कुंभी व्याळ,
गय मातंग मतंगजा स्यांमज गज मूंडाळ।--१५०

यभू वैधीगर तरअरी पटहथ नाग प्रचंड,
भद्रजाती सारंग मंयद वैरक कंवू वयंड।--१५१

गयंद अनेकप ग्राहग्रहै (की) गजराज (पुकार,
धाये हर धखपंख तज आभां चक्र उधार) ॥--१५२

ऊंट नाम

करहो ऊट मरढो वग्भ पागळ जूग भ्रपथ,
तोड जमाद दुरतनक गय जाखोडो (ग्रथ) ॥—१५३

'जमी नाम

थिग रतनगरभा थिनी धरणी धरा मधीर,
पहि पुहमी प्रथमी प्रथी सरबमहा जळमीर।—१५४
भ्रवन चळा भ्रचळा थळा भू भूमी घर भोम,
मही क्षुभनी मेदनी गउगोत्रा थळ गोम।—१५५
वसूमती धात्री गहवरा वसुधा तरविसतार,
रेणा खित धरती रमा समदमेखळा सार।—१५६
सागरनेमी रमवती विपळा विमव विख्यात,
जगती जगमनमोहणी खोणी खम्याख्यात।—१५७
दुगधा खडी दीपदध मोहा उरवी भार,
कुळटा भारी कन्यका अनतापनी अपार।—१५८
थल्ना इळा (नाम दे आदमैं विधकर जुगत विवेक),
धर रहपत (थलादिधर उवनी नाम अनेक) ॥—१५९

पीपल नाम

वोधीव्रख पीपळ सुव्रख चळदळ कुंजरचार,
असवत थीव्रख (आप सम यो थीव्रसन उचार) ॥—१६०

बड़ नाम

वट निग्रोध साखीव्रसी वडसाखी विसतार,
वैश्रवणालय धूजटी रतफळ (रुद्र उचार) ॥—१६१

बसी नाम

वैण वस (जव) फल्ववळै त्रणधज ममकर (तास),
पोहमीवदण सतपरभ तुचीमार (त्रिमतार) ॥—१६२

हरड़ै नाम

सुरभी सरवारी सिवा प्रभना अभियापोख,
हरडै जया हरिनकी सुखदा प्राणसतोख।—१६३

प्रपथा नेतकी प्राणदा कायस्थ गदकाळ,
हैमवती हिमजा हरा परजीवंती (पाळ) ।—१६४

(कहि) अम्रत काकाळका श्रेह प्रेहसी (सार),
नांम तुरजका पूतना अभया (नांम उचार) ॥—१६५

केसर नांम

कसमीरज मंगळकरण केसर कुंकुमकाय,
वाह्लीकजा गुड़वरण वह्नी (सिखा बताय) ।—१६६

पीनरगत संकज पुसन लोहन (चंनण लेख),
धरकाळैय सुगंधधर देववल्लभा (देख) ॥—१६७

चनण नांम

मीतरुख ह्रयांमिरै सोरभ मूल सुनंग,
गंधसार मळियागरी (सेत अरुणम्राद संग) ।—१६८

सुरभी रोहण तरसुतर अहिपिय गंधअपार,
सरीपाळ वल्लवसिवा श्रीखंड चनण मार ॥—१६९

पहाड़ नांम

अद्री गिर भूधर अचळ सांन माम पतसार,
भाखर डूंगर दरीभ्रत शृंगी धात सुधार ।—१७०

यष्टकुटी परवत अनड़ अकुकुत मरुत अतोल,
मिलोचय सिखरी सघण आहारज्ञ अडोल ।—१७१

गोत्रगाव गिरपत गिरंद धरनग धरधर धार,
(गिरधारी गिरधर धरै ग्रखी कोप जिण वार) ॥—१७२

पाखांण नांम

ग्राव धात गिर वंदगण पाथर घण पाखांण,
उपळ सिला पाहण असप (नांम दिखद निरवांण) ॥—१७३

कंचन नांम

भूर असटपद अरभरम धातोपम कळधोत,
कुनण हेम कंचण कनक कं चामीकर ओत ।—१७४

हाटक लोहतम हिरन मोजन धातामार,
करवुर वसूभूनमरुक्म अगनी (कीजउनार) ।—१७५
जाम्बूनद गैरक रजत मानकुंभ (अर) साळ,
गाम्ड क तपनीय (गुण) पीतरग दुखपाळ ॥—१७६

तांमा नाम

मरकट ग्राम मनेच्छमुख धरज उदमर धृष्ट,
मावर ब्रम वरधन मुरख तात्रा सुल्ब वरष्ट ।—१७७
रगत (नाम) कनियररसौ तांबै (बूटी तोन),
(ज्यु कुनण ह्वै जगत मे विरद हरि गुण वाल) ॥—१७८

रूपा नाम

जातरूप रूपौ रजत हेमसू हस नार,
दुरवरणक खरजूर द्रव मित कळधोत (सुधार) ॥—१७९

लोह नांम

कृष्णमुख आयुम सकसस्त्र सस्यगी अय सार,
घणकोळा यसुखाणधर सितामार गिरसार ।—१८०
परवनसुत तरजणप्रथी रनक पारसवरोह,
निक्षण रिणभिक्षण (तिनै छता रूप भड छोह) ॥—१८१

देस नांम

मडळ जनपदनी मुलक देस विदेस (दिगन),
विखय राष्ट्र उपवरतनी व्रन जनाद हदवत ॥—१८२

नगर नाम

निगम मेर नगरी नगर अदष्ठाण आथाण,
पुटभदण पट्टणपुरी पुर अपवास (प्रमाण) ।—१८३
पुरदर निवेसण पळप्रभा सपतपुरी सुखधाम,
(नटणी ज्यू सुगती नचै सदा वाम सुर स्याम) ॥—१८४

तलाव नाम

पदमाकर कासर पयद ताग तडाग तळाव,
कधर सरवर पोहकरण सरसी धरमसुभाव ।—१८५

नाडा जोडा नाडियां नीरनिवास निवांण,
पौहकर (नारण) सर (प्रभा मुगत रूप मडांण) ॥—१८६

अंब नांम

अंव कुलीन सदक उदक जगजीवन जळवार,
(अर) पाथ पय विख अम्रत घणरस घणअप धार ।—१८७
संवर कं पीहर सलिल पांणी पांणद पाथ,
मेघ पुसप सरग्रह कमळ नीर (खीर पत नाथ ।—१८८
प्रवतक पीठ निवास पथ तोप अथर तर तात,
जाद निवास कवंध जप वसुधा घोख विख्यात) ॥—१८९

पुंडरीक नांम

पुंडरीक पंचन पदम सहसपत्र सतपत्र,
जळरुत जळरुह जळजनम जळज कुंज जळछत्र ।—१९०
नळणी वारज कोकनद वसूप्रसूत अरव्यंद,
कुमलय सरसीरह कमल सरजनमा सरनंद ।—१९१
पिताविरंच महोतपल नीरज अंवुज (नांम),
पंके रीहनाळीज (पद्) पुहकर मैण (प्रणांम) ।—१९२
राजीव सरोज तांमरस सुसार सख दंड,
(नांम) कुसेसय हरनयण (प्रभा प्रकास प्रचंड) ॥—१९३

मछ नांम

सफरी झख संव्रर सफर मछली सलकी मीन,
चंचळ वारज वारचर प्रथरोमा पाठीन ।—१९४
जाद सकळ खय मकर (जप) अंडज जळआधार,
कुसली अनमिख (नांम कही) वैसारण ग्रहवार ।—१९५
मछ आतमासी (मुणी) वळखड खीणविसार,
(नांम) अलूकी पयनिरत सिंधचीरी सुकसार ॥—१९६

कमठ नांम

गुपतअंग पांचूप्रगट कूरम कमठ कलास,
(पण) जीवनद उक्रोडपग (वार हुलास विलास) ॥—१९७

देवल नाम

देवळ देवालय दुरम सुरमडप प्रासाद,
द्रुमग्रह धजधर धामहर नितक्रत थानग्रनाद ॥—१९८

धजा नाम

केत धजा धज कदळी सतक्रन चहन (सुणाय),
वईजपती पुनवती (दरस) पताका (दाय) ॥—१९९

गढ नाम

गढ दुरग भुरजाळगही किलो अगजी कोट,
परदमाल प्राकार (पढ चव) वप्रवरण अचोट ॥—२००

छडीदार नाम

द्वारपाळ दरवान दर हुसियारक प्रतहार,
दरवारी दडी दुरत छडीदार छकसार ॥—२०१

घर नाम

ग्रेह ग्रोक आराम ग्रहि निलय निवास निकेत,
सरण वास वेसम सुग्रही सदन भवन सकेत ।—२०२

मिंदर आलय माळया धमळ सोध घर धाम,
पदग्राश्रय निजग्रामपद वस्ती पुर विश्राम ।—२०३

रहण सुथानक धिसनु रच ग्राश्रय वसी ग्रगार,
(वरणाम निरभय वसे निकै सरण करतार) ॥—२०४

राजा नाम

नृपत नाथ नरनाथ ग्रप नरपत भूप नरद,
धरपत भूभ्रत धरमधुज राजा प्रभू राजद ।—२०५

प्रथीनाथ पौह पाटपत राव राट राजान,
परब्रढ स्यामी पारथव ग्ररज ईस ईसान ।—२०६

ग्रध भूभरता ईसवर ईसप ग्रधप प्रजाप,
नरेस नेनी नाह नरपाळ लोकस ग्रधाय ॥—२०७

जुजठल नांम

सुज सिल्लार अजातसत्र भरतान वयअभीत,
कउतेय अजमीढ़ कंक पंडवतिलक पुनीत।—२०८
सोमवंस, हस्तपुरपत* जुद्धस्थिर कुरजीत,
सतवाची जुजठळ (सदा किसन कीत सूं प्रीत)॥—२०९

जिग नांम

मनु संसतन तंत्र सप्तमुख सतक्रत ज्याग सतोय,
जिग धूरज अधवर जिगन (हद वितान घर) होम॥—२१०

भीम नांम

भीम व्रकोदर वहुभखी गजवध सघणगाज,
कीचकार गंजेकरु सत्रांजीत (समाज)।—२११
जुरासंधखय गजभ्रमी व्रळी गदावळवांन,
गंधवाहसुत अगमगम अकवानंद अमान॥—२१२

अरजुण नांम

कपीधाय रिपकैरवां धनुजय सरधनुधार,
यंद्रजीत अगनीसखा दांनीरिप दैतार॥—२१३
सवदवेध अरजुन जिसुन पंडवमध्य पाराय,
पाथ किरीटी पंडसुत हरीसखा जयहाथ।—२१४
काळमूक वेधीकरण सरअजीत सक्रनंद,
सवसाची वीभव सुभट वहनट सगतिविलंद।—२१५
महासूर नर कारमुख सुनर माक व्रखसोन,
गुडाकेस कलिफालगुन सेतअमनयसेन।—२१६
सुभ्रदेस जयकरणसत्र राधावेधी (रंग),
(सखा रूप श्रीकृष्ण रै सदा) धनंजय (संग)॥—२१७

पाताल नांम

वडवामुख थांनकवळ प्रिथमीतळ पाताळ,
पनंगलोक अधलोक (पड़) दनुपत (थाप दयाल)॥—२१८

---

* सोमवंसपत=हस्तपुरपत।

सरप नांम

आसीविख विखधर उरग भुजा भुजग भुयग,
सरप भुजगम अहि सिरी नाग दुजीह पनग।—२१९

प्रदाक कुंभी गूढपद काकोदर फनकाळ,
फणारी चक्री फणी वक्रनी (कहि) व्याळ।—२२०

चीळ चक्री चखश्रवा गरळस भोगी (ध्यान),
ददमूक दीरघपिष्ठ जिह्मग जैहरी (ज्यान)।—२२१

नल्हान बिलमरी (मोरे) कुंडळी (माण),
नमदरवी पवनासनी (ज्यू) घंघीगर (जाण)।—२२२

(काळी ग्रह काळी नथे जमना तीर जमन,
कालद्री निरविस करी श्रीजसदनी सुनन)॥—२२३

सेस नाम

सहसफणी चक्षुश्रवहस निद्रादायहजार,
सस अनंत खगमअर धरैहारजग्धार।—२२४

भुयगान भभारधर वणआलुकवितसतार,
कुंडळ (एक) अहीस कर करें तल्प (करतार)॥—२२५

रज नाम

धूळ रजी रज धूमळी सिकता वेलू सद,
सह पान (वलें) रेत स्या रेंण सरकरा (ब द)॥—२२६

सुनघर चर पटम्हमना वसुधासिरविसनार,
(पत रौह धर जदनी पर उपजै नाम अपार)॥—२२७

धनुख नाम

धनुख सगनण चाप धुन करण्मस्त्र कामड,
मकर मायय पुस्रासमिध प्रहा पिनाक (प्रचड)॥—२२८

सायक नांम

सायक पत्री अदर सर विसिख सिलीमुख बाण,
खीयरस्त यधु स्परन्त बनपत्र करसान।—२२९

खर पधरी नागज नग निखाण गोपण तीर ,
कणक नंद त्रिसपुत्र (कहि) तांमर पनीतुतीर ।--२३०
मन्द्रअजं मघवळ अनन पत्रवाह पारंद ,
(प्रगन कणेण अंगजपथ सर्वविशा गामंद) ॥—२३१

गरजात नांम

नायक (कर) पायक नगी चावक चपळा (नग) ,
कंटी (छिद्र) गळकंडी गपगी परी (खतंग) ।—२३२
जुगा मधार कटार (नव) चंद्रकार चौधार ,
अठांम छिद्री आंकड़ा बिल्ली (जंगीकार) ।--२३३
(निसंग) जमाळी जुगतं (वांण) सिलीमा (बंध) ,
जुगा फीक (पग नंपणा नांम बिदांम निसंध) ॥—२३४

करन नांम

रवसुत चंपाधप करन सूतपाळ अरन्याळ ,
अंगराज राधानन्द नेमप्रान दननाळ ॥—२३५

दातार नांम

मौजी त्यागी मोटमन उदभट प्रगट उदार ,
महातमा सुदता सुदन दांनअयन दातार ।—२३६
अवडभेळ दानेसरी (और) उदीरण (आंण ,
कहि महेस दाता करण बरनत प्रान वाग्यांण) ।—२३७
बिल्मण तद वगमण अवण समपण मोज सुदात ,
रीझ विहायत विसरजण वितरण दांन (विख्यात) ।—२३८
प्रतपायण निरवयण (पद तवां) उछरजण त्याग ,
विसरायण उदक (वळै भूप ग्रवै वड भाग) ॥—२३९

याचक नांम

ईहण जाचक आमकर रेणवदूथीराह ,
मनरखभागण मारगण अरथी भिखग अचाह ।—२४०
लोभी नीपक लेणरित दवागीर (दिनरात) ,
जाचक (मांग दसूत जिण वंदीजण विख्यात) ॥—२४१

सरप नाम

आसीविख विखधर उरग भुजग भुजग भुयग,
सरप भुजगम अहि सिरी नाग दुजीह पनग ।—२१६

प्रदाक कुंभी गूढ़पद काकोदर अलकाळ,
फकारी चक्री फणी वक्रगती (कहि) व्याळ ।—२२०

चीळ चकी चखश्रवा गरळस भोगी (भ्यान),
ददमूक दीरघपिष्ट जिह्मग जैहरी (ज्यान) ।—२२१

लेलहान बिलेसरी (अोरे) कुंडळी (आण),
नसदरवी पवनासनी (ज्यू) धेधीगर (जाण) ।—२२२

(काळी ग्रह काळी नथै ग्रसना तीर ग्रमन,
कालद्री निरविख करी श्रीजसवती सुतन) ॥—२२३

सेस नाम

सहसफणी चखधूसहस जिह्वादोयहजार,
सम अनत खगैसग्रग धरैहारजटधार ।—२२४

भुयगम भूभारधर वणग्रालुकविसतार,
कुंडळ (एक) ग्रहीस कर करै तलप (करतार) ॥—२२५

रज नाम

धूळ रजी रज धूमळी सिक्ता वेलू सद,
खह पास (वळै) रेत खग रेण सरकरा (ब्र द) ।—२२६

सुनधर चर पतरुहसुता वसुधासिरविसतार,
(पत रोह धर जदनी पर उपजै नाम अपार) ॥—२२७

धनुख नाम

धनुख सरासण चाप धुन करणग्रस्त्र कोमंड,
सकर ग्रासय पुग्रासिध ग्रहा पिनाक (प्रचंड) ॥—२२८

सायक नाम

सायक पत्री ग्रदर सर विसिख सिलीमुख बाण,
ग्रीधपख्ख यषु मारगण कंकपत्र कग्पाण ।—२२९

खुर पपरी नाराज खग तिक्षण रोपण तीर,
कणक लंब चित्रपूख (कहि) तोमर वसीतुनीर ।--२३०

सस्त्रअजं मघवळ असत्र पत्रवाह पारंद,
(प्रखत करोप अंगजपथ सरविद्या सामंद) ॥--२३१

सरजात नांम

नावक (कर) पावक नखी चावक चपळा (चंग),
कंटी (छिद्र) कळंदरी खपरी परी (खतंग) ।--२३२

अुका अधार कटार (तव) चंद्रकार चौधार,
अठांस छिद्री आंकड़ा किलकी (जंगीकार) ।--२३३

(लेसंग) जखाळी अुकां (वांण) गिलोल्या (बंध),
चुगा फील (पग चंपणा नांम विदांम निमंध) ॥--२३४

करन नांम

रवसुत चंपाधप करन सूतपाळ अरसाळ,
अंगराज राधातनय नेमप्रात दनचाल ॥--२३५

दातार नांम

मौजी त्यागी मौटमन उदभट प्रगट उदार,
महातमा सुदता सुदन दांनअयन दातार ।--२३६

द्रवउभेळ दानेसरी (और) उदीरण (आंण,
कहि महेस दाता करण वरनत प्रात वाखांण) ।--२३७

विलसण तद वगसण अवण समपण मौज सुदात,
रीझ विहायत विसरजण वितरण दांन (विख्यात) ।--२३८

प्रतपायण निरवयण (पढ़ तवां) उछरजण त्याग,
विसरायण उदक (वळै भूप ववै वड भाग) ॥--२३९

याचक नांम

ईहण जाचक आसकर रेणवदूथीराह,
मनरखभागण मारगण अरथी भिखग अचाह ।--२४०

लोभी नीपक लेणरित दवागीर (दिनरात),
जाचक (मांग दसूत जिण वंदीजण विख्यात) ॥--२४१

कव नाम

कोविद पिंडत कव सुकव मेधादध धीमान
दोखविधूसी सुणविदुस विद्याधर विदवान।—२४२

चतुर निपुण विचखण सुचत (प्रापत रूप) सुपात,
प्राग्यन विध गिद विपसचित वेता धीर विख्यात।—२४३

सुप्रधी गिन ग्याता सुधी आचारज अभभूप,
सूरक्रमट अन लवधमुण मप्रतीयद (रूप)।—२४४

सुल्खण मेधी वरनसन विवधा (जाण) प्रवीण,
गुणी मनीखी वागमी लोभीगुणरसलीण।—२४५

(कुमळ विमार धक वद कवि कवराजा कवराज,
नायक मन निध पारखद काव्य कवेसर काज)॥—२४६

जस नाम

सुसबद कीरत सुजस जस वरण ववयण बखाण,
माधवाध अमतूल प्रसध (पढ) सोभाग (प्रमाण)।—२४७

वरद विसेख गुणावळी कीरत ख्यात सुकाज,
(सुनत) सुपारस (समगिना जदा हरण जय ज्याज।—२४८

लिमद प्रताप सलोक यळ रट रूपग रुघनाथ,
सोभा खीर समद सी सुप जस ऊजळ गाथ)॥—२४९

जूभार नाम

सूर वीर विश्रम सुभट (वळ) जूभार सुश्रीत,
तेजस्वी अहंकारतन (पढ) विश्रमान (पुनीत)॥—२५०

तरवार नाम

असमर खाडौ खडग असि किरमर विजड कृपाण,
चन्द्रहास बाणास (चव) करटालग केवाण।—२५१

जडळग धाराजळ दुजड मडल्लाग किरमाळ,
रुक सार तरवार सग निजड जीतरिणनाल।—२५२

लोह धान धजवड स्पाट वार्मेयक झळकाळ,
निमनयम श्राभानरा प्रभायक (भूपाळ)॥—२५३

घोड़ा नांम

हर हैमर वैगाळ हय वाजी गेंग विहंग,
रेवन गाजी पंगरव नाजी तुरी तुरंग ।—२५४

अस धन्ज निघन अगण चाह तुरंगम ताज,
पंनळ नाकर विहूज (नन नन) पवंग पवनराज ।—२५५

कनवीनी (गजराज कही) अरवा नपनी (आंण,
तेज नजीव किनड नन काशा नांम) केकांण ॥—२५६

द्रोपदी नांम

द्रोपदजा (कहि) द्रोपदी जग्यासेनी (जांण),
पंचाळी पंचवप्रिया (केर) वेदजा (वखांण) ।—२५७

सत्यंगना पवना सती वेदवती सिगवांन,
(पोंगण नांगण द्रोपदी देवी रूप निदांन) ॥—२५८

सत्रु नांम

हाणक दोखी वैरहर वैरी अरि विपग,
सत्र सपतन साम्रव सत्रु केवी अहित कुरस ।—२५९

दुखदायक दुजड दुयण अनहण अमण अभीत,
विघनकरण अणवंछकी अभमाती अयजीत ।—२६०

पंचकपंचक प्रतपखी दुष्ट विरोधी (दाख),
खेधी दसू असंत खळ रिम खेवी रिपु (राख) ।—२६१

दुरहित विडघातू दुरी अरंद घातक (आट),
दुरत दमंह दुसमण दुखी विखम कुवादीवाट ॥—२६२

सेन्या नांम

प्रतना सेन प्रताकनी नूर कटक खंधार,
वीरथाट दळ वाहनी अनी कनी कळियार ।—२६३

चक्र तंत चतुरंगणी घोड़ांघटा घड़ूस,
रेणाविखमी आहरट धराविधूसण अरधूंस ।—२६४

विखम वादवी वाहणी गरट फौज गैनूळ,
सकंदवार अरसाधनी मोगर घड़ कड़मूळ ।—२६५

चक्र सकळ धजनी चमू घासाहर घमसाण ,
घटहय थाट बरूथनी मरहडभड खुरसाण ।—२६६
साथ समूह मवधनी गरट दमगळ गोळ ,
(गजण रामण लक गट चढ़ै राम चकचोळ) ॥—२६७

जुध नाम

सजुग भारथ जुध समर समहर दुद समीक ,
कळह ग्रासक्दन कदन ग्रभ्यामरदग्रनीक ।—२६८
प्रहरण ग्रायुधन प्रधुन तेगझाट रिणताळ ,
जग जुध कळ जजवत वाड राड विकराळ ।—२६९
मधू समरद सग्राम (मुण) सप्रहार सघात ,
कळि ग्राजी ससफोट (कहि) प्ररहा वेढ प्रघात ।—२७०
महाहव्य रिणसाल (मुख) सपरापक खळसाळ ,
गारझकोळा सपमुज प्राणदान ग्ररपाळ ॥—२७१

मनुष नाम

म्रतलोकी मानव मनुख धव नर कायाधार ,
देहतती (जग) ग्रादमी मुग्याती तनमार ।—२७२
पुरख (गोद) पचीस्रनी (नाप मान) गुणनीत ,
मनुज (देह भुज्र मुगत कै पूरण राम प्रनीत) ॥—२७३

जनम नाम

जनम उपजण जनुख जण उपन भव ग्रवतार ,
सम्रत उदभव जगश्रजन (करै पाळ करतार) ॥—२७४

बाप नाम

पित प्रपिता सविता पिता बीजावारण बाप ,
तात जनयता जनक (तव) वितदाता (विख्यात) ॥—२७५

माता नाम

ग्रबा जणणी सवयनी मवती मात (नमार) ,
कूखधारण रछ्याकरण मातृ (गुण ग्रदार) ॥—२७६

बालक नांम

अरभ पुत्र बाळक अमुध मिसु लघुवेस कुमार,
पाक प्रथुक अपकंठ (पढ़ि नांम) बाळ (निरधार) ।—२७७
डिमतनु धप डमरू साव पोत (ततसार,
सुंदर ललत उतांन सहि कोमळ नंदकुमार) ॥—२७८

भाई नांम

सगरव हित सोदर मह भाई बंधव भ्रात,
समानोदरज वीर (सिव बल) सोदरज (विख्यात) ॥—२७९

बड़ा भाई नांम

जेठी पित्र पूरवज अग्रज मोटा अग्रम (मांन) ॥—२८०

छोटा भाई नांम

कनसट जवसट अवरकज अनुज लघू कनियांन ॥—२८१

पद नांम

कदम ओयण पग गवण क्रम विचरण पद गतवंत,
चलण पांव अंघ्री चरण पय (परक्रमा पुरंत) ॥—२८२

कड़ि नांम

कड़ कटीर तनमध कटी कळन लंक कट (कीध) ॥—२८३

पेट नांम

पेट कूंख तूंदी (पढ़ौ) उदर गरभ (भव दीध) ॥—२८४

पयोधर नांम

उरज कुच स्तन पयधरा उरदुत उरज उरंग ॥—२८५

हाथ नांम

हाथ आच कर भुज हसत पांचूंसाख (प्रसंग),
करग जुधजयदोर कर पांण बांह (परचंड) ॥—२८६

आंगली नांम

(यों) करसाखा अंगुळी (खळ दळ सार विखंड) ॥—२८७

नख नाम

भुजक्ट नख पुनरभव नखर पुनरनव (नाम),
करज नखी करमूक (कहि) विवदानी (वेकाम) ।।—२८८

रोमावली नाम

रोम पमम गो तनरुह लोम वम्र सयळ (लेख) ।।—२८६

ग्रीवा नाम

ग्रीवा गावड कंध गळौ सिरसथम (सपेख) ।।—२६०

मुख नाम

वकत्र तुंड बोल्ण वदन रसनाग्रह सुरराम,
ग्रास ल्पन ग्रानन श्रवण मुख (हर नाम मिठास) ।।—२६१

जीभ नाम

रटण वाच वाया रसण जिभ्या वगता जीह,
(जिकै) रसग (नाहर जपौ नित "ऊदा" निस दीह) ।।—२६२

दात नाम

दत रदन रद डसण दुज मुखदत वाणीमड ।।—२६३

होठ नाम

ग्रोट होट रदघर ग्रधर रदछद ग्रधर (मुखड) ।—२६४
होट ओट रदघर ग्रधर रदनसदन मुखरूप,
दत रदन रदडमण (दुज ग्रमुख रूप ग्रनूप) ।—२६५
(रसण जिभ्या स्वादरस वाया वगता वाच,
रसण रसगना जीह रट ससरण जीहा साच)[1] ।।—२६६

श्रवण नाम

सुरत घुनीग्रह साभळण करण श्रवण श्रव कान,
वायकचर श्रोता (वर्ण दिस जासू दुनिदान) ।।—२६७

नाक नाम

ग्रहणगध सुरतग्रहि घ्रोणा नासा घ्राण,
नाग तिल्कमग नासका नक (नाकी निरवाण) ।।—२६८

---

[1] छद २६२ में आये हुए जीभ के पर्यायवाची शब्दों की पुनरुक्ति यहाँ की गई है।

नेत्र नांम

देखण द्रठा चख आंख द्रग नेत्र विलोचन (नांम),
नैण नयण अंबक निजर रार निरख गो (रांम) ॥—२६६

माथा नांम

कं मसतक माथौ कमळ मंड रुंड उतमंग,
मउळी सीरख मूरधा (वळ) सिर सीस वरंग ।—३००

उरध मूळ (यौं) प्रकट (अस दळै रांम दससीस,
पाट वभीषण थापियो दांन लंक जगदीस) ॥—३०१

केस नांम

कुंतळ सिरोरुह चिहुर कच सरळ वाळ सिरमंड,
चिकुर केस मोहितचखां (प्रभता) स्यांम (प्रचंड) ॥—३०२

सरीर नांम

वरखभ देही डील वय पुदगळ काया पिंड,
अंग कलेवर आतमज मूरत अप घण मंड ।—३०३

तन वंध गात सरीर (तव) पयगुण देहीपंच,
अंगी (सूत अळूझियौ परखै संत प्रपंच) ॥—३०४

सेवा नांम

भुजन जप सेव भगत पाठीवेदपुरांण,
नवधा गुण हरनांम (ल्यौ) ग्यांन ध्यांन (गुण जांण) ॥—३०५

वस्त्र नांम

वसत्र वाज पिधन वसन चितहर अंबर चीर,
लजरख वसतर लूगड़ा सोसन ढकणसरीर ।—३०६

तनसणगार दकूळ (तव) पैरावणि पौसाक,
(भूप अवै सिरपाव भण तेज रूप तमचाक) ॥—३०७

आभूखण नांम

आभूखण दुतअंगमै (सुख) भूखण सिणगार,
(जड़त घाट विधविध जकै तवां कमक गततार) ॥—३०८

(वें) भूखण मोती कडा पना (जडत) सिरपेच,
कठी नग माळा मुगत वीटी वेळ वगेच।—३०६

सुदरी चाडम रूळ (सं) कुडळ मुरकी (कान),
(बाहा) बाजूबध (विहू) पूची (जडत प्रमाण)।—३१०

(पग) लगर वेडी प्रभा (जुडत) जनोई (जाण,
मुर ग्राभूखण मरद का ससत्र छतीस वखाण)॥—३११

छतीस सस्त्रों के नाम

(चौरासी) वदूक (चल चौसट चोट) कबाण,
(वाक) पटा सग सेल (वहि विध चौईस वखाण)।—३१२

(च्यार) कटारी (हाथ चढ पाच मार) पिसताल,
चुगा (तीन विध सू चलै) खजर (वमू गुण खोल)।—३१३

(पाण) गुरज (गजण) (प्रसण) वलम मोगर (वीस),
भिडरपाळ (भूखडिया) तोमरार (खट तीस)।—३१४

चारू प्रकुस चक्र (चढ) गुपती गदा (गणाय),
छुरी नखा फूळना (छुगा) नेजम खारर (न्याय)।—३१५

(दावपेच) फरसी (दरस) माग ढाल तिरसूळ,
(कठण) मूठ (वाना करण) करपत्री काधार।—३१६

तेग दुधारी करतरी (यो जग) भफ (उचार)॥—३१७

चचल नांम

चटळ चळाचळ कप चपळ चचळ तरळ (उचार),
(पार) पळट ग्रथर पल्व लोल ग्रधीरज (न्नार)॥—३१८

स्त्री नांम

वनिता नारी वनभा भामण कामण भाम,
दारा दम्पी सुदरी वामलोचना वाम।—३१६

बाला त्रिया नितवणी ग्रवळा तरणी (ग्रग),
महेळा प्रेहणि माणणि प्रमदा प्रिया (प्रगग)।—३२०

जुवती जुमनी जोगता ग्रगना ललना (धांण),
मुगधा बनिता ममूननी जोखा पतनी (जाण)।—३२१

रमण तनूदर पुरंध्री तलय (कांम मन तार),
गजगवणी वारंगना (व) सती (नांम विचार) ॥—३२२

भरतार नांम

स्यांम प्रणय वर मनयष्ट भरता पत भरतार,
प्रीतम प्रिय प्राणेस (पर) वलभ विभौडा (वार) ।—३२३
प्रेष्ट भोगता असू पती रमण धणी धव (रंग),
कामख नाह (र) देसकंत (सुख) वरयता (संग) ॥—३२४

सुंदर नांम

वांम मधुर अभिरामवर सुंदर मनहर (सार),
साध मंजु मंजुल सुखम पेसल सोभन (प्यार) ।—३२५
रुच सुलखण दीपत रुचर कमन ललित कमनीय,
सुभग सरूप (र) दरसणी रम सोभत रमणीय ।—३२६
तनक्रांती अनुपम (तवां) अदभूत रूप (उदार),
जोत तेज (गुण जगत में सही रीझै संसार) ॥—३२७

नांम नांम

अवधा संगना आहवै नांमधेय (निरधार),
अवखा अंक संकेत (उड ज्यांसूं नांम जमार) ॥—३२८

मित्र नांम

सहक्रतवा सहचर सुरुद्र प्रीतम सुखदा प्रांण,
मैंगळ मित्रू मनहितू वलभ यष्ट (वखांण) ।—३२९
सवय स्यांम वायकसदा वयच सहायक (वेस),
प्रेमीगुण संधी (चपढ़) हारद (जांण हमेस) ॥—३३०

स्नेह नांम

हेत राग अनुराग हित प्रेम मेळ सुख प्रीत,
हेकमन हारद प्रणय नेह संतोख (पुनीत) ॥—३३१

आणंद नांम

मुद आणंद (र) हरखमन मोद (र) रळी प्रमोद,
रळी महारस प्रमदरस (विलकुल) उमंग विनोद ।—३३२

समदहु नाम (र) परमसुख रसवसमन उछरग,
ब्रमग्यान (चरचावरण उर पूरण सुख अग) ।।—३३३

अहंकार नाम

मछर गरब अहंकार मद माण नाण ग्रभमान,
मनी रढ पौरस समय दरप गरूर (निदान) ।—३३४
तव ग्रभम तामग (जतन) गुमर बडाई गाढ,
तेख (ग्रहच उपजै तठै वाका वचना वाढ) ।।—३३५

सभाव नाम

ग्रातम मानुज (गुण ग्रनुज) समिध (सहज) सुभाव,
(सतत रूप) निसरग सरग चलगत प्रगती चाव ।।—३३६

क्रपा नाम

मया दया करुणा मह्र क्रपा घ्रणा ग्रनुक्रोस,
(पढ) हतोगन प्रमनता (प्रभू) ग्रनुकपा पोस ।—३३७

कपट नाम

छद्द छेतरण द्रोह छळ कपट तोत ठग कूड,
मरम कोस परवाद मिस व्याज यम विधकूड ।—३३८
कैतव वितकर कळ विकळ (दाखो नभ उपदेस),
विपद(लखत) चातुरज(विध विवधा जुगत विसेस) ।।—३३६

पाप नाम

ग्रध्रम पाप दुख दुरत ग्रघ कळमुख कलुख कलक,
ग्रेनकुळल कमख ग्रसुभ ग्राचत वरजत पक ।।—३४०

धरम नाम

धेग्रभाग सतक्रत धरम सुक्रत सेयग्रख (सार),
पुन पुनीत मत गुण (ग्रभा सुरग्रल सौ ससार) ।।—३४१

कुसलखेम नाम

भवक भव्य भावक ग्रभय सुसत सेव भद्रसेव,
कुसळखेम सुभद्र (कही) ग्रभय मगळ सिव (ग्रेव) ।।—३४२

छभा नांम

संसत परखद आसता संमत छभा समाज,
आसथांन समजायता सासद (घटा सकाज) ॥—३४३

सबद नांम

सबद घोख निहघोख (सुद) निनद कुणद (धुन नाद,
रिण) आरव निरावर (सुणत टेर कर साद) ।—३४४
निहकुण राव घुकार नद सोर घोर अवसार,
(ग्रहै ग्राह दध गयंद नै धर हर कियो उधार) ॥—३४५

सोभा नांम

भा आभा दुत विभ्रभा कोमळता छिव क्रांत,
परभा (कुण) सोभा प्रभा सुखमा (राधा सांत) ।—३४६
(कहै) विभूखा कंकला श्री (संकर तनसार,
सारे सार वस्तु सिरै "ऊदा" प्रभा उचार) ॥—३४७

दिन नांम

दिन वासर दिव दुदिवा दिनंद (तेत) अहिदीह,
(आठ पौहर निस दिन उचर "ऊदा" भजन अवीह) ॥—३४८

किरण नांम

रुच सुच गो छिव दुत रसम जोतर तेज उजास,
किरण मयूख मरीचिका भानुभा करभास ।—३४९
प्रभा विधा वसू दीपती किरणावळि (सुखकंद,
सुखद धांम) कर अंसु (रव यळा पोख आनंद) ॥—३५०

तेज नांम

तेज उहासत द्योत तप जगचख वरच उजास,
तमरिप निसचरत्रास उजवाळो "ऊदा" अरक ।
(यौं उर ग्यान उजास) ॥—३५१

उजल नांम

सेत सुभ्र पंडरु सुकळ अरजुन सित अवदात,
विसद वळख पंडरु धमळ सुच उजळ पिंड स्यात ॥—३५२

अंधारे नाम

अंधकार तम अवत मस अंधारौ (या) अंध ,
तिमर तम सवळ मतमम अघ (भूमधा अंध) ।।—३५३

रात नाम

निसीथिणी रात्रि निसा निस रजनी तमनीत ,
तमसा खणदा तामसी विभावरी (वदनीत) ।—३५४
जणिया मखरी जामणी रात त्रजमा (रीत ,
नाम) खिया पत्वनी निमा (पठ) ममप्रिया (पुनीत) ।।—३५५

स्याम नाम

किरट धूम धूमर क्रमण स्यामल मेचक स्याम ,
असत नील प्रभू अळअळी स्याम राम घणस्याम ।—३५६

जोत नाम

दीपक दीप प्रदीप दुत सिखाजोत सारग ,
कजळध्वक ग्रहमिण कळा ताईतिमर पतग ।—३५७
नेहानेह सिखजनम उत्तमदसा उदोत ,
(धाम) उजासी कळधन (प्रगट दसा भव पोत) ।।—३५८

चोर नाम

चोर निसाचर गूढचर प्रतरोधक परमाख ,
मेधा कुवधी मलमुलच तसकर परसनोव ।—३५९
पराम कधी पाटचर श्रेकागार श्रलाम ,
दसू पथकनाढ दुष्ट (तेन पारख हिल ताम) ।।—३६०

मूरख नाम

मूरख जड सठ स्यानमठ मूढ बुढ मतमद ,
मान्नीमुग्र कदवद मुगध (दुयण समणधर दु द) ।—३६१
(जथा जात) जालम निलज मद मजाण ममेध ,
ग्रगन विकळ ग्रगळज असन मठ वेधेय निर्वेध ।—३६२
नेड मूक विवरण निलज बाळ गिवार प्रवूम
वैगवार डोंडा विमुग्नगुण बिणवाद पमूफ ।।—३६३

स्वांन नांम

कौळयक कूकर कुतौ रतसाई रतकील,
रातजगण लटरत (परस) वळतपूंछ रतवीळ ।—३६४

खेतळग्रस मंजारखळ सारमेय असुन स्वांन,
भुसण पुरोगत अस्तमुख गहिचक्रवाळय (ग्यांन) ।—३६५

ग्रामसीह जिभ्याप (गण) ग्रहमृग मंडळगाढ़,
माला (अख) अगदेस सठ (और) तंदुख (आढ़) ॥—३६६

खर नांम

खुरदम खर गरदभ खुरप भूकण लादणभार,
करणलंब संकूकरण अंबापीहण (उचार) ।—३६७

(चिरमी हीरा सब चलै चव वाळै अन च्यार),
संखसवदी (राखै सदा भरै माटी कुंभार) ॥—३६८

विख नांम

गरळ हाळाहळ जैहर (गण) मारण तीखण मार,
विख रस (दुख संसार विध कर रिछ्या करतार) ॥—३६९

अम्रत नांम

सोम पियूख मधु सुधा अम्रत मार (उचार),
अगद (राज भोजन) अमर दधसुत रतन (उदार) ॥—३७०

चाकर नांम

किंकर चाकर सेवकर दास नफर भ्रत (दाख),
चैडौ परभ्रत परमचित अनुचर डिगर (आख) ।—३७१

परसकं दपरजात (पय) विधकर अनुग खवास,
परपिंडा दिनि जोज (पढ़) चेर प्रईक चरास ।—३७२

भुजग सेवगर हुकममय परचाकर कपतप्रीत,
(स्यांम धरम सांचौ सदा चाकर जिकै नचीत) ॥—३७३

हुकम नांम

अग्या आयस आगना (मुणौ) हुकम फुरमांण,
सासन जोग निजोग (सुण ज्यूं) आदेस (सुजांण) ॥—३७४

आतंक नाम

भीर बीह डर भीत भय उदक चमक आतंक,
(साधक) धमक भ्रमक (सो हर मेटण) सक ॥—३७५

वेळा नांम

बार वखत अवसार वय (कहि) अवसर गत काळ,
बरतमान अनंर वरण (यों) समसय हरियाळ।—३७६

(स्याम) ताळ पौहर समय स्तर अनी (विख्यात,
देखत भूली जगतदळ जीव सरब बहिजात) ॥—३७७

पीड़ा नांम

बतरोगी पीडा त्रिया आमय गद आतंक,
रुग उताप दुख असह रुज संकट साद ससक।—३७८

(हरी अपाटव) कष्ट (हर मेट) व्याध असमाधि,
(हरहर सिमर हराहरा सिवसिव भुज्या समाधि) ॥—३७९

झूठ नांम

कूड वृथा मिथ्याकथन असत अठीक अणाळ,
वितथ विकळ अनरत विरत अलीक आळपपाळ।—३८०

(वचन) भूठ विपरीतविध (स्वारथ काज समार,
परमारथ पद पूज गुर "ऊदा" राम उचार) ॥—३८१

सांच नांम

साच सयण चौकस सुमन जथा तथा सिव जौक,
बीसविसा (दसभूतवर) समीचीन मत (चौक) ॥—३८२

बलद नांम

तब ब्रखभ बळरिखभ (तब) ककुदमान बळकार,
वाडमेय ब्रखसेन (बळ) श्रगी भंड ब्रखसार ॥—३८३

गाय नांम

सुरभेई सुरभी सुरह गऊ अगना गाय,
धेनु रोहणी देवधन गन उस्रा महागाय।—३८४

उमा दहवन अरजुनी तमा अंबा तार,
नियमाहेई निलयका (सो) भ्रगणी (जग मार) ॥—३८५

घड़ नांम

वछा केरड़ा वाछड़ा तरण टोगड़ा (तोल),
सबत करजा वाछ (सुर यों) नलवार (अमोल) ॥—३८६

दूध नांम

मधू दूध पय खीर (मुण) गोरस बलमयगात,
उत्तमरस ऊधस अंम्रत सतन पुंसर सरात ॥—३८७

दही छाछ नांम

दही गोरज गोरस दही मथन छास तक्र (मंड),
कालमेय उदस्त (कहि पांचू स्वाद प्रचंड) ॥—३८८

मांखण नांम

तक्रसार दधसार (तव) नैंगवीन नवनीत,
मेळसरूज माखण मधुर परम्रत (साद पुनीत) ॥—३८९

घी नांम

हई यंगवन तूप हवि घिरत आज आधार,
आहिज चीपड़ अंगवळ सरप खह विखसुधार ॥—३९०

भोजन नांम

भख जीमण भोजन भखण अभवहार आहार,
आरोगण खादन असन निगस लेह अनसार ।—३९१
पतवसांन अवसांन (पढ़ सुखदा) सांण (सवाद),
(गहि) वळवधण अखांणगुण नित्यासी यस (नाद) ॥—३९२

मेरगिर नांम

सुरथांनक कंचनसिखर सुरगिर गिरंद सुमेर,
पंचरूप नगमिणप्रभा (महि) सुरथांनक मेर ॥—३९३

देवता नांम

विवुध अमर व्रंदारका दईत्यारी सुर देव,
देव वरद दिवोकसा आदत्या अदतेव ।—३९४

देवता जात नांम

किंनर गंध्रब सिधकार जख रिष तुमर (जांण),
विद्याधर चारण वसू पितर प्रसाच (प्रमांण)।—४०८

संध्याभ्रत अपसर सुरज नाकी धरम (पुनीन),
गीह्क भ्रत सुरलोकगत (पूजौ साच प्रनीत)॥—४०९

अष्ट सिध नांम

अणिमा महिमा ईसता प्रापत (नै) प्राकांम,
वसीकरण गिरमी (वळै) लघुमा (वसू नांम)॥—४१०

नवनिधि नांम

कछप खरब मुकंद (कहि) नील पदम (निरधार),
महापदम संखर मकर (यो) निधकंद (उचार)॥—४११

धन नांम

आय तेयक सवर अरथ माया धन धरमंड,
द्रवण वसू लखमी दिरव (वित) निध रिध (नवखंड)।—४१२

संपत मान निधांन (सुण) आथ खजांनो (आख,
वण कुंभ रखत प्रखत विध भव किरपा सूं भाख)॥—४१३

मोती नांम

मोती मुगता मुगतफळ गुलका रस ससगोत,
मुकतज मुगतज सीपसुत उदकज स्वात (उद्दोत)॥—४१४

स्यामकारतक नांम

सिवकुमार वाहणसिखी अतका उमाकुमार,
प्रखतवाह विमाख (पढ़) सेनांनी ब्रमचार।—४१५

तारकार कंतार (तव) सगभू छमा सकंद,
खटमातुर खटवदन (कहि) अगभू (दे आनंद)॥—४१६

मोर नांम

केकी वरही मोर (कहि) सिखी प्रखत सारंग,
नीलकंठ घणनाद नळ प्रकभख प्रसणपनंग॥—४१७

व्रगक मिग्वडी मिहड (वळ) मेनानीरथ (मार),
सुखलापग मिग्वावळी कुभ क्लापी (सार) ॥--४१८

गुरड नाम

पखीपत तारक सुप्रमण गुरड सेस खगराज,
अरुणानुज व्यालारि अळि हरिवाहण गिरराज।—४१९

साल्मिली सुपरण सजव वैनतेय मनवाह,
सुधाचरण मक्तीधरण गरतमान अहिगाह।—४२०

सोव्रनत कस्यपसुतन पखीपती धखपख,
ग्रीधळ खगपखी प्रगड सुपरणेय अणसख।--४२१

वजरतुड अरुणावरज यद्रजीत अणभग,
मत्रपूत तारक (मुर्द) पूतातमा (प्रमग) ॥--४२२

वेग नाम

मप्रद (दाख) मकू प्रसर सिघ्र वेग जव (मार),
तुरत वाज अधायतर अजुसार वस (उचार)।—४२३

तरस आस आतुर सतुर चचळ दाप चलाक,
तूरण अवलबन झट तर वरय चपल रमाक।—४२४

महस उतावळ दुत (सरस) अवगन रसा अरोड,
(अस) मनेज धौडेय धक (जळद पवन मन जाड) ॥—४२५

पवन नाम

जगतप्राण आमक जवन वाय वात गधवाह,
अगवाहण मारुत मरुत अहिभख पवन असाह।—४२६

सुपरस दागत सुपरसन अहिवळ भग ऊमान,
अनळ नील नभमास (यळ) जळरिप प्राणजिहान।—४२७

वायू चचळ गधवह सबळ प्रभजण (गाय),
गोभ समीर समीरण (ओज) प्रकवण (आख)।—४२८

वाएरो आधी विसम घणवह चत्र वघूळ,
(मीन मद गत उमन मे गिगन) धूध गैतूळ ॥—४२९

घण नांम

धाराधर घण जळधरण मेघ जळद जळमंड ,
नीरद वरसण भरणनद पावस घटा (प्रचंड) ।—४३०

तड़ितवांन तोयद नरज निरभ्भर भरणनिवांण ,
मुदर वळाहक पाळमहि जळद (घणा) घण (जांण) ।—४३१

जगजीवन अभ्रय रजन (हू) काम कमहृत किलांण ,
तनयतू नभराट (तव) जळमुक गयणी (जांण) ॥—४३२

बीजली नांम

चपळा तड़िता चंचळा विधुत असनी बीज ,
(मुण) जळवाळा जळरमण खिणका कांसैग्रीज ।—४३३

संपा समरव सतरदा छटा रासनी (छेक) ,
आकाळकी ऐरावती विजळी खिण (विवेक) ॥—४३४

आकास नांम

वोम गयण अभ नभ वयद अंतरीख आकास ,
खं असमांन अनंत खह पौहकर अमर प्रकास ।—४३५

मेघ, खगपंथ* पवनमग (सुर उडपत तत सार) ,
पूरण आभी विसनपद सुन्य पौल (दुत सार) ॥—४३६

तारा नांम

जोत धिसन ग्रह जोतकी तारा उड रिखतेज ,
(रि) तेज रूपमिण तारका नखत्र दीपनभ (सेज) ॥—४३७

संख नांम

संख कंब वंधव संखो दवसुत वारज (देख) ,
विसद खौड सावरत (विध) रतना मध्यत्ररेख ॥—४३८

नाव नांम

वैड़ो वैड़ो पोत वळ जळतर नाव जिहाज ,
वांणवहण वोहि (वळै) तरण (नांम सिरताज) ॥—४३९

---

* मेघ, खगपंथ=मेघपंथ, खगपंथ ।

खेवटिया नांम

वाणी माळम दघविधी खेवटिया (जळ म्यान),
दघभेदी दूरतेगी (निपुण) नाववा (न्यान) ।—४४०
म्यारीवा नीखाम्वा ग्रोरेभ डाळामग,
नावाहाक्ण (गुणनिपुण पारावार प्रमग) ॥—४४१

चौईस ग्रवतार नाम

राम त्रमन नरहर रिखभ ब्रवम हरी वाराह,
मछ क्छ (मीन) मनतर नारायण सुरनाह ।—४४२
ध्रूवरदाम धनतर क्पलदेव निक्लक,
मनकादिक हसादि (दत) प्रथू व्याम (परियक) ।—४४३
वामण बुध दुजराम (वळ यों) हयग्रीव (उचार,
वपघारै चत्रविमनी यळक्ज भार उनार) ॥—४४४

सीता नांम

जगदवा श्री जानकी वैदेही हरवाम,
मीता भूजा मिया मती जनक्जा (स्याम) ।—४४५
महमाया मा मइथळी (क्कट करण ग्रकाज,
जिर्ण कोप लका जळी राक्म बिगडै राज) ॥—४४६

ग्रॅरापन नाम

हस्ती ग्रैरापत हमत मघवावाहन मतग,
रामणभ्रम सुरनाथरथ (ग्रौर) वलमउतग ।।—४४७

सताईस नक्षत्र नांम

ग्रमनी भरणी (ग्रादद) ग्रतका रोहणी (काज),
ग्रगसर ग्राद्रा पुनरवसू पुम ग्रसलेखा (पाज) ।—४४८
मघा (नाम दसमौ मुणी) पुरवाफालगुणी (पेख),
उतराफालगुणी हस्तउड चित्रा स्वात (विसेख) ।—४४६
वैमाखा ग्रनुराधा (वळ) जेष्टा मूळ (जणाय),
पूरवाखाडा उतर* (पढ़) श्रवण घनेष्टा (पाय) ।—४५०

---

* उतराखाडा ।

सतभिख पूरवाभाद्र सुणि उतरा* रेवती (अंग,
नांम सताईस मूं नखत्र सुण कवियण परसंग) ॥—४५१

बारै रासां रा नांम

मीन मेख ब्रख मिथन करक सिंघ कन्याह,
तुल ब्रसचक धन मकर (तव रास्यां) कुंभ (सराह) ॥—४५२

नग नांम

मिण मांणक मुगताहळ पना ल्याल पुखराज,
चंद्रमिणी चिंतामिणी अहिमिण पारस (आज) ।—४५३
नीलमिणी मैंलांन नग चूनी हीरा चूंप,
(नै) पीरोजा ल्हसणिया पारस फटक (अनूप) ।—४५४
गोमेदक मूंगा (गणी) पदमराग परवाळ,
(निध) मरकतमिणी नीलवी (अत दुत तेज उजाळ) ॥—४५५

सात धात रा नांम

कंचण तार जरोद (कहि) सीसो लोह (सुणाय),
तांबो (वळै) कथीर (तव सात धात दरसाय) ॥—४५६

सात उपधात रा नांम

(हद) पारो विख हींगळू (त्यूं) अभ्रक हरताळ,
रसकपूर मूंगा (रटो विध उपधात विसाळ) ॥—४५७

हंस नांम

मांनसूक धीरठ (मुणी) मुगताचाळ मराळ,
चक्रंगी अवदातचळ लीलग हंस बलाल ॥—४५८

मूसा नांम

मूंसा ऊंदर सूचिमुख मूखक भखमंजार,
वजरदंत आखू (वळै) ऊंदर (नांम उचार) ॥—४५९

खट भाखा नांम

प्राकृत (नरभाखा पढ़ो नागां) मागध (नीत,
सुरभाखा सो) संसकृत (रकस) पिसाची (रीत) ।—४६०

---

* उत्तराभाद्रपद ।

अग्रभिसी (पसीउक्त दनुज) हूँसनी (दाख,
प्रभना काव्य प्रमाममैं अै भाखा सट आख)॥—४६१

च्यार पदारथ नाम

(धार प्रथम सुजन) धरम (द्रव गुण) अरथ (दिखाय),
काम (मपूरण कामना प्रभूपद) मोख (उपाय)॥—४६२

सखी नांम

सखी महेली सहचरी हितु सुवछक (हेत),
वयमा सघ्रीची (वळै सुवदा) सयण सचैन॥—४६३

च्यार प्रकार रो मुगती रा नाम*

निश्रेयस निरवाणपद अम्रत मुगत अपवरग,
गतनिरभयआवागमण सुखाधीस वरस्वरग।—४६४

ग्यानमुगत केवळगत महामुगत नरमोख,
पुरीवास सामीप (पढ समस जोत सतोख)॥—४६५

दासी नांम

दासी भ्रत्या दिलरखी गोली चेडी (गात),
कळचाळी (गुण) किंकरी विदरी (चळ विख्यात)॥—४६६

काजल नांम

(मुण) कज्जळ पाटणमुखी नागदीय-सुत नेह,
(गज) अंजण मोहणगती सुग-त्रिय नैणसनेह॥—४६७

हीरा नाम

कुमख वज्र हीरावणी (अै) दधीचरिखअस्त,
निरखपदक्रभरणा निधी (मिरहर) नग (समस्त)॥—४६८

मगल नाम

अगारक कुज यळसुवन लोहितांग दुनलाल,
मगळ भौम कुमारमहि चत्रभुज वृखी (सुचाल)॥—४६६

सुक नाम

भाग्गव उसना सुक्रमण कावत्र कवि चखएक,
हिरणगरभ दनुप्रोहिता विधा सजीवन (नेक)॥—४७०

* चार प्रकार की मुक्ति—सालोक्य, सारूप्य, सामिप्य, सायुज्य—मानी गई हैं। उन्हीं के पर्यायवाची यहाँ दिए गये है, जिनमें से पाँच का उल्लेख 'अमर कोष' में भी है।

नमसकार नांम

प्रणत प्रधन वंदन (पढ़ी) नमो नमसक्त (नांम ,
विध) सिलांम (वसू) डंडवत नमसकार (नित नमि) ॥—४७१

सीढ़ी नांम

निश्रेणी सासोपान (कनिज) आरोहण आरोह ,
सेढ़ी नीसरणी (सदा मोहण भुजन समोह) ॥—४७२

पुत्री नांम

तनिया तनुजा पुत्रका दुहिता सुता (वदंत) ,
कुळजा बेटी कन्यका कुळस्वासणी (कहंत) ॥—४७३

सेज नांम

सेज तलप सज्या सयन संवेसण सयनीय ,
कस्यप दुगध दधफीण (कत) कंतहरख (कमनी) ॥—४७४

तकिया नांम

गिदुक तकिया (हरु) गिलम उयबर (वर) उपधान ,
(म्रदुल) उसीस उठंग (मुण वद) उसीर (विदवान) ॥—४७५

भाल नांम

भाळ निल्लाड़ ल्लिलाट (भण) अलकमध्य विधअंक ,
भागधांम अछरभवन (नर घर सांच निसंक) ॥—४७६

टेढ़ा नांम

वांम कुटिल टेढ़ौ विखम वंक असुध विरुध ,
वक्र (नांम) कुंचत (विना सिमर रांम मन-सुध) ॥—४७७

वंसी नांम

मतस्या धानी मीनहा कुंढ़ी वनसी (कांम) ,
विडस कुंभ निभ्रख वधक (रह न्यारौ भुज रांम) ॥—४७८

चिवक विंदी नांम

चिवक (स्यांम) विंदी (चढ़ै असित नील दुत आख ,
स्यांम रांम) मेचक (असत सस लछण) छिव (साख) ॥—४७९

ब्रहस्पत नांम

सुराचार्ज सुरगुरु (सदा) ब्रगपत (जीव वखाण) ,
रिखी सुनेसर वेदरस (जान) सिखंडी (जाण) ।—४८०

धिखण सुरइज्ज गुरधरम वाचसपति वद (वाच) ,
गणपीत दुज अंगिरस सरगपूज गुरराज ॥—४८१

छुद्रघंटिका नांम

कांची रसना किंकणी (सूत्र) मेखळा (विसाळ) ,
छिद्रघंटिका छिद्रावळी (जुगत अनूपम जाळ) ॥—४८२

तरकस नांम

भाथो माथ निखंग (भण) तरकस तून तूनीर ,
उपासग यखूधीयना विसिखधाम (रिनवीर) ॥—४८३

धनुस नांम

सिखरम आयदा (पढी) बाणासणी कबाण ,
सारंगी वधगरवा नूंजी धनुस (ताण) ॥—४८४

नूपर नांम

पादा अंगद नूपर (प्रभा मिलय) घूघर मजीर ,
तुलाकोट भ्यक्कारतन (सजण हरख सरीर) ॥—४८५

पांन बीड़ा नांम

दुजमुख (मडण) पान दळ तिन्न विफळ तबोळ ,
नागलता मुखवास (निज) रदछदरगण बोळ ॥—४८६

आरसी नांम

प्रतबिंबी आदरस (पढ) मुकर आरसी (मड) ,
दरपण काच (रु) मुखदरस खुसदावती (अखड) ॥—४८७

वीणा नांम

वीणा तंत्री वल्लकी जन्त्री जत्र (सुजाण) ,
सुसी (अपची) सुरग्राह (पारावार प्रमाण) ॥—४८८

सुवा नांम

मुक तोता सुरगह सुवा किंसुक मुखभा कीर,
रगतत्रूंच लीलंगरित (रस वहु रंग सरीर) ॥—४८६

गुपत नांम

(तवां) तिरोहित अंतरित गुपत लुक गूढ़,
दुरत निलीह अताक दव मुगध प्रछन लुक (मूढ़) ॥—४९०

हलद नांम

पीडा रजनी हळद (पढ़) पीता गवरी (पाळ),
गुणदा हरदी मंगळा (भो) कंचनी (रसाळ) ॥—४९१

क्रोध नांम

(दुरत) रोख अमरख दुमह कोप रोस रुट क्रोध,
रोख मन्यू तम रीस (रुख) विखमी प्रजुळ विरोध ॥—४९२

दीरघ नांम

प्रथुन्न प्रांसु परणाह प्रथु व्रधु गुर दीरघ विसाळ,
आयुत म्यूढ़ उत्तंग (कहि स्यांम) वडौ मिखगाळ ॥—४९३

वेद नांम

आमनाय श्रुत वेद अंग निगम अगोचर (नांम),
धरममूळ अवकामधुनि व्रंमरूप (विश्रांम) ।—४९४

स्यांम जुंजर रुघवेद (सुर असुर) अथरवा (अंग,
वेदां च्यार पुराणवण सो अढ़ार परसंग) ॥—४९५

रुधिर नांम

श्रोण रुधर आसुर रगत जोस असुक (खित जात),
रत लोहू जीवन रुत्ता वप पुसरी (विख्यात) ॥—४९६

समीप नांम

तट नजीक ढिग निकट (तव) उप ममीप (अभ्याम,
यूं) पारमव अवदूर (अंत) पासै नैड़ौ पाम ॥—४९७

संध्या नाम

निसमुख सध्या पित्रीप्रसू मफ्रया सायंकाल,
माभ नमभा आसुरी प्रदोखन मचर (पाल) ॥—४६८

पपीहा नाम

कळनकठ हरस्वात (हर) पपिया चातुक पीव,
(पीव-पीव) मारग (पढ जळघण तडपन जीव) ॥—४६९

गिनका नाम

वारवधू जगवलभा निलजा पुंमचली (नाम),
दासी दारी द्रबप्रिया (यौ) लंभिका (अलाम)।—५००
(ज्यू) खाळा धनजोखता कुलटा (पीन निश्राम,
कहत) सभली कामकी वैस्या गिनका (वाम)।—५०१
प्रेमास्वारथ परप्रिया रूपाजीवा (रग),
चातुर भगतण कचणी धनी (चाह अनग) ॥—५०२

पतव्रता नाम

माध्वी सती मनस्विनी पतपरताप पतप्रेम,
मुचहिय सुचरम्र मनममी (निपुण चाल) उरनेम ॥—५०३

नीचा नाम

नमण नीच अध तळ नमत खणत वितळ (जल ख्यात),
उरघलोक (आमा कगे भुज हर-चरण विख्यात) ॥—५०४

सूक्ष्म नाम

तुछ अल्प लव सुखम तनु निपट अमादर (नाम),
औछो कम थोडो अणू वारबुद (विश्राम) ॥—५०५

मकरी नाम

मकरी सूत्रा मरकटी ऊरणनाभ (भव ग्राम,
कहि) लूतार कुळायतौ कोळीबाड (प्रकास) ॥—५०६

दिसा नाम

कन्या काष्टा ककुभ (दिस) गो आसा दिम (गात),
पूरब पछम उत्तर (पढतव) दिखण (दिम तात)।—५०७

वायव (अरु) नईरत (वळै) अगन (दिसा) ईसांन ,
(दोय दिसा विचमे दिसा वरणो सवण विधान) ॥—५०८

पत्र नांम

पत्र परण दळ पांन (कहि) पत्रा वरह छद पात ,
(जव खरकत कूपळ जरत अंग खग छांह लुभात) ॥—५०९

दुख नांम

कदन विधुर संकट कष्ट गहन व्रजन दुख (गात ,
माधव दुख जामण मरण प्रभू टाळो) उतपात ॥—५१०

लाज नांम

लाज लज व्रीड़ा लज्या (कर) सकुचन (विनु काज ,
लख ही त्रपा मुलायजौ सुधरै काज समाज) ॥—५११

मदरा नांम

मद आसव मदरा मधू वारा वारणी (वार) ,
सुरा (पान) हाला मुरा सिंधूप्रसूत दवसार ।—५१२

मयकामा ही मयंगिरा कादंबरी चिकाळ ,
प्रसना वृधहा मुगधप्रिय मदनो मदवांमाळ ॥—५१३

समूह नांम

घणा जूथ जूथप सघण समुदय व्यूह समूह ,
पूग्पूग विथचय पटळ फौजा कटक फतूह ।—५१४

वहुत कुरंभ कदंब वहू औघ अनंत अपार ,
कलाप कुल (प्रकरण करण विसरण चय विसतार) ।—५१५

झूल चक्र संदोह झंड तोम समाज सघात ,
कंदळ जाळ कनिचय (कहि) ग्राम वोहळ (जळगात) ॥—५१६

अत नांम

अतसय भ्रत अत वेळ अति यधक नितंत अनंत ,
अत अनंत (रजकण यळा रचना रांम रचंत) ॥—५१७

तनक नाम

दर स्तोक ईखद अलप मद तुछ मदाक,
ओछ तुछ रचक अणू (श्री सुख विश्विया आख) ॥—४१८

पगरखी नाम

पायत्राण पदपीठ (पढ) पहनी खलो उपान,
जोडी पानह जतिया काटाखी कुदान।—४१६
पगसुख पनिया पगरखी पापपोस पैजार,
मौजा माचा मोचडा पगपाखर पयचार ॥—४२०

श्रटा नाम

उरधओक मेडी अटा सौध हरम सुखमार,
(मुर जुग भूमी) माळिया (धरम पुमप निरधार) ॥—४२१

गली नाम

सुरली प्रपा प्रतोल्का वीथी सेरी वाट,
मग डाडी (सूधी मिळै उपजै नही उचाट) ॥—४२२

उपवन नाम

बाग बगीचा उपवना (सीत रूख नर मार,
अबादिक कता अनत लता सुगध ल्मत) ॥—४२३

पखी नाम

पछी खग सुकनी पत्री दुज अडज परदरप,
विहग विहगम हरिव्रती मजव पत्ररथ मरप।—४२४
विपत पत्रनी नभवटी पखी पतग पतग,
वळवठी (श्रत) आव्रती (सदा तपी) तरसग ॥—४२५

रगलाल नाम

लोहित राता पातलग अरुण साल आरक्त
(उत्तम तर विवधा अरथ अरथी जन आसक्त) ॥—४२६

बसत नाम

कुसमाकर रितराज (कहि) वर द्रुमभूप वसत,
मध सुरभी कुसमावळन (ल्ता सुगध लसत) ॥—४२७

पाडल् नांम

पाडळ थाळी पलकही वामासार मवक्ष,
दंवु वसामध दूधका (पंखी चाहत प्रतक्ष) ॥—५२८

आंबा नांम

पिकवलभ कामांग (पढ़) सखमदरा, महकार*,
नूतर साळ अनूपतर अंवा (अक्ष उदार) ॥—५२६

चंपा नांम

चांपेयक सुभेयं (चव) कुसमाहिम सुकुमार,
चंपक चंपौ (भमर चित अडै न वाम अपार) ॥—५३०

दाड़म नांम

(पीतरंग) दाड़म (पढौ लाल फूल कण लाल),
सुकप्रिय हालमकार (सुण) पिंगपुष्ट गदपाळ ॥—५३१

नाळेर नांम

सुरभी मिलूप सदाफळा नीला अदुल नाळेर,
ताळविलव्र माळूर (नव विविध नहै वर वेर) ॥—५३२

तमालपत्र नांम

कालकंधता पिछक (कहि) तंडुळ ताळ तमाळ,
(गंध पत्रता मेट गद मधुता भोज तमाळ) ॥—५३३

पलास नांम

त्रपतकपरणपलास (तव) वात पोत (विध व्रख,
एक श्रुकज निसू अम्र हळदी नाहर-नख) ॥—५३४

कदम नांम

मदरा गंध सुवासमद हरप्रिय कदम (कहंत),
नीप तूल देवांनिनंग (सुरगण सेवग संत) ॥—५३५

सखमदरा, सहकार=सखमदरा, मदरासहकार।

बेड़ा नाम

अक्षक रवफळ कटूकफळ भूतावास बभीत,
समर त्रळि त्रख सुघ पिड बहेड़ा (प्रीत) ॥—५३६

सोपारी नाम

घोटक मुखद्धवा कफळ पुग सुपारी (प्रीत),
पुगीफळ फौफळ (पढो नरमुख वाम पुनीत) ॥—५३७

नारेल नाम

वानरमुख सुभकामयर कठणकाचळी केर,
ग्रमर भेट फळ नाळियर नाळेकेर नाळेर ॥—५३८

कनक्ष नाम

कोळ कळका कड़ुकर कँवच खणक (निकाम),
कऊछफळी कपटुयण (कहि विन ताबा वेकाम) ॥—५३६

मिरच नाम

मिरच तीख तिखता मिरी ग्रसनाफळा सिधकाम,
(कहि) उखणा (ग्रर)कौलका सुधकर (गोली स्याम) ॥—५४०

पीपर नाम

तिगम मगधी तदुळा मुडी ऊमना (मार)
कौळा वैदेही कणा पीपर स्यामाधार ॥—५४१

मूठ नाम

विस्वा नागर मूठ (वळ) महाऊखधी (मड),
श्रीपाळी मतवी (सिरै चमनकार परचड) ॥—५४२

प्रवाल नाम

विद्रुम प्रवाळ रगत दधसुत मूगा (दाख),
सुखरा नगीन लीघमिण (कपोता हिक्व भाख) ॥—५४३

दाख नाम

ग्रदुका स्वादी मधूरमा दाख गुडा (दरसाय),
काळमोख काष्टफळ छुद्रा गोस्तनी (छाय) ।—५४४
वेदाणी दाणी दुविधमेटण (रोग मलाम),

सोनजुही नांम

सोनजुही (र) सुगंधका जूही जूथका (जाय),
गिनका ह्रिरणी (नांम गिण देव पुप्पका दाय) ॥—५४६

मालती नांम

मधुमई सुमना माल्ती उत्तमगंधा (श्राख),
अंत्रष्टा प्रियवादनी सुगंधमल्यका (साख) ॥—५४७

रामवेलि नांम

राजघ्रनीका रसवती रायबेल मितरंग,
अवजस (पुन) प्रियचलका (मधुकर भ्रमत मतंग) ॥—५४८

सजीवनी नांम

सार सजीवन मधुश्रवा जीवा जीवण (जांण,
वळ) जीवंती व्रलका (उर हर भगती आंण) ॥—५४६

माधवी नांम

कुंदलता माध्री (कहि) ल्लितलता (यक लेख,
मधुप उछव अत मुगतमद कछुछक बसत पेख) ॥—५५०

बंधूक नांम

जीवब्रंधू ब्रंधूक (जप) जपा (कहत घण जांण,
परखो) दुपहडपोरिया (पुसपा जात प्रमांण) ॥—५५१

गुंजा नांम

रंगलाल चिरमी रती (सो) गुंजा मुखस्यांम,
काक ब्रंबुका क्रप्णला तुला चिणोठी (तांम) ॥—५५२

खिजूर नांम

पिचकिच जायंती पड़द अणद्रुम ताळ खिजूर,
परपत्रावळि खोंडिया जगमख (स्वाद जरूर) ॥—५५३

लवंग नांम

देवकुसम जायक (दखै) श्रीसंग तीक्षणसंग,
तीव्रतेज तीक्षण (वळी लवु नर अंग लवंग) ॥—५५४

इलची नांम

त्रकुट बाळचा तवलता एळा एळची (ग्रग),
चंद्रकन्यका मुगवाम(चव पढ) निवकुटो(प्रसग) ॥—५५५

नागरबेल नांम

ताबूळी अदीवेळ (तत) दुजपानदळ (दाख),
नागरबेल तबोळनित (ग्ररण ग्रधर मुग्र ग्राख) ॥—५५६

तट नांम

तीर रोध ग्रन्यास तट कूल पुलिन उपकठ,
काठो पाज ग्रजाद (कहि चल) थिर पाळ चमठ ॥—५५७

कुंज नांम

विजुळ सीत विदुळरथी विटपतटी लुकवेस,
कुजभवन तरकुज (कहि दपती-कृष्ण सुदेस) ॥—५५८

कोकल नांम

परभ्रत पिक कोकल(पढो) म्रदुधुनि कोयल (मड),
दुतसुर भरव्रत रतगद्रम (खुल वसत ग्रखड) ॥—५५९

इन्द्रिय नाम

इद्री विखई यद्रीया गोवेता गुणग्यान,
गुणग्राकर स्रणकरणगत (धरण विखै जुग ध्यान) ॥—५६०

मकरद नांम

कुममसार मकरद (कहि) सोरभवास सुगध,
रसमय मधूपन पुसपरस (पखि ग्रळि मोह प्रबध) ॥—५६१

• •

नाम-माला

रचयिता : अज्ञात

एलची नाम

अतुट बाळका तवलवा एळा एळची (अग),
चन्द्रकन्यका मुखवास(चव पढ) निमकुटी(प्रसग) ॥—५५५

नागरबल नाम

नावूली अर्दावेळ (तर) दुजपानदळ (दाख),
नागरबल तराळनिन (अरुण अधर मुख आख) ॥—५५६

तट नाम

तीर राध अन्याम तट कूल पुलिन उपकठ,
काठो पाज अजाद (कहि चल) थिर पाळ चमठ ॥—५५७

कुंज नाम

विजुळ सीत विद्रुळरसी विटपतटी लुकवस,
कुजभवन तरवुज (कहि दपती-कृष्ण सुदेस) ॥—५५८

कोकिल नाम

परभ्रत पिक कोकल (पढी) अदुधुनि कोयल (मड),
द्रुतसुर मरव्रत रतगद्रग (मुख वसन अखड) ॥—५५६

इन्द्रिय नाम

इद्री विमई यद्रीयां गोवेता गुणग्यान,
गुणआकर खणकरणगत (धरण विखै जुग ध्यान) ॥—५६०

मकरद नाम

कुसमसार मकरद (कहि) सौरभवास सुगध,
रसमय मधूपन पुसपरस (पखि अळि-मोह प्रबध) ॥—५६१

••

नांम - माळा

चौईस अवतार नांम

मीन कमंठ नरसींघ मनुनर ,
नारायण हरि हंस धनंतर ।
व्यास प्रथु सनकादिक वांमण ,
दत्त जिन बुध रघुनंदण ।—१

कपिल काह* रिद्ध नियकलंकी ,
ध्रुववरदन दुजरांम (धनंकौ) ।
रिखभदेव हयग्रीवां (रूप ,
संत सुरां काज किया सरूपं) ।—२

रांम नांम

रघुकुळतिलक रांम रघराजा ,
सीतापति रघुवर सुरराजा ।
भाणभांणकुळ रघुनंदन (भणि) ,
मकराक्षा गिरराग्विंनमिण ।—३

कुंभारदन कुकुस्त मित्रकपी ,
(ज्यांनकी सु) रघुनाथ रांम (जपी) ।
रामचंद्र भरथाग्रज (राजै) ,
दासरथी (अवतार सदा जै) ।—४

ईसअजोध्या (अकळ अनूपं) ,
रांमणारि (द्वादस रवि रूपं) ।
लंकादत्ती विधूगीलंका ,
सेतबंध रघवंस (असंका) ।—५

लछमणभ्रात अजादालंगर ,
भगतांपति राकसां-भयंकर ।

सीता नांम

सीया सती ज्यांनकी सीता ,
वैदही मैथली (वदीता) ।—६

---

* 'काह' शब्द का अर्थ स्पष्ट नहीं है ।

नांम - माला

चौईस अवतार नांम

मीन कमंठ नरसींघ मनंतर,
नारायण हरि हंस धनंतर।
व्यास प्रथु सनकादिक वांमण,
दत्तति जिग बुध रघुनंदण।—१

कपिलं काह* रिछ निकलंकी,
धूवरदन दुजरांम (धनंकी)।
रिखभदेव हयग्रीवां (रूपं,
संत सुरां कज किया सरूपं)।—२

रांम नांम

रुघकुळतिलक रांम रुघराजा,
सीतापति रुघवर सुरपाजा।
भांणभांणकुळ रुघुनंदन (भणि),
मकराक्षा रिखरारिवंसमिण।—३

कुंभकदन कुकुस्त मित्रकपी,
(ज्यांनकी सु) रुघुनाथ रांम (जपी)।
रामचंद्र भरथाग्रज (राजै),
दासरथी (अवतार सदा जै)।—४

ईसअजोध्या (अकळ अनूपं),
रांमणारि (द्वादस रवि रूपं)।
लंकादती विधूसीलंका,
सेतवंध रुघवंस (असंका)।—५

लछमणभ्रात अजादालंगर,
भगतांपति राकसां-भयंकर।

सीता नांम

सीया सती ज्यांनकी सीता,
वैदही मैथली (वदीता)।—६

---

* 'काह' शब्द का अर्थ स्पष्ट नहीं है।

रामप्रिया (भुजा) रघराणी,
(वेद पुराण नीत बखाणी)।

लछमरण नाम

रामानुज लछमण असुरारि,
बाळजती सेखा - अवतारी।—७
सौमत्रेय लखमण दसरथसुत,
जमरघवसी इद्रजीनजत।

हणमत नाम

वज्रकटक वकट बजरगी,
हणमत हणुमान हणुअगी।—८
रामभीच एकादसरुद्र,
सुसरनद कपि भ्रफमसुद्र।
मारुति जती महाबळ (मडिति),
(राम ध्यान उर ग्यान अखडिति)।—९

ईश्वर नाम

अतरजामी निगम अगोचर,
गोपिरासिरमण गो-गोचर।
त्रिगुणनाथ त्रीकम गजतारण,
अमर अजर धरभारउतारण।—१०
हरि माधव कमलापति नरहर,
जगदाधार वसीधर गिरधर।
धूतारण भूधर धरणीधर,
केसव राम असरण करणाकर।—११
गोपीजनवल्लभ गोविंद,
चक्रपाणि श्रीधर व्रजचन्द।
गावरघनधारी गापाळ,
दासरथी रघनाथ दयाळ।—१२
द्वारकेस वीठळ मधुसूदन,
देनादुयण देवकीनदन।

प्रभु जसोदानंद व्रजपती,
व्राळमुकंद मुकंद (सत्र रिती)।—१३

वासदेव विसनु जगवंदण,
... ... कंसनिकंदण।
नंद-नंद निरगुण नारायण,
रांमणारि वेता-गंगायण।—१४

इंद्रावरज उपिंद्रश्रवत अज,
धणी विसंभर अलग गरुड़धज।
आणंदकंद अन्युत अव्रणासी,
पतितउधारण जोतिप्रकासी।—१५

पदमनाभ चत्रभुज परमेसर,
पुरसपुरांण धरणपीतंबर।
स्यांम मुरारि मनोहर सुन्दर,
देवांदेव अनंत दमोदर।—१६

मधुवनमधुप अकळ वनमाळी,
कैंटभकन्दन मरद्दन-काळी।
भगतवछळ भगवांन त्रिभंगी,
सीतापति रुघवर सारंगी।—१७

व्रंद्रावनपति कुंजविहारी,
विखकसेन तारकअसवारी।
मधुवनसिंघु व्रखाकपि मोहण,
व्रजभूखण वांमण वलिवंधण।—१८

असुरवहण भगवंत अधोखिज,
गोकळेस करता भरताग्रज।
विस्वरूप वैकूंटविलासी,
रावारवण रचणव्रजरासी।—१९

गोपी, गोप ग्वाळपति* सरगुण,
निरविकार निरलेप निरंजण।

* गोपी, गोप, ग्वाळपति=गोपीपति, गोपपति, ग्वाळपति।

रामप्रिया (भुजा) रुघराणी,
(वेद पुराण गीत बखाणी)।

सक्ष्मण नांम

रामानुज लक्ष्मण असुरारि,
वाळजती सेखा - अवतारी।—७

सौमत्रेय लखमण दसरथसुत,
जमरूधवसी इद्रजीतजेत।

हणमन नांम

वज्रकटक वकट वजरगी,
हणमत हणुमान हणुग्रगी।—८

रामभीच एकादसरुद्र,
सुसरनद कपि झम्पमुद्र।
मारुति जती महाबळ (मडिति),
(राम ध्यान उर ग्यान अखडिति)।—९

ईश्वर नांम

अतरजामी निगम अगोचर,
गोपिरासिरमण गो-गोचर।
त्रिगुणनाथ त्रीकम गजतारण,
अमर अजर धरभारउनारण।—१०

हरि माधव कमलापति नरहर,
जगदाधार वसीधर गिरधर।
धूतारण भूधर धरणीधर,
केसव राम असरण करणाकर।—११

गोपीजनवल्लभ गोविंद,
चक्रपाणि श्रीधर ब्रजचन्द।
गोवरधनधारी गोपाळ,
दासरथी रघनाथ दयाळ।—१२

द्वारकेस वीठ्ठळ मधुसूदन,
देनादुधण देवकीनदन।

प्रभु जसोदानंद व्रजपती,
वाळमुकंद मुकंद (सव रिती)।—१३

वासदेव विसनु जगवंदण,
... ... कंसनिकंदण।
नंद-नंद निरगुण नारायण,
रांमणारि वेता-रांमायण।—१४

इंद्रावरज उपिंद्रश्रवत अज,
धणी विसंभर अलख गरुड़धज।
आणंदकंद अच्युत अवणासी,
पतितउधारण जोतिप्रकासी।—१५

पदमनाभ चत्रभुज परमेसर,
पुरसपुरांण धरणपीतंवर।
स्यांम मुरारि मनोहर सुन्दर,
देवांदेव अनंत दमोदर।—१६

मधुवनमधुप अकळ वनमाळी,
कैंटभकदन मरद्दन-काळी।
भगतवछ्ळ भगवांन त्रिभंगी,
सीतापति रुघवर सारंगी।—१७

व्रंद्रावनपति कुंजविहारी,
विखकसेन तारकअसवारी।
मधुवनसिंधु व्रखाकपि मोहण,
व्रजभूखण वांमण वलिवंधण।—१८

असुरवहण भगवंत अधोखिज,
गोकळेस करता भरताग्रज।
विस्वरूप वैकूंटविलासी,
राधारवण रचणव्रजरासी।—१९

गोपी, गोप ग्वाळपति* सरगुण,
निरविकार निरलेप निरंजण।

* गोपी, गोप, ग्वाळपति=गोपीपति, गोपपति, ग्वाळपति।

रामप्रिया (सुजा) रघराणी,
(वेद पुराण तीन वखाणी)।

लछमण नांम

रामानुज लछमण अमुरारि,
वाळजती सेसा-अवतारी।—७
सौमत्रेय लखमण दसरथसुत,
जगरघवंसी इंद्रजीतजेत।

हणमंत नांम

वज्रअंटव वकट वजरंगी,
हणमंत हणुमान हणुअंगी।—८
रामभीच एकादसरुद्र,
मुसरनद कपि क्रम्ममुद्र।
मारुति जती महाबळ (मंडिति),
(राम ध्यांन उर ध्यान अखंडिति)।—६

ईश्वर नांम

अंतरजामी निगम अगोचर,
गोपिरासिरमण गो-गोचर।
त्रिगुणनाथ श्रीक्रम गजतारण,
अमर अजर धरभारउतारण।—१०
हरि माधव कमलापति नरहर,
जगदाधार वंसीधर गिरधर।
घूतारण भूधर धरणीधर,
केसव राम ग्रम्ण करुणाकर।—११
गोपीजनवलभ गोविंद,
चक्रपाणि श्रीघर व्रजचन्द।
गोवरधनधारी गोपाळ,
दासरथी रघनाथ दयाळ।—१२
द्वारकेस वीठळ मधुसूदन,
देतादुयण देवकीनंदन।

वारिविरोळण दैतविडारण,
आदिवराह धराउद्धारण।
रुघराजा काकुस्थ खरारि,
व्रस्टर-सवा अखितविहारी।—२८

ब्रह्मा नांम

क ब्रह्मा वेदंग कूलाळं,
परजापति अज पतिमराळं।
विध वेधा मुरजेठ विधाता,
भवपित दुहिन (नांम) भूधाता।—२९
सिष्टा ध्रुव विरंज सुरजेप्टं,
पदमनाभ चत्रमुख परमिप्टं।
सूयंभू कज - जोनि - सरवेसं,
कंजासण कंजज लोकेसं।—३०
सेसर जगतपिता महसद्दं,
हिरणगरभ आतम - भू (हद्दं)।
हंसगर जोगुणी जगहेतं,
(खांणि-च्यार-उतपति-खित-खेतं)।—३१

सिव नांम

सिव श्रीकंठं महेस्वर संकर,
गिरिस गिरीस रुद्र गंगाधर।
जोगेसुर जटधर जागेस्वर,
ऋतधुंसी त्र्यंवक कोटेसर।—३२
सिंभू चंद्रसिखर अचलेस्वर,
वोमकेस ईसांन वरद हर।
वांमदेव पसुपति ऋतवासा,
विरुपाखि पुरभ्रत दिग्वासा।—३३
महादेव तापस समरारि,
प्रमथाध्रप सूळी त्रिपुरारि।
भव भूतेस उग्र म्रिड भींवं,
उरधलिंग भडग अहिग्रावं।—३४

निकळंक रिसीकेस बहुनामी,
भक्तद्दर भ्रम गुर सुरस्वामी।—२०

पुंडरीकाक्ष जनारदन जदुपति,
मोचनभ्रम केवल जगमूरति।
श्रीवच्छस्थळ सज्या-सेसू,
लंकादहण ब्रदण-लोकेसू।—२१

धनुख, सख, चक्र, गदा, पदम-धर,
वळभुज अघमाय रमावर।
गरुडारूढ अगम गरडासण,
घणमाया-सव्रत भ्राणदमण।—२२

रामचंद्र भयहर भवतारण,
कूमकदन अविगति जगकारण
जळक्रीडा (नै) निध जळज-चख,
मनापाळ ब्रम दानासुख।—२३

आदिपुरख निरकार अरूप,
सुखसागर निरजोग सरूप।
धनरास्थम जगदीस परमपद,
हरण-भरण-पोसण हद अणहद।—२४

जगहरता करता अगजामी,
भयहरता भवतारण (भामी)।
चिदानंद घणस्याम अघोचर,
भाण-भोण-कुळ खळा-भयकर।—२५

असरणसरण अज्योध्यानायक,
सेनवध द्रोपदीसहायक।
नरक-मन-क्रन राम निरोत्तम,
भई विक्रम मोहरा पुरसोत्तम।—२६

जळमाई दधिमथ तानाजन,
रांमाभ्रन नारण रघुनंदन।
पारमसार परम अपारम्पर
भेक अनेक अमाप अनन्त।—२७

घरि-गज-ध्याय तुखाट उग्रधन,
उरपिड पुलमजापति (अन)।

इंद्र री रांणी, पुत्र, पुरी, छभा, सदन,
रिख, दुंदुभ वाज, रथ, गुर, वन, वैद,
गज, दल आदि नांम—क्रमश:

यळा पुलमजा सची इंद्रांणी,
सुतजयंत सुरपुरी (सुहांणी)।—४२

समति सुधरमा मदन प्रसादं (प्रासादं),
नारदरिख दुंदभ घणनादं।
वाज उचीश्रव रथ विवांण,
जीवं विप्र वन नंदन (जांण)।—४३

अस्वनीकुमार वैद गज उजळ,
मोगर मेघ स्वारथी मातुळ।
विस्वकरमा सुरथांन सिलपवर,
देव नंदी दरवांन पुरिंदर।—४४

इंद्रजाळ आवध वज्रायुध,
(सनमुख वदन जिगा) भोजन सिध।

वज्र नांम

कूल्यस वज्र भिदुर सतकाटं,
इंद्रावध अ... ... ...* अतोटं।—४५

खटकूणी दंभोळ रिखस्तं,
सोरहंसिभो क्रादनी सुस्तं।

एरापती नांम

इंद्रहस्वरावण ऐरापति,
भ्रमं वळंभ मातंग सुभ्रदुति।—४६

सक्रवाह गजराज (असंकत),
भीगोरारि पटाभ्रर भूभ्रत।

---

* मूल प्रति में स्पष्ट नहीं है।

ईस त्रिलोचन सड उमावर,
गणमीस करडमरू परमगुर।
धूरजटी अघहार अग्रमधुज,
अमान-रेता अत्युजय वज।—३५

वाहनअखभ मुह्रान वामसुर,
अष्टमूरति परमध्यानउर।
नीलकंठ अद्रमूळ पिनाकी,
खडपरस पचमुद्रा भ्याकी।—३६

कं कपाळधन लोहितभाळ अत,
सध्यापति द्रपजार सरवरित।
लोहित नील विख्यात ''लदी,
कपरदोम ग्लौ भाळ कपरदी।—३७

इद्र नाम

मघवा वसी यद्र मघवान,
मरुतराट मतमन अनवान।
सहसनैण दिवराज सुरेसुर,
परजापति वत्रहा पुरिंदर।—३८

दिवमत गोत्रभिदी सक्रदन,
दमवन नाकपति नदन।
पूरवपति प्राचीन सचीपति,
कोमक मक्र आखडळ वरअन।—३९

वज्रायुधी विघधवा वासव,
सुनीसीर वळरित सुररख्खव।
अह सतमन पुरहूत विडूजा,
दम्भअखा भ्रमवाहण (दूजा)।—४०

पूहमीपोख (नाम) अतवासत,
जभराति पाकसासन (जुत)।
सुत्राम स सतमनू मत्रामा,
हर हय अतुत सखाहर (नामा)।—४१

महत किलांण अकासी जळभुक,
मुदर वळाहक पाळग कांमुक।
धाराधर पावस अभ्र जळधर,
परजन तड़ितवांन तोयद (पर)।—५३

सघण तनय (तू) स्यांमघटा (सजि),
गंजणरोर निवांणभर गजि।

चपला नांम

विद्युति तड़ित वीज जळवाळा,
दांमणि खिवण छटा दुतिमाळा।—५४

चंचळा संपा समर (व) चपळा,
आकाळकी वीजळा अकळा।
ऐरावती रादनी असनी,
कंसविधुंसी खणका क्रमनी।—५५

देवता नांम

अदतीसुत क्रतभुजं अंमर,
नाकी देव अनिद्रा निरभर।
व्रंदारक अनमिख त्रिदवेस,
दिवउखद दिवखद रिभु त्रिदस।—५६

अम्रतेस सुमनस असुरारि,
विवध अपसरा, अग - विहारी* ।
सुपरवांण गिरवांण सुधाभुज,
अम्रताभख दिवाकैसा अज।—५७

देवता जाति नांम

विद्याधर चारण रिख तुंवर,
संध्या गुहिक पिसाचा अपसर।
किनर भ्रत गंधरव जख राखस,
(जाति देव जपै निल विसन जस)।—५८

---

* अपसरा, अग - विहारी = अपसरा - विहारी, अग - विहारी।

परी नाम

अच्छर अप्सरा परी उरबसी,
मजघोसा मैनका सुकेसी।—४७
रंभा तिलोत्तमा चारणा,
मारिका सुरति मारणा।

गंध्रव नाम

अमर परम किंनर आदया,
गंध्रव हाहा हूहू गन्या।—४८
व्द्याधर सुरगण (वखाणें,
जिका राग इद्रादिक जाणें)।

कल्पद्रुम नाम

द्रुमपति पारजाति अवदायक,
सुरतर हरिचंदण सुखदायक।—४९
द्रवाग (अनें) मंदार कल्पद्रुम,
(कहि सैंतान वरदान सुभ क्रम)।

सरग नांम

सुरआलय सुरलोक सरगा,
उरधलोक नाक अपवरग।—५०
त्रिदव त्रिविष्ठ धनावस त्रिदश,
अमरापुरी अवमदिव (अन्य)।

वैंकूठ नांम

परमधाम सुखकरण परमपद,
अविन स्वरग वैंकूठ अमरपद।—५१

इन्द्रपाट नांम

सुरपतिपाट निकटक नाकासण,
सुकत अम्मर अचळ सुरासण।

मेघ नाम

मघ जळद नीरद जळमंडण,
घण वरसण नभराट घणाघण।—५२

किरण नांम

किर प्रभा दुति जोति रस्म कर,
तेज - श्रंधार - धांम अरितिमर।
श्रंसु मरीची विभा मयूखां,
दीपति भानू भा छवि (दखां)।—६६

शुचि रुचि वसू दीधती गो सित,
(नभ मिण दिन ससि निसा प्रकासित)।

दिन नांम

दिवस दिवा दिव दीह श्रयन दिन,
वासर दूं श्रहि (व्रथा भजन विन)।—६७

सोभा नांम

श्री श्राभा भा दुति दिव सुखमा,
राढ़ा कळा विभूखा परमा।
कोमळता (रु) विभ्रमा कांति,
सोभा रूप चिमळ (सरसती)।—६८

उजास नांम

भा सं प्रकास उजास तेज (भव),
तमरिप वरच उद्योत करज (तव)।
जगभासक श्रालोक उजाळो,
तरण ग्यांन (माया तम टाळो)।—६९

उजल नांम

श्ररजुण धवळ वलख सुचि उजळ,
सुभ्रं स्वेत सितं पुंडर सुकळं।
विसद हरण पंडु श्रवदातं,
विसद (कीत हरि उचरि विख्यातं)।—७०

चंद्रमा नांम

ससि ससंक श्रगश्रंक सुधाधर,
कळा मयंक सकळंक सुधाकर।

आदीत नांम

भाण दिनद हंस भामकर,
कस्यपसुत आदीत अहमकर।
पदमणिपति सूरज प्रद्योतन,
विसक्रमा भगवान विरोचन।—५६

अभसाखी रवि महिर दिवाकर,
पदमबंध चकबंध प्रभाकर।
निगम प्रवीन मित्र रातबर,
वरळ पतंग अचळ रातळ वर।—६०

सविता सूर अरक खग गोरख,
चित्रभाण पिंगळ हर जगचख।
मारतंड विवसान गयणमिण,
तरण तीखअंस तिमरत तपघण।—६१

धवं द्वादसआतम श्रगद्वार,
तपन पुखाअ इतन तिमरार।
सप्रभ प्रदीमन भासान,
विद्योतन तप तेज वितान।—६२

अरुण अरजमा अहिपति (एता),
विभावसू विस्वरतन सुवेता।
कजविकास सुमाळी दिनकर,
सोमधात अगारक सरकर।—६३

सहसकिरण भगदसू दिनेसर,
जमा, सनी, अस्वनी, भव, क्रन, जम-।
तात* (येता रवि नाम वधे तिम)।—६४

रिख ग्रहपति सुएन निसारिप,
उष्णरस्म कक रखणआतप।
भकन चक्रधर (नाम) चत्रभुज,
हरिहसळ वतधात हितवारज।—६५

---

* जमातात सनीतात, अस्वनीतात, भवतात, क्रनतात, जमतात।

नव ग्रह नांम

मूर सोम कुंज बुध गुरु भ्रगुसुत,
सनी(र) राह केतु (ग्रह विह्सत)।

बारै रासी नांम

मीन मेख व्रख मिथन करक (मुणी),
सिघ कन्या तुल व्रस्चक धन (सुणी)।—७८

मकर कुंभ (ऐ रासि लगन मत,
कडण रासि ग्रह पूजां दत ग्रन)।

निसा नांम

सोमप्रिया रजनी निस स्यांमा,
तमी तांमसी निसा त्रिजांमा।—७९

रेणा जांमणी जनया रात्री,
तमसा नीसीथणी तममात्री।
खिपा (रू) राति सरवरी खणदा,
विभावरी तमचारी प्रमदा।—८०

अंधकार नांम

तिमर तमस अंधकार संतमस,
अंध तमस तम धांत अवतमस।

स्यांम नांम

स्यांम धूम धूमर प्रभस्यांमळ,
असति नील मेचक किरठ अळि।—८१
अरुण रांम अल प्रभं (कहि) काळं,
अध तम (मेटि ग्यांन उजवाळं)।

दिवा नांम

(आणंद) ज्योति सिखांदसई (घण),
मेटणतम रिपपतंग धवळमिण।—८२
दीप प्रदीप दसासुत दीपक,
नेहप्रीय सारंग निसातक।

हितचकोर पदमणीपती ससिहर,
कुदधबधु श्रोषधु छिपाकर।—७१
हिमहित वद हिमस हिमकर,
विधु दधिसुत मदु रोहिणवर।
सीतप्रसु दुजराज निमाकर,
अखनिस सोम चद्रमा चद्दर।—७२
मायधीस उडपति अम्रतभव,
सुभ्रकिरण नखत्रेस सुधाश्रव।
दरपणजगत ग्लौ जगबदक,
छदनाच गुणरासि सुखाछक।—७३
सुभरासि पहसाच सुसीर,
तनकळानिध विमदसरीर।
उदंभीर अपघातस गुणयळ,
चकवाविरह विर्चबिबभू चचळ।—७४
पानपखीण मलीण* पुहकर,
(सागरभरत रतना मिणथीकर)।

नक्षत्र नाम

तारिक नछत्र ल्लग्रह तारा,
जोनि रिखभ उड जोति खेयारा।—७५

सताईस नक्षत्र नाम

अस्वनी भरणी क्रतका रोहिणि,
म्रगसिर आद्रा पुनरवसू (मुणि)।
पुख असलेखा मघा (पवत्रा),
पुव उत्रा हस्त (स) चित्रा।—७६
स्वाति विसाखा अनुराधा (सम),
जष्टा मूळ पूरब उत्रा (जिम)।
श्रवण धनेष्टा सतभिख (सार),
पूरवा उत्रा रेवती (पार)।—७७

---

* पानपखीण, मलीण=पानपखीण, पानामलीण।

रवण - जमां - भेदण मधुरंगी ,
भ्रातविजेसर समरश्रभंगी ।

वरण नांम

जळपति मछपति वरण परंजन ,
जळकंतार पिसाचांगंजन ।—६०
पंकजग्रह प्राचीप प्रचेता ,
(नीर समीप पास श्रत नेता) ।

धनेस नांम

धनंद कुवेर निधेस धनाधिप ,
राजराज जखराज उचारिप ।—६१
जेखाधीस जखराट जजेस्वर ,
सक्रकोस धिक्ष ग्रहकेस्वर ।
श्रीद रमाद वसू दसतोदर ,
कविलासी सिवसखा रतनकर ।—६२
सिवभंडारी गुहरु वैश्रवण ,
हर प्रि किनरेस नरवाहण ।
श्रलकापुरीपती पतिउत्तर ,
सुभ्रम त्रिसर जख किं पुरिखेसर ।—६३
पिसाचकी पौलस्त एलविल ,
मनखाध्रम जखचेर (नांम यळ) ।

श्रष्ट सिद्धि नांम

श्रणमा महमा गिरमा ईसति ,
प्राकांम (रू) लघुमा वसि प्रापति ।—६४

नव निध नांम

मकर नील खूव संख मुकंदं ,
कछप पदम महापदम कुंदं ।

द्रव नांम

माया श्रायतेय ग्रहमंडण ,
राद्रव विभव वसू मनरंजण ।—६५

कजळग्रक दसाभव (कीजै,
दमा) करखधज (कजल दीजै)।—८३
उत्यमउजास तेजग्रह (ग्रोपण,
उर ग्रह नाम दीप ग्रारोपण)।

गुरड़ नांम

गुरड़ सेस ग्रलमित्र खगेसर,
चपळबास धखपख भुयगचर।—८४
विखहर इंद्रजीत हरिवाहण,
सोव्रनतन सक्नीधर सुपरण।
वैंनतेग्र ग्रीधळ बळवत,
वजरतु ड तारक दिढवत।—८५
ग्रहिरिप ग्रम्रतचरण ग्ररणानुज,
पत्रीराज गिरराज कस्यपात्मज।
पूतग्रातमा गरतमान (पढि),
दुजपती सालमली (भक्ती दिढि)।—८६

सुदरसण चक्र नांम

सारज वज्र चक्र सधारण,
ज्वाळामुख दभी खळजारण।
सुदरसेण परवय विरणतर,
कुंडळीक दुतीतेज सहसकर।—८७

बलभद्र नांम

बळभद्र कामपाळ नीलबर,
धरिप्रिग्र मधुमूग्रळी हळधर।
रोहिणेय सकरखण राम,
मूर सितामित ग्रग्रजस्याम।—८८
ग्रस्वान (कहय) मुगध ग्रनत,
विरहीवीर प्रलब बळवत।
ताळलखण वळ सीरपाण (तत),
विघनग्राण वळदेव सातवत।—८९

खण - जमां - भेदण मधुरंगी ,
भ्रातविजेसर समरअभंगी ।

वरण नांम

जळपति मछपति वरण परंजन ,
जळकंतार पिसाचांगंजन ।—९०
पंकजग्रह प्राचीप प्रचेता ,
(नीर समीप पास अत नेता) ।

धनेस नांम

धनंद कुबेर निधेस धनाधिप ,
राजराज जखराज उचारिप ।—९१
जेखाधीस जखराट जजेस्वर ,
सक्रकोस धिक्ष ग्रह्केस्वर ।
श्रीद रमाद वसू दसतोदर ,
कविलासी सिवसखा रतनंकर ।—९२
सिवभंडारी गुहरु वैश्रवण ,
हरप्रि किनरेस नरवाहण ।
अलकापुरीपती पतिउत्तर ,
सुभ्रम त्रिसर जख कि पुरिखेसर ।—९३
पिसाचकी पौलस्त एलविल ,
मनखाधम जखचेर (नांम यळ) ।

अष्ट सिद्धि नांम

अणमा महमा गिरमा ईसति ,
प्राकांम (रु) लघुमा वसि प्रापति ।—९४

नव निध नांम

मकर नील खूव संख मुकंदं ,
कछप पदम महापदम कुंदं ।

द्रव नांम

माया आयतेय ग्रहमंडण ,
राद्रव विभव वसू मनरंजण ।—९५

रैसव मपनि माल ग्ररथ रिध,
नूतनसुख धन गरथ द्रवण निध।
सार निधान हिरण द्रव सेवध,
जळ कमवर धू मन खजाना।
(विद्या मान दान जस वाना)।—६६

मोती नाम

मुक्ताहळ मुक्ताफळ मोती,
गुळका दधि जळज ससिगोती।
धीरठभव मुक्ता मुक्तज (धरि),
मुक्त (वळे) ग्राथिकुंभ रवत प्रवत (विध)।—६७

अगनी नाम

गरयघ्नत ग्राहुतन ... ...,
मारुतसग्वा ग्रमान तमोधन।
जानवेद जागवी जागनौ,
रोहिताम सयना रुचिरानौ।—६८

ग्रपनि धूमधज ग्रहदभाण (उर),
ग्रामग्राम उदरच द्रव ग्रनर।
वीतहोन (वहि) ग्ररुचिस महवर,
घोर समीग्रर कुळमह (घर)।—६६

स्वांमी कारतिक नाम

गटमाता सेनानी खटमुख,
स्याम महासेन द्वादसचख।
रुद्रातमज विसाग मोररथ,
ग्रनवा गगा, उमानद* (कथ)।—१००
दिव्व छपदेव भूरग गुह (दग्गौ),
ग्ररवाहण ब्रमचार (परेखौ)।
तारकार ग्रंतारं महीमू,
(मागनरो) गुरुग्रगमू ग्रगमू।—१०१

---

* गगा, उमानंद=गंगानंद, उमानंद।

वहुळातमज वहुलकोंचिरित,
(भाखि) सकं देसाखंकुल दुहुभ्रत।
स्यांमकारितिक महतिजसुर,
वरहीवाह विसाख (देण वर)।—१०२

मोर नांम

सिखी सिखावळी सिहंड सिखंडी,
मोर मयूर कळाव्रतमंडी।
नीलकंठ नीरद नादानुळ,
खग दुति सारंग कुंभ व्याळखळ।—१०३
विरही वरहण घणमुंठ (व्यापी),
केकी तुकळा पंग कळापी।
रथकुमार प्रकवि खकर (चाया),
विविवेसुर खग (नांम वताया)।—१०४

हंस नांम

मांनसूक धीरठ मुक्ताचर,
हंस मराळ चक्रंग जळजहर।
उग्रगती लीलंग अवदातं,
विमळरूप कळहंस (विख्यातं)।—१०५

मूसा नांम

आखू खणक सूचीमुख ऊंदर,
वजरदंत मुख्य यतिदेवर।

बुधी नांम

धी वुद्धी मेधा मति धिखणा,
अकल प्रागना मनखा (अखणा)।—१०६
आसय समझि चातुरी (आंणी,
विवुध करी हरि क्रीत वखांणी)।

जमराज नांम

काळ डंडभ्रत सुमन कृतंतं,
अंतक जमनभ्रात जम अंतं।—१०७

प्राणहरण मोरण क्रमपासी,
धरमराज जमराज त्रिधासी।
माधदेव कीनास भाणसुत,
जमहर सुमन प्रतिपति गजत।—१०८
अखभधुजी अतकर समव्रती,
प्रेतराट सजमनी पत्री।

दैत नांम

देवानुज दइत्यद्र अदेव,
दाणव सुररिप पूरबदेव।—१०९
दतीसुत असुर सुक्रसिख (दखौ),
मेछ जवन सुरध्रमरिम (अखौ)।

राकस नाम

नइति राकस असुर निसाचर,
तमचर जातधान उच्चातुर।—११०

रांमण नाम

नटक दैतपती दहकधर,
सुरध्रोही रामण लकसुर।
सीताहरण दससीस पौलसित,
ग्रहाग्रहण त्रिकराचळथितगति।—१११

मेरगिर नांम

गिरपती मेर सुमेरगिर,
गिरद सुथानक अचळ वनकगिर।
पचरूपी कनकाचळ (पावा),
रतनसान सुरगिर गिरराका।—११२

आकास नांम

आभ अनत अनरिख अरर,
पवनधिरण सुर, घणपथ* पुहकर।

---

* सुर, घणपथ=सुरपथ, घणपथ।

वयंद विसनपद खं नभ वोम,
गिगन गयण मंडणछत्र गोम।—११३
अरस अकास गैण असमांन,
विहंग परीमग* ससि, विवसानु।

खट भाखा नांम

(वांणी मांनव) मागंध नागर (विलासा,
भेद) संसक्रत (निरभ्रर-भासा।—११४
विद्या) प्राक्रत (मांनव वांणी),
अपभ्रंसी (पंखी उर आंणी।
दैतां भाख) हुसैनी (दग्वी,
राकस वांणी) पिसाची (रखी)।—११५
(अहि सुर नर मुर वांणी उक्ती,
सिस जीवन ब्रह्मां सरसती।
वेद हरति दिग मूढ़तं वांणी,
यूं सुर भाख क्रम मुख आंणी)।—११६

च्यार पदारथ नांम

धरम अरथ (सुभ) कांम मोक्ष (ध्रत,
साधो च्यार पदारथ सुक्रत)।

धरती नांम

वसुधा विसव वसुमता विपळा,
उरवी यळा अनंता अचळा।—११७
जमी रतनगरभा छित जगती,
रेणा रसा धरा धर धरती।
समंदमेखळा रजत श्रोणी,
क्षिमा प्रिथी भूमी भू म्ही क्षोणी।—११८
धात्री गऊ रसवती धरणी,
हेळा सरवस मनहरणी।

---

* परीमग, ससि, विवसानु=परीमग, मगससि, मगविवसानु।

थिरा कुभनी विमभरा थित,
खोणि खेत गहवरी वसुह वित ।—११६

वसुधरा वसुमती कु वामा,
सागरनेमी श्रीदत स्यामा ।
महिगोना पहि मही मेदनो,
अमळा अकळ कुमारी अवनी ।—१२०

गिरद नाम

ग्राव गिरद अनड नगा गिरवर,
गोत्र पहाड अद्री गिर डूगर ।
धर सिलोचय अचळ धराधर,
भूधर मरूतदरीभ्रत भाखर ।—१२१

सिखरी सानमान अग्र श्रगी,
परबत कूट त्रिकूट उपलगी ।
अस्टकुळी पब्बै आहारज,
धातहेत द्रुमपाळ तु गधज ।—१२२

वन नाम

कतारक अटवी भख कानन,
विपुन दुरग खड अरणय गहन वन ।
कखवा रिखतर मधूप्रकासी,
(बिंद्रावन धिन रासि - विलासी) ।—१२३

ब्रख नाम

ब्रख सिखरी फळग्राही तरवर,
घणपत्र अदभुज निनग खगाधर ।
साखी कुसमद फळद महीसुत,
द्रुम खितरूह पत्री तर दरखत ।—१२४

कूठ फळी अध्रप कारसकर,
विटप रूख अद्र व्रस्टर ।
निद्रावरत सुभाड (अनोरुह),
सुवरण कराळक पतीवसतह ।—१२५

फूल नांम

सुमना सुमन कल्हार सुगंधक,
सून प्रसून कुसम सुम संवक।
प्रसव फूल फळपित पुस्पावळि,
उदगमनरम रवत्त हलकावळि।—१२६

लताग्रंत मणी वक (लेखौ),
पूफ धनुवासर तरभव (पेखौ)।

भमर नांम

चंचरीक खटपद सौरंभचर,
कुसमळप्रिय भंकारी मधुकर।—१२७

मधुग्राहक मधुवरत सिलीमुख,
सारंग मधुप दुरेफ गंधसुख।
अलिग्रळ कळाप यंदुदर,
भ्रंग रोळंब अलीहर भमर।—१२८

मरकट नांम

साखाम्रग मरकट साखीचर,
वनर कीस हरि कपी वनचर।
गो लंगूळ पलवग पलवंगम,
पलवंग ऊक्क वलीमुख प्रीडुम।—१२९

पीपल नांम

दंतीभ्रख बोधीव्रख चळदळ,
श्रीव्रख सुव्रख असीव्रख पीपळ।

वड़ नांम

वट निग्रोध रतफळ साखीव्रख,
वैश्रवणाय जटी सुवड़ रिख।—१३०

वंस नांम

जवफळ वेण वंस त्रिणवज (जिण),
तुचीसार मसकर तप्तरवण।

चंदण नाम

सुरभी सीतळगंध सुगधक,
रोहिणीद्रुम चदण महि ··· क।
व्याळमाळ श्रीखंड रूपवन,
मळयानर उत्यमनर महिमन।—१३१

सौरभमूळ सुनग गधसार,
वासमुद्रुम मलयुजविसनार।

केसर नाम

कुंकम केसर मगळकरणी,
वह्लिगिरा दीपन गुडवरणी।—१३२

देववल्लभा लोहितचदण,
पीतन रक्त सकोचप्रसण (पुण)।
धरकाळेयर बाह्लीक (धरि),
कसमीरज (हरि सेवन तिलक करि)।—१३३

हरड़ै नाम

अभया जया सिवा अमरतका,
कायस्था चेतकी काळका।
प्रयथा हिमजा पथ्या प्रेयमी,
मरवारी पूतना श्रेयसी।—१३४

सुरभी (राम) तुरजका (सुखदा,
पढि) हरडै जीवती प्राणदा।
स्यामा हेमवती सक्करणी,
हरीतकी (काया गदहरणी)।—१३५

• •

डिंगल - कोष

कविराजा मुरारिदान विरचित

संक्षेपतो शब्द-निर्णयः

दोहा

रूढ़'र जोगिक मिलर रा, नांमां रो कर नेम,
मुकवं रज्जू इण कोस में, प्रणमि सारदा प्रेम ।—१

वरणे नहीं जिण शबद री, व्युतपत्ति र वखाण,
रूढ़ नाम तिण रो कहो, श्रारंडळ ज्यूं आण ।—२

अथ दोहा-सोरठा का लक्षण

सोरठा

दोहा तुक दूजीह, सो पहली धरणी मुकव,
परगट तुक पहलीह, इण रै धागे श्रांणणी ।—३

आगे चौथी आण, इण श्रागळ तीजी श्रखो,
जिका सोरठा जाण, नागराज रो मत नरख ।—४

सोरठा का उदाहरण

जोगिक श्रनवय जाण, सो क्रिय गुण संबंध सूं,
वेलो एह वखांण, कहै पूर्व संभव कवी ।—५

क्रिया जजादिक आण, गुण सुनीलकंठादि गण,
सो संबंध सुजांण, स्वामी सेवक आदि सब ।—६

जोवो नांम जमीन, पत आदिक श्रागे पढ़ो,
पाल र नांन प्रवीन, धण नेता इण श्रादि धर ।—७

जन्यागळ इम जाण, करता जनक विधात कर,
वळे जनक वाखांण, जं भव जोनी जाणजे ।—८

दोहा

विश्वक करता विश्वकर, विश्व वधात विख्यात,
विश्व जनक इम नांम वद, ऐ कारण रा श्रात ।—९

आतम जोनी श्रातमज, श्रातम भव इम श्राण,
श्रातम मूर्ती श्रातम सूं, जनक नाम सूं जाण ।—१०

सोरठा

जळ वाचक जो नांम, सो पहली धरणा सुकव,
केवल धीरो काम, याद राख धारणूं श्रठै ।—११

संक्षेपतो शब्द-निर्णयः

दोहा

रूढ़'र जोगिक मिसर रा, नांमा रो कर नेम,
सुकवं रचूं इण कोस में, प्रणमि सारदा प्रेम।—१

वर्ण नहीं जिण सबद री, व्युतपत्ति रु वखाण,
रूढ़ नाम तिण रो कहो, आखंडळ ज्यूं आण।—२

अथ दोहा-सोरठा का लक्षण

सोरठा

दोहा तुक दूजीह, सो पहली धरणी सुकव,
परगट तुक पहलीह, इण रै आगै आंणणी।—३

आगै चौथी आण, इण आगळ तीजी अखो,
जिका सोरठा जाण, नागराज रो मत नरख।—४

सोरठा का उदाहरण

जोगिक अनवय जाण, सो क्रिय गुण संवंध सूं,
वेखो एह वखांण, कहै पूर्व संभव कवी।—५

क्रिया स्रजादिक आण, गुण सुनीलकंठादि गण,
सो संवंध सुजांण, स्वामी सेवक आदि सब।—६

जोवो नांम जमीन, पत आदिक आगै पढ़ो,
पाल रु मांन प्रवीन, धण नेता इण आदि धर।—७

जन्यागळ इम जाण, करता जनक विधात कर,
वळे जनक वाखांण, जै भव जोनी जाणजै।—८

दोहा

विश्वक करता विश्वकर, विश्व वधात विख्यात,
विश्व जनक इम नांम वद, ऐ कारण रा आत।—९

आतम जोनी आतमज, आतम भव इम आण,
आतम सूती आतम सूं, जनक नाम सूं जाण।—१०

सोरठा

जळ वाचक जो नांम, सो पहली धरणा सुकव,
केवल धीरो काम, याद राख करणूं अठै।—११

संक्षेपतो शब्द-निर्णयः

दोहा

रूढ़'र जोगिक मिसर रा, नांमा रो कर नेम,
सुकवं रचूं इण कोस में, प्रणमि सारदा प्रेम ।—१

वरणै नहीं जिण सबद री, व्युतपत्ति र वखाण,
रूढ़ नाम तिण रो कहो, आखंडळ ज्यूं आण ।—२

अथ दोहा-सोरठा का लक्षण

सोरठा

दोहा तुक दूजीह, सो पहली धरणी सुकव,
परगट तुक पहलीह, इण रै धागै आंणणी ।—३

आगै चौथी आण, इण आगळ तीजी अखो,
जिका सोरठा जाण, नागराज रो मत नरख ।—४

सोरठा का उदाहरण

जोगिक अनवय जाण, नो क्रिय गुण संबंध सूं,
वेसो एह वखांण, कहै पूर्व संभय कवी ।—५

क्रिया अजादिक आण, गुण सुनीलकंठादि गण,
सो संबंध सुजांण, स्वामी सेवक आदि गव ।—६

जोवो नांम जमीन, पत आदिक आगै पढ़ो,
पाल र मांन प्रवीन, धण नेता इण आदि धर ।—७

जन्यागळ इम जाण, करता जनक विधात कर,
वळे जनक वाखांण, जै भव जोनी जाणजै ।—८

दोहा

विश्वक करता विश्वकर, विश्व वधात विख्यात,
विश्व जनक इम नांम वद, ऐ कारण रा आत ।—९

आतम जोनी आतमज, आतम भव इम आण,
आतम सूती आतम सूं, जनक नाम सूं जाण ।—१०

सोरठा

जळ वाचक जो नांम, सो पहली धरणा सुकव,
केवल धीरो काम, याद राख करणूं अठै ।—११

वेम्हो मवद वळेह, धुर केवल वडवा धरो,
अगनी अगवाणेह, व्है जो नाम कुनाम रा।—१२

भूपादिका भणात, मुक्व मुणू इण कोम में,
पलट कुनाम पढ़त, रिधू सरव इण रीत सू।—१३

पढ़चो जाय पलटाण, सवद जिको इण में सदा,
जिण नू जोगिक जाण, कह इण रीत मुरार कवि।—१४

सवद मिसर इम सोध, जोवण में जोगिक जिमो,
वर्ण न जिण रो बोध, गीरवाण जिसड़ो गिणू।—१५

कवि रूढ़ी हि कहूत, मिसर रूढ जोगिक मही,
मन मतौ न मुणत, कहियो ज्यू पूरव कव्या।—१६

गणेश नाम

गवरीनद गणेश गणपत गजग्रानन गणप,
(ऊडो ग्ररथ ग्रसेस ग्रापो उकनि नवीन ग्रव)।—१७

गजानद गणराज लम्बोदर कालीसुतन,
(मेटण विघन समाज) उमाकवर गणवं (ग्रवं)।—१८

मूसावाहण (माण दाख) विनायक इकरदन,
(जेम) डुडबी (जाण) परसीतस हेरव (पढ)॥—१९

सरस्वती नाम

व्रहमसुता वाणी (ह) वरदायणी बागेसुरी,
(गूढन करणाणीह चीनाणी मैं मूढ चित)।—२०

हसवाहणी (होय) गिरा वाकवाणी (गवै),
सुरसत सारद (सोय) वेधाधी भारति (वणै)।—२१

(विसनू व्रहम वळेह, महादेव महमाय रा,
इद चद रवि एह, अतन आग देवा तणा।—२२

परथी राजा पेख, वळे समद तरवार रा,
ग्रस हाथी अवरेख, नाम रीत इण नरखणा।—२३

जो-जो जिण जिण जाग, ऊपर लखिया नाम जो,
वखो करे विभाग, धरणा था राखे धरम।—२४

जुवा-जुवा जपताह, तो नह टाबर समजता,
रिधू यहा राख्या ह, इण कारण थी एकठा)॥—२५

अथ संक्षेपतो गीत लक्षणानि

दोहा

परथम दोहा तुक पहल, अट्ठारह कळ आण,
तुक दूजी पनरा तणी, जुग अठ तीजी जाण।—२६

सोरठा

चोथी झड़ चवुदाह, जोड़ण वाळा जाणज्यो,
निसचै माई नांह, इण दोहा में ईहगां।—२७

परथम तुक सोळा पढ़ो, मुहरां चवुदा मेळ,
दोहा दूजा री दुरस, इण ही रीत उजेळ।—२८

चौथा तीजा पांचवां, दोहा में इण दाय,
पहली तीजी झड़ प्रगट, सोळह मत्त सुणाय।—२९

दूजी चोथी झड़ दुरस, दस चो पनरै दाख,
तीजा दोहा री दुतुक, ऐण रीत सूं आख।—३०

चौथा दोहा री चवां, सांकळ दू चो सोध,
तेरह-तेरह कळ तुळै, बोलै एम प्रवोध।—३१

पंचम दोहा कळ प्रगट, दसचवु दूजी दाख,
चोथी झड़ तेरह चवो, रीत ऐरसी राख।—३२

कहुं गुर मोहरां लघु कहूं, आंणै नेम न ओर,
जंपै कव इण रीत जो, सो छोटो साणोर।—३३

गीत छोटा साणोर

महादेव नांम

गरजापत महादेव गंगाधर भव हर सिव जोगी भूतेस,
भाळचंद्र संकर भूतेसर मनमथहरणा रुद्र महेस।—३४

मुंडमाळ इकलिंग कमाळी पंचानन कैंळासपती,
जटधर ईस व्रखभधुज संभू समसमाथै वरवीसहती।—३५

भंगअहारी जटी भूतपत त्रिचख गौरपती त्रपुरार,
पनगहार सधराव पनाकी धूरजटी ईसर वखधार।—३६

वाणपती काशीरावासी व्रहम सूळहथ ईसवर,
भोळानाथ कपाळी भैरव जोगिंद धूजट जहरजर।—३७

ब्रहमसुतन गहीर डगबर दाळदहरण दताळरूप,
भूतनाथ भगवनीभरता नीळकंठ कैलासरूप ।।—३८

दोहा

अट्ठारह कळ आद तुक, दूजी पनरह देख,
तीजी तुक सोळा तणी, पनरह चौथी पेख ।—३९
दोहा दूजा सू दुरस, सहंत्रम जाण सु जाण,
सोळह पनरह कळस कळ, एम बेलियो माण ।—४०
मुहरावाळी तुक मही, मुहरा माहि मुणन्त,
बणै गीत इम बेलियो, आद गुरू लघु अन्त ।—४१

गीत वेलियो

विष्णु नांम

अवधेसर विसन प्रभू व्रजनायक केसव हरि परभू करतार,
पूरणव्रहम गदाधर श्रीपत मधुसूदन रघुबीर मुरार ।—४२
लखमीवर सायी गोपाळक भगवत गिरधारी भगवाण,
सारगधरण विसभर ईसर लोयणकमळ किसन कलियाण ।—४३
त्रिभुवणनाथ त्रिलोकीतारण राघावर भूधर रघुराज,
अलख अजोणीनाथ ईसवर सदगतनाथ निरजन (साज) ।—४४
पीतांबर श्रीरग रमापत नारायण गोपीवर नाथ,
वासुदेव दामोदर बीठळ परमेसर मत्रीपाराथ ।—४५
अवधईस महमहण नारियण दीनानाथ कमन जगदीस,
गोपीनाथ गरडधज गामी आदपुरख कान्हू सुरईस ।—४६
सीतानाथ लाछवर सावळ रघुबर जगनायक बळवीर,
चक्रधरण जगनाथ मुचेतन राघो भगतवछळ रणधीर ।।—४७

दोहा

धुर अट्ठारह कळ धरो, सम पर चउदह सोय,
विसम सरब सोळह बणे, जिको सोहणू जोय ।—४८
मोहरारी झड माहिनैं, अवस लघू गुर आण,
नेम सोहणे इम निपट, बीदग करै बखाण ।—४९

गीत सोहणो

पारवती नांम

जोगण महमाय सिवा जगदंबा सगत अद्रजा गोर सती,
आठांभुजां ईसरी अंबा संकरघरणी बीसहती ।—५०

रुद्राणी लंबोदरआई भगवंती भैरवी भवा,
गवरी उमा चंडका गौरी सिंहवाहणी वांहसवा ।—५१

जोगमाय गिरजा जगजणणी वाघवाहणी पारवती,
कंकाळी काळी महकाळी हरा भावनी सूळहती ।—५२

देवी खड़गधारणी दुरगा माहेसुरी संकरी (मुणां,
सुंभनिसुंभ) भांजणी सगती गीतअंबका (नांव गुणां) ॥—५३

दोहा

कळा पहल दस आठ कर, जुग दस दूजी जोय,
सोळह बाहर तुक सरब, दसां मेळ गुर दोय ।—५४

इण दोहा में अप अवस, राखी जो यह रीत,
सो छोटा साणोर रो, गणें जांगड़ो गीत ।—५५

गीत जांगड़ो साणोर

पृथ्वी नांम

धरती धर चास यळा खत धरणी गोरंभ अचळा गोमी,
वसू गोम प्रथमी वाराही भोम सुचाळी भोमी ।—५६

अळ भूमंड मेदनी अवनी भूयण रैण भंडारी,
रतनांगरभ रेणका रेणा धरण मही धूतारी ।—५७

वसुंधरा पुहमी पुह वसुधा छित तूंगी खित छोणी,
रसा भरतरी सुंदर मूळा हिरणनैण वधहोणी ।—५८

प्रथी खाख पुहवी भू पोमी सथर अचळ सोलाळी,
रणमंडा भूगोळ दरदरी जमी कसपरजवाळी ॥—५९

दोहा

प्रथम कळा नव दूण पढ़, दूजी तेरह दाख,
सोळह तेरह तुक सरब, अंत दोय लघु आख ।—६०

भेदिरी तुक मागणा, उमै लघू माणोर,
रवै नेम इण रीत रो, सोहि सुडद साणोर।—६१

गीत सुडद-साणोर

तरवार नाम

खाड्हळ खाग दुधारो खाडो खडग त्रिजड ऐराक खग,
जटळग धूप झमम्मर भुजळग करम्माळ वाणास मग।—६२
तेग हक धाराळा तेगो वाडाळी सारंग विजड,
बीजूजळ पाधर असि बीजळ सार दुजड करमर सुजड।—६३
हैजम डोटहती चन्द्रहासा वेवाण (र) पानी वरद,
धव्रवड करमचडी धाहजळ सत्राटाकरणीसरद।—६४
वाव जनेव प्रहाम (बखाणू) पाडीम (र) नाराज (पड),
मूठाळी समसेर मुठांणी किरमाळ (र इम) वाढ़कड॥—६५

दोहा

धुरपद कळ तेवीस धर, दुनिय मदारह देख,
बीम कळा तीजी वणै, बळे अठारा बेख।—६६
विसम बीम कळ तुक वर्णै, मड्ढारह मम थाए,
मोहरै गुरु लघु नेम कर, वड साणोर बखाण।—६७

गीत वडो साणोर

राजा नाम

नरनाथ नरपाळ भोपाळ महपत धपत भूपती धरपती यळापति भूप,
प्रीथीपत छत्रधर नरेसुर महीपत मघपती रसापत तेजप्रानूप।—६८
महीरानाथ छत्रधार राजा महिप गड़पती देमपत पाळदुबगाय,
राण दैमोन नरनाह राजानिया राजइद नरांइद महीइद राय।—६६
धरारायन भूपत छत्रधारण पोहमीईम यळधीम प्रजपाळ,
नरप भूप राज भोगणजमी नरेम (ह) महीवर सुराह यळनाथ महपाळ।—७०
ईशवरनरा भूपग मधिप यळाइद नाहदुनियाणरा छत्र भजनीस,
रजवटी रोरहर प्रथीरापुरदर राजसुर नगनायक धराधीस॥—७१

दोहा

कळा प्रथम तेवीम कर, दूजी सतरा दाम,
इण ही कम रै अन्त गुरु, रीत मेळ री रास।—७२

वीस कळा सतरा वळे, सरव गीत इण सोय,
भेद वडा साणोर भव, हद परिहास सु होय।—७३

गीत प्रहास

हाथी नांम

दुपी गैंद गजराज सूंडाळ दंती दुरद मदांझर फीळ पैनाग मसती,
गैवरां व्याळ सामज मतंग मैगलां सूंडधर करी गैं नाग हसती।—७४
वडूजावाह दंताळ कुंजर वयंड हसत सारंग गज गयंद हाती,
पदम्मी तंबेरण करिंद वारणपती दंताहळ मंढ़, अग, भद्र, जाती*।—७५
अरापत अनेकप सिंधुर रेवाउतन वनकजळऊपनां दंतवाळा,
सूंडडंड वितुंड वारण कळभ सूंडहळ कर हरी मदाळा कुंभि काळा।—७६
करेणपती दुरदाळ पीलू (कहां) अनळपंखचार छंछाळ (आखां,
गीत परिहास साणोर इण रीत ग्रह भेद साणोर वड दोय भाखां)॥—७७

दोहा

अखर अठारै आद तुक, बीजी चवुदह वेस,
विखम अक्खर सोळह वळे, सम चवुदह संपेख।—७८
मेळ तणी झड़ मांहिनै, गुरु लघु अन्त गिणाय,
पैखो गीत सुपंखरो, बीदग ऐम वणाय।—७९

गीत सुपंखरो

घोड़ा नांम

वाजी तोखार तुराट तुरी ऐराक बैंडूर आह वैंडाक केसरी हरी काछी खैंग वाज,
होवास अहास धाटी वडंगी निहंग हंस वाजिद तारखी प्रोथी घोड़ो वाजराज।—८०
उडंड चांमरी ताजी हैराव सारंग अस्व भिडज्जां काठियावाड़ हींसी वाहभाण,
पमंगाण हैजमा हैवरा लच्छीवाळापूत कुंडी हयांराज तुरां घुड़ल्ला केकाण।—८१
अलल्लां वितंडां हयां सपत्तासवाळांअंसी रेवंतां साकुरां अस्सां जंगमां तुरंग,
क्रमाणंकां पमंगां हैवरां सिंहविक्रमाका चंचळां तुरग्गां धजांराज है सुचंग।—८२
मासासी पकल्ल देव सिंधुजात वासू मुणां वंगळी जंगळी रूमी अरब्बी कंबोज,
(जोवो पांच दोय नांव खेत सूं उपाया जिके नामी पात तुरी नाम वखाणै हनोज)॥—८३

* मंढ़, अग, भद्र, जाती=मंढ़जाती, अगजाती, भद्रजाती।

दोहा

धुर मात्रा तेवीस धर बाकी वीस वखाण,
मुहरा सम ब्यारू मिळै, सावझडो सुभियाण ।—८४

गीत वडो साणोर सावझडो

सूर्य नाम

हरा विन वरनाळ आदीत पवजहनी पतग हुडियद दनइस रातापती,
तरण भरळाटतन मेटतवरतती रवी वासरसुतन सूर (चढती रती) ।—८
धीर महचत्र रवि हंस घरधूपरा (ऊगणा) दिवाकर (मेरगर ऊपरा),
प्रभाकर विरोचन अरक बहुरूपरा भाण गगनापती प्रकासतभूपरा ।—८
करण जमना, जनक* दीत सूरज कपी पोय मणगयण जगदीप दनकर पपी,
तपण दनमण किरण सपतसपती तपी अरुण खग बयळ जमजनक वनकर अपी ।—८
छतरपत वरसरथ मित्र मेटणछपा अरीअधार जगनैण चोरणअपा,
निगमअस विभाकर (जगत रासण अपा) वरमगासी प्रभू (करण भगता अपा) ॥—८८

पुन सूर्य नाम

भासकर दुनियण भण जगसाखी (धणजाण),
मितथवता अहपत (मुणा) मारतड अप्रमाण ।—८९
वोमतरक गगनवटी वेदउदय ब्रहमाण,
पदमनाभ तापण (पढो आखो) धुजअसमाण ।—९०
तेजपुज (अर) विकरतन लोकबधु लखवान,
(वह) रातबर सहसकर मागवान भगवान ।—९१

दोहा

कळा अक दूणी करर, आद बिसम झड आण,
मोळह सोळह तुक गवळ, मुहरो ब्यार मिलाण ।—९२
गोखो वाचा जो सुकब, धारो पग घडीह,
सो छोटा साणोररो, जाणू सावझडोह ।—९३

गीत सावझडो

चंद्र नाम

रजनीपत चद छपाकर राजा विधू भपत अगअर (विराजा),
मेतकरण दुजपत राग साजा सोम चद्रमा नगनसमाजा ।—९४

---

* करण जमना, जनक—करणजनक, जमनाजनक ।

सेनवाह सोळहकळस्वामी नेगी सुधाधरण ससि (नामी),
जगनराग दधसुत वृधजामी गोधर रातरतन नभगामी।—९५
पतउड़ इंद ससीहर पीतू हिमकर तपस कमोदणहीतू,
जरण सेतदुत रोहण (जीतू) आतामधी कमळतन भीतू।—९६
राजांराज रयणपत राका पतओखद मद एणपताका,
छायावाळ (अमी रस छाका) निसकर मयंक विधातनताका॥—९७

दोहा

गत्य भेद सासोर गी, सारी सोही गीत,
नवां दुवाळा सोनरो, गणु पंखाळो गीत।—९८

गीत पंखालो

समुद्र नाम

सायर महराण स्रोतपत सागर दध रतनागर महण दधी,
समंद पयोधर वारध सिंधू नदीईसवर वानरधी।—९९
सर दरियाव पयोनध समदर लच्छमीतात जळध लवणोद,
हीलोहळ जळपती वारहर पारावार उदध पाणोद।—१००
सरतअधीस मगरघर सरवर अरणव महाकच्छ अकुपार,
कळअछपता पयध मकराकर (भाखां फिर) सफरीभंडार॥—१०१

दोहा

अरध सावभड़ में अवस, मुहरा हूँ सम मेळ,
पहली जो मात्रा* पड़ी, वेही अठै उजेळ।—१०२

गीत अर्द्ध सावभड़ो

अग्नि नाम

जोनअपीट छागरथ ज्वाला मंगळ आग अगन झळमाळा,
जातवेय आतस झळजीहा अगनी सुक्र पवनघणईहा।—१०३
परळैकरण धुवांधुज पावक वडवाअगन खंडीवनग्रावक,
वासदेव वन्ही वैसंदर हिरणरेत संम्हा वितिहोतर।—१०४

* १८, १६, १६।

वायूसखा दहण हवबाहण हुतभुक्त ग्रनळ हुतास हुतासण,
बहुल चित्रभानू हवि बरही हुतवह समीगरभ तमहर (ही) ।—१०५
वीरोचन सुचि रोहितवाहा सुममा सगी जळण पतस्वाहा,
विभादसू रत्नमानु (बखाणू) आश्रयग्रास धनजं (ग्राणू) ॥—१०६

दोहा

म्राद अठारह तुक अखो, मोळह सब संपेख,
पहल दुवं चोथे पदं, दुरस मोहरा देख।—१०७
तुका मिळं नह तीसरी, मोहरा सू इण माय,
रूपग जो इण रीत सू, सो झड़लुपत सुहाय।—१०८

गीत झड़लुप्त

इंद्र नाम

देवापत सक्र सुरेस पुरदर ग्ररजनपता वडूजा ग्रदर,
ऊचीश्रवावाह ग्राखडळ मघवा इद सुरगपत मदर।—१०९
माघवान जभासुरमारण धन्वा उग्रबज्रधारण,
वासव पाकरिपू बळबैरी वाहणमेह च्यढणसितवारण।—११०
नैणहजार निरजरानायक देवसची-ग्रपछर-सुखदायक,
परवतग्ररी नाहंदिसपूरव सुनासीर सुरियद (सुहायक)।—१११
ग्ररीपुलोम ग्रम्मराईसर देवाराज धाराधर (दीसर),
जनक्जयत जामनेमी जय सुरप (रोसधर) ब्रत्रग्ररी (सर) ॥—११२

दोहा

मान अठारा प्रथम तुक, ग्रामं सोळह ग्राण,
सोळह सोळह तुक सकळ, मीत त्रवकड़ै गाण।—११३

गीत त्रवकडो

ब्रह्मा नाम

वेदोधर कमळसुतन विध विधना ग्रज चतुरानन जगतउपाता,
सतानंद कमळासन सभू ध्रुव लोकेस पतामह धाता।—११४
परजापत ब्रहमाण पुराणग ब्रहमा ब्रहम बेह कवि बेधा,
सनत हसवाहण सुरजेठो सुपचवु ग्राठद्रगन बडमेधा।—११५

सुरसतजनक स्वयंभू सतध्रत वेदगरभ अठश्रवण विधाता,
आतमभू सावत्रीईसर नाभीसंभव कमन सुहाता।—११६
सत्यलोक गायत्री ईस क वेधस लोकपता (विख्याता),
हिरणगरभ विरंची द्रूहिण द्रुघण विश्वरेतस (वरदाता)॥—११७

दोहा

आद कळा दसआठ री, तेरह मुहरां तोल,
रगण इणीमें राखजे, सोळह विसम सुबोल।—११८
रिधू नाम इण गीतरो, सीहचलो संपेख,
उदाहरण माहें अवस, दल नसचै कर देख।—११९

गीत सिंहचलो

देवता नांम

देवत गिरवाण सुधाभुज (दाखां) दाणववैरी देवता,
विबुध (वळे आखो) व्रंदारक सुरगी पुरियंदसेवता।—१२०
निरजर कामरूप सुर नाकी अमर पूज (जग आखजे),
वरहीमुख अम्रतास विमाणग देव चिरायुस (दाखजे)।—१२१
स्वाहाग्रसण मरुत अदतीसुत वाससुमेर (वखाणजे),
सुपरवाण क्रतुभखण अस्वपन अनमिख सुमनस (आणजे)।—१२२
(आखो) लेख रिभू दिवओकस त्रिदस नलंप (तवाजजे,
रूड़ो देव नांम रो रूपग कवि निस दीह कहीजजे)॥—१२३

दोहा

पहल अठारा कळ पढ़ो, दाख वळे खटदूण,
सोळह बारह तुक सकळ, राखीजै इण रूंण।—१२४
मेळ पहल चोथी मिळै, मुहरा दु तिय मिलंत,
अधक गीत सालूर इम, गुणियण नांम गिणंत)।—१२५

गीत सालूर

कामदेव नांम

धानंकीफूल पंचसरधारी नाथपूत रतिनायक,
संवरारि श्रीसुत सुमसायक अतन मच्छअसवारी।—१२६

दरपक कामदेव हरदोखी अगज मार अनगी,
अनिरुधपता मनाज अढंगी अवळासेन (अनोखी)।—१२७
मघसारथी आतम जोणी काम मदन झखकेतू,
(है) प्रदुमन कद्रप मधुहेतू (सुरग गीत सब छोणी)।—१२८
कमन बळेसणगारज (कहणू) मनमथ मैण (मुणीजै),
सुमनसधुज मत्रकेत (सुणीजै) रागरज्जु (मनहरणू)॥—१२६

दोहा

पहली गण खटकळऽऽऽ० पढो, च्यार बखन कळच्यारऽऽ०,
मुगू बळे दुव मातरा, पुण पव तुका मुप्यार।—१३०
चवो उलाळा छदरी, दुरस अन्त तुक दोय,
अट्ठावी मात्रा अवस, इम क्रम छपय होय।—१३१

छप्पय

यमराज नांम

धरमराज जच्छाट काळ जमराण महिखधुज,
मारतंडसुत जच्छ हरी अतक जमुनानुज।
सजमनीपत प्रेतपती ज्म विस्वक्सहर,
धूमारण दवखण (प* बळे) जमराज दडधर।
कीनास पितरपति अतकर समबरती (रु) क्रतान्त (सह,
बावीस नाम सुकव्यां मुरू जेम) मीच (जम नाम कह)॥—१३२

दोहा

धुर खट कळ दुव दोय धर, लघू एक कळ दाय,
कळ खट दो कळ गुर कहो, हिक लघु दोहा होय।—१३३

दोहा

लक्ष्मी नांम

छीरोदधजा ल्याछ लच्छ दधसुतनी पदमा (ह),
रमा ई मा नारायणी लखमी मा कमळा (ह)॥—१३४

कुबेर नांम

नरवाहण जख्खेस धनद मलवाधन धनईस,
श्रीद सिनोदर तीनसिर नरधरमा रतधीस।—१३५

---

* धूमोरणप, दवखणप

द्रव्य-८, सामान्यनिधि ५ नाम

विभव वित्त द्रव सार वसु हेम अरथ धण (होय),
नधी कुनाभि निधान नध जवर सेवधी (जोय) ॥—१४६

नवनिधि नाम

महापदम चरचा मकर पदम कुंद (पहचाण),
कच्छप सम्म मुकद (कह) नील (नवनिधि जाण) ॥—१४७

अष्ट सिद्धि नाम

अणिमा लघिमा ईसिता प्रापति वसति प्रकाम,
(यत्र काम) अवसायिता ईसरता (अठ नाम) ॥—१४८

स्वामी कार्तिक नाम

गंगा, क्रतिका, गोरि, सुत* सेनानी सिखिवाह,
महासेन खटमुख (कठें) गुह (अरु) तारकगाह ॥—१४९

आकास नाम

गैण व्योम अंबर गगन आसमान आयास,
अंतरीक गैणाग (अर) आभ अभ्र आकास।—१५०
निहग गयण खं वियत नभ गगापथ ग्रहनेम,
पयठाया दिव विमनपथ उडपथ मारुत (एम) ॥—१५१

तारा नाम

उडगण तारा नखत उड तारायण भं (तात),
उडू तारका (एम अख) नख्खतर (जिम नरख्यात) ॥—१५२

मेघ नाम

मेघ घनाघन घण मुदिर जीमूत (र) जळवाह,
अभ्र वळाहक जळद (अम्ब) नभधुज धूमज (नाह) ॥—१५३

मेघमाला २, अतिवृष्टि-२, मेघतिमिर २, वर्षा २ नाम

मेघमाळ कादंवनी अतिवरसण आसार,
दुरदिन वीकासी (दखा) व्रष्टी वरसण (वार) ॥—१५४

---

* गंगा, क्रतिका, गोरि, सुत=गंगासुत, क्रतिकासुत, गोरिसुत।

ओला-४, बादल-६ नांम

असण गड़ा ओळा करक घमज बादळ (वार),
अभ्र बादळो आभ (घर कहो वळे) जळकार ॥—१५५

बिजली-६, गर्जना-४, उल्कापात-१ नांम

वीज दामणी वीजळी तड़ता छटा तड़ाळ,
गाज कड़क धूहड़ गरज उलकापात (अचाळ) ॥—१५६

सामान्य दिशा-४, पूर्व-१, दक्षिण-१, उत्तर-२, पश्चिम-२ नांम

दिक आसा चवकां दिसा पूरब दक्खण (पाय),
उत्तर (वळे) उदीचि (अथ) अपरा पच्छम (आय) ॥—१५७

अष्टदिकपाल नांम

इंद अगन जम असुर (अर) वरुण (वळे कह) वात,
अलकापत (इम) ईसवर (आठ दसा पत आत) ॥—१५८

पंच देव-वृक्ष नांम

पारजात मंदार (पढ़ तत) कळब्रछ संतान,
हरिचन्दन (ए देव हरि पांच रूंख पहिचान) ॥—१५९

दिन-६, रात्रि-१७ नांम

दीह दिवस परभात दन बासर अह (वुलवात),
निसा छपा जामनि उखा रजनी छणदा रात ।—१६०
रात्रि रातरी सरवरी त्रीजामार त्रिजाम,
तमवाळी दोसा तमी विभावरी ससिवाम ॥—१६१

सामान्य समय-७, अच्छा समय-५ नांम

समे काळ वेळा समय वखत अनेहा वार,
आछी रूड़ी आसती चोखी भली (उचार) ॥—१६२

बुरा समय-११, जोरावरी-६ नांम

अवखी वुरी अनासती विखमी खोटी (वार),
जळाबोळ कूड़ी (जवर) माठि नमामी (धार) ।—१६३
नहरूड़ी (अर) नासती माडै जोरी माण,
वरजोरी जोरावरी (ज्यूंही) जवरी (जाण) ॥—१६४

निमेष, काष्ठा, लव, कला, लेस, घड़ी वर्णन

मान अढ़ार निमसरो काष्ठा नामक जाण,
काष्ठा द्वै रो एक लव पनरा कळा पिछाण।—१६५
कळा दोय रो लेस ह पनरा खण में पेख,
निमचै छै खण नाडिका इद घड़ी घटि देख॥—१६६

सायंकाल ४, संध्या ४ नांम

सबली उतसूर (सु वहो) साय (र) दिनअवमाण,
सभा संध्या साझ (कह) सभया (सरवस माण)॥—१६७

रात्रिप्रारंभ ३, पहर ४ नांम

रजनीमुख परदोस (हूं फेर) प्रदोस (पछाण),
पहर पैर (फेरू) प्रहर जाम (नाम ए जाण)॥—१६८

अंधकार नांम

तमर अंधारो सतमस अंधकार अंधार,
धरछाया अंधालमस निसाचरम (नीहार)॥—१६९

महीना १, संवत ६ नांम

(पखवाडा दो ए प्रगट मुगू सदा हिक) मास,
(बारै मासा से बळे जागू संवत जास)।—१७०
संबत हायन बरस सम बच्छ सरत (बाखाण),
बच्छर संबच्छर (बळे) जुगमसक (तू जाण)॥—१७१

मागसिर ४, पौष १, माघ २, फाल्गुण २, चैत्र ३, बैशाख ३, जेठ १, आषाढ़ २ नांम

आगण मत्रतआद सह मगसर (मास मुणत),
पोस माघ तप फालगुण फागण (फर पुणत)।—१७२
(तत) चैत्रक मधु चैत (अख ज्यू) बैसाख (सुजाण),
माधव राध (रु) जेठ (मुण अर) असाढ सुचि (माण)॥—१७३

श्रावण ३, भाद्रपद ५, आश्विन ३ नांम

सावण नभ (जिम) सावणिक भाद्रव भाद्र (भणोज),
भाद्रू भादव भाद्रपद इग कुवार आसोज॥—१७४

कार्तिक-४, मार्गशिर-पौष-१, माघ-फाल्गुन-१, चैत्र-वैशाख-२, जेष्ठ-आषाढ़-८, श्रावण-भाद्रपद-१ नांम

कार्तिक काती कारतिक वाहुल (वळै वखांण,
रत) हेमंत (र) ससर (है) इष्य वसंत (सु आण) ।—१७५
ऊन्हाळागम ऊसमक दाह (रु) तपत निदाघ,
ग्रीखम तप उसणागम (क वाखाणूं) वरखा (घ) ॥—१७६

आश्विन-कार्तिक-२, प्रलय-१० नांम

सरद घणात्यय प्रळय खय संवरत्तक संहार,
परिवरत ख परळै प्रळै अंत कळप (उच्चार) ॥—१७७

अभी-३, नित्य-७ नांम

(अखो) हनोज अवार अव नत प्रत सदा हंनोज,
(वळै कहो इम) सरवदा (रख) हमेस नत रोज ॥—१७८

वचन नांम

वैण वयण कहवत वचन अवै बोलड़ा बोल,
चवै जंप ऊचरै मुणै गोय रट (मोल) ।—१७९
पुणै पयंपै कथ पढ़ै वरण वकै भण (वाण),
कहै कहण प्रारथ कथन आखै भाखै (आण) ॥—१८०

वेद-५, चारवेद-४, षट्वेदांग-६ नांम

आमनाय श्रुति वेद (अर) निगम ब्रहम (निरधार),
रग जजु साम अथर्व (ए च्यार वेद उच्चार) ।—१८१
कलप निरुकती व्याकरण जोतिस सिकसा (जांण),
छंद (नांम अे सव छ रो एम षडंगी आण) ॥—१८२

चौदहविद्या नांम

अंगी खट आन्वीक्षिकी च्यारूं वेद विचार,
धरमसास्त्र मीमांस (धर और) पुराण अढ़ार ॥—१८३

सामान्य वात नांम

वात उदंत प्रव्रत्ति (अर) समाचार समचार,
समाचरण व्रत्तांत (सह) वार्ता (वळै विचार) ॥—१८४

बुलाना ४, शपथ-४, व्यवहार-२ नांम

हवकारव हव हूति (क्ह) आवारण आवार,
सोगन सपन (रु) सपथ सप (है) बुहार व्यवहार ॥—१८५

प्रश्नवचन-३, सत्यवचन-६, मिथ्यावचन २, स्तुति-८, निंदा-२ नाम

प्रच्छा अनुयोजन प्रसन समीचीन सत साच,
(आख) जथातथ लीक ऋत वितथ अलीक (सुवाच) ।—१८६

असनूती असनूत (अर) वरणन नुती वखाण,
सनवन परससा स्तुती निंदा नदा (जाण) ॥—१८७

कीर्ति नाम

पगी कीरत पागळी सेतरगी सोभाह,
सुसवद सतरगी सुजस प्रभा कीत प्रभता (ह) ॥—१८८

आज्ञा नांम

मासण (और) निदेस (क्ह मुणू) हुकम फुरमाण,
वामक निरदसक (वळे इम) आदेश (सु आण) ॥—१८९

अंगीकार-५, गान ६, नाच-७, बाजा-४ नाम

सविन सघा आसया आश्रव अंगीकार,
गीत गाण गधर्व (अर) गावण गेय सुगार ।—१९०

नाटक ताडव श्रत्त श्रत नरतन नटन सुनाच,
वाजो तूर वादत्र (हैं वळे) मैणवुज (वाच) ॥—१९१

फूक के बाज-१, तार के बाज १, ताल-मजीरा आदि-१, चमड़े से मड़े बाजे-१, बीणा-४, बीणा अग २, बीणा दड-१, बीणा की खूटी १ नांम

(वसादिकरा) सुसिर (वक) तत घन (आदिक ताल),
(आद) मुरजआनद्ध (अव जावो) बीणा (जाळ) ।—१९२

वेण बीण (अर) वल्लवी कोलबक (तिण) काय,
(बीणा दड) प्रवाळ (है) उपनह (वधण आय) ॥—१९३

नगारा नांम

अंवागळ अंमाळ (है) भेरी दुंदुभि (भाख),
जांगी वंब दुजीह (अर इम) नीसाण (सुआख)।—१६४

आमागळ आमाळ (त्रिम) अंवक (अर) अंवाळ,
टामंक (रु) अंमाट (है) डंडाहड़ डंडाळ।—१६५

ईडक धूंसो (अख वळे दाखो ओर) दगाम,
(एम) अमाट (वखाण अर नरख) नगारो (नांम)॥—१६६

नगारे का वजना नांम

अहअहियां गरहर अहक वज रुड़वो रुड़ वाज,
घुरियो घुरवो घोकियो नीधस टहक निहाज।—१६७

जंप धोह घुर वाजवो (फेर) रणाक (पढ़ाव),
वाजण विजयो वाजियो (निसचै कहो निवाह)॥—१६८

शृंगारादि नवरस नांम

(रस) सणगार (रु) हस करुण वीर रुद्र (वाखाण),
भयानक (रु) वीभत्स (है) अदभुत सांत (सु आण)॥—१६६

अनुराग-४, हास्य-४, वहुत हंसना-१, उपहास-१, शोच-३ नांम

राग प्रीत रति अनुरती हास्य हसन हस हास,
अट्टहास अपहास (अर) सोच सोक सुक (तास)॥—२००

कोप नांम

क्रोध छोह रुट मछर कुप जाजुळ तायल जोस,
धोम ताव क्रुध रीस धुव रोख (रु) अमरख रोस॥—२०१

उत्साह नांम

उद्यम (ओर) उछाव (अख) उच्छव (वळे) उछाह,
आभियोग उद्योग (है एम) उमाव उमाह॥—२०२

भय-६, भयंकर-१३ नांम

भै डर भी आतंक भय त्रास भीत सी त्राप,
भीम भयंकर भीसम (रु) भीषण भैरव (भाप)।—२०३

मुनाना ५, शपथ ४, व्यवहार-२ नांम

हवकारव हव हूति (वह) ग्रावारण ग्रावार,
सोगन सपन (रु) सपथ सप (है) वुहार व्यवहार ॥—१८५

प्रश्नवचन ३, सत्यवचन-६, मिथ्यावचन-२,
स्तुति ८, निंदा २ नांम

प्रच्छा ग्रनुयोजन प्रसन समीचीन सत साच,
(ग्राख) जथातथ लीव ऋत वितथ ग्रलीव (सुवाच) ।—१८६
ग्रसतूनी ग्रसनूत (ग्रर) वरणन नुती वखाण,
सतवन परससा स्तुती निंदा नदा (जाण) ॥—१८७

कीर्ति नांम

पगी कीरत पागळी सेतरगी सोभाह,
सुसबद सतरगी सुजस प्रभा ग्रीत प्रमना (ह) ॥—१८८

ग्राज्ञा नांम

मामण (ग्रार) निदेस (कह मुणू) हुकम फुरमाण,
वासक निरदसक (वळे इम) ग्रादेश (सु आण) ॥—१८९

ग्रगीकार ५, गान ६, नाच-७, बाजा-४ नांम

सविन सघा ग्रामया ग्राश्रव ग्रगीकार,
गीत गाण गधर्व (ग्रर) गावण गेय सुगार ।—१९०
नाटक ताडव ग्रत्त ग्रत नरतन नटन सुनाच,
वाजो तूर वादन (हैं वळे) मैणघुज (वाच) ॥—१९१

फूंक के बाजे १, तार के बाजे १, ताल-मजीरा ग्रादि १,
चमड़े से मढ़े बाज १, बीणा ४, बीणा ग्रग २,
बीणा दड १, बीणा की खूटी १ नांम

(वसादिकरा) सुसिर (बक) तत धन (ग्रादिक ताल),
(ग्राद) मुरजग्रानद्ध (ग्रव जावो) बीणा (जाळ) ।—१९२
बेण वीण (ग्रर) वल्लकी कोलवक (तिण) काय,
(वीणा दड) प्रवाळ (हैं) उपनह (वधण ग्राय) ॥—१९३

गर्व नांम

मुठठ मजाज मरोड़ (मुण) गरवर गुमर गुमान,
गुररो मुरड़ गरूर (गिण) अहंकार अभिमान।—२१३
मनऊंचो ममता (मुणूं) मान दरप मगरूर,
सूधनहीं मद (अरु) टसक (पुणां) मगज छकपूर॥—२१४

निर्बल-५, दीनता-२, परिश्रम-१० नांम

अवळ नवळ बळहीण (अख) दुरवळ निरवळ (दाख),
करपणता (जिम) दीन (कह) आयास (रु) श्रम (आख)।—२१५
परीसरम तकलीव (पढ़) खेचल मैनत खेद,
प्रीश्रम (और) प्रयास (है भाख) कलेस (सुभेद)॥—२१६

मृत्यु नांम

मोत काळ अत्तू मरण निधन समावण नास,
असर्त मीच अवसाण (अर) जोखम वीसम (जास)॥—२१७

मनुष्य नांम

मानव माणस नर मरद आदम मनख (सुआंण),
मानुस ना मनुज (रु) मनुस पूरख पुरुख (प्रमांण)॥—२१८

बालक नांम

पोत पाक छीरप (पढ़ो) बाळक टावर बाळ,
गीगो कूको गीगल्यो अरभक साव (उताळ)॥—२१९

वृद्ध नांम

जीरण जरठ (रु) जावरो बूढ़ो बूढ़ळ (वांण),
डोकरड़ो (अर) डोकरो जरण ब्रद्ध (तू जांण)॥—२२०

कवि नांम

पात ब्रवण कवि नीपणां ईहग वीदग (आख),
गुणियण सुकवी मांगणां भाणव हेतव (भाख)।—२२१
कवराजा तावक (कहो) रेणव (ज्यूं) क्यवराज,
(दाखो) चाड़व दूथियां जोड़ागुण जसजाज॥—२२२

भयानक दारुण (भरू) अध्यामण अकराळ,
घोर कराळअघोरघर विडरूप (रु) विकराळ ॥—२०४

आश्चर्य नाम

आसचरज अचरज अचरज अदभुत विसमै (आण),
पुल्न अचभो (फेर पढ) विसमय (और बखाण) ॥—२०५

सनोष ३, स्मरण ६ नांम

धीरज सनोष (र) ध्रती समरति (वळे सु) याद,
सुमिरण समरण (अर) समर (यूही भाखा) याद ॥—२०६

बुद्धि नांम

बुद्धि चित धिमणा सुबुध धी मधा मति धीय,
उपलवधो उक्ती उरन (जाण) प्रतिभा जीय ॥—२०७

लज्जा नाम

लज्या लज्जा लाज लज ब्रीड त्रपा विख्यात,
सकुचण (अर) सकोच (है) सरम (सदा सरसात) ॥—२०८

अप्रसन्न नांम

उणमण अणमण (आख अर) अप्रसन्न (अर) अवसाद,
बराजा बराग (वद) बदल दुमन (विखाद) ॥—२०९

निद्रा नांम

सवनर निद्रा सयन शय्य तंद्रा स्वाप,
विनजागण (पर) नींद (वद) जुरा निदडली (जाप) ॥—२१०

याद करना नांम

झलळूकी (दाखा झुरण झाखा) रणक (उमाह),
झाळूडी झनलाग (झण) झाळू उनवडा (ह) ॥—२११

आलस्य ४, प्रसन्नता ४ नांम

कागीद (र) तंद्रा (कहो) आळस (पर) अगडार,
सुमद चितरगमता आनन्द प्रमोद (सु धार) ॥—२१२

शूरवीर नांम

सूर वीर सांवत सुभड़ जोरावर जोधार,
जोरावार (रु) जोमरद भिड़ज अरोड़ा (भार)।—२३२

भड़ खीवर रावत (भणूं) मरद सुहड़ घड़मोड़,
घड़ामोड़ जंगजूट (घड़) ओधंगी (नहकोड़)।—२३३

जंगसारधारण (जंपो) सेनावेध (समाळ),
रिमांदाट जोमंग (रट) जोसंगी (रमजाळ)॥—२३४

कायर नांम

कायर काचा कातर (क) पसकण डरपण पोच,
कादर (ज्यूं) भीरु चकित (सुण अर) करणसोच॥—२३५

कृपण-२०, दयावान-५ नांम

करपर करपण सूम (कह) नाटवाल नाकार,
माठा दमजोड़ा (मुणूं) अदेवाळ अदतार।—२३६

करमट्ठा लोभी (कहो) दळमाठा (र) अदात,
चठमट्ठा (अर) संचगर अदावान कुच (आत।—२३७

पुणं) चतमाठा (ओ) कृपण द्रढ़मूठी (रु) दयाळ,
करुणाकर सूरत (कहो) कोमळचीत कृपाळ॥—२३८

दया नांम

करुणा अनुकंपा कृपा दया मया (तिम दाख),
महरबानगी महर (मुण) सुनजर करपा (साख)।—२३९

सुधानजर सुद्रष्ट (सुण भाणव इण विध भाख),

मारना-३२, फाटना-६ नांम

मारण गंजण मारियां अंत (र) हचतो (आख)।—२४०

भांज विहंडण भांजियो घातक जोखम घात,
खंडण हणै सिंहार खप आलंभन वध (आत)।—२४१

पेलै नास खपावणूं झूझ पछाड़ै झाड़,
मार (रु) हिंसा मारतो भांगण दळै विभाड़।—२४२

शासन नाम

ग्रागाहट (ग्रर) उदक (ग्रख) सासण नेस (सुणात),
गढवाडा (फेरू गिणू) तावापतर (तुलात) ॥—२२३

पंडित नाम

पंडित ग्रभिरुप (र) सुधी विचछन मेधावाळ,
कोविद श्रति ग्रग्री वळे (जपणवाणी जाळ) ॥—२२४

चतुर नाम

परवीण (र) सिच्छिन निपुण नागर पटु निमणात,
कुसळ चतुर ग्रतमुख (क्हो) ग्रभिजाणण (तिमग्रात) ॥—२२५

मूर्ख नाम

मद मूढ (ग्रर) मातमुख जड मठ बाळ ग्रजाण,
जथाजात मूरख (जपो) ग्रबुध (रु) जालम (ग्राण) ॥—२२६

स्वाधीन ४, पराधीन ४ नाम

सुततर (रु) स्वच्छद (है) सुरुचि (वळे) स्वाधीन,
नाथवाळ निघनक (क्हो) ग्रायत्तर ग्राधीन ॥—२२७

धनवान ४, संपत्ति ४ नाम

ल्छमीवाळ (र) लच्छमण धणी ईसवर (धार),
ल्छमी श्री संपत (ल्खो) संपत्ती (सुविचार) ॥—२२८

दरिद्र नाम

रोर दळिद्र कुरिद (ग्रर) टोटो घाटो (आख),
कमाला (र) दाळीद (क्ह) दुरगत कीक्ट (दाख) ॥—२२९

स्वामी नाम

ग्रधिप ईस प्रभु ईसवर इद पती विभु (एम),
नायक स्वामी नाथ इन (जपो) भरता (जम) ॥—२३०

दास नाम

चाकर वेली चेट (चव) परिचारक परजान,
किंकर भ्रत (र) करमकर ग्रनुचर दास (सु ग्रान) ॥—२३१

माझी (अर) वेढ़ीमणा अतळीवळ ओनाड़,
अनमीखंध पूंचाळ (अख) वंका अनम विभाड़ ।—२५४

नाटसाल अनमी (नरख आख) अरोड़ अठेल,
आपायत ऊवांवरा एढ़ा (खळां उथेल) ।—२५५

अनडर डाकी (फेर अख) अड़पायत अजराळ,
बडाळा (र वरियामरा भाणव सारा भाळ) ॥—२५६

निर्भय नांम

अडर नडर अणभै अभै नरभै अभै नसंक,
अभंग अवीह अभंग (अर) अजरायल अणसंक ॥—२५७

ईर्षालु-२, ईर्षा-१, क्रोधी-४ नांम

कुहन ईरखावाळ (कह एम) ईरखा (आख),
कोपवाळ क्रोधी (कहो) रोखण रोखी (भाख) ॥—२५८

भूख-४, प्यास-४, प्यासा-२, सोखना-२ नांम

रोचक भूख (रु) छुध रुची तस तरखा अट पान,
तरसित तरखावाळ (तिम) सुसवा सोसण (मान) ॥—२५९

दाल-२, व्यंजन-१, गुलगुला-१, मालपुवा-१, पतला लगावण-१
सेव-१, वड़ा-१, गुड़-३ नांम

दाळ सूप व्यंजन (दखां) पूवा मालपुवा (ह),
तेवण चमसी (तिम) वड़ा गोळ इच्छु गुड़ (गाह) ॥—२६०

श्रीखंड-१, दाल का रस-२, मिश्री-बूरा-२,
शक्कर-२, दूध-१२ नांम

सखरण रस्सो जोस (कह) मसरी सिता (मुणाय),
मधूधूळ (अर) खांड (मुण) दूध दुगध (दरसाय) ।—२६१
पै गोरस जळमित पय जीवनीय सर (जाण),
रसउत्तम (ज्यों) छीर (कह) ऊधस अम्रत (आण) ॥—२६२

दही-४, घृत-३, मक्खन-४ नांम

दध गोरस छीरज दही घरत हवी आधार,
मांखण (अर) नवनीत (मुण) सरज (और) दवसार ॥—२६३

वाढण चरजण बाढियो काटण कटियो काट,
वढियो वेहर वाढियो श्राछ्ण मूछ्ण त्राट ॥—२४३

तोडना-३, मारने को तैयार-१, मृतक-५,
कपटी-४, सरल-२, धूर्त-५ नाम

भागण तोडण भाज़ियो (अखो) आततायी (ह),
प्रेत परेत परासु (पढ) उपगत मुरदो (ईह)।—२४४
कपटी सठ अन्नजु निनस्त सुधो सरळ (सुहात),
धूरत सठ वचक (धरो) कुहक (रु) जालिक (श्रात) ॥—२४५

ठगई-३, कपट-६ नाम

कुमती माया सठ कपट छदम कूट छळ (श्रात),
उपधा व्याज (रु) मिस (अखो) कैतव दभ (कुहात) ॥—२४६

सज्जन-३, चुगलखोर ७ नाम

सज्जन साधू (है) सजन दोयजीह खळ (दाख),
करणेजप सूचक पिमुन नीच मच्छरिन (श्राख) ॥—२४७

चोर ३, दाता २, दान-२६ नाम

चोर मोम (श्रर) चोरड़ो दाता (श्रर) दानार,
वगसै क्यावर (श्रर) श्रवै श्रालर दत श्राचार।—२४८
रीझ सुमोज वरीस (कह) समपीजै (रु) समाप,
त्याग समापण दान (निम) श्रालै मोजै श्राप।—२४९
करतब श्रपवरजन (कहो) वितरण देण प्रवाह,
उतसरजन श्रहृति (श्रगो बोल) नवाज विदाह ॥—२५०

क्षमा-३, भरणपन-३, जोरावर-३६ नाम

खिमता धीरज (है) खमा भारीगखू (सु भाग),
मूढाळम (श्रर) भरखनू (एम) श्रमानड (श्राग।—२५१
जपो) जोरावर जवर वामगड विकराळ,
जोरदार श्रगडैत (जिम कहो) मवळ लाराळ।—२५२
गाड कगाळ श्रगीग (श्रर) श्रडीगभ श्ररडींग,
मागडा मनड तामडा (जपो) जामुठ मीग।—२५३

उतसुक ऊमण (फेर अख चवो वळे) अतिचाह,
आक्षारित दूसित (अखो) अभीशप्त वाच्या (ह) ॥—२७३

बंधा हुआ नांम

बंधित बांध्यो बद्ध सित संयत नद्ध (सुहात),
निगडित (अर) रांदानिकत कीलित (वळे कुहात) ॥—२७४

बंधन-२, अनमना-२, तंगड़ाया हुआ-२, निकाला हुआ-१ नांम

बंधण (अर) उद्दान (वद) मनहृत प्रतिहृत (मांण),
प्रतीछिपत अधिछिपत (भण जिम) निसकासित (जांण) ॥—२७५

हारना नांम

विप्रकार परिभाव (भण वळे) पराभव हार,
अभिभव अत्याकार (इम निसचै आख) निकार ॥—२७६

सुवक्कड़-५, जागरण-२, वहमी-२, पूजा-३, दंडित-२, पूजित-५ नांम

सुपनक सयआळू सुपन नीदाळू नीदाळ,
जागरया (अर) जागरण वहमी संदेहाळ।—२७७
अरचा पूजा अरहणा दंड्यो दंडित (देख),
अरहित अपचित अंचित (ह) पूजित अरचित (पेख) ॥—२७८

नमस्कार नांम

नमस्कार वंदन नमो प्रणम वंद प्रणाम,
अभिवादन आदेस (इम पढ़) दंडोत प्रणाम ॥—२७९

शरमिंदा-१, सिटपटाया हुआ-२, पूजा की सामग्री-२, पुष्ट-६ नांम

विक्लव विह्वल विकल (वद) वलि उपहार (वखान),
पीवर पीवा पीन (पढ़) पुसट थूळ पळवान ॥—२८०

दुबला-८, थोंदवाला-८ नांम

दुरवळ पेलव दूब्ळा क्रस (अर) करस (कुहात),
तलिन अमांस (र) छीणतन दूंदवाळ (दरसात)।—२८१
दूंदाळो (अर) दूंदळो उदरी उदरिळ (आत),
तुंदी तुंदिक तुंदिभ (र अहत कूंख विख्यात) ॥—२८२

गुज्जी-रावड़ी-६, मठा-३ नांम

(वोलो) गुज्जी रावडी काजो काजिक (ग्राह),
कुजळ (बळे) सुवीर (कह) छाछ (रु) गोरस छाह ॥—२६४

तेल-३, राई-२, धनिया-१, सोंठ-२, हल्दी-२ नाम

तेल ग्रभजन स्नेह (तव) ग्रसुरी रायी (ग्राख),
धणू सूठ नागर (धरो) हळद (र) हळदी (दाख) ॥—२६५

मिर्च-३, जीरा-२, पीपर-२, हींग-२ नांम

कोलक बेलज मरच (कह) जीरक जीरो (ग्रात),
पीपळ (ग्रर) पीपर (कहो) हिंगू हीग (सुहात) ॥—२६६

भोजन नांम

भोजन जीमण ग्रद भखण ग्रसण ग्रसण ग्राहार,
लेहण खादन भख गलण ग्रदन जखण घसि (ग्रार) ॥—२६७

ग्रास नांम

कुवा पिंड ग्रासण कवळ गाळा गुड (ग्रर) ग्रास,
अदनचीज टुक्डो (ग्रखो) कवक गुडरेक गास ॥—२६८

लोभी नाम

लोभी ग्रभिलाखुक लुबध (वेखो) त्रष्णावाळ,
ग्रासा ग्रछा बाळ (ग्रख) लोलुप (अर) लोभाळ ॥—२६९

लोभ नांम

त्रष्णा काछा लोभ त्रट ग्रभिलाखा ग्रामा (ह),
काम मनोरथ ईह (ग्रख) ग्रछया वस इच्छा (ह) ॥—२७०

कामी-३, हर्षित-२, दुखिता-५ नांम

कामवाळ कामी कमन हरखमाण हरख्याह,
वीचेतस दुरमन विमन (मुण) दुमनू दुमना (ह) ॥—२७१

मतवाला-४, उत्कठित-७, ग्रभिशाप-४ नांम

मतवाळो उनक्ट (मुणू) छीव मत्त मदचाह,
ग्रोळूवाळ (रु) उतक (ग्रख) उतकठिन (कह) ग्राह ।—२७२

उतसुक ऊमण (फेर अग नवो वळे) अनिवाह ,
आक्षान्त दूमित (अगो) अभीशप्त वान्ता (ह) ॥—२७३

बंधा हुवा नांम

बंधित बांध्यो बद्ध सित संयत नद्ध (मुहात) ,
निगडित (अर) सदानिकत कीलित (वळे कुहात) ॥—२७४

धंधन-२, अनमना-२, तंगड़ाया हुवा-२, निकाला हुवा-१ नांम

धंधण (अर) उद्दान (वद) मनहत प्रतिहत (मांण) ,
अनीक्षित अधिक्षिप्त (भण जिम) निरकासित (जांण) ॥—२७५

हारना नांम

विप्रकार परिभाव (भण वळे) पराभव हार ,
अभिभव प्रत्याकार (उग निसरै आन) निकार ॥—२७६

सुपयकड़-५, जागरला-२, वहूमो-२, पूजा-३,
दंडित-२, पूजित-५ नांम

सुपनक सयआळू सुपन नींदाळू नींदाळ ,
जागरया (अर) जागरण वहूमी संदेहाळ ।—२७७
अरचा पूजा अरहणा दंड्यो दंडित (देग) ,
अरहित अपचित अंचित (ह) पूजित अरचित (पेग) ॥—२७८

नमस्कार नांम

नमस्कार वंदन नमो प्रणम वंद प्रणाम ,
अभिवादन आदेस (इम पढ़) दंडोत प्रणाम ॥—२७९

शरमिंदा-१, सिटपटाया हुवा-२, पूजा की सामग्री-२, पुष्ट-६ नांम

विलक्ष विह्वल विगल्भ (वद) बलि उपहार (बखान) ,
पीवर पीवा पीन (पढ़) पुसट थूळ पळवान ॥—२८०

दुबला-८, थोंदवाला-८ नांम

दुरबळ पेलव दूबळा अस (अर) कारस (कुहात) ,
तन्विन अमांस (र) छीणतन दूंदयाळ (दरसात) ।—२८१
दूंदाळो (अर) दूंदळो उदरी उदरिळ (आत) ,
तुंदी तुंदिक तुंदिभ (र बहत कूंप विख्यात) ॥—२८२

गूंगा-२, पंगु-२, काना-३, कुबड़ा-२ नांम

नावविहीण अनामिक (र) पगू शोण (पुणन),
कांण कनन (अर) एकचख कुबज (र) गड्डुल (कहंत) ॥—२८३

बहरा-१, अंधा-२, लंगड़ा-३, गंजा-२ नांम

गरवसाम वावन गरय बहरो बधिर (बुलान),
गोडो गजक गोर (गह) अध आंधळो (आन) ॥—२८४

रोगी-४, रोग ६ नांम

रोगवाळ आतुर (अपटु) रोगित रोगी (जाण),
रोग रुजा आतक रुग गद (र) अपाटव (गाण) ॥—२८५

घाव-४, सुरंट-२, सोथ-३, औखध-५, वेद ८ नांम

व्रण छत अगदा घाव (कह) विण व्रणपद (सु कहान),
सोथ सोफ सोजो (कहो) भेसज तत्र (भणान) ।—२८६

अगद जायु औखध (अगो) वैद (नांम विख्यात),
भिसज रोगहारीअभण दोगजाण (दरसात) ।—२८७

(फेर) हकीम तबीब (पढ) जुररो नायत (जाण,
विसद नाव वैदाण रा एण रीत सूं आण) ॥—२८८

विपतिवाला-२, विपति-६ नांम

आपदथित आपन्न (अख) थपत विपत्ति (बखाण),
आपद विपदा आपदा (जिम) आपत्ति (सुजाण) ॥—२८९

स्नेहवाला-२, सभासद-३, सभा-६, ज्योतिषी-२ नांम

नेहवाळ वच्छळ (नरख) सभावाळ (सूजाण),
सभातार सामाजिका (अवै नाम) सद (आण) ।—२९०

आसथान परसत (अखो) समत सभा समाज,
मूरतजाणणहार (मुण तेम) गणक (सिरताज) ॥—२९१

वंश नांम

अभिजण कुळ सतान (अख) गोतर गोत (गणात),
अनववाय अनवय (इमहिं) अमन कडूब (जणात) ॥—२९२

स्त्री नांम

तरिया तिरिया असतरी वाळा गोरी वांम,
अवळा वाळी अंगना भांमण सुंदर भांम।—२९३

जुवती प्रमदा जोखता जोसा रमणी (जोय),
महळी पदमण पदमणी रामा नारी (होय)।—२९४

भीरू जोसित भांमणी अगनंणी तिय (मांन,
तेम) कांमणी (अर) त्रिया (जेम) महळ (सू जान)॥—२९५

वलैयां-२, वलैयां लेना-५ नांम

(मुणूं) वारणा भामणा भामी वारी (भाख),
वळू मरूं (ओरूं अखो) वारीजावण (आख)॥—२९६

पत्नी नांम

प्यारी जोड़ायत प्रिया धण (सु) सुधारणवाम,
लाडी कांता लाडली वधू वल्लभा (वांम)॥—२९७

पति नांम

पत साहिब पीतम पती रमण कंत भरतार,
धव साजन वालम धणी ढोलो पीव (सुढ़ार)।—२९८

कंथा खांवद कंथ (कह) नायक सैंण (र) नाह,
वर भरता मांटी (वळे) वरयित करणविवाह॥—२९९

दूलह नांम

वींद दुलह बनड़ो वनूं वर लाडो (विख्यात),
मोड़बंध (फेरूं मुणूं) दुलह (नांम दरसात)॥—३००

दुलहिन नांम

दुलहण दुलही दुलहणी वनड़ी वनी (वखांण,
देखो) लाडी वींदणी (जेम) लाडली (जांण)॥—३०१

वराती-५, वरात-२ नांम

जानी जान्या जानियां (वळे) वराती (वाण,
ज्यूं हि) जनेती (जाण ज्यो) जान वरात (सुजाण)॥—३०२

विवाह नांम

जगन सुभवर रयाग जग (मुणूं) स्वयब विमाह्,
उपयम माडो (फेर प्रस बळि) उदवाह विवाह ॥—३०३

जामाद-१, जार-२ नांम

जामाना धीपन (जपो) धीप जमाई (धार,
पन) दुसतर दुहितापति (जपो) उपपत जार ॥—३०४

पतिव्रता-६, व्यभिचारिणी-७, सखी-३, वेश्या-६ नांम

पतव्रता (मर) एकपत इकपतनी (इम आख),
सुभचरिता साध्वी सती भामण कुळटा (भाख) ।—३०५
असती धरसण इतवरी बधकि अवनीता (ह),
सध्रीची आली सखी कचनी (र) कुलटा (ह) ।—३०६
गनका भगतण गायणी वेसा पातर (वांम),
रूपजीवणी (फेर पड) नगरनायका (नाम) ॥—३०७

माता नांम

जणणी अबा मा जणी माता मादर माय,
मायड मायी मावडी माई अमा (आय) ॥—३०८

बेटी नांम

अवरी लडकी डीकरी तनया पुत्रि सुता (ह),
बेटी धी (मर) डावडी (जिम) दुसतर तनुजा (ह) ।—३०९
समरधुका (मर) सारधू पुतरी (फेर पढाव,
तात नाव आगळ तणी बेटी नाव बणाव) ॥—३१०

पिता नांम

जणो जनेता जनीया बाप जनक (वाखाण),
पिता तात वपना जामी (नाम सुजाण) ॥—३११

पुत्र नांम

पूत जोध नदन पुतर जायो सुतन सुजाव,
छावो बेटो छोकरो धोटो नन्द (धराव) ।—३१२
(बळे) सिवाई डावडो सुत (र) डीकरो साव,
तात सूनु कुळधर तनय अगज पुत्र (भणाव) ।—३१३

(वाळा तणा ये दुव सबद अगा नाम पित आत,
ईखो नाव दु ईहगां बेटा रा वणजात)* ॥—३१४

सामान्य संतति नांम

तुक प्रसूत संतति प्रजा तोक अपत संतान,
(आवै जो इण विध अवस सो संतति सामान) ।—३१५

पोता नांम

पोतो पौत्रो पोतरो दूजो बीजो (दाख),
बीयो दुवो (जाण वळे एम) अभनवा (आख) ।—३१६
हरा कळोधर (फेर) हर (ओर) समोभ्रम (आण,
मुकव कळो घर रा सरव बारह नांम वखाण) ॥—३१७

पोती-३, सगा भाई-४, छोटा भाई-४, बड़ा भाई-६ नांम

पोती पौत्री पोतरी बंधव बंधू (वेख),
भ्रात सहोदर (फेर भण दुरस) कणेठी (देख) ।—३१८
बंधव लघुबंधव अनुज जेठी जेठळ (जाण),
पहली भव (अर) पूरवज अग्रज जेठो (आण) ॥—३१९

वहिन-३, देवर-२, ननद-३, संबंधी-६, स्वजन-६ नांम

जामि सुसा भगनी (जपो) देवा देवर (दाख),
नणद (रु) नणदल नणदली बंधव बंधू (भाख) ।—३२०
स्वै सगोत्र जाती सुजन स्वै निज सुकिय (सुजाण),
आतमीय (जिम) आपण (ओर) अप्पण (आण) ॥—३२१

देह नांम

तन पिंजर धड़ डील तनु करण कलेवर काय,
अंग गात अंग आतमा मूरत देह (मुणाय) ।—३२२
विग्रह घट वपु पिंड वप संचर तनू सरीर,
पुर पुदगळ (अर) पींजरो वूधर वेर (सुधीर) ॥—३२३

---

*पिता के नाम के आगे तणा, वाळा आदि शब्द लगाने से पुत्र का अर्थ व्यंजित होता है। जैसे—गुमनेसवाळो, गुमनेसतण अर्थात् गुमानसिंह का पुत्र ।

मृतक २ कड-धड २ नाम

(वनाजीव विग्रह वळ) कुणप (र) मनत (कुहान),
(विण माथा रो देह वद) कड कबध (रहान)॥—३२४

धग ३, मस्तक १४ नाम

अवयव अपघन अग (अंग) सर भरकुट घू शीस,
करण भाग माथा कनक ममनक मुड (मुणीस)॥—३२५
माली मूंड (र) मूरधा उनरग भ्रकुटक (भाग),

मुख १२, ललाट भाग्य १३, कान १२ नाम

मूढो आनन लपन मुख दनालय घण (दाग)।—३२६
मूह घनोत्तम वदन मुहं वक्तर तुड (वखाण),
भाळ ललाड (र) भागरो अलिक ललाट (सु भाण)।—३२७
ताना गाधि नसीव (निम) करम भाग तकदीर,
चावर (वळ) मळीक (चव) श्रुती (नाम मुण धीर)।—३२८
कान गोम (अर) कानडा सरवण श्रवण (सुहान),
सवद धुनि ग्रह* श्रोत्र श्रव करण पिंजूस (कुहान)॥—३२९

भौंह ३ नेत्र १३ नाम

भ्रकुटि भुहारा भूंह (भण) द्रष्टि विलोचन (दाव),
नेत्र नरण लोचरण नयण अवक लोयण (आख)।—३३०
आंख रूपग्रह चख (अखो) द्रग रोहज (दरसाव,
आखा रा कवियण अवम तेरह नाव तणाव)॥—३३१

देखना नाम

जावै भाळै जोयिजै लखै विलोकै देख,
मूझै ईखो भूजवै बखो न्हाळै बख।—३३२
पेख सपेखै (पढो) दीठो दरसण (दाख),
निरखरणन भामै नरख अवलोकन (इम आख)॥—३३३

नाक नाम

नाक नासका नासिका नरकुट नासा (जाण),
गधजाण (अर) गधवह घाण गधहर घ्राण॥—३३४

---

*सवद धुनि ग्रह = सवदग्रह धुनिग्रह।

होंठ नांम

दांतवसन (अर) रदनछद होंठ अधर (इग होठ,
ओठ नाम ऐ ईहगां मुख रा मंडण जोड) ॥—३३५

दांत नांम

दांत डसण खादन रदन द्विज रद दसण (दिखात),
दंत दंत दोलू (दखो एह नाम रद आत) ॥—३३६

जीभ नांम

रसणा रसजांणण रसन जीहा जीह जबान,
लोला रसमाता (लखो) जीभ (नाम ए जान) ॥—३३७

डाढ़-४, गाल-३, मूंछ-४ नांम

डाढ़ जंभ दाढ़ा डसा गल्ल (रु) त्रकवण गाल,
मूंछ मुंछारा मोंसरा (जोवो) मूछां (जाल) ॥—३३८

डाढ़ी-४, गरदन-६ नांम

खत टाढ़ो डाढ़ी ख्तां ग्रीवा गावड़ ग्रीव,
गळो नाड़की गावड़ी नाड़ वळे नस (नीव) ॥—३३९

हाथ नांम

करग आच भुज सुकर कर हसत पाण तस हात,
पंचसाख सय बांह (पढ़) हाथ (रु) भुजा (कुहात) ॥—३४०

कंधा-३, कक्षा-कंखुरी-५, अंगुली-२ नांम

अंस खंध भुजसीस (अख) ककसा खंडिक कांख,
भुजकोटर भुजमूळ (भण कह) अंगुळि करसाख ॥—३४१

पहुंचा-३, मुक्की-४ नांम

(इण आगै) पूंचो (अखो) मणि मणिबंध (गुणाह),
ओडंडी मूठी (अखो सुण) मूकी संग्राह ॥—३४२

कुहनी-३, नख-७ नांम

कफणि भुजाविच कूरपर मारांकुस महाराज,
नखर करज नाखून नख भुजकांटा (तस आज) ॥—३४३

छाती नांम

उर उराट छाती उरग मनघर वच्छ (मुणात),
भुजग्रनर (फेर प्रभण) कोड (र) वकस (बुहात) ॥—३४४

हृदय ५, स्तन ५ नांम

ह्रदो धगग्रनर हिया ग्रमह मरमधर (ग्राख),
उरमाडग थण कुच उरज (फेर) पयोधर (भाख) ॥—३४५

पेट नांम

उद्र पेट तुंदी उदर जठर पिचड (सुजाग),
गरभहू म जाठर (गिण, फेरू) कुम (पिछाण) ॥—३४६

कलेजा-३, प्रात ४ नाम

जगर कळेजो काळजा ग्रात ग्रानडा ग्रत,
ग्रत्रावळ (रा नाम ए कवियण च्यार कहत) ॥—३४७

फेफड़ा ३, मन ६ नाम

क्लो फफरो फूक्ग, चित चेतन दिल चेत,
मन माणम मनडो (मुण,) रदो दिलडो (हेत) ॥—३४८

रोमावली-२, नाभी ३, कमर-३, मेरुदंड,
रीढ़, नितंब २, योनी ५ नाम

गेमलना रामावळी नाभी नाही नाह,
कार्चीपद कड कट कमर (त्रिक वमाध तया ह) ।—३४९
पूठवस रीढक (पडो) पुत कडप्रोथ (प्रमाण),
भग सननिरय जोणि (भण) बुलि वरग्रग (वखाण) ॥—३५०

लिंग ४, गुदा ३, जांघ ३ नाम

लिंग सिश्नु लागुर लगुल पायू गुदा ग्रपान,
ऊरू साथळ जाघ (ग्रत) जानू गोडा (जान) ॥—३५१

घुटना २, पिंडली-३, टखना ५ नाम

पीडी नळकीनी प्रसत चरणगाठ (पहचाण),
मुरच्या टक्कूण्या (जम) गुलक घुट (जाण) ॥—३५२

पैर नांम

चलण पांव ओयण चरण पै पग पद पय पाय,
कदम अंध्रि नग क्रम क्रमण (चउदह नांव चवाय) ॥—३५३

तलुआ-३, एडी-१, रुधिर-१६, मांस-११ नांम

तळ ओयणतळ पगतळी एडी (घुटअध आण),
रगत रुद्र लोही रुधिर खून छतज (वाखाण) ।—३५४
प्राणद आसुर रत्र (पढ) सोणत श्रोण (सुणात),
मांसकरण नारंग (मुण) अस्र विस्र रत (आत) ।—३५५
स्रोणित स्रोयण रुधिर (सुण) जंगळ मांस (जणात),
पलल मेदकर क्रव्य पळ कासप कीन (कुहात) ।
रगत, तेज, भव* (अर) तरस आमिख पिसित (अणात) ॥—३५६

जीव-४, मेद-४, हड्डी-७, मांस की हड्डी-१, मांस की बोटी-२ नांम

वायहंस (जिम) हंस (वद) जीवक जीव (जपंत),
मेद गूद गोतम वसा कीसक हाड (कहंत) ।—३५७
असथी मेदज सार (इम) करकर मींजीका (र,
धूरोहाड) करोटि (धर) बोटी वड़ी (बुलार) ॥—३५८

अस्थि-पंजर-३, खोपड़ी-२ नांम

(असथी सारा अंगरा कहो) करक कंकाळ,
(असथी) पंजर (फेर अख) करपर (अवर) कपाळ ॥—३५९

मज्जा-५, वीर्य-६, वाल-१५ नांम

कोसिक मींजी सुक्रकर असथन मज्जा (आख),
बीरज रेतस बीज वळ इंद्री सुक्र (इमाख) ।—३६०
आणंद, मींजी, उदभवन† पोरस धातु-प्रधान,
रोम लोम (अर) रूंगटा वाळ केस (विग्यान) ।—३६१
वल्लिताग्र कुंतल व्रजिन तीर्थवाक कच (तेम),
तुचामैल तनरुह (तवो) अस्र चिकुर कज (एम) ॥—३६२

---

* रगत, तेज, भव = रगतभव, तेजभव ।

† आणंद, मींजी, उदभवन = आणंदउदभवन, मींजीउदभवन ।

बालों का जूडा-२, अलक-१, चमडी-७, नस-२ नाम

जूडो मोळी अलक (जप) चरम चामडी चाम,
खाल तुचा छवि खालडो नम (अर) वसनस (नाम) ॥—३६३

छोटी नस-४, मैल-२, गीजड़-१, लार-२ नाम

नाडि धमनि नाडी सिरा मैल (रु) कीट (मुणात),
आखजदूसीका (असो) सणिका लाळ (मुणात) ॥—३६४

मूत्र ४, मल-६ नाम

मेह मूत स्रव वस्तिमळ विड पुरीस विमटा,
मळ वरचस असुची ममळ (भणू) गूह भिसटा ॥—३६५

स्नान-३, चंदन-५ नाम

भूलण गोळ सनान (जप) मलयज चनण (मुणात),
चदन रोहणद्रुम (चवो) गधमार (गधगात) ॥—३६६

जायफल-२, कपूर-४, कस्तूरी १ नाम

जातीफळ (जिम) जायफळ सोमनाम घणमार,
करपूरक करपूर (कह) म्रगमद (कहं मुरार) ॥—३६७

केशर-५, पघडी-५ नाम

कसमीरज कैसर रकत कूकू कुकुम (धीर),
मुकुट पाघ मोळी (मुणू कह) करीट काटीर ॥—३६८

जेवर-४, गूथना-५ नाम

अलकार आभरण (अख) भूषण गहणूं (भाख),
गूथण ग्रथण गुफ (गिण) रचना सद्रभ (राख) ॥—३६९

भुजबंद ३, हाथ का गहना ५ नाम

भुजभूषण अगद (भणू कहो वळे) केयूर,
करभूषण कटक (रु) कडा वलय अवाप (वहूर) ॥—३७०

करधनी ४, नूपुर-६ नाम

कम्मरसूत कलाप (कह) रसण मेखळा (राख,
ओपण आपै) कटक (थल इण सिध) अगद (आख) ।—३७१

तुलाकोटि रमझोळ (तिम) नेवुर नूपुर (नांव),
मंजीरक मंजीर (मण) हंसक (फेर सुहाव) ॥—३७२

कपड़े नांम

चैल वसण अंवर सिचय (अवर) पूंगरण (आंण),
पट दुकूळ करपट कपड़ वसतर चीर (वखांण) ॥—३७३

अंचल-४, ओढ़नी-२ नांम

(चव) अंचळ (इम) छेहड़ो पलो पटोली (पेख),
प्रच्छादन प्रावरण (पढ़ दुरस अनाहत देख) ॥—३७४

स्त्री का अधोवस्त्र-४, लहंगा-३,
नाड़ा-नीवी-२ नांम

अंतरीय अधवसन (इम) निवसन उपसंख्यान,
चंडातक लहंगो चलण उच्चय नीवी (जान) ॥—३७५

अंगिया नांम

चोळ कंचुवै कांचळी आंगी अंगियां (आख),
कंचुक कांचू कंचुळी (आठ नांम ये भाख) ॥—३७६

साड़ी-६, घूंघट-४ नांम

साडी चोटी साटिका साड़ी साळू चीर,
घूंघट छेड़ो घूंघटो पल्लो (कहत पहीर) ॥—३७७

गठजोड़ा नांम

(चव) गठजोड़ो छेहड़ो वरजोड़ण वरजोड़,
अंचलवंध (सु जांण इम जंपै सायर जोड़) ॥—३७८

कमरवंद-२, गिलाफ-खोली-३, परदा-४ नांम

परिकर कमरदुकूळ (पढ़) कुथ परितोम कहाण,
प्रतिसीरा (अर) कांडपट जवनी अपटी (जांण) ॥—३७९

चंदरवा-४, रावटी-२, डेरा-खेमा-६ नांम

चंद्रोदय उच्चोल (चव) कदक वितान (कुहात,
कहो) केणिका पटकुटी दूसय थूळ (दिखात) ।—३८०

गूडर डेगे (ओर गिण वेवो) सायीवान,
(ज्याही फेरु) मिविर (जप) तवू वदव विनान ॥—३८१

तृण-शैया ३, सेज-शया ८ नाम

स्रसतर प्रसतर गाथरो थमिपू तलप (कुहाय),
सैन सेभ सय्या सयन सज्जा तलिम (सुहाय) ॥—३८२

पलग ७, सिरहाना २ नाम

पलग ढोलियो मच (पढ) माचा मचक (मान),
चोपायी परजक (चव) आसीमी उपधान ॥—३८३

कांच नाम

काच विमामी मकुर (कह) आतमदरस (इखान),
सारगक आदरस (अख) दरपण (वळे दिखान) ॥—३८४

कघा ३, आसन ३, लाख ६ नाम

कसमारजन ककतक (फर) प्रसाधन (पात),
आसण विसटर पीठ (अख) लाखा लाख (लखात) ।—३८५

खतमटण क्रमिजा (अखहु) पलक्सा जतु (पेख),
रगजननि राक्षा (रखो बळे) द्रुमामय (बख) ॥—३८६

अलता, महाउर ४, कज्जल ३ नाम

आलक्तक आलक्त (अख) जावक जाव (जपत),
दीपक्सुत अजन (दखो) काजळ (एम कहत) ॥—३८७

दीपक नाम

दीपक दीवो दीवलो दीप प्रदीप (दिखान,
मुण) काजळकर घरमणी काजळधुजा (कुहात) ॥—३८८

गद खिलौना नाम

(क्रीडा वाळक कारग) गेंदा गिरिगुड (गाय),
गिरिक गिरीयक गुड गिरि (सु) कदुक गेंद (कुहाय) ॥—३८९

पखा ३ खस आदि का पखा ४ नाम

वीजण व्यजणक वीभगा आलावरत (अखात)
पखा पखी (फर पढ) वावकरण (विख्यात) ॥—३९०

मंडलेश्वर राजा-२, चक्रवर्ती राजा-२, राजा पृथु-२ नांम

मद्धम मंडळाधीस (मुण) सारवभोम (सुहात),
चक्करवरती (फेर चव) प्रथू वेणसुत (पात) ॥—३६१

श्रीरामचंद्र नांम

कोसल्यानंदन (कहो) दासरथी (कुळदीत),
अधमउधारण (जग अखैं) रिघूरांम (री रीत) ॥—३६२

सीता नांम

सतवंती सिय धरसुता मिथलापतजा (माण,
जेम) जनकजा जानकी (इम) विदेहधी (आण) ॥—३६३

लक्ष्मण नांम

रामानुज सोमित्रि (जप सुभ) लछमण (सूजांण),
सेस सुमित्रासुतन (सुण वळे) अनन्त (वखांण) ॥—३६४

भरत-२, सत्रुघ्न-४ नांम

भरत केकयीसुत (भणूं) सत्रुघण (तिकण) सुजाव,
भरतअनुज सत्रुहण (प्रभण च्यार दासरथि चाव) ॥—३६५

वाली-वानर-२, सुग्रीव-२, हनुमान-२० नांम

इंदपूत वाली (अखो) सूरजसुत सुग्रीव,
पवननंद वजरंग (पढ) जपणरामपदजीव ।—३६६
हणूमान वंकट हणूं हड़ूमान हणवंत,
वजरअंग (अर) वांकड़ो महावीर हणमंत ।—३६७
ललितकीसवर लांगड़ो केसरिपूत कपीस,
वायनंद मारुत (वळे) अंजनीज जति-ईस ॥—३६८

रावण-१०, मेघनाद-५, कुंभकरण-३, विभीषण-१ नांम

दसकंधर दसमुख (दखो द्रढ़) दसकंध (दिखाय),
रिखिपूलस्तसुत असुरपत रावण राकसराय ।—३६६

लकापत (ग्रर) लकपत्त बीसभुजा (बाखाण),
मेघनाद घणनाद (मुण) ग्रद्रजीत (इम ग्राण) ।—४०
रावणि मदोदरिसुतन कूभो कूभ (कुहात),
कुभकरण (फेरू कहो बळे) बिभीषण (बात) ॥—४०

लका नाम

कुनणापुर लकापुरी लका लक (लखाय,
पुरट नाम ग्रागळपुरी नाम लक बण जाय) ॥—४०

भीष्म १२, युधिष्ठिर ११ नाम

गगकाज गागेय (गिण) गगिकाज गगेव,
सातनव (रु) सतनुसुतन कुरुईस कुरुदेव ।—४०
भीमम भीखम भीष्म (भण) द्रढव्रत्ती (दरसाय),
धरमपूत जेठळ (धरो) सत्यग्रही (सरसाय) ।—४०
(फर) जुजीठळ पडुसुत पडवेस पडीस,
पाडवेय पाडव (पढो) कुतीसुत कुरुईस ॥—४०

भीमसेन ६, ग्रर्जुन १७ नाम

भीमसेण भीमेण (भण) जठीपाथ (जणात),
कीचक बक, मारण* (कही) भीमू भीम (भणात) ।—४०
(बळे) ग्रकोदर वायसुत पारथ ग्ररजण पाथ,
गुडाकेम पथ फालगुण पारथ्थी पाराथ ।—४०
सेतवाहू जय बासवी व्रहनट बिजय (बखाण),
धनजै सुनर कपिधुजा (जेम) करीटी (जाण) ॥—४०

सहदेव २, नकुल २, द्रोपदी ३ नाम

सहदव सुमाद्रेय (मुण) नकुळ माद्रिसुत (नाम),
पाचाळी (ग्रर) द्रोपदी (वळ) पडुसुतवाम ॥—४०

कर्ण ५, विक्रम २ नाम

ग्रगराज ग्ररकज (ग्रखो) चपापुरप (चवात),
भाणसुतन राधेय (भण) बीकम बीक (वुलात) ॥—४१०

---

* कीचक, बक, मारण=कीचकमारण, बकमारण ।

सहस्रबाहु-४, परीक्षित-३ नांम

कारतवीरज सहंसकर हैहय अजरण (सुहात),
परीछत (सु) प्रीछत (पढ़ो) अभिमनपूत (अखात) ॥—४११

भोज-२, वलि-५ नांम

भोज उजैणीपत (प्रभण) इंदसेन वळ (आत),
वली विरोचनसुत (वळे) वैरोचन (विख्यात) ॥—४१२

राज्य के सात अंग नांम

स्वामी कामेती सुहृत देस दुर्ग वळ (दाख,
इण विध फेरूं) कोस (अख राज अंग ऐ राख) ॥—४१३

छत्र-२, चंवर-५ नांम

आतपवारण छत्र (अख) वाळव्यजरण (वाखांण),
रोमगुच्छ चामर चवंर (जिम) चम्मर (सू जांण) ॥—४१४

कामदार नांम

कामदार कामेति (कह) सचिव प्रधान (सुजांण),
मंत्री मूसायब (मुरण्) व्याप्रत (अर) दीवांण ॥—४१५

चोबदार नांम

द्वारपाळ दंडी (दखो धरो) वेतधर धार,
वैत्री उतसारक (वळे) प्रतीहार प्रतिहार ॥—४१६

रसोई का दरोगा-२, रसोईदार-६ नांम

सूद रसोयीईस (अख) आरालिक गुण (आत),
भुक्तकार ओदनिक (भण) सूप सूद (दरसात) ॥—४१७

अवरोध-६, शत्रू-२८, वैर-३,
मित्र-१२, मित्रता-४ नांम

अन्तेवर सुद्धान्त (इम) अवरोधन अवरोध,
भीतर अंतेउर (प्रभण) सत्रू सात्रव (सोध) ।—४१८
अरियण वैरी अरि अरी दोयण दुसमण (दाख),
पिसण सत्र सात्रव (पढ़ो) अरहर रिमहर (आख) ।—४१९

मत्रागा वेश्री दुमह अमुहर विपा अयार,
वैरीहर खळ (अर) विपख रिपु अरिंद रिम (धार)।—४२०
अमहन दोखी अहित (इम) वैर विदोख विरोध,
मीत मित्र मत्री सुमन सदय मनेही (सोध)।—४२१
मायी हेतू (जिम) सखा सज्जन नेही सैण,
साहारद सोहृद (सुग॰ सगन वळे) सुवैण॥—४२२

गुप्तदूत ५, दूत ८, पत्रदूत ३, दोहाई २ नाम

मत्रजाण अवसरप (भुण) चर हेरिक (इम) चार,
चर हलकारो दूत (चव) वहणमनेमा कार।—४२३
धावण खबरी चार (धर) पत्रपुगावण (पेख),
कासीदव कासीद (कह) आण दुहाई (एख)॥—४२४

पराक्रम ४, गुप्तमत्र-सलाह ४ नाम

परावरम प्राक्रम (प्रभण) पोरस विक्रम (पेख),
आळोचण आलोच (इम) रहसि मत्र (अवरेख)॥—४२५

रजपूती नाम

माटीपण छत्रीधरम रजवट रजपूती (ह),
खत्रीवाट (र) खत्रवट खत्रवाट (अम्मरणीह)॥—४२६

एकान्त ४, न्याय ४, मर्यादा २,
अपराध ६, राजकर ४ नाम

वेवन छन्न इकत रह न्याय कल्प नय न्याव,
मरजादा मरजाद (मुण) आगस हेलन (भाख)।—४२७
अपराधव अपराध (अग्व) विप्रिय मनु (विचार),
भागधेय बलि कर (प्रभग) हासल (द्रव्य विहार)॥—४२८

फौज १७, सेना का पड़ाव १ सेनापति ६ नाम

धैसाहर हेजम घड़ा कटक अनीक (कुहान),
तत्र चाक चतुरंगणी सेना सेन (सुहान)।—४२९
बळ दळ प्रतना वाहणी फौज दड चमू (फेर,
द्रण री पिति हू) सिविर (अग्व) कटकदैम वळ (कर)॥—४३०

फोजमुसायब सेनपत सेनानायक (सोय),
फोजदार चतुरंगपत हैजम, चमू, प* (होय) ।।—४३१

सेना का अगला भाग-४, सेना का पिछला भाग-१ नांम

(अणी चमू री आगली) हरवळ मोर हरोळ,
मोहर (जिणनूं फेर मुण चव पाछैं) चंदोळ ।।—४३२

सेना का दहना भाग-१, सेना का बायां भाग-१ नांम

(जंप बगल वळ जींवणी) रोसन (नांम रहात,
वळे फौज वांई बगल) चपक (सु नाव चवात) ।।—४३३

सेना की चढ़ाई-४, ध्वजा-पताका-५,
झंडा-३, पालकी-४ नांम

सज्जण उपरच्छण सजण सभणूं (अवर सुहात),
धुजा पताका (फेर) धुज केतन केत (कुहात) ।—४३४
(धुजाडंड) झंडा (धरो) नेजा (अर) नीसांण,
(पढ़) चोपालो पालकी सिविका पिन्नस (जांण) ।।—४३५

गाडा-३, गाडी-२, पहिया-५ नांम

अन गाडो (जिम) सकट (अख) सकटी गाडी (सार),
पहियो पैंड़ो चक्र (पढ़) अरि रथांग (उपचार) ।।—४३६

पहिया की नेमी-पूठी-३, धुरी-२,
पहिया की नाह-४, जुआ-२ नांम

धारा पूठी नेमि (धर) अणी धुराई (आत),
नाही नाहू नाभि ना जूड़ो जुगक (जणात) ।।—४३७

जुआ का निम्न भाग-२, यान मुख-२,
झूला-३, झूलने वाला-२ नांम

परजूड़ी प्रासंग (पढ़) धरसूंडो धुर (धार),
हींडो झूलो हींचणूं हींडण झूलणहार ।।—४३८

वाहन-सवारी-३, गाडीवान-२, सवार-४ नांम

धोरण वाहण यान (धर) यंत सागड़ी (आख),
अस्ववार असवार (इम) सादी तुरगि (समाख) ।।—४३९

---

* हैजम, चमू, प = हैजमप, चमूप ।

घोड़ा उठाना ३, घोड़े की अयाल २, तबेला १, जीन-४ नाम

असवोमखी ऊपडी (फेर) उपाडी (पेख),
याल केसवाळी (अगो) असमाला (अवरेख) ।—४४०
(फेर) तबेलो पायगा जीण छेवटी (जाण),
काठी (इण मवध वह पढ़ज्यो फेर) पलाण ॥—४४१

लगाम ४, घोड़ों का झुंड २, साईस २ नाम

लवच्छेपणी वाग (अव गावो) कुमा लगाम,
वारवान (अर) हेड (वह) पाडू सइस (प्रकाम) ॥—४४२

हाथी का सवार-१, हाथी का सेवक ३, अंकुश ३, साकल २ नाम

(हाथी रा असवार हू नरख) निमादी (नाम),
मावत आधोरण (मुण) कुंभीपाळक (काम) ।—४४३
आंक्स (अर) गजबाग (अव भावत) समतर (मान),
आई डगवडी (अखो थिर गज राखण थान) ॥—४४४

सुभट नाम

सोहड खीवर भड सुहड भट रणमल्ल भडाळ,
सुभड वीर मावत सुभट भीच (र) जोधा (भाळ) ॥—४४५

कवच १६, टोप ३ नाम

कोच अरद ककट कवच कुगळ कग (कुहात),
बरगोळ कडियाळ (बद) माठी दस (मुणात) ।—४४६
बरग जगर बगतर बरम (मुण) वरम्म सनाह,
सिरत्राण (अर) सीरमक (पढ उतवग) पनाह ॥—४४७

पेट का बक्तर २, करस्ताना २, लोहे की जाली ३ नाम

उदरत्राण नागोद (अख) वाहूल बाहूत्राण,
(जपा) जाळी जालिका (फर) रावणीप्राण ॥—४४८

शस्त्र ६ नाम

समतर असतर (इम) समत्र आवध आयुध (आण),
प्रहरण लोह हथ्यार (पढ जिम) हथियार (सु जाण) ॥—४४९

सिपाही-३, धनुर्धर-४ नांम

आवधवाळो आवधी (ओर) सिपाही (आख),
धानंकी धनुधर (धरो) धनुभ्रत धन्वी (भाख) ।।—४५०

धनुष नांम

धनु पिनाक कोडंड (धर) कोडंडीस कुवांण,
चाप सरासन बाण (चव जेम) सरासण (जांण) ।—४५१

(अर) अट्ठारटंकी (अखो) धेनु तुजीह (धरात),
पैनाक (रु) सारंग (पढ़) कोमंड धनख (कुहात) ।।—४५२

पणच-७, तीर-१४ नांम

मुरवी जीवा गुण (मुणू) बाणासण (आखांण),
पणच द्रुणा संजनि (पढ़ो) विसिख तीर सर (बांण) ।—४५३

पत्रवाह पत्री प्रदर तुक्को सायक (तेम),
कंकपत्र खग कांड (कह) जिम्हग आसुग (जेम) ।।—४५४

पंख-५, बाण का टांटवा-२, भाथा-२ नांम

पंख बाज (अर) पांखड़ा पांखा पक्ष (पढ़ाव,
तवो) पुंख (अर) करत्तरी सरधि निखंग (सुणाव) ।।—४५५

म्यान नांम

परीवार इमकोस (पढ़ धर) तरवारपिधान,
चंद्रहासघर (फेर चव मुणू) सस्त्रघर म्यान ।।—४५६

ढाल-५, ढाल पकड़ने का-२, छुरी-२ नांम

आडण खेटक आवरण ढाल चरम (पढ़ एम),
हथवासो संग्राह (मुण) जड़ळगधी छुरि (जेम) ।।—४५७

कटारी नांम

(आख) त्रिजड़ अधियामणी वाढ़ाळी वाढ़ाळ,
(जिम) सुजड़ी विजड़ी (जपो मुण) पट्टिस प्रतिमाळ ।—४५८

प्रतिमाळी जमडाढ़ (पढ़ जेम) जडाळी (जांण),
दुजड़ी दुवधारी (दखो एम) दुधारी (आण) ।—४५९

घोड़ा उठाना ३, घोड़े की अयाल २,
तबेला १, जीन ४ नाम

अवकोमखी ऊपडी (फेर) उपाडी (पेख),
यान वेसवाळी (अखो) अममाला (अवरेख)।—४४०
(फेर) तबेलो पायगा जीण छेवटी (जाण),
काठी (इण मवध कह पढज्यो फेर) पलाण॥—४४१

लगाम ४, घोड़ों का झुंड २, साईस २ नाम

लवच्छेपणी वाग (अख गावो) कुमा लगाम,
वारवान (अर) हेड (कह) पाड मदस (प्रकाम)॥—४४२

हाथी का सवार १, हाथी का सेवक ३,
अकुश ३, साकल २ नाम

(हाथी रा असवार हू नरख) निसादी (नाम),
मावत आधोरण (मुण) कुंभीपाळव (काम)।—४४३
आंकस (अर) गजवाग (अख मावत) ससतर (मान),
आंई डगवडी (अखो थिर गज रावण थान)॥—४४४

सुभट नाम

सोहड खोवर भड सुहड भट रणमल्ल भडाळ,
सुभड थीर मावत सुभट भीच (र) जोधा (भाळ)॥—४४५

कवच १६, टोप ३ नाम

कोच जरद ककट ववच कुगळ वग (कुहात),
वरगोळ वडियाळ (वद) माठी दस (मुणात)।—४४६
वरग जगर बगतर वरम (मुण) वरम्म सनाह,
सिरत्राण (अर) सीरसक (पढ उतवग) पनाह॥—४४७

पेट का बचाव २, दस्ताना २, लोहे की जाली ३ नाम

उदरत्राण नागोद (अख) वाहुल वाहुत्राण,
(जपा) जाळी जालिका (फेर) रालणीप्राण॥—४४८

शस्त्र ६ नाम

समतर असनर (इम) ससत्र आवध आयुध (आण),
प्रहरण लोह हथ्यार (पढ जिम) हथियार (सु जाण)॥—४४९

सिपाही-३, धनुर्धर-४ नांम

आवधवाळो आवधी (ओर) सिपाही (आख),
धानंकी धनुधर (धरो) धनुभ्रत धन्वी (भाख) ॥—४५०

धनुष नांम

धनु पिनाक कोदंड (वर) कोडंडीस कुवांण,
चाप सरासन वाण (चव जेम) सरासण (जांण) ।—४५१
(अर) अढ़ारटंकी (अखो) धेनु तुजीह (धरात),
पैंनाक (रु) सारंग (पढ़) कोमंड धनख (कुहात) ॥—४५२

पणच-७, तीर-१४ नांम

मुरवी जीवा गुण (मुणूं) वाणासण (वाखांण),
पणच द्रुणा संजनि (पढ़ो) चिसिख तीर सर (वांण) ।—४५३
पत्रवाह पत्री प्रदर तुक्को सायक (तेम),
कंकपत्र खग कांड (कह) जिम्हग आसुग (जेम) ॥—४५४

पंख-५, वाण का टांटवा-२, भाथा-२ नांम

पंख वाज (अर) पांखड़ा पांखा पक्ष (पढ़ाव,
तवो) पुंख (अर) करतरी सरधि निखंग (सुणाव) ॥—४५५

म्यान नांम

परीवार इमकोस (पढ़ धर) तरवारपिधान,
चंद्रहासघर (फेर चव मुणूं) सस्त्रघर म्यान ॥—४५६

ढाल-५, ढाल पकड़ने का-२, छुरी-२ नांम

आडण खेटक आवरण ढाल चरम (पढ़ एम),
हथवासो संग्राह (मुण) जड़ळगधी छुरि (जेम) ॥—४५७

कटारी नांम

(आख) त्रिजड़ अघियामणी त्राढ़ाळी वाढ़ाळ,
(जिम) सुजड़ी विजड़ी (जपो मुण) पट्टिस प्रतिमाळ ।—४५८
प्रतिमाळी जमडाढ़ (पढ़ जेम) जडाळी (जांण),
दुजड़ी दुवधारी (दखो एम) दुधारी (आण) ।—४५९

भोगळियाळी (फेर भरण) भोगळियाळ (भरणेह),
धाराळी कट्टार (धर) अणियाळी (आखेह) ॥—४६०

भाला नाम

कुंत त्रिभागो मेल (कह) नेजो (अर) नेजाळ,
सावळ गाजो सागडो छड़वाळो छडियाळ।—४६१
वरछो बाम दुधार (वद चव) भालो चोधार,
प्राम छडाळ (रु) नन (पद) दुवधारो दोधार ॥—४६२

बरछी ४, चक्र-३, त्रिशूल २, वज्र-९ नाम

वरछी मरनी साग (वद) मावळ वामू (धार),
चक्र चक्कर चक्कर (चवो) मूल त्रिमीम (सुहार)।—४६३
वज्र इदसमनर वजर अद्रमसत्र (क आख),
पवी सत्रघण भिदुर (पढ) असनी अशनि (इमाख)॥—४६४

तोप ४, बदूक ४, युद्ध ३६ नाम

सोरभखी नाळी (सुण्) आगजत्र (इम आख),
नोप तुपक बदूक (निम) सोरभखी (जग साख)।—४६५
अगनजत्र (ओरू अखो) मारण आहव (आख),
कळहण भारत जुध कळह रोळो कजियो (राख)।—४६६
सामरात राडो समर रण समहर आराण,
(जम) धकचाळा धमगजर प्रहरण रिण पीठाण।—४६७
आहर द्रोमज वध (इम भण) दमगळ भारात,
लडवो आहुड जग लड हूवक आजि (कुहात)।—४६८
सगर विग्रह कळि (सुण्) सपराय सग्राम,
आवारीठ (र) जुद्ध (इम) भगडो रीठ (जुधाम)॥—४६९

डाकू नाम

धाडी डाकू धाडवी (पढो) धाटि परपात,
भोरायन अवस्द (जप) धाडायत्त (धरात)॥—४७०

डाका ३, रात का डाका ३, युद्ध में से भागना ५ नाम

धाडो डाक (र) धाड (धर रातमाहि) रत्याव,
रातावाह सुपतिव (रखो) समद्राव सद्राव।—४७१

मूर्छा-२, हारना-३, जीतना-३ नांम

द्राव पलायन द्रव (दखो) मोह मूरछा (मांन),
हार पराजै अजय (हव) जै यज विजय (सु जान) ॥—४७२

वदला लेना-४, दगा-छल-३, कारागृह-२ नांम

वैरवहोड़ण वैरसुध आंटो आंटल (आत),
चूक दगो (प्रच्छन्न) छळ कारा चार (कुहात) ॥—४७३

खैंचना-४, घुसना-८ नांम

तांण खैंच अैंचण तमक परठै पैस (पढ़ात),
घसै पैठ पैसण धसण उळै वड़ै (इम आत) ॥—४७४

दवाना-३, वरावर-६, वरावर वाला-१३,
छोड़ना-६, औसान-४ नांम

भींचण दावै भींच (भण) सरभर सरवर (सोहि),
ईढ़ वरोवर मींढ़ (अख मुण) समवड सम (जोहि) ।—४७५

(वळै) तड़ोवड़ (एम वद ओर) समोवड़ (आख),
समवड़िया समवड़ समी (जाड़ी) जोड़ा (भाख) ।—४७६

समोवड्या (अर) सारसा वरोवर्या (वाखांण),
सारीसा सरखा (सुण जेम) जोड़रा (जांण) ॥—४७७

सारीखा (अर) सारखा तड़ोवड्या (कव तेम),
मोखण पहड़ै मोख (मुण) छोडण छूटो जेम ।—४७८

छूट वछूटो छोडियो खूटो (फेर वखांण),
उरजस वख ओसांण (इम वोल वळै) अवसांण ॥—४७९

कैदी-५, कैद करना-६ नांम

प्रग्रह उपग्रह वंद्य ग्रह ग्रहक (सु पांच गणाव),
कैद जेर रोकण रुकत वंध अटक (वरणाव) ॥—४८०

हठ-७, शक्ति-३, स्थिर-६, यत्न-३, मानना-२ नांम

आंट टेक अड़वी असण हट हठ प्रसभ (सुहात),
समरथ पूछ (रु) सामरथ अडग रिधू थिर (आत) ।—४८१

(चव) अडोल नहचळ अचळ ध्रुव अवचळ ध्रू (धार),
जतन सुरच्छा जावतो समजण मांनण (सार) ॥—४८२

तय्यार-३, ललकारना-६ नाम

भीड तयार (रु) सम्भ (प्रभरण) वातळाव बतळाव,
(एम) हक्काल वकार (ग्रख जप) छेडै (रु) खजाव ।।—४८३

जोड़ना-३, प्रमाण-२, मिलना-३, ग्राना-जाना-१ नाम

जोडरण साधरण जोड (जप पढ) प्रमाण परमाण,
मिळण (ग्रोर) भेट मिळै (बोल विहारण) विहारण ।।—४८४

दोनों ग्रोर-३, जलना-४, मुरदे को ग्राग में
फेरने की लकड़ी-१ नाम

(वदो ग्रावरत) सावरत दोयराह दहु राह,
वळण जळण वळबो वळै चीथरण (चाळ वियाह) ।।—४८५

पकड़ना-पकड़ाना नाम

भालै भेलै भालिया ढाबै गहै ढबाव,
(लखो) भलाया भेलिया साहै (फेर) सहाव ।।—४८६

शस्त्र चलाना नाम

पछटी वाही पाछटी जडकी (मारब) जाड,
एमजडी (ग्रर) ग्राछटी धीवी बही (सुघाड) ।।—४८७

साथ-३, समूह-१० नाम

साथै साथ (रु) लार (सुरण) सहनि (वळै) समूह,
प्रकर थाट गरण थोक (पढ) जूथ भूल व्रज जूह ।।—४८८

उलटना ४, खड़ा रहना-३, चलना-दौड़ना १४ नाम

मालुळिया (ग्रर) सालुळै उलटे उल्टरण (ग्राख),
ऊभो ठाढो (डम) खडो भटकै भाजरण (भाख) ।—४८६
चालै हालै गमरण (चव) हीडै वहै विहार,
चालरण न्हामण खडरण (चव सुरण) ग्रट खडै सिधार ।।—४६०

पागल नाम

वैडा गहला बावळा काला ममत (कुहात),
चळचत बावळ विकळचत गहलो उनमत (गात) ।।—४६१

पछताना-२, संपूर्ण-७ नांम

पछतावण पछतांव (पढ़ मुणूं) सरव तम्माम,
सगळो संपूरण सकळ पूरण सारो (पाम) ॥—४६२

चहुं ओर नांम

चोगड़दां चोफेर (चव) चोतरफां चहुंकोर,
चहूंकूंट चोमेर चव चहुंकांनी चहुंओर ॥—४६३

उमर-५, अच्छा-१३ नांम

आवरदा आयुस (अखो) आयू ऊमर आव,
आछ्यो उत्तम ऊमदा सुंदर सैर (सुहाव)।—४६४
वर तोफा श्रेसट (वळे) रूड़ो रूपाळो (ह),
ठाळो सखरो पूठरो (आखो इम) आछो (ह) ॥—४६५

अप्सरा नांम

अच्छर अपच्छर अपछरा अछरा अछर (अखात),
पुरी सुरगवेसां (प्रभण) वारंग हूर (विख्यात) ॥—४६६

हिंदू नांम

वेदक आरज देव (अख) हींदू हिंद (सुणात,
सुकवी हींदू रा सरव पंचक नांम पुणात) ॥—४६७

ब्राह्मण-१३, जितेंद्रिय-४ नांम

मुखसंभव जोसी मिसर दुज भूदेव दुजात,
(पढ़ो) गोरजी पांड़ियो वाडव विप्र (वुलात)।—४६८
वेदगरभ वांमण (वळे अवर) वरामण (आंण),
सांत समन (अर) श्रांत (सुण) जितइंद्रिय (जिम जांण) ॥—४६९

शुद्ध आचरण-४, जनेऊ लेना-३ नांम

अवदान (रु) आचरण (अख) करमक सुद्ध (कुहात),
उपनाय (र) उपनय (अखो) वटूकरण (वुलवात) ॥—५००

जटा-३, यज्ञ-११ नांम

जटा सटा जपता (जपो) जगन सत्र सव जाग,
तोम सपततंतू क्रतू यग्य मन्यु मख याग ॥—५०१

समिध ईंधन ५, भस्म ५ नाम

समित मेध एधस (अग्गो) इधण तरपण (आख),
भूती धानी राख (मण) भसम छार (इम भाख) ।।—५०२

परशुराम नाम

फरसधरण भ्रगुपत फरस दुजराजा दुजराम,
फरसराम दुजराज (पढ) राम (रु) परसूराम ।।—५०३

नारद नाम

रिखीराज नारद रिखी देवरिसी (दरसात),
कलिकारक पिसुनी (कहो) सनभ्रतसुन (सरसात) ।।—५०४

विश्वामित्र नाम

गाधिपूत कौसक (गिणू) विसवामत्र (वुलात,
कहो) त्रिसंकूजगनकर (तिम) गाधेय (तुलात) ।।—५०५

वेदव्यास नाम

वेदव्यास माठर (वदो) पारासरय (पढात),
व्यास बादरायण (वळे) जोजनगधाजात ।।—५०६

सत्यवती ३, वाल्मीकि ४ नाम

सत्तवती (अर) वासवी जोजनगधा (जाण),
वालमीक वलमीक (बद) ग्रादकवी कवि (आण) ।।—५०७

वसिष्ठ ३, वसिष्ठ की पत्नी २ नाम

ग्ररधतीस वसिष्ट (अख) ब्रह्मापूत (वखाण),
ग्रखमाळा (र) ग्ररधती (जिण री महला जाण) ।।—५०८

व्रत ४, उपवास २, आचार ३ नाम

वरत नेम (ग्रर) नियम व्रत उपवसन (रु) उपवास,
चरण चरित ग्राचार (चव तीन नाम कह तास) ।।—५०९

जनेऊ नाम

जग्यसूत उपवीत (जप वळे जगन) उपवीत,
ब्रह्मसूत (फेरू वदो राख) पवित्र (सुरीत) ।।—५१०

क्षत्रिय नांम

छत्री छत्रिय छत्र (चव) खत्रिय खत्री (आख),
आचप्रभव रजपूत (अख) राजपूत (इम राख) ॥—५११

वैश्य-१३, वाणिज्य-४ नांम

विस वाण्यूं (अर) वाणियो वणक कराड़ वकाल,
आरज साहूकार (अख) ऊरुज साह (उताल)।—५१२

सेठ महाजन भारसह (पढ़ इणरो) वोपार,
वाणिज (ज्यूंही) वणज (वद) सांचभूंटकर (सार) ॥—५१३

मोल-३, मूलधन-४, व्याज का धन-३ नांम

मोल अरघ मूलय (मुणूं) परिपण पड़पग (पेख,
दाखो) मूळ (रमूळ) द्रव लाभ कळा फळ (लेख) ॥—५१४

वेचना-३, एक-६, दो-६, तीन-७, चार-७ नांम

विक्रय विपणक वेचबो हेकण एकण (होय),
एक हेक इक पहल (अल) दो दुव वे जुग दोय।—५१५

उभै तीन त्रण त्रय (अखो) त्रि मुर त्रहू गुण (तेम),
च्यार चतुर चवु चत्र चव (जप) च्रो चारूं (जेम) ॥—५१६

पांच-४, छः-४, सात-३ नांम

पांच पंच सर तत्व (पढ़) तीनदूण खट (तात),
छै रस (इम फेरूं चवो) सपत सत्त (जिम) सात ॥—५१७

आठ-४, नो-१० नांम

आठ वसू चउदूण अठ नाडी नव निधि नोय,
नो ग्रह अंक (सु) नाग (अख जेम) खंड गो (जोय) ॥—५१८

जहाज-५, नाव-७ नांम

पोत जिहाज वहित्र (पढ़) महानाव महनाव,
तरणी तरि वेड़ा तरी नोका तूंगी नाव ॥—५१९

डोंगी-४, भारवाही नाव-१ नांम

वेड़ो (अनै) वहित्र (वद) भेळो डूंडो (भाख,
काठ नीरवहणी सुकव) द्रोणी (जिणनं दाख)।—५२०

डांड २, घडनाव २, नाव की उतराई १ नाम

(वदो) मपणी मेवणी कोल तरड (कुहात,
उतरायी रा आयरो) आतर (नाम सुआत) ॥—५२१

व्याज ३, ऋण ३ भरणां २, ऋणी २ नाम

वृद्धि वतातर व्याज (वद) रण रिण (अर) उद्धार,
आपमिनय भरणू (असा) धुरियो ग्राहक (धार) ॥—५२२

बोहरा १, जामिन २, साम्री ३ रहन-बधक २ नाम

(उत्तम) रणदायक (अम्मा) प्रतिभू जामन (पेख),
साखी थयक सायदी बधक धरणू (वख) ॥—५२३

मासा १, कष (तोल) २ नाम

(पचम गुजा रो प्रगट) मासा (मान गण'त,
सोळह मासा रो सदा) करस (र) अग्र (कुहात) ॥—५२४

पल १, अग्र १, बिसत १ नाम

(करम च्यार) पळ (मान कह) सुबरण (मान सुणात,
हिव पळ मान सु हेमरो मनकुर) बिसत (सुणात) ॥—५२५

तुला १, भार २ नाम

(पळ सत फर प्रमाण रो) तुळा (नाम तोलात,
तुळा बीम रा तोल रो) भार मलाट (भणात) ॥—५२६

आचित १, हाथ १ नाम

(रिघू अवे दस भार रो) आचित (नाम उचार,
आगळ च्यार रु बीम अब वेख) हसत (बिमतार) ॥—५२७

दड १, कोस १ नाम

(मुगू च्यार कर मानरो) दड (नाम दरसात,
दाय हजारक दड जो, सको) कोस (सुर सात) ॥—५२८

दो कोस २, योजन १ नाम

गव्यूती गोरुत (गिणू मान दुकोस प्रमाण,
च्यार कोस चा मान रो) जोजन (नाम सजाण) ॥—५२९

गायों का स्वामी-२, ग्वाल-७ नांम

गोमान (रु) गोमी (कहो) गोदुह गोप गुवाळ,
(अख) अहीर आभीर (इम) गोपाळक गोपाळ ।।—५३०

किसान नांम

(खेत) जीव खेती हळी करसो करसक (जांण),
करसुक खेतीवळ (कहो) कडुववाळ करसांण ।।—५३१

हल-३, चऊ-१, हाल-१ नांम

लांगल चासविदार हळ कुटक (निरीस कुहात),
ईसा (हलरी हाल इम सीता पंथ सुहात) ।।—५३२

फाल-कुश्या-४, दरांती-२, मूंठ-बैंटा-४ नांम

फाल कुसिक (अर) कृसिक फळ दात्र दांतळी (देख),
मुदै जिकारी मूठ रो) वैंसो वंटक (वेख) ।।—५३३

खानत्र-खणीत्य-२, कुदाली-२, बैल हांकने का-३, जोत-२ नांम

अवदारणक खनित्र (अख) कूदारण कुद्दाळ,
प्रवयण तोत्र प्रतोद (पढ़) जोता ऽऽवंध (सुजाळ) ।।—५३४

मोगरी-३, मेध्य-ढेले फोड़ने का-४ नांम

मेधि मेढ़ मेही (मुणूं) भेदक (डगळ भणात),
चावर कोटिस (फेर चव जेम) मे दड़ो (जात) ।।—५३५

शूद्र नांम

अंतवरण सूद्रक (अखो) व्रसल (क) पद्य (बुलात),
सूदर (फेरूं) पज्ज (सुण) जघन ज ओयण (जात) ।।—५३६

कारीगर-४, कारीगरी-३, माली-४, मालिन-१ नांम

कारीगर कारी (कहो) सिलपी कारु (सुणाय),
सिलप कळा विग्यान (सुण) माळाकार (मुणाय) ।—५३७
फूलजीव (ओरूं प्रभण) माळी माळिक (मांण,
पुम्प चूंट लावै प्रमद) पुसपलावि (परमांण) ।।—५३८

दरजी-रफूगर नांम

तूनवाय सवचक (तथा) सोचक सूयीधार,
महीदोत गजधर (मुणूं) दरजी कपड़विदार ।।—५३९

सुई ३, कँची ५ नाम

सूची सूई सीवणी कानर कत्तरणी (इ,
कहो) क्रपाणी कलपनी (अवर) करतरी (ईह) ।।—५४०

कुंभार नाम

कोलाळी (रु) कुलाल (कह) कुंभकार घटकार,
चक्करजीवत (फेर चव) पग्जापत कुंभार ।।—५४१

नाई हज्जाम नाम

नापित नाई नेवगी मूंडवाळ मूंडाळ,
केसकाट नेगी (कहो वळे) बणावणवाळ ।।—५४२

हजामत ६, निहानी २ नाम

परिवापण खिजमत वपन भद्राकरण (भणात,
तिम) मुंडण (अर) कातर्या नखहरणी नखघात ।।—५४३

बढई नाम

रथकरता खाती (रखा) काठकाट रथकार,
(घर) वाढी (अर) बरधकी थपनी तट सूथार ।।—५४४

आरा ५, वसूला ३, टाकी १ नाम

करपत्रक वहरार (कह) करवत क्रकच करोत,
वासी तच्छणि व्रच्छभिन पत्थरफाडी (होत) ।।—५४५

हलवाई ३, तेली ४ नाम

कंदोई खाण्क्करण हलवायी (जिम होय),
धूसर तेली चोघरी (जिम ही) घाची (जोय) ।।—५४६

सकलीगर ६, सान २, लोहार ३ नाम

असिघावण (आखो अवै) आवधमाजण (आण),
माणजीव भरमासतक सगलीगर (मू जाण) ।—५४७
असिघावक (ओरू अखा) माण निकस (खरमाण),
लोहकार लोहार (लख) वेदार्णी (बाखाण) ।।—५४८

अहरन-२, हतोड़ा-२, धोंकनी-३, वर्मा-२ नांम

(चव) अहरण (अर) भाचरो हत्तोड़ो घण (होय),
धवणी धूंण (र) धूंकणी सार वेधणी (सोय) ॥—५४६

सोनार नांम

नाड़ीधमण सुनार (कह) सोनी सोव्रणकार,
मुष्टिक (और) कलाद (मुण सुण) घड़ियो सोनार ॥—५५०

मनिहार-४, चितेरा-३ नांम

लखारो मणियार (लख) मणिकारक मणिहार,
रंगजीव चतरामकर (हमकै) चतरणहार ॥—५५१

धोबी-४, रंगरेज-३ नांम

गजी रजक धोबी (गिणूं) धावक (फेर वरात,
लख) नरगोजक लीलगर रंगरेज (दरसात) ॥—५५२

पींजनी-४, जुलाहा-३ नांम

पीनण पींजण पींजणी विहननतूल (वुलात),
जुल्लावो वणकर (जपो) तंतूवाय (तुलात) ॥—५५३

कलार नांम

मदजीवण धुज सेठ (मुण पान) कराड़ (पढ़ात),
आसवकरण कलाळ (इम) दारूकार (दढ़ात) ॥—५५४

मद्य नांम

दारू मद कादंबरी मदिरा इरा (मुणात),
आसो मधु अैराक (इम) समदरसुतन (सुणात) ।—५५५
हारहूर (अर) हलिप्रिया सुरा वारुणी (सोय),
आसव महुवावाळ (अख) हाला सुंडा (होय) ॥—५५६

खारभंजना-गजक नांम

(खार) भंजणू चखण (अख वळे) नुकळ (वाखांण),
मदपअमण अवंदस (मुण जिम) उपदंस (सु जांण) ॥—५५७

आसव-३, प्याला-चुसकी-५ नांम

आसव अभिसव आसुती चसक (रु) सरक (चवात),
प्यालो चुसकी (फेर पढ़) दारूपात्र (दिखात) ॥—५५८

अफीम नाम

नागझाग वसनागरा काळी अमल (कुहात),
नागफेण पामत (नरख) आफू कैंफ (अग्वात) ।—५५६
(आख) अफीम अफीण (इम) काळागर (कह तात,
वळे) मावळो दाणवत काळो (फेर कुहात) ॥—५६०

भंग नाम

सवजी मातगी (मुण्) विजया (अर) बूटी (ह),
भाग बीजभव (तिम प्रभण लखो फेर) लीली (ह) ॥—५६१

मल्लाह धीवर ३, ओद ३, मछली पकड़ने का कांटा १ नाम

धीवर खवट कीर (धर) वडिम ओद (वाखाण),
मच्छवधणी (फेर मुण जेम) कुवेणी (जाण) ॥—५६२

मदारी ३, बाजीगरी २, इन्द्रजाल ४, कौतुक-खेल ४ नाम

वादगिर जाळी (वळे) मायाकार (मुणाय),
माया सावरि (वरम तम माही और मुणाय) ।—५६३
इन्द्रजाळ (अर) जाळ (अख) कुसृती कुहक (कुहात),
कोतूहळ कोतुक कुतुक (और) कुतूहळ (आन) ॥—५६४

आहेडी शिकारी ६, शिकार ५ नाम

आहटी थोरी (अखो) लुबधक लुबध (लखान,
वळे) पारधी मावळा नायक व्याध (मुणात) ।—५६५
मृगवधजीवण (फेर मुण मृग) आखेट सिकार,
आछोटण अगया (अखो) पापरध्ध (अणपार) ॥—५६६

भालू-बनरक्षक नाम

भालू टूकयो भाट्री (कहज्यो फेर) वगोन,
(मुकवी भाळू रा सरव त्रिगद नाम ए बोन) ॥—५६७

जालवाला ३, जाल ४ नाम

जाळवार जाळिक (जपो ओर) वागरयो (एम),
जाळी जाळ (र) जाळिका (वळे) वागुरा (जेम) ॥—५६८

वागुरा-२, फंदा-२, मृगपाश-४ नांम

अवट (अनैं) अवपात (अख) पासी फंद (पढ़ात,
वेखो) रज्जू गुण वटी (औंर) वटारक (आत) ॥—५६९

कसाई नांम

कौट्टिक खटिक खटीक (कह एम) कसायी (आत),
कौटिक सौनिक मांसकर वैतंसिक (विख्यात) ॥—५७०

चमार-मोची नांम

चरमकार भांभी (चवो) मोची (और) चमार,
पांवरच्छणीकरण (पद कहो) मोचड़ीकार ॥—५७१

जूता नांम

पांवरच्छणी पादुका जूती जरवो (जांण,
चवो) उपानत मोचड़ी प्राणहिता (पहनांण) ॥—५७२

मुसलमान नांम

रोद रवद मदड़ो तुरक मीर मेछ कलमांण,
मुगल असुर बीबा मियां रोजायत (गुर) खांण।—५७३
कलम जवन तरणमीट (कह) खुरासांण (अर) खांन,
चगथा आसुर (फेर चव मानह) मूसलमांन ॥—५७४

फिरंगी नांम

अंगरेज अंग्रेज (अख) गोरा मेछ गुरंड,
भूरा टोपीवाळ (भण) वदसाहब (वळवंड) ॥—५७५

बादशाह नांम

पातसाह पतसाह (पढ़) साह दलेस (मुणात,
फेर) ढेलड़ीपत (पुण एम) दलेसुर (आत) ॥—५७६

अंत्यज नांम

विवरण प्राकृत नीच (वद) पामर इतर (पढ़ात,
परथक) जन (फेरूं पढ़ो) वरवर (एम वुलात) ॥—५७७

भंगी नांम

चूड़ो महतर चूहड़ो भंगी सुपच (भणेह,
धरो) जनंगम धांणको वुकस निसाद (वणेह)।—५७८

खाकरेज गडसूरध्वज अंतेवासी (आण),
पुक्कस (इम) चांडाळ (कह) प्लव चडाळ (पिछाण) ॥—५७६

म्लेच्छ-भेद नाम

निसठ्या सबरा नाहला (ग्रोर) पुलिंदा (ग्राण),
भिल्ला माला अरभटा (जात मेंछ सब जाण) ॥—५८०

•

पृथ्वीकाय प्रारंभ

दोहा

दुनिय खंड माहे दुरस भू रा नाम भणह ।
इणयी भूमी कायिका, पहली ग्रठं पढह ॥

उपजाऊ भूमि १, ऊसर २, टीला २ नाम

(सरव धान होवें सरस जिका) उरवरा (जाण),
इरिण (वळे) ऊसर (ग्रखो एम) थळी थळ (ग्राण) ॥—१

निर्जल देश २, बिना जुती भूमि २, मिट्टी ५ नाम

निरजळ जंगळ (नाम धर) बीडा खिल (वाखाण),
माटी मट्टी ग्रत्तिका गार (र) लछमी (गाण) ॥—२

नमक की खान १, नमक ३, सधा ३,
सचर २, धूल ६ नाम

(नरख लवण री खान रो) रमा (नाम दरसात),
लवण लूण मीठो (लखो) सिंधूभव (सरसात) ।—४
सिंधुदेसभव सीनसिव सचल (सूळ) नमात,
धूळ गरद रेणू (धरा) रत खह रज (ग्रात) ॥—५

देश नाम

देस मुल्क जनपद (दखा) मंडळ खंड (मुणात),
विसयक उपवरतन (वळे सातहि नाम सुणात) ॥—६

आर्यावर्त नांम

(विंभ हिमाजळ वीच मैं) आरजवरत (अखात,
सो) अचारवेदी (सुणूं) धरमधरा (सुधरात) ॥—७

अन्तर्वेद-१, कुरुक्षेत्र-२ नांम

(जमुना गंगा विच जमी) अन्तरवेदी (आख),
धरमखेत कुरुखेत (धर दुवदस जोजन दाख) ॥—८

कामरूप-२, बंगाल-१, मालवा-१, मारवाड़-३,
साल्व-१, अंग देश-१ नांम

कामरूप (अर) कांगरू वंग माळवो (वेख),
मारवाड़ मुरधर मरू साल्व अंग (संपेख) ॥—९

त्रिगर्त-१, काश्मीर-१, मेवाड़-२, केरल-१,
मगध-२, ढूंडाड़-३ नांम

जालंधर कसमीर (जप) मेदपाट मेवाड़,
केरल कीकट मगध (कह) ढुंडदेस ढूंढ़ाड़ ॥—१०

गांव-३, सीमा-९, खलियान-३, ढेला-४, चूर्ण-२ नांम

ग्राम गांव निवसथ (गिणूं) अंत सीम अवसांण,
सीमां मरजादा (सुणूं जिम) सीवाड़ो (जांण) ।—११
कार हद्द अवधी (कहो) खळो (खळ) धान खळा (ह),
लोठ ढगळ (इम) दलि डगळ चूरण खोद (चवाह) ॥—१२

वामला नांम

वामलूर (अर) वामलो वम्रीकूट (वुलात,
कीड़ापरवत नाकु (कह तिम) वलमीक (तुलात) ॥—१३

नगर नांम

नयर नैर नगरी नगर पट्टण पुर (प्रकटाय),
पुटभेदन पत्तन पुरी सहर नग्र (दरसाय) ॥—१४

गढ़-२, किला-६, कोट-४, वुर्ज-२, गली-४ नांम

गढ़ (अर) कोट दुरंग द्रुग (भणूं) दुरग भुरजाळ,
कल्लो (जिम) आसेर (कह सुणूं) वरण अरसाळ ॥—१५

कोट (ग्रनें) प्राकार (वह) सोम ग्रटाळ (ग्रगात),
परतोली सिमिया (पढो) गळी प्रनाली (गात) ।।—१६

गया २, काशी ४, ग्रयोध्या ४, मिथिलापुरी ३, पटना १ नांम

(पढो) गया गयनूपुरी काशी कासि (कुहात),
वाणारसि सिवपुर (वळे) ग्रवध कोसला (ग्रात ।—१७
इम) साकेत ग्रजोधिया मिथिलापुरी (सुणात,
पढो) विदेहा जनकपुर पाटलिपुत्र (पुणात) ।।—१८

द्वारका २, मथुरा २, उज्जैन ३ नांम

द्वारवती (र) दुवारका मथरा मथुरा (माण),
उज्जयणी (र) उजीण (ग्रख जेम) ग्रवती (जाण) ।।—१९

कन्नोज २, दिल्ली-७, नरवर २, चंपापुरी २, चंदेरी २ नांम

कानकुबज कन्याकुबज पाडवनगर (पढ़ात),
ढल्ली दल्ली ढेलडी गजपुर (वळे गिणात) ।—२०
(गिण) हतणापुर (र) वदगढ़ नळपुर निसधा (नाम),
करणपुरी चंपा (कहा) त्रिपुर चंदेरी (ताम) ।।—२१

मार्ग नांम

पदवी मारग इकपदी मग गैलो पंथि माग,
पद्धति सरणी पथ पय अयनर वाट (प्रयाग) ।।—२२

सुमार्ग २, अमार्ग २, कुमार्ग ३, सुनामाग २ नांम

घाटोमारग पथ (मग) ऊवट अपथ (अगाड़),
कुपथ कापथ विपथ (कह अग) प्रानर उजाड़ ।।—२३

चौगहा १, राजमार्ग-१ नांम

चोहटो (पर) चोहटो (वळे) चावटो (चौत),
राजपथ मगराग (पट जिम) पटापथ (पीन) ।।—२४

बाजार-३, हाटी ३, नगर-७ नांम

बगरज्ञम बाजार (कर) विपणी (बळे दुकान),
पट (र) हाटी आपणद (गुण) नगर नगरीन ।—२५

(पढ़) करवीरक पितरवन (वद) खेत्रां (वरणाव),
प्रेतगेह (फेरूं प्रभण जेम) मसांण (जणाव) ॥—२६

घर-२६, राजघर-३, कुटी-२, घास की झोंपड़ी-१ नांम

आलय निलय अगार (अख) थानक मंदर थांन,
गेह अोक आगार ग्रह कुट ऐवान मकान।—२७
सदन भूंपड़ो घर नदम विसरण खोळड़ो धांम,
भोण निकेतन कुळ भवन वसति निवास (सुधांम)।—२८
जाग ऐण आथांण (जप) सोध महल प्रासाद,
उटज परणसाळा (अखो) कायमान (त्रणकाद) ॥—२९

शयन-गृह-२, मंडप-२, सूतिका गृह-२ नांम

पड़वो सोवणघर (पढ़ो) मंडप जनघर (मांण),
सूतकगेह अरिष्ट (जिम जापा रो घर जांण) ॥—३०

रसोई का घर-४, भंडार-१० नांम

सूदकसाळा रसवती (गम) महानस (आत),
पाकथांन (फेरूं पढ़ो) भांडागार (भणात)।—३१
(वेख) खजानूं द्रव्यघर कोस (वळे) कोठार,
रोकट मोहर रूप घर (मुण) भंडार (अमार) ॥—३२

हाट-५, चबूतरी-४ नांम

अट्ट हट्ट आपण (अखो) विपणी हाट (वखांण),
वेदी वेदि वितर्दिका (जेम) चूंतरी (जांण) ॥—३३

आंगन-३, दर्वाजा-४ नांम

अंगण अंगन आंगणूं तोरण पोळ (तुलात),
दरवाजो (ओरूं दखो वळे) दुवार (वुलात) ॥—३४

द्वार-५, भुजागल-४ नांम

वलज दुवारो वारणूं द्वार वार (दरसात),
आगळ परिघ (र) अरगळा भागळ (फेर भणात) ॥—३५

किवाड़ नांम

अरर पट्ट फाटक (अखो कहो) कुवाट कमाड़,
अररि कपाट कवाड़ (इम कहो) कुंवाड़ कंवाड़ ॥—३६

देहली ५, झोंपड़ी कच्चा घर २, छत १ नाम

देहळ डहळ देहळी उंबर उंबुर (ग्रात),
वलभी गोपानसि (बदो) पटळ (ऊपरी छात) ॥—३७

गच १, कोना-७ नाम

कुट्टिम (तैलीछान कह) खूण् कूट (ग्रग्वान),
कोण ग्रस्र पाली (कहो) कोटी अणी (कुहात) ॥—३८

सीढ़ी ४, निसनी ३ नाम

ग्रारोहण ग्रवरोह (ग्रख मुण) सीढ़ी सोपान,
नीसरणी निश्रेणिका (जिम) ग्रधिरोहिणि (जान) ॥—३९

पेटी ४, भाडू ६ कूड़ा ४ नाम

मजूसा मजूस (मुण) पेटी पेयी (पेख),
सजवारी (अर) सोवणी (बळै) बुवारी (वख) ।—४०
समारजनी सोधणी वहूकरी (बाखाण),
कूडो कचरो अवकर (क जेम) कजोडो (जाण) ॥—४१

ग्रोंखल ३, मूसल ४ नाम

(ग्राखो) ऊखळ ऊखळी (एम) उदूखळ (ग्राख),
खाडणियो (ग्रर) खाडण्यू मूहळ मुसळ (इमाख) ॥—४२

चालणी ३, सूप २, चूल्हा ४, हंडिया २ कुम्हार का चाक ३,
घड़ा-बहड़ा ८ नाम

(लखो) खरणी चाळणी तितऊ (फर तुलात,
जप) सूपडो छाजळो चूल्हो चुल्लि (चवात) ।—४३
अधिश्रयणी ग्रसमत (इम) कुंभी चरू (कुहात),
चाक चक्क चक्कर (चवो) व वहडो (वुलात) ।
कुंभ घडो घट निप कळस (तेम) बवडो (तात) ॥—४४

मटकी ६ ग्रंगीठी ४, भाड २, पीन का पात्र २ नाम

मटकी गागर माथणी काहेली (प्रकटाय,
तेम) कायली पातळी मिगडी हमनि (सुहाय) ॥—४५

गाडी (इम अंगाररी ओर) अंगीठी (आंण),
भाड़ अंबरीसक (मणूं) पारी चसक (पछांण) ॥—४६

रई-५, रई का थंबा-२, पात्र-२ नांम

मंथ खजक मंथान (मुण) रयी झेरणूं (आत),
विसकंभक मंजीर (वद) भाजन पात्र (भणात) ॥—४७

पर्वत नांम

डूंगर पर्वं पहाड़ गर भाखर परवत (भाख),
अग गरिंद भूधर अचळ अद्री मगरो (आख) ।—४८
गरवर नग सखरी गिरी सानूमान (सुहात),
सैल कंदराकर (सुणूं) सानूवाळ (सुणात) ।—४६

उदयाचल-३, अस्ताचल-२, हिमालय-३ नांम

(चवो) उदय पूरव अचळ असत चरमनग (आंण,
उदक) अद्रि हिमवांन (अख जेम) हिवाळो (जांण) ॥—५०

कैलाश-२, विंध्याचल-२, विमलाचल-१ नांम

रजताचळ कैळास (रख) वींझाचळ (वाखांण),
जळवाळक (तिणनूं जपो) सत्रुंजय (सूजांण) ॥—५१

सुमेरु नांम

रतनसानु गरमेर (धर) मेरू मेर सुमेर,
गरांपती (अर) हेमगर (पढ़ो) देवगर (फेर) ॥—५२

शिखर-४, कराड़ा-२, पर्वत का मध्य भाग-२ नांम

शृंग कूट सानू सिखर (कहो) प्रपात कराय,
(भाखर विचला भाग हूं) कटक नितंब (कुहाय) ॥—५३

गुफा-३, पत्थर-८ नांम

दरी गुफा गुद कंदरा पत्थर सिल पाखांण,
पूणूं भाटो उपल (पढ़) पाहण (जिम) पासांण ॥—५४

खान-३, गेरू-२, खड़िया मिट्टी-५ नांम

आकर गंजा खान (अख) गेरू धातु (गुणाय),
खटणी कठणी खटि खड़ी पांडू (वळे पुणाय) ॥—५५

लोहा नाम

लोह पारसव लोहडो अय कालायस ग्रात,
सिलामार घग पिंड (सुरग) ममतर धीन (सुरगात) ॥—५६

तांबा ४, सीसा ७ कलई रांगा ७ नाम

(मुण.) उदुंबर मेछमुग तांबो ताम्र (तुलात),
सीसपत्र सीमो सियो (गडूपद) भव (गात)।—५७
नाग (हेम) अरि सिम (नरख) त्रपु क्थीर सठ (तेम),
वंग (नाग) जीवन (बळे) ग्रालीनक गुरु (एम) ॥—५८

चांदी नाम

रूपो चांदी वसु रजत जीवन तार (जगात),
जीवनीय खरजूर (जप) भीरुक सुभ्र (भगात) ॥—५६

सोना नाम

कंचन कुंनण वसु कनक सोनू सुवरण (सोय),
चामीकर चामीर (चब) हाटक ग्ररजुण (होय)।—६०
सोव्रन (ग्रर) हेमग (मुण तेम) भरम तपनीय,
जातरूप गारुड (जपो) रजत हेम रमणीय ॥—६१

पीतल ५, कांसा ४ नाम

पीतलाह पीतळ (पढो) ग्रारकूट गिरि आर,
रवण चोस कांसी (रटो प्रकट) बीजळीप्यार ॥—६२

पारा ६ ग्रभ्रक २ नाम

पारद पारत सूत (पढ) चळ रस चपळ (चवात,
मह नाम इण रा मुण.) ग्रभ्रक भोम्ब (ग्रात) ॥—६३

कसीस ५ गन्धक ६ हरताल ६ नाम

कासीसक खचर कमव कम (र वळे) कसीस,
पावकोढ सात्रव (पढो) गधक सुलव (गुणीस)।—६४
सुकपिच्छक दयितेन्द्र (मुण) हरितालक हरताळ,
नटमडण पीतन (नरख इम) वगारी ग्राळ ॥—६५

मैनसिल-५, सिन्दूर-३ नांम

सिला रोचणी मैणसिल नेपाळी कुनटी (हू),
नागरगत नागज (नरख इम) सिंदूर (सुजेह) ॥—६६

डूंगर-२, सिलाजित-४, बीजाबेल-६, दूरबीन-चश्मा-३ नांम

हंसपाद (अर) हींगळू गिरिज सिलाजतु (गेय),
सिलाजीत असमज (सुणू) बीजाबोळ (विधेय) ।—६७
बोळ गंधरस रस (वळे) पिंड गोपरस (प्रांण),
चसमू (अर) दुरबीन (चव जेम) कुनाली (जांण) ॥—६८

रत्न-४, वैडूर्य मणि-१, पन्ना-४ नांम

माणक वसु (अर) रतन मणि वैडूरय (बाखांण),
मरकत पन्ना हरितमणि (जिम) गारुतमत (जांण) ॥—६९

लाल-४, हीरा-२, मूंगा-३ नांम

पदमराग लछमीपुसप माणिक लाल (सुणात,
जतरी अभिधा वजरी सो सब अठै सुणात) ।—७०
सूचीमुख हीरक (सुणू वळे) वरारक (बोल),
रक्तकंद रक्तांग (रख तिम) परवाळो (तोल) ॥—७१

सूर्यकान्त मणि-२, चंद्रकान्त मणि-२, मोती-७,
भूषण-६, शृंगार-२, राजावर्त हीरा-३ नांम

सूरकांत सूरजअसम चंदकांत मणि (नेत),
मोताहळ सारंग (सुण) मुकतिज मुक्ति (समेत) ।—७२
मुकतापळ मुकता (सुणू) मोती (रसभव माण,
रट) आभूषण आभरण गहणू भूखण (गाण) ।—७३
गैणू (ओरूं) साज (गिण वद) सणगार वणात,
राजपट्ट वैराट (अख) राजावरत (रखात) ॥—७४

समाप्तोऽयं पृथ्वीकायः

अप्काय प्रारंभ

दोहा

पानी नांम

अब तोय दक पं उदक अंभ सलल (अर) नीर,
पांणी जळ सारंग पय वार आप वन छीर ।।—७५

अथाह पानी २, गहरा पानी २ नांम

(जेम) अगाध अथाह (जळ) गहर निमन गंभीर,
ऊंडो (फेर) असेवना गैरा (वळे) गभीर ।।—७६

साफ पानी ३, पानी का सोता २, गदला पानी ५ नांम

सुच्छ अच्छ परसन्नता (अव) सेवो उत्तान,
अप्रसन्न कलुस (र) अनछ आविल गुधळो (आन) ।।—७७

बफ नांम

अवसयाय प्रालेय (अव) हिम मिहिका नीहार,
पाळो हिंव (अर) वरफ (पढ) तूहिन (वळे) तुसार ।।—७८

लहर नांम

लहरी उतकलिका लहर उरमी वळ (अखात),
उभन उभन उभल्ल (इम) भंग हिलोळ (भणात) ।।—७९

भवर ४, भाग ५ नाम

(भण) आवरत (र) जळभमण वोलव भूण (वखाण),
फण समदकप फेन (पढ) भाग डिंडीर (मुजाण) ।।—८०

किनारा नाम

कूळ कच्छ रोधस (कहो) तट (अर) तीर प्रतीर,
पुलिन (अनै) परताप (पढ घरो) कनारो (धीर) ।।—८१

नदी नाम

सरित तरंगाळी सलल सरता नदी (सुणात),
निरझरणी तटनी धुनी परवतजा (सु पुणात) ।—८२
नै सेवळनी निमनगा (सिंधु) वाहणी (सोय,
धरो) आपगा जळधिया (जिम) जवालनि (जोय) ।।—८३

गंगा नांम

भीसमसू भागीरथी गंगा गंग (गिणाय),
सिद्धआपगा सुरसरी देवनदी (दरसाय) ।—८४
भीसमआयी (फेर भण) मंदाकणी (मुणात),
सरितवरा हरसेखरा सुरगीनदी (सुणात) ॥—८५

यमुना नांम

जमना जमुना यमि जमि सूरजसुता (सुणाय),
जमभगनी (ओहू जपो) कालंदी (सु कुहाय) ॥—८६

नर्बदा-४ तापी-२ नांम

मेकलाद्रिजा नरमदा (ओर) इंदुजा (आत),
पूरवगंगा (फेर पढ़) तापी तपती (तात) ॥—८७

चम्बल-३, गोदावरी-२, कावेरी-१ नांम

चरमवती चांमळ (चवो) रंतिनदी (जिम राख,
दख) गोदा गोदावरी अरधसुरसरी (आख) ॥—८८

अटक-३, बनास-२, वैतरणी-१ नांम

करतोया (अर) अटक (कह) सदानीर (सरसात),
वासिसठी (रु) बनास (वद) वैतरणी (विख्यात) ॥—८९

प्रवाह-३, घाट-३, नाला-२, बूंद-२ नांम

वेणी ओघ प्रवाह (वक) तीरथ घांट वतार,
नाळो जळनिरगम (नरख) बिंदू प्रसत (विचार) ॥—९०

मोरी-३, रेत-२, धोरा-२ नांम

परीवाह परिवाह (पढ़) मोरी (फेर मुणात),
वालू सिकता वालुका सारण पांन (सुणात) ॥—९१

कीचड़-७, दाह-४ नांम

कादो गारो पंक (कह जप) करदम जंबाळ,
चीखिल्लक (अर) चीखलो (अख अगाध) जळवाळ ॥—९२

[दह—अमरा] कुवा ६, तालाब ६ नाम

द्रह दह हृद (फोर दखो) मधु डीमरो (पात),
कूडा धेरा (अर) कुवो थोर नळाव (कुनाप) ।—९३
सरवर साळ तडाग सर सरसी (पर) कासार,
(एम) सगार (फेर अग) पद्माकर (पगसार) ॥—९४

बावडी-३, भेंट २, तलाई-२, रेंहट २ नाम

थाली थाव (र) बावडी उपहाणा भारोह,
पुसकरणी मानक (पडो) रेंट (र) मरट (पगार) ॥—९५

साई ३, खाँचना २, झरना ४, कुंड २ नाम

साई परिखा खातिका खानवान खावाग,
निरभर वर गमि सर (नरख) कुंड जळासी (कार) ॥—९६

समाप्तोऽयं पदूराय

•

अथ तेजस्वायमाह

दोहा

वडवानल २, दावानल ३, मेघज्योति २, कुवानल २ नांम

वडवानळ वाडव (कहो) दावानळ दव दाव,
मघवन्हि (भग) इरमद कुकुल तुमाग (कुहाव) ॥—९७

उपलों की आग २, तापना २, ज्वाला ४ नांम

करीसाग छाणण (कहो) ताप (वळे) सताप,
भाळ (र) भळाट (फेर जप) ज्वाळा कीला (जाप) ॥—९८

अंगीरा ५, अंगीरे की ज्वाला १, धुआं ८, चिनगारी १ नांम

उलमुक (अनै) मटीट (अख) अगीरो अगार,
(इम) अलात उतवा (भखो) धूम धुवा धू (धार) ।—९९
वायुवाह मतमाल (वद) भभ आगवह (भाख),
दहनकेत (फेर दखो) अगनीकण (इम आख) ॥—१००

समाप्तोऽयं तेजस्काय

अथ वायुकायमाह

दोहा

पवन नाम

वाय समीरण वायरो मरुत वाव पवमांण,
अनिळ महाबळ मेघअरि पवन प्रभंजण (आंण) ।—१०१
पच्छिम, उत्तर, दिसपती* गंधवहण जगप्रांण,
सुनि समीर सामीर (सुण) वात हवा पवनांण ॥—१०२

दृष्टियुत पवन-१, प्राण-वायु-१, अपान-वायु-१,
समान-वायु-१ नांम

जांस (दृष्टियुत वाव जप) प्रांण (हिया में सेन,
नरखो पवन) अपान (गुद नाभि) समांन (सु देस) ॥—१०३

उदान-वायु-१, व्यान-वायु-१ नांम

(कंठदेस मांहे प्रगट आगो सदा) उदान,
(सरब देह वरती सदा बोल समीरण) व्यान ॥—१०४

आंधी-४, लू-४ नांम

आंधी वावळ डूंज (अस अख) अंधारी (आत),
पवनतपन (इस) भंखड़ (पढ़) लू (अर) झकार (नसात) ॥—१०५

समाप्तोऽयं वायुकाय:

•

अथ वनस्पतिकाय माह

दोहा

वन नाम

अटवि विपिन कांतार (अख) दव कानन वन दांव,
गहन कक्ष अटवी (गणू वळे) अरण्य (वणाव) ॥—१०६

---

* पच्छिम, उत्तर, दिसपति = पच्छिमपति, उत्तरपति ।

बाग-६, बाहर का बगीचा १ नाम

अपवन उपवन बेल (अन्न) बाग बगीचो (बेस,
क्रत्रिमबन) आराम (कह) पोरक (वारै पेख) ।।—१०७

प्रमदा बन १, स्थानिक बाग २, बाडी १ नाम

(महिप जनाना माहिलो) प्रमदाबन (पहचाण,
ग्रहाराम निसकुट (नरख) वाडी (फूल वखाण) ।।—१०८

वृक्ष नाम

तर साखी तरवर तरु द्रुम द्रुमग (दरसात),
रूंख फळद अग रूंखडो माळ ब्रच्छ (मरमात) ।—१०९
पादप विटपी विटप (पढ) चरणप अगम (चवन),
फूलद छितरुह नग (प्रकट) परणी बमू (पढन्त) ।।—११०

बल ६, अंकुर ४ नाम

लता वेल वल्लि वेलडी वेली व्रतति (वखाण),
अंकुर रोह प्ररोह (अख जिम) अंकूर (सुजाण) ।।—१११

शाखा ४, जड ३, छाल ३, मजरी २ नांम

साख सिखा साखा लता जटा सिफा जड (जोय),
छाल चोच वलकल (चवो), मजरि मजा (होय) ।।—११२

पत्र ११, पत्र की नस २ नाम

पत्र छदन छद पानडो परण पान दळ पान,
वरह पलास (र) वरग (वद) माडी छदन (समान) ।।—११३

पुष्प १०, गुच्छा २ नांम

सुमनस कुसुम प्रसून सुम फूल मगीवक (पात),
प्रसव सून गुल (अर) पुमप गुच्छो गुच्छ (गिणात) ।।—११४

पराग ३, पुष्प रस ५ नाम

रज पराग (अर) फ्लरज मधु रस (श्रोर) मरद,
सुमनसरस (मुकवी मुणू मुणू वळे) मकरद ।।—११५

फूले हुए पुष्प नांम

प्रफुलित उतफुल फूल (पढ़) विकसत दलित (वुलात),
विकच फुल्ल व्याकोस (वद तेम) विमुद्र (तुलात) ॥—११६

सुगन्ध नांम

गंध डमर सूगंध (गिण) वास महक कसवोय,
बगर (वळे) वासावळी (जेम) वासना (जोय) ॥—११७

फली नांम

(चव) मुद्रित (अर) संकुचित (नरख वळे) निद्रांण,
मीलत नहफूलण (मुणू वळे) अफुल्ल (वखांण) ॥—११८

कच्चा फल-२, फल-१, गांठ-२, फली-५ नांम

श्राम सलाटू फळ (श्रखो) ग्रंथी गांठ (गिणात),
कोसि बीज सिंबा (कहो) संवी समी (सुहात) ॥—११९

पीपल नांम

पीपळ कुंजरअसन (पढ़) बोधितरू (वाखांण),
कसनावास अस्वत्थ (कह जिम) चळदळ (कवि जांण) ॥—१२०

बरगद-४, गूलर-२, आम-४, मोलसरी-२, अशोक-२, बिल्व-२ नांम

वैश्रवणालय बड़ (रु) वट वहूपांव (बरणाव),
जंतूफळ मसकी (जपो) आंव रसाळ (अणाव) ।—१२१
माकंदक सहकार (मुण) केसर वकुल (कुहात),
कंकेली (रु) असोक (कह) श्रीफळ बील (सुहात) ॥—१२२

ढाक-४, ताड़-३, बैत-२ नांम

त्रीपत्रक किंसुक (तवो पढ़) पलास पालास,
त्रणराजक तल ताल (तव) वेतस विदुल (विकास) ॥—१२३

केला-४, बेरी-३, भाऊ-२ नांम

रंभा मोचा केळ (रख) कजळी (फेर कुहात),
बदरी कुवली बोरड़ी भावू पिचुल (सुभात) ॥—१२४

नीम ३, कपास ३, रुई २, अडूसा ३ नाम

नीम निंब (अर) नीमडो पिचवय (अर) करपास,
बादर तूलक तूल (बक) व्रस अरडूसो वास ॥—१२५

अमलतास २, बए २, थूहर-सेंहुड २, पीलू २ नाम

आरगवध गरमाल (अख बद) मदार वकाण,
महातरू थूहर (मुण) मिन गुडफळ (मूजाण) ॥—१२६

महुवा ३ चिरोंजी २, गूगल २, कदब २ नाम

महुवो मुवो मधूक (मुण) चार पियाळ (चवत),
पलकसा गूगळ (पढो) हलिप्रिय नीप (कहत) ॥—१२७

इमली २, नारगी २, हिंगोट २, ल्हिसोडा २ नाम

अम्लीका (अरु) आमली नागरग नारग,
तापसद्रुम इगुदि (तवो) सेलू (स्लसम) अग ॥—१२८

बीजा ३, भोजपत्र का वृक्ष २, पाटल ३, तूबी २ नाम

पीतसाल बीजो प्रियक बहुतुव भूरज (बोल),
पाडळ पाटलि पाटला तुंबि अलाबू (तोल) ॥—१२९

आवला २, बहेडा २, हरड २, हरड-बहेडा आंवला १ नाम

धात्री आमलकी (धरो) अक्ष विभीतक (आत),
हरडै (और) हरीतकी त्रिफळा (ताम तुलात) ॥—१३०

मला ३, चमेली ३, जासूल ३, सोनजुही १ नाम

मल्ली मल्लिका मोगरो जाति चमेली (जोय),
जपा जवा जासूल (जप) हेमफूलिका (होय) ॥—१३१

चपा २, जुही २ दुपहरिया २, करना २ नाम

हेमपुमप चपक (हुवै) जुही जूथिका (जात),
बधुजीव बधूक (वद) करणा वरुण (कुहात) ॥—१३२

जमीरी ३, कनीर २, बिजोरा २, करीर २ नाम

जभ जह्मरी जभलक करगिकार कनीर,
बीजपूर बीजोर (वक) करकर (बळे) करीर ॥—१३३

एरंड-२, नारियल का वृक्ष-२, कैथ-३, इलायची-२ नांम

पंचांगुळ एरंड (पढ़) नारिकेर नारेळ,
दधिफळ कैंत कपित्थ (दख आख) अलायचि एळ ॥—१३४

बांस-४, सुपारी-३, नागरवेल-६ नांम

मसकर सतपरवा (मुणू) वेणू त्रणधुज (वोन्न),
पूग क्रमुक गूवाक (पढ़) तांबुलवेली (तोल) ।—१३५
(नाग नांव आगैं निपुण) वल्ली वेल बुलात,
नागरवेल तंबोळ (नत) तांबूली (गुतुळात) ॥—१३६

केवड़ा-केतकी-२, कचनार-२ मदार-धतूरा-३ नांम

क्रकचच्छद केतक (कहो) कोविदार कचनार,
धत्तूरो धत्तूर (धर वळे) धतूर (विनार) ॥—१३७

गुंजा-घुंगची नांम

(कहो नांम जो कनक रा सो इण रा सू जांण,
रख) चरमू गुंजा रती (ओर) कृष्णला (आंण) ॥—१३८

दाख-३, खस की घास-२, खस-२ नांम

दाख हारहूरा (दखो ओर) गोयणी (आख,
वोलो) गांडर वीरणी कस (रु) उसीरक (भाख) ॥—१३९

नेत्रवाला-३, लोध-२, पुवांड़-३ नांम

वालक जळ ह्रीबेर (वद) गालव लोद (गणात),
प्रपुन्नाट पंव्वाड़ (पढ़ ओर) एडगज (आत) ॥—१४०

कमल की वेल-३, कमल-२२, श्वेत कमल-१,
लाल कमल-२, गंडूल-२ नांम

नलिनी पंकजिनी (नरख ओर) म्रणाली (आत),
कमळ कंवळ पंकज (कहो) विसप्रसून (विख्यात) ।—१४१
(पंक सबद आगैं प्रकट, जनम, ज, रुट, रुह, जांण)*,
संहसपात सतपत्र (सुण) पोयण कंज (प्रमांण ।—१४२
अवज पदम अरविंद (इम रख) पुसकार राजीव,
तामरस (रु) सारंग (तव सुण) सरोज (जळसीव) ।—१४३

---

* पंकजनम, पंकज, पंकरुट, पंकरुह ।

सरसीरुह (अर) जळज (सुण पुंडरीक (सितपात,
कवळ) लाल (रु) कोकनद उतपळ कुवलय (आत) ॥—१४४

कमल की नाली-३, अन्न-३, चावल-५ नाम

तंतुल विस (रु) म्रणाल (तव घरो) नाज अन धान,
चोखा चावळ साळ (चव) तदुळ अखमत (तान) ॥—१४५

जौ-३, चने-२, उर्द-३, जवार-२ नाम

जब तुरंगप्रिय जो (जपो) हरिमथक चण (होय),
मास मदन नदी (मुण) जोनळ जीरण (जोय) ॥—१४६

गेहूं-३, मूंग-२, कुलथ-२, सांवा-२ नाम

सुमन गहू गोधूम (सुण) मुदग बलाट (सुणाय),
कुळथ काळव्रतक (कहो) साऊ स्याम (सुणाय) ॥—१४७

अलसी-३, सरसों-२, बाल-भुट्टा ४ नाम

अळस उमा अतसी (अखो) सरस्यूं तुंतुभ (सोय),
दाणी ऊमी वाल (दख जेम) कणीसक (जोय) ॥—१४८

लहसुन-३, प्याज-४, सूरन-२ नाम

ल्हसण अरिष्ट रसोन (लख) दीरघपत्र (दिखात),
ग्रजन भादो प्याज (गिण) सूरण कंद (सुहात) ॥—१४९

कुम्हड़ा-२, तुरई-१, ककड़ी-२, मूली-२ नाम

कूसमाड करकारु (कह) कोसातकी (कुहात),
करकटिका (अर) करकटी सेंक्रिम मूळ (मुहाय) ॥—१५०

अदरक ४, सरकण्डा-५ नाम

अद्रक भादो आरद्रक शृंगवेर (सरमान,
कहो) गुंद्र सर सरकना तेजन मूंज (तुलात) ॥—१५१

कुशा, दुर्वा-४, दूब-६ नाम

दरभ डाभ कुस कुथ (दखो) हरिताली रुह (होय),
दोभ अनंता दूरवा सतपरवीका (सोय) ॥—१५२

गन्ना ५, गन्ने की जड़-१, कांस २ नाम

ईख उख इच्छू (अखो सो) असिपत्र रसाळ,
मोरट (जिण रो मूळ है) काम इखीका (भाळ) ॥—१५३

घास-५, नागरमोथा-२, उपल(घास)-२ नांम

जवस घास अण खड़ (जपौं) अरजुण (अोरूं आत),
मेघनांम मुसता (मुणूं) वनवळ उपल (वणात) ॥—१५४

समाप्तोऽयं पृथिव्याद्येकेन्द्रियादौ वनस्पतिनामः

•

अथ द्वीन्द्रिया नाह

कीड़ा-४, सूक्ष्म कीड़ा-१, शरीर के कीड़े-१, बाहर के कीड़े-१ नांम

क्रमी कीट कीड़ो किरम (सुच्छम) कीकस (जांण,
वेरमांहि) नीलंगु (वद वारैं) छुद्र (वखांण) ॥—१५५

लकड़ी के कीड़े-१, केंचुवा-२, गिजाई-२, जोंक-८, सीप-२ नांम

(कह) घुण (कीड़ो काठरो) किंचुल कुसू (कुहात),
गज्जायी गंडूपदी अन्नपीवणी (आत) ।—१५६

जळमपणी जळअोक (जप) जळालोक जळजात,
जोख जळूक जळोक (जिम) मुक्ती सींप (सुहात) ॥—१५७

शंख-५, घोंघा-२, कौड़ी-२ नांम

वारिज कंबू संख (वक) तीनरेख दर (तोल),
सांखूल्या संबूक (सुण) कोडि वराटक (वोल) ॥—१५८

उक्ता द्विन्द्रियाः

•

त्रीन्द्रियानाह

चींटा-३, चींटी-१, दीमक-४ नांम

चींटो पील मकोट (चव) चींटी (नांव चवात),
उपजीहा उपदेहिका दीमक दीम (दिखात) ॥—१५९

लीक ३ जू २ गोवडी २ गोवडा १ नाम

लिक्सा रिक्सा ल्हीक (लख) जू खटपदी (जणात)
गींगोडी गोपालिका गोमयजात (गणात) ॥—१६०

खटमल ३ बीरबहूटी ४ नाम

माकण मतकुण विटिभ (मुण वीर) बहोडी (वेख),
बुढकन मामूल्यो (वळें) इंदगोप (ग्रवरेख) ॥—१६१

उक्तास्त्रींद्रिया

•

चतुरिन्द्रियानाह

मकड़ी नाम

जाळकार जाळिक (जपो) ऊरणनाभ (ग्रखात),
मरकट लूता माकडी लालासाव (लखात) ॥—१६२

बिच्छू ३ डंक १ भौंरा-बर १० जुगनू ३ नाम

वीछू द्रुण ग्राली (वदो) अलि (तिण पूछ ग्रणात),
भवर भसळ ग्रलि भ्रमर (भण) भूरो भमर (भणात) ।—१६३
चचरीक सारग (चव) मधुक्र मधुप (मुणाय),
जोयिंगिण जांगिरणू (सो) खद्योत (सुणाय) ॥—१६४

मधुमक्खी २ शहद ३, मोम ३, भींगर ४, टिड्डी १, पतंग १, तितली २ डाम २ नाम

सरघा मधुमांखी (मुणू) सहत सैंत मधु (सोय),
मदन मैंण मधुऊठ (मुण) भींगर भिल्ली (होय) ।—१६५
चीरी भ्रगारी (चवो) सलभ पतग (सुणाय,
तवो) पुत्तिका तीतरी दमक डाम (दिखाय) ॥—१६६

मक्खी १, मच्छर २, पशु २ हथिनी ५ नाम

माखी माछर मसक (मुण) ढाढो पसू (पढाय),

उक्तास्चतुरिंद्रिया

पंचेन्द्रिया नाह

वशा गजी हथणी (वळे) इभी करेणू (आय) ॥—१६७

षट्पात

मकना हाथी-१, पांच बरस का हाथी-१, दस बरस का-१,
बीस बरस का-१, तीस बरस का-१, मस्त हाथी-३,
मतवाला हाथी-२, तिरछी चोट करने वाला हाथी-१ नांम

(दुरद नमैं पर दंत वळे नंहं ऊंचा अंगरौ),
मतकुण (नांम सुणात) बाळ (गज पंच बरसरौ)।
पोत (बरस पढ़ह) बिक्क (गज बीस बरस बर),
कलभ (नांम करटी सु तीस जाणू संबच्छर)।
मत्त(क)प्रभिन्न गर्जित (मनत) मद उनकट मदकल(सुणू),
तिरछी सु चोट करवै तिकण परिणत) दंतावळ (पुणू) ॥—१६८

छंद पद्धतिका

मद उतरा हुआ-३, यूथपति हाथी-३ नांम

उदवांत अमद निरमद(अग्यात उतर्‌या मद इभरा नांम आत),
जूथप मतंगपति (जूह) नाह (तंबेरम टोळापति तयाह) ॥—१६९

युद्ध के लिये सज्जित हाथी-२, धृष्ट हाथी-१ नांम

(इभ जुद्ध निमित्तक किय तयार) सज्जित (अर)
कल्पित (नांम सार,
मानें नह अंकुस जो मतंग गंभीर) वेदि (नांमक अभंग) ॥—१७०

दुष्ट हाथी-१, जवान हाथी के लाल दाग-१ युद्ध योग्य
हाथी-१, राजा की सवारी का-२ नांम

(वारण जो होवै दुसट)व्याल(जो)पद्म (करी व्है विदुजाल,
समरोचित गज जो व्है) सनाह्य उपवाह्य भूपगजराजवाह्य ॥—१७१

लंबे दांतवाला-२, हाथी कामद-३, हाथियों की
रचना-१ नांम

(दंती) उदग्र (ईसा) सुदंत (जिण रै रद लंबा सो भजंत),
मद दांन प्रवृत्ति (क गमद जांण अणपार) घड़ा
(गज नांम आंण) ॥—१७२

हाथी की सूंड ५ सूंड की नोंक २ नाम

हमनीनामा कर हसत सुंडा सूंड (सुणात),
इण रा अग्रक आख इम) पोगर पुमकर (पात) ॥—१७३

नोंक के आगे की अंगुली १ हाथी का कथा १ हाथी का दांत १ कान का मूल १ हाथी का ललाट १ सूंड का पानी १ आंखों के ऊपर का भाग १ नाम

(गं पोगर री आगळी एक) करणिका (आत),
आमण (गं असक अखो ग्न) विमाण (दिखात) ।—१७४
(लख कन मूळक) चूलिका (गं ललाट) अवगाह
(करसीकर) वमयू कहो आखकूट (इसिकाह) ॥—१७५

मस्तक कुंभ १ कुंभ के बीच का भाग १ कुंभ के नीचे का भाग १ विंदू के नीचे का भाग १ नाम

(पिंड दुगं धू) कुंभ (पट वीच कुंभ) विंदु (तोल),
आक्षरक (दुव कुंभ अध) वातकुंभ (अधवोल) ॥—१७६

वातकुंभ के नीचे का भाग १ वाहित्थ के नीचे का भाग १ आंख का कोया १ हाथी बांधने का स्तंभ १ नाम

(इण रै अध) वाहित्थ (अख तिण हेठ) प्रतिमान
(इभ) निरयाण (अपाग अख इभ बंध थंभ) आलान ॥—१७७

पूंछ का मूल १ अंकुश से रोकना १ महावत का पैर हिलाना २ नाम

(पूंछ मूल) पेचक (पढो अंकुस रोकण) यात
(अखपैकरम) निसादियत वीत (नाम दुव आत) ॥—१७८

अंकुश की नोंक १ होद कसन का रस्सा २ कंठ का रस्सा २ नाम

(अंकुस अग्र) अपष्ठ (अख) वरत वरत्रा (बोत)
कंठवधण कंठबंध (कह तेम) कलापक (तोत) ॥—१७९

श्वेत घोड़ा २ श्वेत पिंगल १ नाम

(हय धोळो सव होय तो कहो) करक काका (ह)
धोळो पिंगळ रंग धर गूढ असन) खोगा (ह) ॥—१८०

पीला घोड़ा-१, दूधिया घोड़ा-१, काला घोड़ा-१ लाल घोड़ा-१ नांम

(पीत रंग हय) हरिय (पढ़ रंग दूध) सेराह,
(कसनरंग) खुंगाह (कह यूं रंग) लालकियाह ॥—१८१

काली पिंडलियों का श्वेत घोड़ा-१, कावरा घोड़ा-१ नांम

(जंघ कसन सित व्है जरा उण रो नांम) उराह,
(गिणूं कावरो रंग सब हय रो नांम) हलाह ॥—१८२

पद्पात्

कपिल रंग का घोड़ा-१, अयाल व वालछा श्वेत रंग वाला त्रिगूह-१, काले घुटने वाला पीले रंग का-१, पीत रक्त व कृष्ण रक्त-१, नीला-२, गुलाबी-१ नांम

(रंग कपिल रो वाज होय तिणनूं) त्रियूह (कह,
याल पूंछ अवदात जपो) वोल्लाह (नांम जह।
पढ़) कुलाह (रंग पीत जरा जानूं सित जिणरै,
पीतरगत) उकनाह (तुच्छरंग धूमर तिणरै।
सब देह रंग नीलो सरम) आनील (सु) नीलक (अखो,
रेवंत रंग) पाटल (सरव वो रु खांन नांमक रखो) ॥—१८३

दोहा

पीत हरित-२, काच जैसा श्वेत-१ नांम

(हरित पीत रंग होय जो) हालक हरिक (सुहात,
श्वेत काच रा रंग सम) पिंगुल (नांम पढ़ात) ॥—१८४

घोड़ों के खेत नांम

(धरूं देस संबंध सूं साकुर नांम सुणात),
वनायुज (रु) वाल्हीक (वलि) पारशीक (सु पुणात) ।—१८५
सिंधूभव कांवोज (सुण) खुरासांण तोखार,
गोजिकांण केकांण (गिण धर) भाड़ेज (सुधार) ॥—१८६

बछेरा-३, वेगवाला-२ नांम

(अलप) अवसथा वाळ (अस प्रकट) किसोर (पढ़ात,
जव जिणमैं घणा व्है जिको) जवन जवाधिक (जात) ॥—१८७

जातवत घोडा १, म्रदा चलने वाला १ नाम

(जान सेन जो व्है तुरी) म्राजानेय (म्रखात,
साधु फिरै चालै सदा सो) बिनीत (सरमान) ॥—१८८

बुरा चलने वाला १, भ्रष्ट-मगल १ नाम

(बुरो फिरै चालै विरस) सूक्ल (नाम सुणात,
उर खुर मुख क्च पुच्छ सित) मगलभ्रष्ट (मुणान) ॥—१८६

पचभद्र नांम

(पूठ हियो मूढो प्रगट दो पसवाडा देख,
जिण हयरै धोळा जिको) पचभद्र (तू पेख) ॥—१६०

हाथी की सक्ल ४, हाथी का क्पोल ४
बाधन व पकडन का स्थान १ नाम

म्रदुक (अर) हिंजीर (म्रख) साक्ळ निगड (सम्हारि),
क्रट क्पोल (रु) गड क्ट (बघणगज भू) वारि ॥—१६१

हाथी की चार जात ४ घोडी ५ नाम

भद्र मद म्रग मिश्र (भण जात चार गज जोय),
घोडी वडवा घोटकी हयी तुरगी (होय) ॥—१६२

पूछ-५, खच्चर ३, खुर २ नांम

पूछ मुराला पुच्छ (पड) लूम (मनै) लगूल,
वमर म्वच्चर वगमर सफ म्रुर (पाव मुमूल) ॥—१६३

गधा नाम

गधा गर्दभो म्वर (गिण) राडीराव (रवाह),
लवक्रण रामभ (लखो वळै) सीनळावाह ॥—१६४

ऊट नांम

सढ्ढो पागळ साढियो ऊट टोड गय (आण),
मुणक्मळो पाक्ट मय जाम्रोडो सल (जाण) ।—१६५
करहो जूग करलडो नालवड कुळनाग,
वटक्अमाण ग्डग (कह लखण) दुरग (दुलाम) ।—१६६

भोळि क्रमेलक भूतहन दोयककुत दासेर,
महाअंग वीसंत (मुण) प्रियमरु रवणक (फेर) ॥—१९७

बैल नांम

वैल ब्रखभ ब्रस गो बळद धोरी धवळ (धरेह,
गणू ं) साकवर डांगरो अनडुह भद्र (अणेह) ॥—१९८

सांड-३, वछड़ा-६ नांम

आंकल नोपत मदक (अख) तरण जैंगड़ो (तोल),
वच्छो वतसर वाछड़ो (वळे) टोगड़ो (वोल) ॥—१९९

बैल का कुब्बड़-२, सींग-२, गाय-१०, भैंस-४ नांम

अंसकूट कुकुदक (अखो) सींग विसाण (सुहात),
सींगाळी सुरभी सुरै तंवा धेन (तुलात) ।—२००
(पढ़) तंपा (रु) नलंपिका गो माहेयी गाय,
लालचखी महखी (लखो) भैंस हिडंवी (भाय) ॥—२०१

भैंसा नांम

भैंसो जमवाहण (भणू ं) महखो महिख (मुणाय),
वाहणअरी जरंत (जप लखो) हिडंव: लुलाय ॥—२०२

बकरी नांम

(कहो) वाकरी वोकड़ी छाळी छागी (होय),
अजा टाट मंजा (अखो ज्यू ंही) वुज्जी (जोय) ॥—२०३

बकरा नांम

छाळो वुज्जो अज छगळ छग वकरो पसु छाग,
वोक वसत तभ वोकड़ो वरकर वक्कर (वाग) ॥—२०४

भेड़ नांम

गाडर लरड़ी गाडरी मेसी भेड़ (मुणोय),
रुजा रू ंगटाळी कुररि हुडी घटोरी (होय) ॥—२०५

मेंढ़ा नांम

ऊरण मींढ़ो हुड अवी घेटो मेस घटोर,
(गिणू ं) रु ंवाळो गाडरो एडक भेड़ो (ओर) ॥—२०६

गोबर ४, उपला-कडा ४ नाम

गोबर गोमय गायबिट भूमीलेप (भणेह),
छाणा कडा (अर) छगण (एम) करीस (ग्रणेह) ।।—२०७

कुत्ता नाम

कुत्तो लट्टो कूकरो स्वान भसण सुन (सोय),
कुरकुर मडळ कूतरो (जम) टेगडो (जोय) ।।—२०८

सिंह ३१, भूखा सिंह ६ नांम

करीमार हरि केहरी नखआवध वनराव,
बाघ सेर लकाळ (वद राव) दुद्धर म्रगराव ।—२०९

महानाद नाहर मयद म्रगराजा (रु) म्रगेस,
सारदूळ (ग्रर) सीघळी नखि भाखरानरेस ।—२१०

सीह सिंघ सारंग (सुण) कंठीरव कंटीर,
मरगराज म्रगराज (मुण) केहर नार कटीर ।—२११

सादूळो म्रगयद (सुण) म्रधप डाखियो (आख,
बळे) अघायो वाघलो भूखो वेगळ (भाख) ।।—२१२

तेंदुआ, चीता ४, अष्टापद सिंह ४ नांम

रावदुपी (ग्रर) बरगडो चित्रक चीतो (होय),
अष्टापद कुंजरअरी सरभ आठपग (सोय) ।।—२१३

भालू ४, जरख ४ नांम

अच्छभल्ल भालूक (अर) भल्लक भाल (भणह,
डाकण) वाहण म्रगडचण जरख तरच्छु (जणेह) ।।—२१४

रोझ-३, गेंडा हाथी-२, सूग्रर २० नांम

रोझ गवय वनगव (रखो) खडगी खडग (अखाह),
काडी कोलो गिड क्वल (रख) बराह वाराह ।—२१५

(भण भाकर रो) भोमियो दूंढाहळ दूंडाळ,
दानळैल जेवल (दखा) डाढाळ डाढाळ ।—२१६

सूदारक गिडराज (भण) सूकर सूर (सुणाय),
थूळनाम बहुप्रज (तथा) मुखलागळक (मुणाय) ।।—२१७

गीदड़ नांम

गीदड़ जंवुक गादड़ो स्याल्यो भरुज सियाळ,
भूरिमायु गोमायु (भण गण) फेरंड स्रगाळ ॥—२१८

भेड़िया-३, लोमड़ी-४, खरगोस-७, सेही-३, लंगूर-१२ नांम

वरी भेड़ियो वरगड़ो लूंगती (रु) लूंकां (ह,
लखो) लूकड़ी लूमड़ी सुसल्यो दांत्यो (सांह) ।—२१९
सुसो सुसकल्यो सस (वळे गण) सूळिक खरगोस,
सेही हेडी सेयली प्लवग प्लवंगम (पोस) ।—२२०
साखाम्रग कप कीस (सुण) मांकड़ कपी मुणात,
वनचर मरकट वांदरो हरि लंगूर (कुहात) ॥—२२१

हिरण-८, गोहरा-४, छिपकली-६ नांम

म्रग कुरंग (अर) मरगलो (कह) सारंग छकार,
हिरण (वळे) आहू हरण गोधेरक गोधार ।—२२२
(इम) विसखपरो गोहिरो पल्ली मुसली (पेख),
छावक विसमर छिपकळी (दुरस) गरोळी (देख) ॥—२२३

गिर्गट-४, झाऊ-३ नांम

कणगेट्यो किरकांट (कह) सरट सयानक (सोहि,
गिण) संकोची गातरो जाहक झावू (जोहि) ॥—२२४

चूहा-५, छछूंदर-२, नोल्या-५ नांम

आखू मूसक ऊंदरो मूसो खणक (मुणात),
छछूंदरी चखचूंदरी सरपाऽऽहार (सुणात) ।—२२५
(कह) नोल्यो पिंगळ नकुल वभ्रू (और विचार),
ओतु विडाळ विलाव (अख) मारजार मंजार ॥—२२६

सर्प-२२, जहर-११, नशा-२ नांम

सांप उरग विखहर सरप पनग दुजीह पनंग,
अही फणी सारंग अह भमंग भुजंग भुयंग ।—२२७
काळदार अहि व्याळ (कह) काकोदर (जिम) काळ,
चील्ह भुजंगम भुजग (चव) गरळ हळाहळ गाळ ॥—२२८

बम्म कुटक (जिम) जहर विख काळकूट (वह तात),
विरसन गर रससार (बद) मादक गहळ (मनात) ॥—२२९

दुमुंही सर्प-२, अजगर-२, डिंडिभ-२, निर्विष सर्प-२ नाम

राजमरप दम्मी (रखो) अजगर बाहम (भाख),
जळव्याळ मलगरद (मख) दुदुह दुदुह (दाख) ॥—२३०

नाग-२, नागपुरी १, वासुकी नाग-२, वासुकी रग-१ नाम

काद्रवेय (मर) नाग (वह) भोगावति (पुरि भाख),
सरपराज बासुकि (मुण ॱ इण रो रग) सित (माख) ॥—२३१

सर्पिणी नाम

(पडो) फुणाळी सरपणी काकोदरी (कुहात,
गिण ॱ) भुजगी नागणी सपणी (बळे सुहात) ॥—२३२

फन-३, सर्प का देह-२, सर्प की डाढ़-१, कृत्रिम विष-३ नाम

भोग फटा दरवी (प्रभण वहो) भोग अहिकाय,
मासी (इणरी डाढ मख) बिस गर चार (बनाय) ॥—२३३

शेषनाग नाम

पन्नगीम अहपत फणी अनत तखग महराव,
सेम फुणाळी बासक (रु) नागराज (घण आव) ।—२३४
धराधार पुहवीधरण बखधर नाग (वखाण),
सहमदीयचख (मर) श्रवण आलुक भोगी (माण) ॥—२३५

उक्तास्यनचरा पचेन्द्रिया

•

खेचरान्पचेन्द्रियानाह

पक्षी नाम

विहग विहगम खग वि वय सुकुनी सकुन (मुणान),
दुज पतग (पर) पतग द्विज मडज पछी (माल) ॥—२३६

चोंच ४, पंख ४, पंखों का मूल-१ नाम

चाच चचु चचू (तवो) त्रोटि सपाद्री (नेम),
पिच्छ पच्छ छद पत्र (पढ जपो) पच्छति (जेम) ॥—२३७

अंडा-२, घोंसला-२, मोर-१२ नांम

अंड (पेसिका) कोस (अख सुण ज्यो) आळ घुसाळ,
मोर्‌यो मोर मयूर (मुण) अहिभक बरही (आळ) ।—२३८
(रखो) कलापी मोरड़ो सिखी सिखंडी (सोय),
नीलकंठ केकी (नरख जिम) सारंग (क जोय) ॥—२३९

कोयल नांम

कोयल कोकिल पिक (कहो) वनप्रिय परभ्रत (वोल),
काकपुसट सारंग (कह) तांवालीयण (तोल) ॥—२४०

तोता नांम

लालचांच फळग्रदन (लख) तोतो कीर (तुलाट),
सुवो सूवटो सुक (सुणूं) सूडो (वळे सुणात) ॥—२४१

मैना-३, कलिंग-२, हूका-२, जीवंजीव-१ नांम

सारू मैणा सारिका भृंग कलिंग (भणात,
कोलाली) कुक्कुट कुहक जीवंजीव (जणात) ॥—२४२

हंस नांम

सितच्छद मानसओक (सुण) धीरट (अर) धवलंग,
(लखो) मुराल मराल (है रखो) हंस सारंग ॥—२४३

पपीहा नांम

नभनीरप चात्रग (नरख) चातक (फेर चवात),
पपीहो (रु) सारंग (पढ़) वावय्यो (विख्यात) ॥—२४४

कौआ नांम

काक काग द्विक कागलो वायस करट (वुलात),
इकलोयण वलिभुक (अखो तिम) घूकारि (तुलात) ॥—२४५

जलकौआ-१, उल्लू-६, मुर्गा-४ नांम

(जळवायस) मदगू (जपो) वायससात्रव (वोल),
दिवसअंध घूघू (दखो तेम) अलूक (सुतोल) ।—२४६
घूक रातराजा (घड़ो) ताम्रचूड़ (कह तात),
क्रकवाकू (अर) कूकड़ी चरणायुधक (चवात) ॥—२४७

चकवा-४, टिटहरी-३, चिड़िया नर-२ नाम

चोक रथांगाभिध (कहो) चक्रावक चकवाह,
टीटोडी टिट्टिभ टिटिभ चटक कुलिंगक (चाह) ॥—२४८

बुगला-३, कङ्कपक्षी २, चील-६, शेनपक्षी-३, गिद्धिनी ७,
चिमगादर-२, बड़ी चिमगादर-२, भाड़-२ नाम

बक बुगलो (र) बटोक (वद) कंक (र) ढीन (कुहान,
बदो) वावळी मावळी समळी चील (मुहात) ।—२४६
मानापी गुनमी (भलो) सेन सम्पाद सिचाण,
ग्रीधण खग दुज गीधणी पत्रण (फेर पढांण) ।—२५०
दूरदेण रानग (दख) चरमचड़ी चमनेड,
वागळ मुखविमटा (वदो) आटी भाड (मुएड) ॥—२५१

कबूतर ३, कमेड़ी व पडुकी २, छोटी पडुकी-३
कावर, गुरगल २, चिड़िया मादा-२, चकोर ३,
स्पारेस-१, तीतर-२, बया-२ नाम

पारावत (र) परेवडो कलरव (फेर कोप),
घासालाल कपोत (भख) होलड डेकड (होय) ।—२५२
कम्मेडी गुरगळ (कहो) कावर (फेर बुहाय),
चडी चुडकली (भर) चटी निसमूचक (बुलवाय) ।—२५३
चळचचू (र) चकोर (चव) भारद्वाज (भणेह),
तीतर (भर) सरकोण (तव) बीयो सुघर (बणेह) ॥—२५४

उक्ता नभचरा पचेन्द्रिया

०

जलचरान् पचेन्द्रिया नाह

मछली नाम

मच्छ मीन भख तिम (कहो) सबर सळकी (मोय),
प्रथुरोमा थिरजीह (पढ जिम) बैमारिण (जोय) ॥—२५५

मगर-३, जलमानस-२, मगर-४ नाम

मक्र नक्र (ग्रर) मक्र (मुण) माणस (जळ) सिमुमार,
ततुनाग ततुण (तवो) वरणपास अवहार ॥—२५६

कांकड़ा-४, कछुआ-४ नांम

सोळपगो करकट (मुण्) कुरचिल (ग्रौर) कुलीर,
कच्छप कूरम कमठ (कह धरो) डुलीनुत (धीर) ॥—२५७

मंडक नांम

भेक डेडरो हरि (भण्) प्लवग डेडको (पेख),
वरसाभू मंडूक (वद) दादुर दरदुर (देख) ॥—२५८

उक्ता: जलचरा: पंचेन्द्रिया:

•

नरक में गिरे हुए-४, पीड़ा-२, वेगार-२ नांम

नारक अतिवाहिक (नरख) प्रेत परेत (पिछांण),
ग्रतपीड़ा (ग्रर) यातनां ग्राजू विसटी (ग्रांण) ॥—२५९

नरक-४, पाताल-७ नांम

निरय नरक नारक (नरख) दुरगत (ओरूं दाख),
वड़वामुख वळसदन (वक) अधोभुवन (इम ग्राख) ।—२६०
नागलोक (फेरूं नरख पढ़ो वळे) पाताळ,
(राख) रसातळ (इम रिधू परगट पढ़ो) पयाळ ॥—२६१

छिद्र-६, गढ़ा-४ नांम

रोप रंध्र विल विवर (पढ़) छेद छिद्र (उच्चार),
ग्रवट गरत दर सुभ्र (ग्रख विल भू रो विसतार) ॥—२६२

जगत-१५, जन्म-७ नांम

लोक भुवन जगती खलक ग्रालम भव दुनियांण,
जग जिहांन दुनियां जगत (जिम) संसार (सुजांण) ।—२६३
विस्व दुनी सैंसार (वद) उतपत पैदा (ग्राख),
जनम जणी उतपन जणण भव उतपत्ती (भाख) ॥—२६४

सांस-३, उसांस-१, निसांस-४ नांम

सांस सुवास (रु) स्वास (सुण सुणज्यो फेर) उसांस,
वहिरमूह रातन (वको) निस्वास (रु) नीसांस ॥—२६५

सुख-४, दुःख ६ नाम

सात निरव्रती सरम सुख आरति दुख आमील,
कच्छर प्रसूतिज दुख कसट असुख वेदना (ईल) ।।—२६६

आधि १, व्याधि १, सदेह ७, दोष ३ नाम

आधी (मनरी आरती) व्याधी (तनरी वेख),
समय (इम) सदेह (सुण) द्वापर ससै (देख) ।—२६७
आरेक (रु) मासै (अखो) विचिकितसा (वाखाण),
दोस (अनै) आश्रव (दखो जिम आदी) नव (जाण) ।।—२६८

स्वभाव ८, स्नेह ५ समाधि-४, धर्म-२, पूर्व कर्म व प्रारब्ध ३ पाप १३, अभिप्राय-५ नाम

प्रकृत रीत लच्छण (पढो) सहज सरूप सुभाव,
शील (वळे) ससिद्धि (सुण) हारद प्रेम (सुहाव) ।—२६९
प्रीती प्रीत सनेह (पढ अख) समाधि अवधान,
समाधान प्रणिधान (सुण) सुकृत धरम (सुजान) ।—२७०
श्रेय पुण्य व्रस (फेर सुण) दैव भाग विधि (देख),
कलक पाप अघ पक (अख) पातक दुसक्रत (पेख) ।—२७१
(लखो) दुरित कळमस कळुस असुभ अह तम (आख),
अभिप्राय आसय (अखो) भाव छद मत (भाख) ।।—२७२

शीत १२ नाम

जड (जिम) सीतळ सिसिर (जप) सीत ठड सी (सोहि),
हेम तुखार सुसीम हिम जाडो पाळा (जोहि) ।।—२७३

उष्ण-७, कडा ६, नर्म २, मधुर ४ नाम

उन्ह तीछण खर उसण तीव्र चड पटु (तेम),
ववखट करकस क्रूर (कह जप) कठोर द्रढ (जेम) ।—२७४
कठण जरठ खर परुस (कह) कोमळ म्रदु (कुहात),
रसजठो (अर) मधुर (मुण) स्वादू स्वाद (सुहात) ।।—२७५

खट्टा ३, खारा २, कडुवा ४ नांम

पाचन (खाटो अमल (पढ) लवण सरवरस (लेग),
मुखधोवण कडवो (मुण) ओखण कटु (अदरेख) ।।—२७६

कसेला-३, चरपरा-२, सफेद-१२ घूसररंग-१ नांम

तोरो तुवर कसाय (तव) चरको तिकत (चवात),
धवल सेत सित विसद (धर) अरजुण सुचि अवदात।—२७७

धोळ सुकळ पांडू (धरो) पांडुर गोर (पढ़ात,
कंचित धोळा रंगनूं) धूसर (नांम धरात)॥—२७८

पीला-३, हरा-५, कबरा-६ लाल-५ नांम

पीतळ पीळो पीत (पढ़ लखो) सवज पालास,
(राख) हर्‌यो हरियो हरित (मुण) करवुर कळमास।—२७९

सवळ चित्र चित्रक (सुणूं अवर) कावरो (आख),
लाल रगत लोहित (लखो) रोहित सोणक (राख)॥—२८०

नीला-काला-६, लाल-पीला मिला हुआ-४ नांम

(सुणूं) नील काळो असित सांवळ मेचक स्यांम,
(पीत रगत) पिंजर (पढ़ो) पिंग कपिल हरि (पांम)॥—२८१

शब्द नांम

सवद धुनी सुर रव (सुणूं) निनद घोस रुत नाद,
आरव ध्वान विराव (इम) ह्राद स्वांन निर्ह्राद॥—२८२

सप्तस्वर नांम

सड़ज रखभ गंधार (सुण) मद्धम पंचम (मांन),
धैवत (निखध) निखाद (ये सातूं सुर सूजान)॥—२८३

कोलाहल-२, हिनहिनाना-२, रंभाना-३, चहचहाना-२ नांम

कोलाहल कळकळ (कहो) हेसा हींस (सुहात),
रंभा हूंभा गायरव कूजित विवर (कुहात)॥—२८४

पंक्ति-४, जोडा-७ नांम

माळा तति राजी (मुणूं लेखा) वीथि (लखाय),
जुगल दुतिय द्वै दुंद जुग यामल जुगम (अखाय)॥—२८५

बहुत-१०, थोड़ा-८, सूक्ष्म-२, लेश-३, लंबा-२ नांम

भोत प्रचुर पुसकळ वहुत वोत घणां (वाखांण),
भूरी भूय अदभ्र वहु तोक तुच्छ तनु (जांण)।—२८६

अनप छुद्र क्रस दभ्र अग॒ पेलव सुच्छम (पेख),
लम (भनै) तुट वरण (नखो) दीरघ आयत (देख) ।।—२८७

ऊचा ५ नीचा ४, छोटा २ नाम

तुग उच्च उन्नत (अक्खा) ऊचो उच्छित (आन),
नीच कुवज वावन खरव लघु (अर) ह्रस्व (लखान) ।।—२८८

चौडा ७, विस्तार ३ नाम

व्यूढ विपुल गुरु महत वहु प्रयुळ विसाल (पढाव),
व्यास (वळे) विसतार (वर इम) आभोग (अढाव) ।।—२८९

सक्षेप ४, टुकडा ६ नाम

समाहार सछप (सुण) सग्रह (वळे) समास,
अधर खड खडळ (अखो) भित्त विहड दळ (भास) ।।—२९०

विभाग ६, पवित्र ५ नाम

वाटो भाग विभाग वट वट अस (विख्यात),
पावन पुण्य पवित्र (पढ) पूत पवित्तर (पात) ।।—२९१

मैला ५, निमन ११ साम्हन ३ धुला हुआ २ नाम

मैलो कळमस मळीमस कच्चर मलिन (कुहात),
उजवळ ऊजळ ऊजळो सुचि सुच विमळ (सुहात) ।—२९२
सुध विसुद्ध निरमळ (सुण॒ आख) विसद अवदात,
समुखीन अभिमुख समुह साधित धौत (सुणात) ।।—२९३

खाली ५ सघन ५ नाम

रिक्तक रीतो रिक्त (रख) सूनू तुच्छ (सुणेह),
निविड निरतर घन प्रभण अविरळ गाढ (अखेह) ।।—२९४

नया ४ पुराना ५, जगम १ थावर १ नाम

नूतन नवो नवीन नव प्रतन (रु) जरत पुराण,
(रखो) पुरातन जीरण (क) जगम थावर (जाण) ।।—२९५

निकट ७ बाका टेढा ७ चचल ६ नाम

नीडो निकट सनीड (इम) सविध समीप (सुहात),
सनिधान आसन (सुण) कु चित कुटिळ (कुहात) ।—२९६

वक्र वांक (अर) वांकड़ो वेल्लित नमत (सुबोल),
चळ चंचळ अणथिर चपळ तरळ चळाचळ (तोल) ॥—२६७

अकेला-५, पहिला-७, पिछला-५, बिचला-२ नांम

एकाकी एकक (कह्रो) अवगुण हेकल एक,
पहिलो आदिम आद (पढ़ वळै) प्रथम (सविवेक) ।—२६८
पूरव परथम अग्र (पुण) अंतिम अंत (सु आख),
चरम (रु) पच्छिम पाछलो मांझर मद्धम (भाख) ॥—२६६

बीच-४ सादृश्य-६ नांम

विच विचाळ (अर) बीच मझ (कह) उपमां अनुकार,
ककसा (अर) उपमांन (कह) उणियारो उणिहार ॥—३००

प्रतिबिंब-५, प्रतिकूल-४ नांम

बिंब च्छद प्रतिबिंब (वद) प्रतिनिधि प्रतिमां (पेख),
प्रतिलोमक प्रतिकूळ (पढ़) वांम प्रतीप (विसेख) ॥—३०१

निरंकुश-३, प्रकट-३, गोल-२ नांम

उच्छृंखळ उद्दाम (अख एम) अनरगळ (आख),
प्रकट व्यक्त उलवण (पढ़ो) वरतुल गोळ (विभाख) ॥—३०२

भिन्न-३, मिला हुआ-२, अंगीकार-३ नांम

जुदो भिन्न इतरत (जपो) मिश्रित मिसिर (मुणात),
अंगीकृत प्रतिश्रुत (अखो) संश्रुत (वळै सुणात) ॥—३०३

रक्षित-५, काम-३, रहना-२ नांम

गोपायित त्राता गुपत रच्छित त्रांण (रखेह),
क्रिया विधा (अर) करम (कह) असना थिती (अखेह) ॥—३०४

अनुक्रम-४, आलिंगन-३ नांम

आनुपूरवी अनुक्रम परिपाटी क्रम (पेख),
आलिंगन परिष्वंग (अख) उपगूहन (अवरेख) ॥—३०५

विघ्न-४, आरंभ-४ नांम

अंतराय प्रत्यूह (अख) विघन विवाय (विख्यात),
क्रम प्रक्रम उपक्रम (कहो इम) आरंभ (अणात) ॥—३०६

वियोग ३, कारण-७ नाम

बिरह वियोग विजोग (बक) कारण नमन (कुहात),
करण बीज हेतु (कहो) निमित्त निदान (मुहात) ॥—३०७

कार्य-३, विश्राम २, रक्षा २ नाम

अरथ प्रयोजन (एम ग्रख) कारज (वळे कहाय),
बिसभक विसराम (वद) रच्छा त्राण (रहाय) ॥—३०८

चिन्ह नाम

लाद्दण लच्छण (अर) लछण अहनाण (र) ऐनाण,
चहन चिन्ह (ओळ चवो) सहनाणक सैनाण ॥—३०९

भैरव नाम

(भव चावडाराचेलका) भैरव भैरू (भाख),
भैं वाण (ग्रर) भैरवा (एम) खेतळा (ग्राख) ।—३१०
चामुडानदन (चवो जेम) कमाळी जोध,
मतपाळ (आखो वळे) सभु लागडा (सोध) ॥—३११

करनीदेवी नाम

करनल करनियाणी (कहो ईस्वो) धावळियाळ,
(सुग) करनी महियामघू आयी लोवडियाळ ।—३१२
धावळवाळी (ओर घर) देमणोकपत (दाख,
ग्रत नाम सब ईहगा आयी रा ऐ आख) ॥—३१३

ग्रम्बर नाम

ग्राम्बर ग्रम्बर ग्रक (इम) ग्रच्छर आक (ग्रसान),
अम्बर बरण ग्रच्छर (ग्रखो) दमकत (वले दिखान) ॥—३१४

डाकिनी नाम

डाकण डायण डायणी (कहो) डाकणी (एम),
ग्रामरक्षायीग्रामणी जरखवाहणी (जेम) ॥—३१५

भूत नाम

भूत परेत पिसाच (भण) प्रेत (र) जद (पडान),
मगम मलीच मळीच (सत्र ग्राटू नाम मसान) ॥—३१६

स्याहरी-२, चुड़ैल-४ नांम

सकोतरी (ग्रर) स्याहरी चूडांवण चूड़ेल,
पिसाचणी (ग्रर) प्रेतणी (गण अतरा सिव गैल) ।।---३१७

इति श्री चारण मिश्रण सूर्य्यमल्लात्मज मुरारिदान
विरचिते डिंगल भाषा कोषे तृतीयः खण्डः समाप्तः

अनेकारथी - कोष

कवि उदैराम विरचित

अथ अनेकारथी लिख्यते

दोहा

एक सबद पद में उठै अरथ अनेक उपाय,
अनेकारथ 'उदा' उकत विवधा नांम वणाय ॥—१

माला नांम

माळा रामभक्त सुमरणा नांम (दांम) हरनेह,
गुणांरणी मृक भृज गुणवळी ('उदा') सिमर (अछेह) ॥—२

जुगल नांम

जमळ जुगळ यम दुंद जुग उभय मिथुन द्वय (आंण),
दोय करग चक्र दंपती (जुगळ) जांम (ए जांण) ॥—३

सुरभी नांम

चंदण गऊ अग अत (चढ़ै) सुमनावळी वसंत,
अंतरादि अगमद यसा गांधीहाट (गणंत) ॥—४

मधू नांम

सुजळ दूध मदरा सुधा (सुण) नभ चैत वसंत,
विपन मधू मकरंद (वळ) मधूसूदन माकंत ॥—५

कल नांम

कळ सूरार निखंग (कहि कळ) कळजुग कळेस,
कळचाळा (कळ) जुध (कहि विलसै देस - विदेस) ॥—६

आतम नांम

मन बुध चित अहंकार (सुण) धरम जीत निरधार,
(त्यूं) सुभाव (जग) आतमा परमातमा (पसार) ॥—७

धनंजय नांम

पवन धनंजय (नांम पढ़) अगनि (धनंजय आख),
पथ (धनंजय की प्रभा भुजां क्रश्ण वळ भाख) ॥—८

अरजुण नाम

ससारजुण अरजुन (मुणँ) द्रुमणारजुन तर (दाख ,
पथ अरजुन हरि प्रिय सखा सो भारथ जय साख) ॥—९

पत्र नाम

परण पत्र रथ (पत्र पढ) वाहू (पत्र बळ) वित्त ,
(पत्र) विहगम (पख भू चचळ पौहचँ) चित्त ॥—१०

पत्री नाम

(पत्री) खग (पत्री) विटप (पत्री) कमळ (प्रकास ,
पत्री) सर (जुध पथ के जीतो भारथ जास) ॥—११

बरही नांम

(बरही) सिखि (बरही) विरख (बरही) कुरकट (वेस ,
बरही) मोरचद्रावळी (हर सिर मुगट हमेस) ॥—१२

काम नाम

काम काज (भव जग करै काम) मदन (को नाम ,
काम) भोग अभलाख (कहि मो सारै घणस्याम) ॥—१३

धांम नाम

तेज धाम (अरु धाम) तन (धाम) जोत ग्रह (धाम) ,
किरण (धाम कोटक कळा सो सुदर घणस्याम) ॥—१४

वांम नाम

(वाम) मनोहर (वाम) भव कुटळ (वाम कहि) वाम ,
(वाम हाथ आगँ वधँ सवादौ सग्राम) ॥—१५

भव नांम

(भव) महेस जग जनम (भव भव) कल्याण (भणत ,
भव भव भज भगवत नै कारण) कमलाकत ॥—१६

कळप नांम

(कळप) कपट दिव (कळप कहि कळप) वुध परवास ,
(कळप) समर रथ कलपवृख (जगनाथ भुज जास) ॥—१७

कर नांम

(कर) भुज हस्तीसुंड कर (कर लागै कर नांम,
कर) चिग्रिया (रख दूर कर नित सिमरी हर नांम) ॥—१८

दर नांम

(दर) जीवादक भूमदर (दर) वळ हर दरवांन,
(दर) भ्रमत (दर) संग (दर भज 'उदा' भगवांन) ॥—१९

वर नांम

वर दाता सिव सेष्ट (वर वर) सुंदर (वाखांण,
वर) दूलह श्रीक्रष्ण (वर जग गोपीपत जांण) ॥—२०

व्रख नांम

(व्रख) रास मघवांन (व्रख) करण (व्रख व्रख) कांम,
(व्रख) धोरी तर धरम (व्रख) मुरतर (व्रख घणस्यांम) ॥—२१

पतंग नांम

रंग (पतंग पतंग) रव (त्यौं) सिग्र कीट (पतंग),
कैता गुडि (पतंग कहि) तर जगरंग (पतंग) ॥—२२

पल नांम

(पल) आमख (भाखै प्रथी) खट उसास (पल ख्यात,
पल) भारपत कव पलक (नै) विपळ (साथ विख्यात) ॥—२३

दल् नांम

(दळ) तरपत्रा (दाखजै दळ) नृपफौजदुगंम,
(दळ) लाडू (दळ) पंक प्रक (सो हर मुगट सनंम) ॥—२४

बल् नांम

धीर बीरज (बळ) धरम नृपदळ बळ (निरधार,
बळ) हासी दईतंद्र (बळ) सुंदर (बळ) ततसार ॥—२५

अल् नांम

(अळ) पूरण समरद्ध (अळ अळ) समरथ (कथ आख,
अळ) भूखण गुण भूठ (अळ रांम सरण गुण राख) ॥—२६

वय, जीव नाम

(वय) विहग (वय) काळ (बळ वय वय) क्रम विसतार ,
ससमुर गुर ग्रातम (सदा एता जीव उचार) ॥—२७

मार, सार नाम

सुधा (मार) विख (मार सुरा मार) काम म्रत (मार) ,
धीरज वीरज वळ धरम सत (कोटी) घ्रत (सार) ॥—२८

कलभ नाम

करी उतावळ क्लुख (कहि एता कलभ उचार) ,
आश्रय सावरा गयरा नभ (वळ) भाद्रवौ (विचार) ॥—२९

वसु, पटु नाम

सुर अगनी दुत जळ सद्रव (ए वसु नाम उचार) ,
तीखरा निपुरा निरोग (तव विध पटू नाम विचार) ॥—३०

तुरग, कुरग नाम

मन तुरग धनपख (मुरा) बाज तुरग (वखारा) ,
रग (कुरग कुरग) म्रग जग पतग (रग जारा) ॥—३१

ग्रातमज, कबध नाम

काम रुधर सुत (कु कहै नाम आतमज न्याय) ,
सिरविरासुभट (कवध सुण सर) ग्रासुर (दरसाय) ॥—३२

हस, बांण नाम

रव अम धीरट जीव (रट) छद (हस) छिव ग्यान ,
सरग तीर वळ सुन (सदा वदै बाण विदवान) ॥—३३

पयोधर, भूघर नाम

तररा मेघ कुच रोततर (नाम पयोधर नीत) ,
गिर नृप आदवराह (गण भूधर कहो अभीत) ॥—३४

बरन, गोत्र नाम

सार च्यार ज्ळपत (सदा) विसधर वररा (विख्यात) ,
सईल मिखर कुळ (नाम सुध गोत्र तीन सग न्यात) ॥—३५

तनु नांम

तात सुछम विसतार (तनु) विरला (तनु) विधान,
(कव सिस मूरख वाळ कहि विण भगती भगवांन) ॥—३६

जाल, काल नांम

जाळ झरोखा (जाळ गण) मंद दंभ ग्रहमीन,
काळ असत वयजम (कहां रहो रांम रस लीन) ॥—३७

ताल, व्याल नांम

(ताळ) ताळ हरताळ सर (ताळ) राग तर (ताळ),
दुष्ट नाग गज अंतदिन (व्याळ नांम विकराळ) ॥—३८

जलज, तम नांम

मीन कमळ मोती मयंक संख (जळज तत सार),
तमस क्रोध राहूं तिमर (विध तम नांम विचार) ॥—३९

गुण, अव नांम

अगुण सूत तूजी (तणा कर गुण) हरगुण क्रीत,
गिरधण सवता ख क (गुण पढ़ अवनांम पुनीत) ॥—४०

वन, घण नांम

वन वारद पाती (वळै) वन (वन नांम वताय),
घणा वादळ विसतार (घण) घण (सूं लोह घड़ाय) ॥—४१

वरण नांम

वरण श्रुती च्यारूं-वरण अछर (वरण उचार);
वरण-दुजादिक रंग-वरण (अवरण ब्रह्म उचार) ॥—४२

पीत, बुध नांम

पीत सिसू नौका (पढ़ौ पीत पीत वरठाय),
पंडत हरि-अवतार (पढ़) ससिसुत वुध (सुणाय) ॥—४३

अनंत, क्षय नांम

गिगन सेस अनेक (गण यक) हर-रूप (अनंत),
रोग (र) अळै विनास (रट पद क्षय नांम पढ़ंत) ॥—४४

राजीव-लोचन नाम

जळ सम मुक्ता मीन (जप) राम (नाम राजीव),
रस देही जन व्यापारण (दुत मुरलोक रईव) ॥—४५

शुक्र, खग नाम

जेठमाग वारज अगन मुक्राचारज सुक्र,
समर वप वन विहग मुर वारद मग खग वक्र ॥—४६

कलाप, ब्रह्म नाम

गण तुनीर विवळपगनी वेत्री पत्र कलाप,
(देह) जीव विध ब्रह्म दुज एक (ब्रह्म) जग (आप) ॥—४७

उडुप, मद नाम

रवि विहग कईवरत समि नाव उडुप निरधार,
ग्रलप मनी मग मूढ अध (एता मद उच्चार) ॥—४८

वारन, स्यंदन नाम

वरणजण वगनर गयद (वळ) वारण (नाम वनाय),
चितुरगरथ जळ (चढ सिंदन नाम सुगाय) ॥—४९

पथी, कौसक नाम

राह ग्राह ससि मदन (रट) वटवी पथी (वेस),
विसवामित्र गुगळवृखी ग्रळूक कौसक (ग्रेस) ॥—५०

पौहकर, ग्रबर नाम

जळ नभ तीरथ मुडगज वारज पौहकर धाण,
ग्रावृत नभ ग्रगुरादर्द (जुगती ग्रबर जाण) ॥—५१

सबर, कवल नाम

जळ ग्रासु गिर गाठ (जप) सगना सबर साख,
गोगळ तनजळ वाहगन ऊनीकावळ (आख) ॥—५२

नग, नाग नाम

गिरतर जवहर नगर (नग विध नग धाम बखाण),
काकोदर गज पत्र कुलट (नाग नाम निरवाण) ॥—५३

फरन, अज नांम

श्रवण पोत रवमुत (सदा करन नांम प्रकास),
विध सिव बोक अनंत वय जोवनादि (अज जास) ॥—५४

सिव, दुज नांम

सुख कल्याण हर श्रेष्टतर सलिल (नांम सिवसार),
पंखी रद ब्रामण (पढ़ौ ए दुज नांम उचार) ॥—५५

विरोचन, वल नांम

सिखाभांण मस देत (सुण नांम विरोचन नेम),
हरि गुजरी असनहद (पढ़) वळराजा (प्रेम) ॥—५६

वल, तरक नांम

पावकवृडहा देत (पुन) वलप्टक (नांम वताय),
न्याय विचार जुदा (निरख एता तरक उपाय) ॥—५७

रज नांम

रज रजवट आरत्त (रज रज) वांमातन (रीत),
रजरेणा मन दीन-रज (पढ़ रज) पाप अनीत ॥—५८

कंबु, भुवन नांम

संख रतन खोडसावरत (कंबु नांम कहाय),
गगन नीर सुरभुवण (गण भुवण नांम मन भाय) ॥—५९

कुस, कूट नांम

दनु सीता-सुत जलदरभ (ए कुस नांम उजास),
कपट अहर गिर (वोहत कहि पढ़ै ए कूट प्रकास) ॥—६०

खर, हरनी नांम

गरधभ राकस सांन (गण) तीखण खर (कहि तोल),
उमा भृगी जूथी (एता) खित मन हरणी (खोल) ॥—६१

कुंज, जम नांम

मंगल भोमासर (समझ) तरकुंज (नांम वताय),
जुगकृतंत (अरु) राह (जप) जम (का नांम जणाय) ॥—६२

धात्री, सिवा नाम

धाय आवळा (कहि) धरा धात्री (नाम धराय),
हरडे फोहीवळहरा (सिवा नाम सभळाय) ॥—६३

रस, रंभा नाम

वाची जिम्या दाम (कहि) रसन (नाम रचाय),
उमा कदळी उरवसी (दळ रंभा दरसाय) ॥—६४

माया, यळा नाम

दया नेह छळ (दाखजै) द्रव माया (हर दाख),
यळ बुध तिय मनहर यळा (भेद यळा गुण भाख) ॥—६५

सुमना, जोत नाम

मदनी तिय (वळ) मालती सुमना कुसुम सहेत,
दीपकरण रिख अगन दुत धूम जोत (जगवेत) ॥—६६

यक्ष, विध नाम

यळ सुर मनहर अवका पिड यज्ञ परताप,
धाता देव विधान (कहि) आविध करता (आप) ॥—६७

निसा, अजा नाम

निसा रात हळदी (निसा निसा) पको (निरधार),
अजा अज्या माया (अजा) ब्रह्महू तविसतार ॥—६८

जिह्न, हस्त नाम

कपट मूठ आळस (कहै) जिह्न (नाम धरा जाण),
करीसूड (कही) नखत्र (कहि विदवत हस्त वखाण) ॥—६९

क्रतत, मित्र नाम

सास्त्रागम सिधत (कहि) जम (क्रतत ज्यू ग्यान),
सवता सजन गुण सिखा (नर जग मित्र निधान) ॥—७०

सारंग नाम

गज हय केहर गिगन गिर कज प्रदीप कुरंग,
दादर चातुक सम दिनद सिखी अळ सुर (सारंग) ॥—७१

हरि नांम

कपी केहर केकांण (कहि) अळियंद अरविंद,
वाघ गयंद कुरंग वन (चय) नभ कंचण चंद।—७२
पावक पांणी पय पवन नाग गयंद नरंद,
गिर हरि गिरधर (सिमर गुण नित-नित वृज आनंद)॥—७३

ध्रू.व, सुमन नांम

(पद) निसचय ध्रूताळ पद जोगादिक (ध्रू. जांण),
मन वसांन कुसमावळी (वळ) रिख सुमन (वखांण)॥—७४

विटप, दान नांम

पलव शृंग विसतार पुन तर वृख (नांम वताय,
दांन देत) गजदांण (दस दांन) दांण (दरसाय)॥—७५

रस नांम

नवरस घ्रत जळ नूतरस अम्रत विस (रस) देख,
रस-विद्या वर प्रेम-रस (सदा रांम गुण मीख)॥—७६

सनेह नांम

तेल धिरत मन प्रीत (तव सो सनेह तत सार,
'उदा' धर लै ध्यांन उर करलै नंदकुमार)॥—७७

गउरी नांम

सुभ्र उदय कुळ जसवती उभ अप्रसतुत (आख),
दल गोरोचन देवकी (संग) नागोरी (साख)॥—७८

हार नांम

उपवन रूपा ढिग अजय मुगता कुसम (मिळाय),
खेत (हार) खंगत खड़ी (जुगती हार जणाय)॥—७९

क्षुद्रा नांम

नटी क्षेत्र उतपत निठुर असि वैस्यादिक (अेह),
मदमाखी खळजन (मुणै क्षुद्रा) खरकीखेह॥—८०

वाह नांम

पवन खेत अस सिस (पढ़ी) वहण मेघ परवाह,
(वाहण) रथ-इत्यादि (वळै विध वखांण गुण वाह)॥—८१

कुय नांम

केथा ववळ कीट (कहि) प्रातसथाईप्रीत,
कूयोकारज (कुय वहो रचो यना कुय रीत) ॥—८२

भाव नाम

पूज्य मनुज रम उतपती प्रीत पदारय (पेख),
मनहुलास पूरणमया (विवधा भाव विसख) ॥—८३

कुतप नाम

तिल ववळ खग पात्र (तव) सलल बर कुस छाग,
दोहित अगनी काळ (दख यता कुतप कर) आग ॥—८४

भग नाम

श्री सूरज दिनकर सुखद महिमा (ज) ससि अगक,
ख्याती सग्या सुभकळा सुभग जोन (भग सक) ॥—८५

कीलाल नाम

नीर खीर घ्रत मेघ नद मद रव पुष्प (प्रमाण,
वव यतरा कीलल कहि जाणं गुणी सुजाण) ॥—८६

देव नांम

वाळक कुसटी नृप विविध वरखा गुण विवहार,
पत मुगनो जीवत प्रथी (वाळक देव विचार) ॥—८७

ललाम नाम

पुरख गुणी कोमळ (पढो) सवर स्निग्ध सेल,
भूखातमा विदग्ध (मण नाम ललाम) नवेल ॥—८८

श्री नाम

(रट) करता भरता रमा श्री अछर मुख सार,
(विदग्ध ग्राद ज्यू रगण विध श्री श्री श्री ततसार) ॥—८९

• • •

एकाक्षरी नांम - माला

वीरभाण रतनू विरचित

कुय नांम

केथा कवळ कीट (कहि) प्रातसयाईप्रीत,
कुयोकारज (कुय कहो रचो यना कुय रीत) ॥—८२

भाव नांम

पूज्य मनुज रस उतपतो प्रीत पदारथ (पेख),
मनहुलास पूरणमया (विवधा भाव विसेख) ॥—८३

कुतप नांम

तिल कवळ खग पात्र (तव) सलल बर कुस छाग,
दोहित अगनी काळ (दख यता कुतप कर) आग ॥—८४

भग नांम

श्री सूरज दिनकर सुखद महिमा (ज) ससि अगक,
क्राती सग्या सुभक्ळा सुभग जोन (भग सक) ॥—८५

कोलाल नांम

नीर खीर घ्रत मेघ नद मद रव पुष्प (प्रमाण,
कव यतरा कीलल कहि जाणै गुणी सुजाण) ॥—८६

देव नांम

बाळक कुमटी नृप विविध वरखा गुण विवहार,
पत मुगनी जीवत प्रथी (बाळक देख विचार) ॥—८७

सलाम नांम

पुरस गुणी कोमळ (पढो) सबर स्निग्ध सेल,
भूसानमा विदग्ध (भण नाम सलाम) नवेल ॥—८८

श्री नांम

(रट) करता भरता रमा श्री ग्रछर मुग गार,
(विवध आद ज्यू रगण विध श्री श्री श्री तनमार) ॥—८९

• • •

श्री गणेसाय नमः

अथः एकाक्षरी नांम - माला लिख्यतेः

दूहा

कहत अकार ज विस्नू कूं, पुनि महेस मत मांन।
आ ब्रह्मा कूं कहत है, इ—ई जुग मार जांन ॥—१

लघु उकार संकर कह्यो, दीरघ विस्नु स देख।
देव-मात लघु री कहै, दीरघ दनुज विसेख ॥—२

लघु लि—ली कार सुर मात पुनि, नागमात गुरु होय।
ए जु कहत है विस्नु कूं, ऐ जु महेसुर सोय ॥—३

ओ ब्रह्मा जु अनंत औ, परब्रह्म अभिमांन।
कविकुळ सब ही कहत यूं, अ महेसुर आंन ॥—४

क ब्रह्मा कूं कहत कवि, वाय सूर पुनि लेख।
कहत आतमा सुख कूं, क प्रकास अरु लेख ॥—५

कं सिर कं जळ कंजु सुख, कूं धरती धर चित्र।
कुं....कू जांणियौ, वजु विवेक धरि चित्र ॥—६

खं इंद्रीय नभ खं कह्यो, खं जु सरग पुनि सोय।
कहै सुपुन्य से खं सचै, खं.....यूं होय ॥—७

अ : विस्णु, महेस। आ : ब्रह्मा।
इ ई : मार। उ : संकर। ऊ : विष्णु।
रि (ऋ) : देवमाता। री (ॠ) : दनुजमाता।
लि (लृ) : सुरमाता। ली (ॡ) : नागमाता।
ए : विस्नु। ऐ : महेसुर।
ओ : ब्रह्मा, अनंत शेषनाग। औ : परब्रह्म, अभिमान।
क : ब्रह्मा, विस्णु, वायु, सूर्य, प्रकास, आत्मा, सुख।
कं : मस्तक, जल, कमल, सुख, पृथ्वी। कुं : विवेक, वजु।
खं : इन्द्रिय, नभ, स्वर्ग, पुन्य।

श्री गणेसाय नमः

अथः एकाक्षरी नांम - माला लिख्यतेः

दूहा

कहत अकार ज विस्नू कूं, पुनि महेस मत मांन ।
आ ब्रह्मा कूं कहत है, इ—ई जुग मार जांन ॥—१

लघु उकार संकर कह्यो, दीरघ विस्नु स देख ।
देव-मात लघु री कहै, दीरघ दनुज विसेख ॥—२

लघु लि—लृ कार सुर मात पुनि, नागमात गुरु होय ।
ए जु कहत है विस्नु कूं, ऐ जु महेसुर सोय ॥—३

ओ ब्रह्मा जु अनंत औ, परब्रह्म अभिमांन ।
कविकुळ सब ही कहत यूं, अ महेसुर आंन ॥—४

क ब्रह्मा कूं कहत कवि, वाय सूर पुनि लेख ।
कहत आतमा सुख कूं, क प्रकास अरु लेख ॥—५

कं सिर कं जळ कंजु सुख, कूं धरती धर चित्र ।
कुं......कूं जांणियो, वजु विवेक वरि चित्र ॥—६

खं इंद्रीय नभ खं कह्यो, खं जु सरग पुनि सोय ।
कहै सुपुन्य से खं सवै, खं......यूं होय ॥—७

अ : विस्णु, महेस । आ : ब्रह्मा ।
इ ई : मार । उ : संकर । ऊ : विष्णु ।
रि (ऋ) : देवमाता । री (ॠ) : दनुजमाता ।
लि (ऌ) : सुरमाता । ली (ॡ) : नागमाता ।
ए : विस्नु । ऐ : महेसुर ।
ओ : ब्रह्मा, अनंत शेषनाग । औ : परब्रह्म, अभिमान ।
क : ब्रह्मा, विस्णु, वायु, सूर्य, प्रकास, आत्मा, सुख ।
कं : मस्तक, जल, कमल, सुख, पृथ्वी । कुं : विवेक, वजु ।
खं : इन्द्रिय, नभ, स्वर्ग, पुन्य ।

घटा किंकणी मेघ सू, कह खकार सब कोय।
पुनि घुनि सू घूक है दक्ष गुणीजण लोय ॥—८

कहत ङकार जू भैरव कह अरु जि विसन जिय जान।
पुनि ङकार स्वर सू कहै, चतुर चोर कहु मान ॥—९

चद ही कहत चकोर सव, अरु ज चोर कह मान।
सोभा सू सव कहत है पक्ष सवद सू जान ॥—१०

छ निरमळ सव ही कहै, बहुरी विजुरी देख।
छदन कू कहत है कवि, पुनि जु सवर लेख ॥—११

कहत जकार जु वेग सू, अरु जु तेज सू कोय।
पूजा हू सू सब कहै जता जय न होय ॥—१२

कहत झकार जु भर रह बहुरि नस्ट कहु सोय।
पुनि भकार वचक कह्यो, घर घर स्वर ही होय ॥—१३

रप विपयातमा, अरु जु गायन ही गाय।
जर जर सवद सू कहत है सबै लकार बनाय ॥—१४

ञ प्रथवी सू कहत कवि, ट वायस वजु आन।
कहत टकार जु इस्वरी, वरहू जु स्वस्त न मानि ॥—१५

कहत वकार विसाळ सू, पुनि धन सू सव कोय।
चद म उलहू कहत कवि भ सकर ध्वनि सोय ॥—१६

ढक्का क्रू ढ कहत कवि, ध्वनि निगूढ कह जान।
पुनि णकार कहि जान सू अरु ज स्तुनि तकार सू आन ॥—१७

ख घटा किंकणी मेघ घुनि घूक।
ङ भरव। जि विस्नु जिय स्वर चतुर चोर।
च चकोर च॰ चौर सोभा पक्ष।
छ निमल विजुरी छेन्न सवर।
ज वग तेज पूजा जय।
झ भर नष्ट वचक स्वर रूप विषयात्मा गायन। ल जर-जर।
ञ पृथ्वी। ट वायस। ट ईश्वरी मोर (वरहू) स्वस्ति।
थ विशाल धन।
र्भ च॰ उलहू (उल्ल)। भ सकर ध्वनि।
ढ ढक्का (बड़ा ढोल) ध्वनि निगूढ। ण जान।

चोर क्रोध पुनि पुछ्रि कहूं, कहूं तकार दे चित्त ।
भय रक्षण जु थकार कहूं, सिला समूहि मित्त ॥—१८

वेद दांन दातांन सूं, अरु कलित्र दं मानि ।
धांन धात धन बंधन हि, कहत धंकार सुजु आनि ॥—१६

कहत जांन विसवास पुनि, अरु ज निखेध नकार ।
नौ नावक कूं कहत है, पंडित समझ निहार ॥—२०

प वन पातरी पवन कहूं, कहूं पकार नित मित ।
रग रव सु गुप्त फकार कहूं, प्रगट जु तिन कहूं नित ॥—२१

झंझा वाय झकार कहूं, कहूं फकार भय रक्ष ।
निस्ट जला सु फकार कहूं, अरु फकार ही दक्ष ॥—२२

फूंकारे फूं कहत कवि, अफळ वचन फू आदि ।
पुनि बकार संग्रांम कहि, अरु प्रवेस कहूं माहि ॥—२३

भ नक्षत्र पुनि भ्रमर भ, दीपत भांनु भूप ।
भय का भीक सब, ता कहूं चित न भूप ॥—२४

चंद्र रुद्र सिर मा कहत, मा लछी परमांन ।
माल मात अस्ता भी, पुनि बंधन मूजी नि ॥—२५

संजमकाळ यकार कहि, सूर श्रेष्ट मन मांन ।
जांन जात अरु त्याग कहूं, बुधजन कहत सुजांन ॥—२६

कांम अनुज अस्तु वज्र पुनि, सबद रूप धरि चित ।
कहु रकार जल स्व वन की, रटन भय कहू मित ॥—२७

त : स्तुति, चोर, क्रोध, पुछ्रि (पूंछ) । थ : भय, रक्षण, सिला, समूही, मित्र ।
दा : वेद, दान, तान । दं : कलित्र । धं : घ्यान, धातु, धन, बंधन ।
न : जान, विस्वास, निखेध । नौ : नाव ।
प : पवन, पातुरी, वन, नित ।
फ : फकार (ध्वनि) भय, रक्षा, निस्ट, (खराब) ।
झ : झंझावाय, फूं : फूंक । फू : अफळ, वचन ।
ब : संग्राम, प्रवेस । भ : नंक्षत्र, भ्रमर, दीपत, (दीप्ती) भानु भूप ।
मा : चंद, रुद्र, सिर, लछीं, माल, मात, अस्ता, बंधन, मूजी ।
य : संजम, काळ, सूर, श्रेष्ट, मन, जान, जाति, त्याग ।
र : काम, आग (अनल) अस्तु, शब्द, रूप, जल, वन, ध्वनि ।

इंद्र लवन दस व्याज पुनि रहि लकार पर सिद्ध ।
लो स्लख मलप सू कहै ल निस्तक कहू विध ॥—२८

सात्वन वर उर वीत कहू वकार समरत्थ ।
गति नय नर अह श्रष्ट पुनि कहू वकार के अथ ॥—२६

कहत सकार परोख कू पुनि सोभा अति श्रष्ट ।
ई कल्यान ह कहत है सजुकति पुनि प्रस्ट ॥—३०

सयनकाज सी कहत कवि वी दोउ सामान ।
कहत खकार परोख कू न खरीक हू ठान ॥—३१

कहत खकार जु स्नेह कू अरु सूलाक हूं मान ।
हर हकार विचित्र है हे सवघन ठान ॥—३२

कहत क्षकार जु क्षीम कू क्षमा क्षम का जान ।
आद अकार लकार लौं यह विघ वरनत मान ॥—३३

विहु-स्वन मुख सू नित रक खट अस्टादस ही पुरान ।
नाम-माळ एकाक्षरी भाखी रतनू भान ॥—३४

• • •

ल इन्द्र लवन (लगन) दस व्याज । लो स्नेस मलप । ल निस्तक विध ।
व सात्वन वर, उर, वीत (वित्त) समरत्थ गति नय (नीति या नगर) नर श्रष्ट ।
स सोभा परोख अति श्रष्ट । ई कल्याण सजुकति प्रस्ट । सी सयन (रति) ।
वी दोउ समान । ख परोख स्नेह सूना ह हर विचित्र ।
हे सबोधन । क्ष क्षीम क्षमा क्षम ।

एकाक्षरी नाम-माला

कवि उदयराम विरचित

अथ एकाक्षरी नांम - माला लिख्यते

दूहा

सार सार विद्या सकळ, समझै गुण ततसार।
कीरत सार उदार कर, देसळ जगदातार॥—१

श्री गणपत सरसुत सुमत, उकत वूवत अणपार।
अनेकारथ एकाक्षरी, "उदा" करो उचार॥—२

सुर अच्छर मात्रा सहित, एकै अरथ अनेक।
जुदी जुदी वरणो जुगत, वरणो नांम विवेक॥—३

ऊंकार नांम

ॐ ईस्वर मुगती (उचर) केवळरूप (कहाय),
मंत्र वीज वाचक (मुणौ) पूरणग्यान (पढ़ाय)।—४
अवय सरवारथ अवच (ॐ) प्रणवधुनअंग,
सरववीज (घट-घट सदा सोहूं सात प्रसंग)॥—५

अ नांम

संकर वृंमा श्री क्रसन अरक सिखा ससियंद,
पवन प्रांण सुखया प्रजा काळप्रमांण कवंद।—६
आदंछर जगऊपनौ (गण न्यारा गुण नांम,
अ अछर यतरा अरथ सरभ जोत घणस्यांम)॥—७

आ नांम

सिव सुरतर श्रम सरव गुण असतूत हय गय यंद,
चणकरिखी श्रुभ धांम चख (वद आ नांम विलंद)॥—८

इ नांम

सिव रव सेनानी सुची अज अहि मनमथ यंद,
वरण विक्ष धनवांन विध व्याळ ससी (इ विंद)॥—९

ई नांम

ईसुर कमला (वळ) अरुण वभ्र मुकर (वताय),
श्रीवंभया सुतवानत्रिय संक संवकस (सुणाय)।—१०

दयावाननर (दासजै वदै नम) विदवान,
(दीरघ ई के नाम दस गणौ एक) वृ मग्यान) ॥—११

उ नाम

नारदरिख आधीन रव सकर गवरी (मार),
स्वामीकारत तडत मम आशोवाद (उचार) ।—१२
रावन (नाम) वकाळ (रट) त्रगुण काळ ततरग,
(उदैराम धुर विहू उकन उ लघु नाम) उतग ॥—१३

ऊ नाम

पवन चद रव हर पनग पूरण दळद्री प्रेत,
विघ अगन मूरख वृवण (दीरघ ऊ कहि देत) ॥—१४

ऋ नाम

उमा रमा मर गर अनत वृक्ष साळ नळ वाम,
गुर पूरी सुत नीचगुण (गहि) अदती (ऋ ग्यान) ॥—१५

ॠ नाम

सकर विघ सुरपत क्रमन यम वृखमान वयद,
वरण अघी नरवर (जपो ॠ दीरघ परसद) ॥—१६

लृ नाम

अदती हर पकज अरुण पापी अनक निपुम,
मर हार्यो पाखड (नित कहि) मनेद्ध (लृ) वम ॥—१७

लॄ नाम

महापुरुख नृप मुदनर देविपुरुख चिहृन देव,
(कथा) कया नवेम्र (ईकयो भाम) पुत्र वच भेव ।—१८
पाशीनर अगद्वार (पड) वृषत्रिना नरवाळ,
(लॄ दीरघ के नाम लख विघ विघ माळ विमाळ) ॥—१९

ए नाम

मेग जीव सूरज विसनु वाळक दुज दनु वाण,
नानी मछळी वृधनर उदन ढेखौ (प्राण) ।—२०

(ग्याता गंथां भेद गण एक नांम यत पाद,
ए अई के भाखूं अवै निपुण सुणौ निनाद) ॥—२१

ऐ नांम

वचनवीज व्यापक विसव लोक सरूप (लखाय,
मुण) वछ्या सुरसुत मुकत (अई के नांम उपाय) ॥—२२

ऐ नांम [ग्रन्थांन्तरे]

नृप सिव विखम (रु) पूज्यनर क्रूर विविध कुलाळ,
उष्ट मूढ़ कप असुर (कहि) विखमायुद्ध (अई) वाळ ॥—२३

उ नांम

असुर जक्ष अज उतकष्ट अगस्तरिख धू (आख),
जख कव मुखक मंजार (जप भेद) गुरड (ए भाख) ॥—२४

ऊ नांम

सेख विधाता मुन ससी सुखी जार लघु (साख),
स्वान दळद अभ (प्राय सुण ऊ) थळ (कव आख) ॥—२५

अं नांम

पंकज पूरण ब्रंमपर दुर वरक्त दुख (दाख,
श्रेष्ट भुजन श्रीकृष्ण रौ अं अवधा जग आख) ॥—२६

अः नांम

वीतराग विसरगविधी ठौड़ यती ठहराय,
सुव चाकर (फिर) विसन सुत (अध अहन्याय उपाय) ॥—२७

क नांम

अगन विधाता आतमा वरही रव वनवास,
जम किंकर (कहि) रूपजग (पुन) गणक परकास ॥—२८

का नांम

यळा सेस दिव (गण) अलप कायर रथ परकास,
(कहत) निरादर (क्रूं कवि यौं का नांम उजास) ॥—२९

कि नाम

रमा क्रमण मघवान रव करख्य सिकारी (काज),
कदुख अगन वालम (कहो तव लघू कि सिरताज)।—३०
प्रसन तुच्छ गुण जुगपसा निंदा (की वर नाम,
वळ) विचार ओजग वृथा (रट 'उदा' श्री राम)॥—३१

की नाम

यळ कमळा हय गय अही वृखभ गुलाबी रंग,
जारपुरख चींटी जिभ्या पुरख रसत्र (प्रसग)।—३२
वाम कुबध कुळ रोख (वळ दीरघ की गुण दाख,
उदैराम सब तज अबै राम भजन मन राख)॥—३३

कु नाम

तनक तळाई उरज तट मरम सबद भू (सोय,
लघु कु नाम कुग्रार लख जुगत अरथ गुण जोय)॥—३४

कू नाम

कूप भूप गभीर (कहि) मघ पटाभ्रर (मंड),
कुभ (न) कुजत सबद (कहि) चित (कू नाम प्रखंड)।—३५
कारण द्रव भू आद (कहि) कारज (और) प्रकास,
(दीरघ कू के नाम दख जुगती यती उजास)॥—३६

के नांम

रतन खाण केकी (रटो) अनुगिन प्राण (उपाय),
गुण (के के यत्यादि कहि गोवद रा गुण गाय)॥—३७

कं नांम

क्लीब मद (रु) वळवत (कं) मरसन पवन सुणाय,
पुरख प्रणत कदप (पढ) भारथी पवित्र (भणाय)॥—३८

को नांम

मोर कनक चक्रवाक (सुण) बाळक कोप (रु) बाज,
(स्वात शिखी को नर दिमघ कथै मह हर गुण काज)॥—३९

कौ नांम

आप वृखभ नर धिष्ट (अव) कंद्रप जम जस काज,
(कौ कव अवधा गुण कही श्रोता सुणै समाज) ॥—४०

कं नांम

कांम सीस सुख जळ कनक कंज अनळ (कहि नांम),
पय सुभ दुख (रु) जहर (पढ़ कं के नांम सकांम) ॥—४१

ख, खा नांम

खाई घर पंकज खिती कमळा (खा कहि नांम,
चरणां चत्र भज चाह सूं सो नित करै सलांम) ॥—४२

खि नांम

गवण नासकाछिद्र (गण) रतन रता क्षयरोग,
कवनिवास (वळ नांम कहि सुण खि नांम संजोग) ॥—४३

खी नांम

विघ श्रंगाळ गुद मदन (वळ और) मळणगण (आख),
कुसळखेम (कुं खी कहै भेद यता खी भाख) ॥—४४

खु नांम

मदन विकळ गूघू मुखक सिखावांन सख धांम,
विघ खद्योत (के नांम वळ लघु खु वरण लख नांम) ॥—४५

खू नांम

कवजन सुरगर सूर (कहि) जीव नखी (खू जांण,
खू) कंगर जीवादि खित (विण हर नांम वखांण) ॥—४६

खे नांम

कव खेद सभीद्वार (कहि खे) खेचर (सहि) खग,
प्रांण (नांम खे वळ पढ़ौ सिव भुज जात सरग) ॥—४७

खै नांम

सिव नदी गन भ्रात सुत (मुणी मान खै नांम,
खै ए नांम वखाणिये रटो 'उदा' श्री रांम) ॥—४८

खो नाम

खज अरण अवराखवौ पुन्य खेड़ (कहि पात),
मानसहत भय मडमन (विध खो नाम विख्यात) ॥—५०

खौ नाम

ईस्वर मघवा भू अगनि जुगळ मोर भू (जाण,
कव यनरा खो नाम कहि वळ ख नाम बखाण) ॥—५१

ख नाम

मिव नभ यद्री रिख सरग ग्रह नृप सुख मुन्य ग्यान,
खज (र) खजन छिद्र खलु (विध ख नाम विधान) ॥—५२

ग नाम

ग्रसन गजानन राग कर पची पवन प्रधान,
प्राण गध जळ प्रीत (पढ वद ग नाम विदवान) ॥—५३

गा नाम

उमा रमा गगा यळा गिरा सक्त बुध ग्यान,
चौज ग्यान नाभ (गा चढौ वळे) धनी बुधवान ॥—५४

गि नाम

प्रढ वाक्य सारद (पडौ वळे) धनी बुधवान,
गिरा राम (गावै गुणां जै बुधवान जिहान) ।—५५
गुजा रव गुर वरण गण सुर (गौणि नाम सुणाय,
वृथा नाट गि हरि विना गोवद रा गुण गाय) ॥—५६

गी नाम

सोभा त्री मदरा सुधा वाणी सक्त (वताय),
वृम एक समता विधि (गी वाणी गुण गाय) ॥—५७

गु नाम

ग्रामवका अनीगुण अरक प्राण मनोज (र) पाज,
कूकर खर भय जुगत नर मुर गुण पय समाज ॥—५८

गू नांम

(कहिया गुण) मळ नदकूल (कूं) लघू वृद्ध त्रिय (लेख),
सतथि वस्तु ग्लांणि सदा दुनी तमक (गू देख) ॥—५८

गे नांम

राग जमक पाप सट (रट मुण) छंद गीत मलार,
(गेय कमत के नांम गण एता किया उचार) ॥—५६

गै नांम

सिव रव सोक पळास गत (अत गै नांम उचार),
छटा सरव (अत छोड नै सिव गै नांम संभार) ॥—६०

गो नांम

तर घर वाणी सरग (तव) यंद्री खग जळ (आख),
छंद वचन दिव वज्र छिव सुरतर सुरभी साख ।—६१
ग्लाळ वांण द्रप दर (गणौ) हसती वृखभ (कहाय),
किरण (वळै) रव सबद (कहि गो के नांम गणाय) ॥—६२

गौ नांम

क्रांती गणपत कुळ सद्रग (लख्य) लाज भू लाल,
देवलोक दिस वांण (दख) मसक जुगपती माळ ॥—६३

गं नांम

मलयाचळ हेमाद्री (मुण) गीत श्रष्ट गंभीर,
वाजा-राग-छतीसविध सरण तंत्रवती सीर ॥—६४

घ नांम

सुधरम गज सिव सिख सबद रव दधसुत घणराट,
ग्रहं (तज भुज अनंत कर घ के वळ कर थाट) ॥—६५

घा नांम

विघ देवी धुन वसुमती असुरी सची (उचार),
निरग किंकणी थापना घार घातकी मार ॥—६६

घि नांम

अगअसना (अर) च वर (मुण) वडरु धरम विसतार,
(कव घि नाम पद्य, कहि 'उदा' दीरघ उचार) ॥—६७

घी, घु नांम

इन अन वाढ कुमार दळ सुरगुर (घी के) सार,
अहि सठ घूक दयाळ (कहि तव घु नाम विसतार) ॥—६८

घू नाम

गज सुर घण मदरा गुदा यळ अग्यार अलूक,
नीलवर (घू नाम लख 'उदा' पढो अचूक) ॥—६९

घे, घै नांम

कव स्वान चौकी करा खोली (घे कर ख्यात),
रव धरमी पापी समर (सुन सुत घै दरसात) ॥—७०

घो नांम

यज धर गोह अहीर घर लोह अस्ववळ (लेख,
सवद वळै घो नाम सुण दुन घो भाखू देख) ॥—७१

घौ नांम

अस्व ताळ देता अघी रव विवाण रट (नाम,
कहिवळ) वासकलाल (को सो तज भज घणस्याम) ॥—७२

ध नांम

गत मलीन (घा) चित (गण) पापी नर पुन वान,
(उचर नाम ध के यता विध भाखै विदवान) ॥—७३

ड (ड) नांम

विखय प्राण वळ भैरव (ड) अम चचळ कुटवाळ,
(चवरादिक ड 'ड' नाम चव वद डा 'ड़ा' नाम विसाल) ॥—७४

डा (डा) नाम

यळ अघरादिक यदरा (पढ वळ लोक) पताळ,
(मुग) सुष्मगत सुखमणा (गुणियण भज गोपाळ) ॥—७५

ङि (ङ़ि) नांम

भय जुत अग सुछम (भणी) द्रग दुगधा सुर (दाख),
दखणा दुज (कूं दीजिए भेद ङि पछ्यूं भाख) ॥—७६

ङी (ङ़ी) नांम

(कव दीरघ ङी नांम कहि भेद हरि गुण भाख),
देवभूम यळ क्रकळ (दख) अहि नृप ठीवर (आख) ॥—७७

ङु (ङ़ु) नांम

गिड़व पवन पावन अगन (लघु ङु नांम लखाय),
व्याधी अवधा अग वचन उखर घर (ङू आय) ॥—७८

ङे (ङ़े) नांम

गज कपोळ पारद (गणौ) लाज स्यांम (कूं लेख),
अंजन कठण अमोल (कहि सो ङे नांम संपेख) ॥—७९

ङै नांम

पारासुर रिख (नांम पढ़) गंधक (नांम गणाय,
उदयरांम तोनूं यसा सो ङै नांम सुणाय) ॥—८०

ङो नांम

असतर पाडौ आरणौ (तव वळ) खचर तुरंग,
गवा-वंच सवदांगती सिहत दादुर (संग) ।—८१

प्राचत (व पुठै) स्यार (पर) सीह रुपहर (सार,
को) नाकढ़ मत (ङौ कहौ यतरा नांम उचार) ॥—८२

ङौ नांम

सस रव अगनी स्वारथी वैद भजन जंवाळ,
कंद-मूळ (अरथ कहि पढ़ौ) अजव (ङौ) पाळ ॥—८३

ङं नांम

जळ पय घ्रत सुख भग जहर चिहूर (वळे) चमूह,
अंग (वळै ङं नांम सुण) संगना माळ समूह ॥—८४

च नाम

ग्रालगन ज्वाळा अगन सस गण वदन (सुणाय),
ग्रोक मनोहर पुन अरथ (ह) ग्रबुध चोर (रचाय) ॥—८५

चा नाम

(कहू) विप्रकनौजिया कन्या क्रमना काज,
(कवियण चा के नाम कहि रटौ राम महाराज) ॥—८६

चि नाम

रव दिवाल चित्र माख (रट) अजा पिंड भय (ग्राख,
लघू चि नाम एता लखो राम नाम चित राख) ॥—८७

ची नाम

स्याही कगमी हस्तणी (वळ) हरजटा (वखाण,
कवियण फिर) माया (कहै जुगत दीरघ ची जाण) ॥—८८

चु नाम

काळ वज्र सरद (कहै) धर भय जुत उपघात,
(अवै नाम) नाडीयडा (वद चु नाम विदवान) ॥—८६

चू नाम

सुरतर खग रव पवन सर ताळा गणिकव (तोल,
वळे) लोद पळ (नाम वण) वक (दीरघ चू बोल) ॥—६०

चे नाम

रव समूह सम भ्रमन (रट) मन भ्रम कीर (मिळाय),
सुपरण वपन भेरी ससि (सो चे नाम सुणाय) ॥—६१

चै, चौ नाम

दूत चोर प्रेरक दुष्ट जुध (चौ नाम जणाय)
उद्यन नर गउ वृखभ भ्रम मावत रस चौमाय ॥—६२

चं नाम

चदन तिय पिय मुख चिरत द्रष्ट रप्ट दुखदाय,
भ्रमण जहर कव (च भणी एता नाम उपाय) ॥—६३

छ, छा नांम

केवी रव सग कुंज कर छिव पूरण (छ नांम),
क्रांती छाया हर ढकण रक्षक रछ्या (रांम) ॥—९४

छि नांम

कानि कुलाल सिकारी (कहि) काळ (ए) नीव कुठार,
(एक) विबुध ग्रवधा (यता तव छि लघु ततसार) ॥—९५

छी नांम

ग्रगवसना कटमेखळा सीव जीव मदसार,
(दाखो) कांती छछुंदरी (ए छी दीरघ उचार) ॥—९६

छु नांम

मसक जुगपसा कीर (मुण) ग्रसना (सबद वताय,
कहिया छु नांम लघु कर कवि जुगती वडै जणाय) ॥—९७

छू नांम

थाट सबद गज मुरज थित खूधावंत त्रिय ख्यात,
भिछ्या (गण छू नांम मुण भुज हर संज प्रभात) ॥—९८

छे नांम

ऊखर फांसी यंद्रियां वेणी वमुधा स्याळ,
(कव यकमत छे के कहो दुमता नांम दिखाय) ॥—९९

छै नांम

देवलोक मदपात्र (दख) तीखीवस्तु (तोल,
कव) सेन्या (वरणण करो वरणी छै कव बोल) ॥—१००

छो नांम

पवन ग्रग पूरण पुणछ रोर श्रंगार (रचाय,
कांना कडमत छो कहो सुध छोह मै सुणाय) ॥—१०१

छौ नांम

केती वरखत दकूळ (कहि) परवत वानर (पेख,
जांण) नार कव परम (जप) लटा पवन (छौ लेख) ॥—१०२

छ नाम

भू निरमळ धन ज्वाळ (भण) कुळ तट गिरर ग्रावास ,
मुख जळ (छ कै नाम मुण 'उदा' करो उजास) ॥—१०३

ज नाम

जनम सचारी जीव जड जैतवार नरजार ,
(गण) मसारी जोगयौ (ग्रहि निम राम उचार) ॥—१०४

जा, जि नाम

(चवा) वृद्ध फासी चतुर जोन (नाम जा जाण) ,
भडग जितेंद्रिय रस भभक जीत (जि नाम जताय) ॥—१०५

जी नाम

वादकरण मिठामवचन जवा जीव जग (जाण) ,
हरसेवा (गण) राग हित ('उदा' लघु जि ग्राग) ॥—१०६

जू नाम

प्रभुजन मित्र पिमाच नभ वाक्य गनज सिघ्र व्याळ ,
जीरण (दीरघ जू जिकै मुण क्व नाम विमाळ) ॥—१०७

जे, जै नाम

मुन समूह केहर मजय (जे को नाम जणाय) ,
सुरगुर पुत्र रव विघ सरम ग्रगन (नाम जै ग्राय) ॥—१०८

जो, जौ नाम

ग्रामण सहि सिंगार अज रसण कमळ (जो रीत ,
जो) वचि चिनी जारसुत (बळ) जवान (जौ) बीत ॥—१०९

ज नाम

कज जनम प्रापत कनक मछ (भयौ) रजमड ,
जत्र मत्र (तज) जगतपत ('उदा' भजौ अखड) ॥—११०

झ नाम

मैथन वर कुरकट (रु) मछ निरझर ग्रव निदान ,
नम पयान पिय नष्ट (गण विध झ नाम विधान) ॥—१११

झा, झि नांम

रजत जात नागर रटी . झालर घड़ियां झाल,
पल सुर मावत कपहरणू (लघु झि नांम विध लाल) ॥—११२

झी, झु नांम

गज हथणी धन वेत (गण) कांम (पढ़ी झी काज),
जोन नमत वीरज जरा सास्त्र (झु कहि सिर ताज) ॥—११३

झू नांम

सौध अघू अरव स्वारथी देव झूठ समदाय,
वाव (नांम झू वडौ गोविंद रा गुण गाय) ॥—११४

झे नांम

रांम लखमण (झे रटौ) मरजादा ससमंड,
वन चमार (झे वळ) वनी (एता नांम अखंड) ॥—११५

झै नांम

सुरगुर क्रति आतम सरव करभ-झैकतां-काज,
गुर (वळ) मईथुनकेगुणी (सो) सरग घ्रांण समत क्रिया।
(पग झौ पाठ पुरांण ऊ झै नांम समाज)* ॥—११६

झो नांम

क्रांति नृप गोकळ करन प्रात श्रवण (झो) पांण ॥—११७

झं नांम

अगत्रसना मईथुन (मुणौ) भैरू झंप (भणाय),
झणतकार सुर झंझकै (ग्रै झं नांम उपाय) ॥—११८

ञ नांम

धरम अगन भय धारणा दान पुन्य (दरसाय),
घरघरध्रुन (सो) ग्यान घण (सो ञ नांम सुणाय) ॥—११९

ञा नांम

नाग निवारण रासभणी जरा पुंज श्रम (जांण,
वळ) निखेद नानावचन वांममुख (वाखांण) ॥—१२०

---

* स्पष्ट नहीं है।

त्रि, त्री नांम

अक्षा वृध राजा अगन प्रापन (सो नि प्रकाम),
भयजुतदेवळ वलभ मद पाखडी (त्री) पाम ॥—१२१

त्रु, त्रू नाम

त्रियमुख दादुर मदतनु (वळ सुवेन्द्र वाखाण),
तव) सुयान मदमस्तनिय जवा मोर (त्रू जाण) ॥—१२२

त्रे, त्रै नांम

सोनो (रु) प्रिय वरवन तुल्य सघ (त्रे नाम सुणाय),
मा पचाळी अमन महि पिपरी (त्रै परठाय) ॥—१२३

त्रो, त्रौ नाम

सीमा प्रौढा देतसुत पळास (त्रो) परमाय,
वचन कीर पयजाळ वृख दोभ (नाम त्रौ दाय) ॥—१२४

ञ नांम

ग्यान कमळ परिवृम (गण) द्रग धृत (ञ गुण दाख,
पाच वरण च छ ज झ ञ पढ सुण ट ठ ड ढ ण माख) ॥—१२५

ट नाम

देवदार पीपळ (दखौ) आनरूपक (जाण),
रागफिरै (वळ) सुभट (रट) मूत्र क्रछप (ट आण) ॥—१२६

टा नाम

वाडवानळ पाठी वसत्र सुक रटणण सुर सिध,
(कवियण यना टा कहो प्रभना नाम प्रमध) ॥—१२७

टि नाम

पुतळी गिरतळ सुर विपुळ हयणी हटी (कहाय),
भू खम्य (ण सात भण लघु टि नाम लखाय) ॥—१२८

टी, टु नाम

गोम ग्रीव क्षति मेघ गिर वेपाला (टी नाम),
कर टवन कुरकट मुकट मिग्वा (टु) चक्रघणस्याम ॥—१२९

टू, टे नांम

दीड़ वहन रिध नंद मरु, भय छाया (टू) भार,
जांन नांन खग जोखता सकत (नांम टे सार) ॥—१३०

टै, टो नांम

भतीज नभ धन अंध भख अरि पोता (टै आख),
श्रीफळ धुन चंपक सिखा रद गुर (श्रै टो राख) ॥—१३१

टौ, टं नांम

दावानळ छत वृखभ दध नीत पुरख (टौ नांम),
अंकुस द्रग सुत भ्रूह यळ अत (रु) गहड़ (टं नांम) ॥—१३२

ठ, ठा नांम

ससि गुर ग्यानी सिव क्रसन वेग मेघ वाचाळ,
पूठ धनी सुन (नांम पढ़) मेद रख्यक (ठहमाळ) ॥—१३३

ठि, ठी नांम

वेद छंद निस्चे कुंवर मुर (ठि नांम) सिखराळ,
छंदी सुतजा छुंध छय कुळ कुटुंव कुटवाळ ॥—१३४

ठु नांम

रोगी माखी कदम (रट) दळद्री रज जमदूत,
त्वग (लघु ठु नांम तव भाख वडै अदभूत) ॥—१३५

ठू, ठे नांम

रमा मुकंद वुध प्रीत (रट) धरज धरम (ठू धार),
संख्यप मन वामण सिखा सेस थांन (ठे सार) ॥—१३६

ठै, ठो नांम

सास्त्र व्यास नभ मूढ़ सिख भग्न घट्ट (ठै भाव),
रक्त पीड सिर मूरखता नखतुल्य (ठो) निरभाव ॥—१३७

ठौ नांम

गोतम रिख दध वेल (गण गणौ) जीवका ग्यांन,
धार मरजादा कुळधरम (सुण ठौ नांम सुग्यान) ॥—१३८

ठ नाम

सारद नीर मदरा सुधा मुन्धर निमळ वसत,
छिद्र (नाम ठ कहि छय दूजा नाम वदत) ॥—१३९

ड नाम

गोधन सिव गन डमरु पारथ धुन (जप सार),
ताड़वृस वृषपण (तवौ ए ड नाम उचार) ॥—१४०

डा, डि नाम

रव भू भूत उमा रमा डाकन वैतरी डार,
(पुरख उमापदक्रीत पढ तव डि नाम धिमतार) ॥—१४१

डी नाम

ग्रासण हरडै आवळा सावळ नभ (दरसाय),
समद फीण (डी नाम सुण लघु र वडै लखाय) ॥—१४२

डु नाम

मिवा रक्त चख थभ सकति (कहि) दघवेळ कपोत,
(लोडै डु के नाम लख 'उदा' वडै डू वोत) ॥—१४३

डू, डे नाम

मोर वळावत विध मदन बाळक (वडे डू वाम),
घरमराज जिहू भ्रग घरम (वद डे नाम विसेम) ॥—१४४

डै डो नाम

कोयल काम मित (र) वृख करन श्रुत (डै नाम सुणाय),
प्रौढत्रिया पापी मुगध पाप (नाम डो पाय) ॥—१४५

डौ, ड नाम

नर हर पत गऊ जारनर (कर डौ नाम कहाय),
पय जळ भ्रत रद द्रग चपक (ल कर डो फिर ड लाय) ॥—१४६

ढ नाम

ढोल भैरवा जत्र ढक्कण भ्रग दम खर मजार,
स्वाद सवद निरगुण (सदा ए ढ नाम उचार) ॥—१४७

ढा, ढि नांम

गी पलास नाभी गदा अज मेंरु (ढा आख),
गुडी ढेल निंदा गदा भूख लिंग (ढि भाख) ॥—१४८

ढी, ढु नांम

मत वीलो ब्रंमचार सिख कु खर वृछ (ढी कांम),
करम दुष्ट गज सूर कप जिभग (ढु लघु जंप) ॥—१४९

ढू, ढे नांम

पाज अधरम (नकु) वप थर हृथनी (ढू) हरताळ,
हींग खाल पुरवर महर मन अग गढ़ (ढे माळ) ॥—१५०

ढै, ढो नांम

मेघ छठा वगपंत मदन वुढ़ण आस (ढै वूंद), .
सुख प्रधान साधन धनी रोम पंत (ढो) रंद ॥—१५१

ढौ नांम

चंपक पंकत मुगंध (चव) जमो सजन सुर (जांण),
मेवासी मानी दुष्ट (विध ढौ नांम वखांण) ॥—१५२

ण नांम

कूप घ्रांण वंवूळ (कहि) क्षाम जैत मछगात,
मेधा निरफळ वक्रमग (सो ण नांम सुणात) ॥—१५३

णा, णि नांम

हरख नाभ विध वहनी रुच अजा (नांम णा आख),
हरि करी (र) नद भीम अहि ससि (प्रकार णि साख) ॥—१५४

णी, णु नांम

अणी चख जळ ईस्वरी सुरगत्रियां (णी सार),
हथणी धर अहि पास कर वांणी वंस (णु) वार ॥—१५५

णू, णे नांम

जम रव करंद सिव जछा जरा अगन (णू जांण),
मोजा कंगुरा विडंग मिनी अस लंपट (णे आंण) ॥—१५६

णं, णो नाम

लाभ सिवा हर राम दळ जवू (णं के जाण),
मर खर प्रमाण (मुणए दळ) रक्षक (णो वाण) ॥—१५७

णौ ए नाम

मीन भार माया (मुणो णौ के नाम सुणन),
नभ मुगध ल्छमण दरम वन जभाय (वणन) ॥—१५८

त नाम

सुत तीरथ अघ मृगना चोर मोक्ष भव वित्त,
तत छिव रूप (र) आतमा (त्यू) हिय थान (तवित) ॥—१५९

ता नाम

तान ताळ मा ऊच त्रिय (त) छठो विसनार,
सिवा ईस मईशुन वस्त्र तरण पुरख निलतार ॥—१६०

तो, तु नाम

नट जट वली दध नदी सकळ पान (ता सार),
रमा कमळ सुरपुर रक्त कप्ट (तु वाक्य उचार) ॥—१६१

तू ते नाम

असुध जुध कर अगुरी तुछ कटाछ (ते क्षत्र),
यमुजळ नामा सुर असुर सुत ग्यान (ते सत्र) ॥—१६२

तैं तो नाम

मोह हेत प्रक धनि समर वाति (तैं परकाम),
वरण स्याम (र) वमन विघन (ए तो नाम उजास) ॥—१६३

तौ, त नाम

आचारज यळ (मान) ध्रज सरठागर (तौ) सग,
(पुन) फळ जुग सुर अपल चरण भ्रमण (त) चग ॥—१६४

थ, था नाम

गिर गणपत (र) वद (र) गुरड अघर दार (थ आस),
दुन घर मुरज मदावनो (भेद नाम था भास) ॥—१६५

थि, थी नांम

वृगभ जगा गोदावरी नींद गळांग (थि नांम),
दध रेवा वृण नींद गी (वे विचार थी) नांम ॥—१६६

थु, थू नांम

अविद्या कूचील पिक उचस्ट विगन भूट (थु) त्याग,
दासी मुतफिर दास (कहि) पारासर (थू) पाग ॥—१६७

थे, थै नांम

संबोधन वरलळ मृगंध ताल वास (थे तोल),
ताळ कील गुर उरध (तव) वृद पूरण (थै बोल) ॥—१६८

थो, थौ नांम

तर मन गुत नरसिंघ चतुर (ग थो नांम उच्चार),
संग गमण मन अस्टसिव (सुणां) मोह (थौ सार) ॥—१६९

द, दा नांम

दवण देवगण खग दया माधु अपल (द) सार,
रीझ दता धर मुभ रमा दियन हार (दा धार) ॥—१७०

दि, दी नांम

दाता पाळग दसदिसा द्रग पाळग (दि दाख),
स्वामी दांनी सस मुधा, आसागत (दी आख) ॥—१७१

दु, दू नांम

दळद्री कर गज सुंड दुख प्रधान दुरत प्रचंट,
दुख विकार संताप दिल मोहनी (दु दू मंड) ॥—१७२

दे नांम

सिवा पूरांण अढ़ार (सुण) रूपारेल (रचाय),
सुकव तिया (के नांम सुण) दांम (वळै दे दाय) ॥—१७३

दो, दौ नांम

वृखभ दैत लट सिधवन जांण दांन (दे जास),
नावस लिंग कर पाय निस दोख (नांम दो रास) ॥—१७४

दौ, दं नाम

समरथभ दळद्री समर प्राण काज (दौ पेख),
दनुजिय सुरनर करभ दभ अघ जुग दड (द देख) ॥—१७५

ध नाम

विध कवध गणपत विप्ण् नाथ वचन धनवान,
(वळं) कुलाल कुमेर (वद) खटमुख (ध) व्याखान ॥—१७६

धा, धि नाम

यळ कमला सारद उमा धारण (धा के धार),
धरम धिकार सतोख घर (सुण) ग्राश्रय (धि सार) ॥—१७७

धी, धु नाम

चित्रक मेधा थरज चित दीपक (तू धी दाख),
तन धोबी कपत पवन यधक दौड (धू ग्राख) ॥—१७८

धू नाम

धूरत कपण अगन धुज सिव गज कर (वहिमार),
चिंता भार विचार चित (ए धू नाम उचार) ॥—१७९

धे, धै नाम

पारसनाथ वृख धरम पिव क्रष्ण धरण (धे) काज,
रावण ग्रीव सुग्रीव रट पठ आश्रय (धै) पाज ॥—१८०

धो नाम

सुमद धरम सागर सकट श्ररथ रूपनद (आण),
वृखभ (नाम धो को वळं जुगत यसी विध जाण) ॥—१८१

धौ, ध नाम

धर वाणी देवळ धरम तट (धौ नाम वताय),
दान सुखासण मान द्रव धूण लखन (ध) धाय ॥—१८२

न नाम

प्रफुळत तरु पडत प्रभू ग्रन्य यधन अहमेव,
नत प्रमान नौका (मुणै भणनकार गुण भेव) ॥—१८३

ना नांम

वनता मुख किरंपणवचन निपुण वाद नाकार,
प्रतखेधर अव्यय (पढ़ौ ए ना नांम उचार) ॥—१८४

नि, नी नांम

दळद्री निस्चय दुरगती नरत स्यांम (नि धार),
प्रेम अगद नृप प्रपति अतिसय (नी उचार) ॥—१८५

नु, नू नांम

वन विदेह् वप वाळ वळ न्यूंनस्कति (नु नांम),
नूपर दंपति कंठ नित त्रिया वांण (नू ठांम) ॥—१८६

ने, नै नांम

स्वान अयन चख समवृत्ती वैत छडी (ने वाच),
सिख अग श्रव सित सुध वरक्त (रटौ) न्याय (नै नांम) ॥—१८७

नो, नौ नांम

(रट) प्रतखेध नम थरगण खटमुख मौल विख्यात,
(पढ़) दळद्री सुर जुगपुरख (ए नौ नांम उदात) ॥—१८८

नं, नांम

सुख द्रग जग सिंगार श्रव हरख नांम गज (होय),
कंत स्यांम (मिळसी कदै जुगत नांम नं जांण) ॥—१८९

प नांम

पापी रव रक्षक पवन वृख गुर भूप (वखांण),
सिंघ कांम पीवन (मुणौ पढ़ प नांम प्रमांण) ॥—१९०

पा, पि नांम

सिवा पांन खग रज सुवा पीवन (औ पा नांम),
विसम जोन भीसम पवत्र सिख (पि नांम) सुरधांम ॥—१९१

पी, पु नांम

पीड़ हेम अय हळद (पढ़) संम्रत पपीलक साख,
पुत्र पारह प्रापत पुरख दोभ (नांम पु दाख) ॥—१९२

पू, पे नाम

पूरण नभ पूरब नगर गगा वपु (पू ग्यान),
पेटी पीवन भोग पख ग्रड नीर (पै ग्रान) ॥—१९३

पैं, पो नाम

श्राध नीरज टका सगा सुदर (पैं दरसाय),
पिंड सुत बुध समास प्रभू (ए पो नाम उपाय) ॥—१९४

पौ, प नाम

पान पुरख गिरजळ प्रभू (पौ के नाम पढन),
पय पवत्र रएा जळपुप्ट कीच (नाम प) वत ॥—१९५

फ नाम

पाप फीण वरखा पवन माघ मास मा पुन्य,
(कहि) बुध बानन (रु) माघ (कव पढ फ नाम) प्रसन ॥—१९६

फा, फि नाम

गरळ तीरथ बैठक गुदा भरथ डगा (फा भाख),
काळचक्र वृध राक्सी दाह जठुर (फि दाख) ॥—१९७

फो, फु नाम

गयौ कारल सुर पवन गज (ले फी नाम लखाय),
काती (लो) काती क्रतग गुण विलब (फु गाय) ॥—१९८

फू, फे नाम

सरव फूक रिण भू *सरए वृथावचन* (फू वाच,
ग्रधकागण कीहो भ्रमग रटैं नाम फे राच) ॥—१९९

फैं फो नाम

साख लाल अनखुलि कुसम रित वसत (फैं रीत),
फो फळ वैधृत काळ फळ वाफ स्याम (फौ) वीत ॥—२००

फौ नाम

सेम द्रोण सरवन सपनी गगा चारज (गणाय),
मेर गुफा रणमइ (तू सो फौ नाम गुणाय) ॥—२०१

फं नांम

सुन्य भुजन संभारवी स्वाद मनोहर सार,
छिद्र (श्रौर) फालगुनी छटा भगनी (फं संभार) ॥—२०२

ब नांम

बोल निबोळी बचकरन प्रतबिंबत (कहि पात),
कळस पुनत सुर (फिर कहे वद व नांम विख्यात) ॥—२०३

बा, बि नांम

बाळक बहुनी नरबदा (कही) बात (बा किध),
बिस ससी नभ धर फल बयण पूरण (बि परसिध) ॥—२०४

बी, बु नांम

बिरह वेन निस नृप विनय श्रव खिजूर (बी) साल,
कुस त्रुस अग जळ छत्र (कहि) चक्र बाळध (बु चाल) ॥—२०५

बू नांम

अरक तूल बंबूल (अग्व) वृख अरजुन गुरवाच,
साद सूर (बू गुर सुणो रेंगाव पढ़ गुण राच) ॥—२०६

बे, बै नांम

जिग क्रम पोहित नीचजन साग्वी (बे) संसार,
करण अरुण वालक श्रवन वच सत (बै विसतार) ॥—२०७

बो नांम

बकरो दाढ़ी जांबुफळ (यूं) पग स्वास उसास,
प्राणादिक (बो नांम पढ़ 'उदै' कियो उजास) ॥—२०८

बौ, बं नांम

गौडा धातु गंग (गण) सिंघासन (बौ सार),
वळ (वळ) देव संभारवी अरात (बं नांम उचार) ॥—२०९

भ, भा नांम

भारगव अलि जळ नभ ससि सेवा रिख भय (साख),
जस मद निस दुत श्री उजळ (भा) मरजादा (भाख) ॥—२१०

पू, पे नाम

पूरण नभ पूरब नगर गगा वपु (पू ग्यान),
पेटी पीवन भोग पख ग्रड नीर (पें ग्रान) ॥—१९३

पैं, पो नाम

थाघ नीरज टका सगा सुदर (पैं दरसाय),
पिंड सुत वृध समास प्रभू (ए पो नाम उपाय) ॥—१९४

पौ, प नाम

पान पुरख गिरजळ प्रभू (पौ के नाम पढंत),
पय पवत्र रण जळपुप्ट वीच (नाम प) क्रत ॥—१९५

फ नाम

पाप फीण बरखा पवन माघ मास मा पुन्य,
(वहि) वुध वानन (रु) माध (क्व पढ फ नाम) प्रसन्न ॥—१९६

फा, फि नाम

गरळ तीरथ वैठक गुदा भरथ डगा (फा भाग्व),
काळचक्र वृध राकसी दाह जठुर (फि दाव) ॥—१९७

फी, फु नाम

गयौ कारल सुर पवन गज (ले फी नाम लखाय),
काती (लो) काती ग्रनग गुण विलव (फु गाय) ॥—१९८

फू, फे नाम

सरव फूक रिण भू सरण वृथावचन (फू वाच,
ग्रधकागण कीहो भ्रमण रटं नाम फे राच) ॥—१९९

फैं फो नाम

साख लाल ग्रनखुलि कुसम रित वसत (फैं रीत),
फो फळ वैधून काळ फळ वाभ स्याम (फो) वीत ॥—२००

फौ नाम

मेग द्रोण सरवन सपनी गगा चारज (गणाय),
मेर गुफा रणमड (तू सो फौ नाम सुणाय) ॥—२०१

फं नांम

सुन्य भुजन संभारवी स्वाद मनोहर मार,
छिद्र (और) फालगुनी छटा भगनी (फं संभार) ॥—२०२

ब नांम

बोल निबोली बबकरन प्रतबिंबत (कहि पात),
कळस पुलत सुर (फिर कहे बद ब नांम विख्यात) ॥—२०३

बा, बि नांम

बाळक वहनी नरबदा (कही) वात (वा किध),
विख सखी नभ धर फल वयण पूरण (वि परसिध) ॥—२०४

बी, बु नांम

विरह बेल निस नृप विनय श्रव खिजूर (बी) राल,
कुस त्रुस स्रग जळ छत्र (कहि) चक्र वाळध (बु चाल) ॥—२०५

बू नांम

अरक तूल बंबूल (अख) वृख अरजुन गुरवाच,
साद सूर (बू गुर सुणो रैणव पढ़ गुण राच) ॥—२०६

बे, बै नांम

जिग क्रम पोहित नीचजन साखी (बे) संसार,
करण अरुण बालक श्रवन वच सत (बै विसतार) ॥—२०७

बो नांम

बकरो दाढ़ी जांबुफळ (युं) पग स्वास उसास,
प्राणादिक (बो नांम पढ़ 'उदै' कियो उजास) ॥—२०८

बौ, बं नांम

गौडा धातु गंग (गण) सिंघासन (बौ सार),
वळ (वळ) देव संभारवी असत (बं नांम उचार) ॥—२०९

भ, भा नांम

भारगव अलि जळ नभ ससि सेवा रिख भय (साख),
जस मद निस दुत श्री उजळ (भा) मरजादा (भाख) ॥—२१०

भि भी नाम

तीर प्रेम रोहण तिया भैरव मेर (भि भाख),
भीम वभीखण अहि (र) भय (सो) दीवाळ (भी भाख) ॥—२११

भु, भू नाम

खग भग्र वेमक अहि करग (ए भु नाम उपाय),
(ज्यू) नृप भूखण सतजन (भयौ भू नाम सभाय) ॥—२१२

भे, भै नाम

भेर वप भैरव गुरड भेद छेद मय (भाय),
राग वरन ब्रह्मा रमा जम (भै नाम जणाय) ॥—२१३

भो, भौ नाम

सबोधन नवग्रह सरप मिंदर घर (भो मड),
तन मगळ प्रातर भस्म (ए भौ नाम अखड) ॥—२१४

भ नाम

अलि जळ रव उडवन रचति मिल (भ नाम सभार),
(भभ अछर के नाम भण) वयळ कळा (विसतार) ॥—२१५

म, मा नाम

सिव समूह नभ गयद सिर ससि रण राम (म सार),
गिर जाळधर मान गत पीडयकौ (मा पार) ॥—२१६

मि, मी नाम

मील दया (रु) प्रमाण भू विसनतर विमख,
रमा जती मदवौ करग (पढ प्रमाण मी पेख) ॥—२१७

मु, मू नाम

पायौ उप सम मुप्ट रिख वहुबीजा (मु बोल),
बधण प्रक घण चक्र वळी सठ (मू नाम सतोल) ॥—२१८

मे, मै नाम

वृखभ मेघ उपमेय (वळ) चालक (मे कहिवाव),
रगण स्वारथी रव प्रणत मित्री (मै समभाव) ॥—२१९

मो, मौ नांम

मोती तिय पारद मुगत मोह अंछ्या (मो मंग),
नभ कलाळ वडवानळा (पढ़ मौ) मुगत (प्रसंग) ॥—२२०

मं नांम

मंगळग्रह खळ गुड़ मिलण सुंदर रूप (सुणाय),
मंगळगीत उछ्व (मुदै ए मं नांम उपाय) ॥—२२१

य, या नांम

सिवा सुतन ईसुर पुरख खवन (नांम यह ख्यात),
जोत रमा कुलजा प्राप्त तिय नर जळ (या) तात ॥—२२२

यि, यी नांम

जळ जुध दोहण कमळ जय (यि पिछ्‌ नांम उचार),
गज कुठार ग्रतुडंड (गण) तरसारथी (यी तार) ॥—२२३

यु, यू नांम

सरप जोख जिग ग्रळसिया मिश्र (नांम यु मंड),
जिग ग्रम्रत नर डरत जूय थंभ (बोल यू) थंड ॥—२२४

ये, यै नांम

साय जोग नर रव सजन (ये के नांम उजास),
जळ पल सिसियंद धनंद जुग (पढ़ि यै नांम प्रकास) ॥—२२५

यो, यौ नांम

जोत जोजना जोग पग सुण संयोग (यो साख),
सिख प्राचीदिस कण स्वरग भेद सुपुत्र (यौ भाख) ॥—२२६

यं नांम

क्लीव वसंत एकादसा रांमकरण पसु रेस,
(वळै) जंत्र (यं नांम वद एकाक्षर उपदेस) ॥—२२७

र, रा नांम

दध धुनि रव रक्षक मदन मिख कपाट रस (र) संग,
राह हेम धन क्रुध रमां पाट श्री द* (रा) पंग ॥—२२८

* मूल प्रति में स्पष्ट नहीं है।

रि, री नाम

रावन कळस कपूर रिध भवरि (नाम भणाय),
सिख नवाढा कामी क्रष्ण भ्राति भ्रगी (री भाय)॥—२२९

रु, रू नाम

रव भ्रग रूई डर रुदन भाजनसवद (रु) भास,
विध नृप काम गजी वयन कुलाल (रू) प्रकास॥—२३०

रे, रै नाम

नीच काम सुख खेद नभ वायस (रे विख्यात),
राजा सुख धर स्याम रग (रै) मनोज (दरसात)॥—२३१

रो, रौ नाम

उदर-रोम रिव गद असह नसना (रो कहि तास),
क्रोध रौद्ररस ईस (कहि) जटा सरग (रौ जास)॥—२३२

र नाम

सीस रदन रत रग सुख धन (र अवधा धार,
र रकार एता रटै 'उदा' नाम उचार)॥—२३३

ल, ला नाम

चिह्न काळ सार मचवर यद चलण (ल आख),
रक्त रग नियताळ रत (भणौ) रमा (ला भाख)॥—२३४

लि, ली नाम

मरप विछी दामी सखी गुमक (पिछ लि माप),
अलि लीलाधर मिलण यळ (त्यू) सखी (ली परताप)॥—२३५

लु, लू नाम

भू माळी छेदन भखी लोक (लु नाम लखाय),
लोप काळ छेदन प्रलै गुदा रुद्र (लू गाय)॥—२३६

ले, लै नाम

दान तार सुन राम दग (ले) गी वस्तु मलीण,
राम प्रलय उमया रमा करणा (लै नाम कहीण)॥—२३७

लो, लौ नांम

सिला मीन सिकार (तव) प्रभू मोह (लो) प्रीत,
विधपथ भूखण चोर (वळ) मारुत (लौ कहि) मीत ॥—२३८

लं नांम

लोक वचन गुख सोय लय (नांम चिन्ह के नांग,
लख यव ले लं नांम नख सिगर सदा घणस्यांम) ॥—२३६

व नांम

वरुण सुखी उपमा मिव (हो) अव्यय अरथ (उचार),
पवन (वळै व नांम पढ़ मुकव मुणी तत सार) ॥—२४०

वा, वि नांम

अंबा विकलय हेत अति (अवय म वण वा आण),
रव सिसं दव पंछी गुरड (वळ वि) लखी (वखांण) ॥—२४१

वी, वु नांम

सास्त्र वेल गंगा विसनु सुभट (वी सार),
प्रात प्रदोख (क) घणपटल (वळ वु नांम विसतार) ॥—२४२

वू, वे नांम

अरक तूल वहु सरव यभ्रु कबूतरा (वू) काज,
वेद पलव सुरतर पिपर (सुणी) वेग (वे साज) ॥—२४३

वै, वो नांम

(अव्यय निश्चय वळ अरथ) क्रप्ण सरग (वै किध),
विनय सप्तसुर काल वृख सारथि (वो परसिध) ॥—२४४

वौ, वं नांम

वडवा उडवा पांन (वळ) खग सुत (वौ विख्यात),
अरुण वस्त्र चख दही उरज सुख (वं नांम सुणात) ॥—२४५

श नांम

अपरख भोजन सिव उमा हिमगिर शक (कहि होय),
रंग गौर सिख्या रमा सागो गी (कहि सोय) ॥—२४६

शि, शी नाम

मुरज नाट्य सेवक कमल (लघु शि नाम लखाय),
सिया भाग सीतल वस्तु सिसु प्रवीण (शी भाय) ॥—२४७

शु, शू नाम

पल पलास ससि सुक उपल (शु) कैलास (सुणाय),
खेत्र सोक सिव खड नर (वळ) सुद्र (शू कहवाय) ॥—२४८

शे नाम

सेस सिखर गिर सरस तर पक्त कीर (शे पाठ,
उक्त नाम एकाक्षरी 'ऊदै' कवी उदात) ॥—२४६

शै नाम

सीतल वरक्त सिव धरम धुधमार नृप (धार),
गेंद (वळे) वैमध (गण विध शै नाम विचार) ॥—२५०

शो, शौ नाम

शोक दोष थिर पवत्र सुरुण मड त्रभुजा (शो मड),
सख उपासन जप सनि बाळक (शौ) वळवड ॥—२५१

श नाम

सुख सरीर सुभ सगी सुमर रक्षर रोग (रखाय,
'ऊदैराम' एकाक्षरी सो श नाम सुणाय) ॥—२५२

ष, षा नाम

मिषग्य मजर नम श्रेष्ट (सब्द नाम ष सार),
गघी तीड रेखा (षा) गुफा भावू (नाम षा भार) ॥—२५३

षि, षी नाम

पवन घूक सुरमुख कपट प्रवल (षि नाम प्रवास),
जम ग्रतग हनतु बन्धी (ए षी नाम उजास) ॥—२५४

षु, षू नाम

हय नाग मर पुज कौहक हय (लघु षु नाम लगाय),
विधु निसचरा मलेछ बुध (नाम) केल (षू न्याय) ॥—२५५

पे, पैं नांम

संक खेद नभ साथ (सुण ए पे नांम उपाय),
कठणवस्तु पर वाळ (कहि) वट (पैं नांम बताय) ॥—२५६

पो, पौ नांम

तन मलीण नर पंज (लव) विचार (पो विदवांन),
भू वुध रव (गण) भूख (वळ) मित्र (पौ) संगना (मांन) ॥—२५७

(पं) नांम

(ए) मधु धार यंद्रियां नभ (गण पं के नांम,
'उद्दैरांम' हर नांम उर सिमर सदा घणस्यांम) ॥—२५८

स नांम

पद तळाव अद्रष्ट (पढ़) सरिसतिनद रव (साख,
वळ) नाराच (वखांणियै भेद दंती स भाख) ॥—२५६

सा, सि नांम

तिय साळी रज साल (तव) रमा (नांम सा राख),
सिख असीस हितु सुर खडग (भेद लघु सि भाख) ॥—२६०

सी, सु नांम

सुख विवाद वंदवा (सुणौ) निरफळ (सी) निरधार,
रव कुठार छेदन फरस (सु लघु नांम) सुथार ॥—२६१

सू, से नांम

रसा सगर भा विध (रटौ) पारासुर (सू पेख),
वकरी नभ सिधलोक (वळ दुरस नांम से देख) ॥—२६२

सैं, सो नांम

स्याळ वाळ अहि धरम (सुण) कीर (नांम सैं किध),
सुक्रवार पंडत ससि (सो) मंत्र (नांम प्रसिद्ध) ॥—२६३

सौ, सं नांम

श्रेष्टवाक्य भ्राता (सुणौ पढ़) पुनीत (सौ पाय),
संकर सुख कारण सरण (यु सं नांम उपाय) ॥—२६४

ह नाम

हरख चोर कुटवाळ हर काष्ट निखेधा (कोष,
पुन) अगाक्ष (ह नाम पढ दळ एकाक्षर दीध) ॥—२६५

हा, हि नाम

सत्यारथ ग्रव्रुव मदा हरचद (हा के) हाण,
हरा खेद टीटूहरी पनग मोर (हि) पाण ॥—२६६

ही, ह्री नाम

ग्रगछोना पद्मी मनि हरख पुरख (ही होय),
वसीकरण व्रीडा ग्रजा मत्र बीज (ह्री मोय) ॥—२६७

हु, हू नाम

नृप निद्या निस्चय (कर) सभारण (हु व सार),
सुर दीरघ निस्चय मुरद विप्र रुढ (हू वार) ॥—२६८

हे, हैं नाम

सबोधन मन ग्रस्व सिव (कहि) प्रमाद (हे काज),
पाय परीक्षक (हय पढौ) हामी (है कहि साज) ॥—२६९

हूंव, हो नाम

ताळ सवद वायस निया गाथ सिवा (हूं ग्यान),
जिग उछाह अरजन अति (हो सबोधन ह्यान) ॥—२७०

हौ नाम

गस्त्र पक्ष जय भ्रतु गकध ब्रह्मा (हौ) वाग्वाण,
भगती कर भगवत की जगनाथ गुण जाण) ॥—२७१

ह नाम

पूरण हस समूह (पढ) दीपत जीव उदार,
गार चोर हरखौ (गणौ) मिव (ह नाम सभार) ॥—२७२

स नाम

कमळ रमा परिवृम कवि निरमळ (ळ) निरधार,
प्रथम नाम रनवा (पढ़ं लग) गुर (नाम लरार) ॥—२७३

क्ष, क्षा नांम

दनु खेत मिंदर गवरा क्षमावंत (क्ष ख्यात),
जमना यल सीता जरा दुरबळ (क्षा कहि दात) ॥—२७४

क्षि, क्षी नांम

जोत यंद्रिय चख गोख (जप कानो क्षि कहवाय),
मदरा पंखी अगन (मुण) क्षीणपुरख (क्षी भाय) ॥—२७५

क्षु, क्षू नांम

रव दध यंद (रु) रुद्र (के) क्षय (क्षु नांम लखाय),
मुखक नष्ट पापीमुखा (विध क्षू नांम वताय) ॥—२७६

क्षे, क्षै नांम

संकल मंगळ कुरखेत (सुण) खेडू खेत (क्षे ख्यात),
मुगध जुवारी ठग मिनी क्षय लंपट (क्षै) रात ॥—२७७

क्षो, क्षौ नांम

क्षुरक वृणय (लखि कहि) मंत्र क्रोध (क्षो मंड),
मंगळग्रह नृप खंज (मुण) जख मद (क्षौ ज मंड) ॥—२७८

क्षं नांम

सुध कमळ पय खेत सुख (नांम) भखण आणंद,
प्रागतीरथ मकरंद (पढ़ वळ क्षं नांम विलंद) ॥—२७९

श्री नांम

कीरत द्रव (सो) कुसळ क्रांति रमा प्रकास,
सार वरक्त सित संपदा पीत पत वृतादास ॥—२८०
रतन भूम बुधवांन (रट) लाज म्रजाद (लखाय,
एकाक्षर 'उदा' एता सो श्री नांम सुणाय) ॥—२८१
'उदा' यण एकाक्षरी अरथ अनेक उपाव,
कवकुळबोध प्रकासमैं देसल जळ दरियाव) ॥—२८२

इति श्री महाराव राजंद्र श्री देसलजी राजसमुद्र मध्ये
त्रिविध नांम-माळा निरूपण नांम अवधा
अनेकारथी एकाक्षरी वर्णन नांम
दसमो लहर या तरंग ।

•

अथ अव्यय — नामावली

पर्दे नाम - माळा परें अव्यय नाम अपार,
मेघा मुग व्याकरण मत 'उदं' कियौ उचार ॥—१

प्र नाम

इन्द्र गवण प्रथमा रथ (रट) देवण (छा) दरसाय,
वत्र सतोम्य सानि (वहौ प्र के नाम उपाय) ॥—२

अ, इ, ई नाम

अचरज प्रनखेद (ह) अभय अनेक (नाम उजास),
सबोधन (लघु इ सुणौ ई) दुख सम्रती उदास ॥—३

उ, ऊ, ऋ, ॠ नाम

रोख वचन निसचय प्रमन्न (ऊ ज) निवारण (आख),
दोख छोभ वृद्ध (ऋ दखौ ॠ) विश्राम गुण (राख) ॥—४

लृ, लॄ, नाम

क्षोभी वृद्ध (ह) दोख (कहि लृ लघु नाम लखाय,
लॄ) निन्दा (दीरघ लम्बौ अव्यय नाम उपाय) ॥—५

ए, ऐ, ओ, औ नाम

सबोधन (ए लघु सुणौ ऐ) आचारज (आख,
ओ) दिखायवो (आखियें भण अहोनहैं भाख) ॥—६

अ, आ नाम

(अ) सबोधन (आखिये) मान विधान अजाद,
आगम (आ अ) पाच (अख ईहग वहत अनाद) ॥—७

पु, र, डु नाम

(आख) समुचय (पुन) अरय (अव्यय के व अेह),
दुख दुरजन कष्टी दुष्ट (डु वळ अव्यय दाख) ॥—८

नि नाम

अतिसय निरणय जम (यता) निसचय गवण निखेध,
(नि अव्यय के नाम ए वर के डु चन वेध) ॥—९

(नो मा कहि) प्रत खेदना वा विकलप उपमांन ,
(अथ) सुवाय त्यदादि (कहि विदवत पढ़ौ विधांन) ॥—१०

वि नांम

विखम विजोग विजोग (वृहै अरथ जुदा भिन आय ,
ए वि नांम उचारियै सं के नांम सुणाय) ॥—११

सं, सु नांम

(सुण) उतपत भव वरक्त (सं) भव्य वरक्त जस (भाख ,
पूजा सुख सूं पाइयै रांम कृष्ण चित राख) ॥—१२

स्वः, ह नांम

(स्व कहिये सव) स्वरग (कूं ह अव नांम हलाय) ,
वरजण पदपूरण* (वळै) मारवो विधी मिलाय ॥—१३

अव्यय भेद अपार है, वरण अरथ विसतार ।
चवि श्री फकीरचंद, उदै कियौ उचार ॥

इति अव्यय संपूर्ण ।

—— ••• ——

---

*पद-रचना में मात्राओं की पूर्ति के लिए या तुक के आग्रह से 'ह' का प्रयोग प्रायः बहुत से शब्दों के अंत में होता है। यथा—

सोने री साजांह, नग कण सूं जड़िया जिके ।
कीन्हो कवराजांह राजा मालम राजिया ॥

अनुक्रम

[पर्यायवाची शब्दों के शीर्षकों का अनुक्रम]

अनेकार्थी शब्दों के शीर्षकों का अनुक्रम

एकाक्षरी शब्दों का अनुक्रम

(अथ अन्यय नामावली)

—ooo—

० शुद्धि-पत्र ०

[छपाई में बहुत सावधानी बरतने के बावजूद भी कुछ अशुद्धियाँ रहने की संभावना बनी हुई है। कई शब्दों के सम्बन्ध में मतभेद की भी गुंजाइश है। विद्वान पाठकों से निवेदन है कि वे अपने सुझाव देकर अनुग्रहीत करें, जिससे द्वितीय संस्करण में आवश्यक परिवर्तन किया जा सके।]

पृ०	छं०	अशुद्ध	शुद्ध
११	पंक्ति ३०	भुजंग प्रयाता	भुजंगप्रयात
२०	५	वाजाल	वाजाळ
२०	६	सु (मुणिज्जै)	(सु मुणिज्जै)
२१	१३	(सारी)	सारी
२१	१३	(राजाप्रथूची) परठि	राजाप्रथूचीपरठि
२३	२४	दानव गज्जं	दानव-गज्जं
२७	१	जुनी क्रपीठ	जुनीक्रपीठ
,,	१	हुतमुक	हुतभुक
,,	२	दीप (सुरलोक)	दीपसुरलोक
२६	६	मालवन्धण	माळवंधण
२६	१२	चामणी	चांमणी
३०	१३	विमल	विभळ
,,	१५	हेकव	(हेकव)
,,	१६	है	(है)
,,	१७	ढाळो	ढीलढ़ाळो
३१	१८	जीभूत	जीमूत
,,	१६	सकलंकी	सकळंकी
३५	५	असवार	(असवार)
४५	६२	नांम	(नांम)
६६	१८५	अण आंटै	(अणआंटै)
७४	२३०	कुपधमूळ	कुवधमूळ
८२	२७६	संक-रखण-रांम	संकरपण रांम
८२	२७६	मूसळी-हळी-पिणि	मूसळी हळी (पिणि)
८८	३१०	रीकवियौ	रीझवियौ
६२	१७	रुद्रवामसर	रुद्र वांमसर
,,	१६	लोहितमाळ	लोहितभाळ
,,	२१	अंवाजोत अखंड	अंवा जोतअखंड
६३	३६	व्रष्टरसवाव्रखाकप	व्रष्टरसवा व्रखाकप
६४	४१	श्रीलच्छ	श्री लच्छ

पृ०	छ०	अशुद्ध	शुद्ध
९४	४५	प्रथग द्वार	प्रथगद्वार
९४	४८	जमाकरन सनिजमपिना	देखो पृ० १५४ का फुटनोट
९५	५२	निमनेत्रसुगण	निमनेत्र (सुगण)
,	५४	जुगपदमगणपती	जुग पदमगणपती
,	५७	कद्रपकळ	कद्रप कळ
९६	७०	सदा	(सदा)
९९	९६	सतीवाम घणस्वाम	सती वामघणस्वाम
,	१०२	कपथा	अपथा
,		अघमोचत	अघमोचन
१००	१०५	अकळ	अकल
,	,	प्रवाघ	प्रबोध
,	१०६	हृदनीरोग्रर	हृद नीरोग्रर
१०१	१२८	नेजादावदी	नेजा दावदी
१०२	१३६	कीसहरि	कीस हरि
,	१३८	(अग)	अग
१०३	१४३	पिंगपच सिख	पिंग पचसिख
,	१४६	अगळीलग	अगलीलग
,	१४८	समूळ	(समूळ)
१०४	१५६	यला	यळा
	१६२	(जव) फलवळं	जवफळ (वळं)
,	१६३	अभियापोख	अभिया (पोख)
१०५	१६४	प्रपया	प्रमया
,	१६६	वहनी (सिखा वताय)	वहनीसिखा (वताय)
	१६७	लोहत (चनग लेख)	लोहितवनग (लेख)
१०५	१६८	सोरभ मूल	सोरभ मूळ
१०५	१७०	सान माम	सानमान
१०६	१७५	वसूभूतमस्कम	वसू भूतम स्कम
१०६	१८३	पट्टगपुरी	पट्टग पुरी
१०७	१८८	मेघ पुसप	मेघपुसप
१०७	१८८	(खीर	खीर (
१०९	२०८	सुज	(सुज)
१०९	२१६	कलिफालगुन	कलि फालगुन
१०९	२१७	जयकरगसत्र	जय करगसत्र
११०	२२५	कर करं तलप	(कर करं तलप)
११०	२२८	आससिध	इयुग्रामसिध
११०	२२९	सिलीमुख	सिलीमुख

पृ०	छं०	अशुद्ध	शुद्ध
१११	२३८	वितरण दांन	वितरणदांन
१११	२३६	उद्धरजग त्याग	उद्धरजगत्याग
१११	२४०	रेणवदूथीराह	रेणव दूथी (राह)
१११	२४०	मनरखभागण	मनरख मांगण
११३	२५६	कवचीती	कव चीती
११३	२६१	पंथकपंथक	पंथकुपंथक
११४	२६८	अम्यामरदअनीक	अम्यामरद अनीक
१२१	३४४	(धुन नाद रिण)	धुन नाद रिण
१२२	३६३	विणवाठ	विणवाट
१२३	३६५	सारमेय	सारमेय
१२४	३८३	वळरिखभ	वळ रिखभ
१२६	३६८	क्रस्न वरतमा	क्रस्नवरतमा
१२६	४०२	(ह्य कहिपात)	ह्य (कहिपात)
१२८	४२१	खगपंखी	खग पंखी
१३०	४४२	सुरनाह	(सुरनाह)
१३०	४४३	(दत)	दत
१३१	४५१	सुग्गि	(सुग्गि)
१३२	४७०	विघा	विद्या
१३३	४७२	सासोपान	(सा) सोपान
१३४	४८३	माथी	भाथी
१३४	४८३	माथ	भाथ
१३५	४६६	रुचा वप	रुचावप
१३६	५०६	४०६	५०६
१३७	५१५	(प्रकरण करण विगरण चय विसतार)	प्रकरण करण विगरण चय विसतार
१५१	४५	मिदुर	भिदुर
१५१	४६	ह्लादनी	ह्लादनी
१६४	१२०	महिगोत्रा	महि गोत्रा
१६४	१२१	मरुतदरीभ्रत	(मरुत) दरीभ्रत
१७३	५३	सुंभनिसुंभ) भांजणी,	सुंभनिसुंभ-भांजणी
१७३	५३	गीतग्रंथका	(गीत) ग्रंथका
१७८	१०६	विभादसू	विभावसू
१७८	१०६	रुक्रसानु	(रु) क्रसानु
१८३	१६१	त्रिजाम	त्रिजांम
१८३	१६१	ससिवाम	ससिवांम

पृ०	छं०	अशुद्ध	शुद्ध
१८६	२२२	तावक	तावव
१६१	२२७	दलमाग	दलमाहा
१६६	२८७	रोगहारीप्रभग	रोगहारी (प्रभग)
१६७	२६७	(वाम)	वाम
२०७	३६८	ललितरीमवर	(ललित) रीमवर
२१२	४४०	ग्रसरोमस्त्री	(ग्रस) रोमस्त्री
२१२	४४४	मावत) समतर	मावत-समतर
२१२	४४७	उनवग) पनाह	उनवगपनाह
२२१	५३१	(मन) जीव	मनजीव
२२१	५३५	भरक (डगळ	भरव-डगळ (
२२१	५३५	मे दडो	भम्गे
२२५	५७३	(सुर) माण	सुरमाण
२२७	१०	डूडाड ३	डूगाड २
२४०	१२८	(रतमम) ग्रग	रतमम (ग्रग)
२४२	१४४	(मुग पु डरीक	(मुग) पु डरीक
२४२	१४४	कवळ) लाल	कवळलाल
२४४	१६१	(मुग बीर) बहोनी	(मुग) बीरबहोनी
२४५	१६६	(जूह) नाह	जूहनाह
२४८	१६१	भू) बारि	) भूबारि
२५०	२१४	डाकण) बाहण	) डाकण-बाहण
२५०	२१६	भाकर रो) भोमियो,	भाकररोभोमियो
२५३	२३८	ग्रडा २	ग्रडा ३
२५३	२३८	(पेमिका)	पेमिका
२५६	२७१	पाप १३	पाप १२
२७०	५२	साख	(साख)
२७१	५८	वामातन (रीत)	वामातनरीत
२७२	६३	फौहीवळहरा	फौही (वळ) हरा
२७२	६६	व्रम जोत	व्रमजोत
२८३	१०	त्रीवभया	त्रीवभया
२६५	११८	भरू भप	भैरू भप
३०६	२११	रोहण तिया	रोहणतिया

उद्देश्य व नियम

१ – राजस्थानी साहित्य, कला व संस्कृति का वैज्ञानिक अध्ययन प्रस्तुत करना पत्रिका का मुख्य उद्देश्य है।

२ – परम्परा का प्रत्येक अंक विशेषांक होता है, इसलिए विषयानुकूल सामग्री को ही स्थान मिल सकेगा।

३ – लेखों में व्यक्त विचारों का उत्तरदायित्व उनके लेखकों पर होगा।

४ – लेखक को, सम्बन्धित अंक के साथ, अपने निबन्ध की पच्चीस अनुमुद्रित प्रतियाँ भेंट की जायेंगी।

५ – समालोचना के लिए पुस्तक की दो प्रतियाँ आना आवश्यक है। केवल शोध-सबंधी महत्त्वपूर्ण प्रकाशनों की समालोचना ही संभव हो सकेगी।

परम्परा की प्रचारात्मक सामग्री, नियम तथा व्यवस्था-सम्बन्धी अन्य जानकारी के लिए पत्र-व्यवहार निम्न पते से करें —

व्यवस्थापक : **परम्परा**
राजस्थानी शोध-सस्थान, चौपासनी
जोधपुर [राजस्थान]

पृ०	प०	अशुद्ध	शुद्ध
१८६	२२२	तावक	तावव
१६१	२०७	दळमाग	दलमाठा
१६६	२८७	रोगहारीप्रभण	रोगहारी (प्रभग)
१६७	२६७	(वाम)	वाम
२०७	३६८	ललितकीसवर	(ललित) कीसबर
२१२	४४०	प्रसकोमखी	(प्रस) कोमखी
२१२	४४४	मावत) समतर	मावत समतर
२१२	४४७	उतवग) पनाह	उतवगपनाह
२२१	५३१	(मत) जौव	सेतजौव
२२१	५३५	भदक (डगळ	भन्क डगळ (
२२१	५३५	मे दडो	मेन्डा
२४५	५७३	(खुर) माए	खुरमाए
२२७	१०	ढूडाड ३	ढूडाड २
२४०	१२८	(स्लेमम) ग्रग	स्लेसम (ग्रग)
२४२	१४४	(मुए पु डरीक	(मुए) पु डरीक
२४२	१४४	कवळ) लाल	कवळलाल
२४४	१६१	(मुए बीर) वहोडी	(मुए) बीरवहोनी
२४५	१६६	(जूह) नाह	जूहनाह
२४८	१६१	भू) बारि	) भूबारि
२५०	२१४	डाकग) वाहग	) डाकए-वाहए
२५०	२१६	माकर रो) भोमियो,	माकररोभोमियो
२५३	२३८	ग्रडा २	ग्रडा ३
२५३	२३८	(पेसिका)	पेसिका
२५६	२७१	पाप १३	पाप १२
२७०	५२	साम्व	(साम्व)
२७१	५८	वामानन (रीत)	वांमाननरीत
२७२	६३	फोहीवळहरा	कोही (वळ) हरा
२७२	६६	व्रम जोत	ब्रमजोत
२८३	१०	श्रीवभया	श्रीवभया
२६५	११८	भरू भप	भरू भप
३०६	२११	रोहग तिया	रोहगनिया